नेटिपाकराना

अंतर्वस्तु

नेटिपाकराना
(पथप्रदर्शक)

नेट्टीकरण एक मार्गदर्शिका है जो उन लोगों की मदद करती है जो पहले से ही इस शिक्षा को समझते हैं ताकि वे इसे दूसरों के सामने प्रस्तुत कर सकें। नेट्टी विधियों का उपदेश बुद्ध के शिष्य कच्चान (जिन्हें कात्यायन या कच्चायन भी कहा जाता है) ने दिया था।
नेट्टीकरण को दो भागों में विभाजित किया गया है:

1. संघवार: विषय-सूची का संग्रह
2. विभागवार: वह भाग जो वर्गीकृत तालिकाओं में व्यवस्थित विवेचन प्रस्तुत करता है। इस खंड में तीन उपखंड हैं:

2.1 उद्देसावारा
2.2 निद्देसवारा
2.3 पतिनिद्देसवारा।

उद्देसावारा में तीन अलग-अलग श्रेणियां दी गई हैं (पाली शब्द और नानामोली के अनुवाद): सोलह हार (संचारण, या संचारण के तरीके) हैं: देसना (शिक्षा), विचया (जांच), युत्ति (व्याख्या), पदत्थाना (आधार), लक्खाना (विशेषताएं), चतुव्यूह (चार गुना क्रम), आवत्त (रूपांतरण), विभत्ति (विश्लेषण), परिवत्तना (उलट), वेवचन (पर्यायवाची), पञ्ञत्ति (विवरण), ओतरण (प्रवेश के तरीके), शोधन (स्पष्टीकरण), अधित्थाना (अभिव्यक्ति के शब्द), परिक्खारा (आवश्यकताएं), और समरोपण (समन्वय)।

पांच नय (दिशानिर्देश) हैं: नंदियावत्त (स्वाद का रूपांतरण); टिपुक्खला (ट्रेफ़ोइल); सिहाविक्किलिता (शेर का खेल); दिसालोकन (दिशाओं का आलेखन); अंकुसा (हुक)।

अठारह मूलपदों में नौ कुसल और नौ अकुसल शामिल हैं।
नौ अकुशल हैं:

तन्हा (लालसा), अविज्जा (अज्ञान (समाधि-झाना का)),
लोभा (लालच), दोसा (नफरत), मोह (भ्रम),
सुभा सन्ना (सुंदरता की धारणा), निक्का सन्ना (स्थायित्व की धारणा), सुख सन्ना (आनंद की धारणा)। अत्तासन्या (स्वयं की धारणा);

नौ कुशल गुण हैं:
समाथा (शांति), विपश्यना (अंतर्दृष्टि ध्यान),
अलोभ (लालच रहित), अदोसा (घृणा रहित), अमोह (भ्रम रहित),
असुभासंज्ञा (कुरूपता की अनुभूति), दुःखसंज्ञा (पीड़ा की अनुभूति), अनिच्चसंज्ञा (अस्थिरता की अनुभूति), और अनत्तसंज्ञा (अनात्मता की अनुभूति) आदि।

नेटिपाकरण पाठ (पीटीएस)

अंतर्वस्तु

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> नेत्तिपकरण >> सामग्री

नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित

नेटिपाकरना <<<<-----‖-1-‖----->>>> अगला

अंतर्वस्तु
नेटिप्पकरण (मार्गदर्शक)

महा-कक्काना थेरा के अनुसार

भिक्कू नानामोली द्वारा पाली से अनुवादित

संकेताक्षर की सूची
एक। अंगुत्तरा निकया
अभफ. अभिधानप्पादीपिका (सिन्ह संस्करण)
बी ० ए। नेटी का बर्मी लिपि में मुद्रित संस्करण, 1917

बीबी. वही, 1956
सी। नेट्टी का सिंहली लिपि में मुद्रित संस्करण, 1923
सीपीडी.
डी।

ट्रेंकनर का क्रिटिकल पाली शब्दकोश, खंड 1 (कोपेनहेगन)
दीघा निकया

ध. धम्मपद (श्लोक संख्या)
डीएचए. धम्मपद टीका
ध्स. धम्मसंगानी (§ क्रमांक)
डीएचएसए. धम्मसंगम भाष्य (अट्ठहासलीन)
इति. इतिवुत्तका
जेडी. जातक
खपा. खुद्दकपथा टीका
केवी. कथवत्थु
केवीए. कथावत्थु भाष्य (पंचप्पकरणा)
में) '

केवीएए. मूल-टीका (बर्मी संस्करण, पं. IV)
एम। मज्झिमा निकया
एमए. मज्झिमा निकया टिप्पणी (पपनकासुदानी)
एमएए. मज्झिमा निकया टीका (बर्मी संस्करण)
मिल्न. मिलिंदपन्हा
एनडीएल. महा-निद्देश
एनडी2. कुला-निद्देसा (बर्मी संस्करण)
नेटी. नेटिप्पकारणा
नेटीए. नेति. टिप्पणी (पं. पी.टी.एस. नेति. संस्करण, शेष सिंहली-लिपि हेवाविटर्न संस्करण.)
नेटीएए. नेति विभावना टीका (बर्मी संस्करण)
पे. पेटाकोपदेसा
बाल रोगपाली टेक्स्ट सोसाइटी का पाली-अंग्रेज़ी शब्दकोश
पीटीएस. पाली पाठ सोसायटी
पीपीएन. शुद्धि का मार्ग (विशुद्धिमाग्ग अनुवाद, कोलंबो, 1956)

पी.एस. पतिसंभिदामग्गा

पग ए. पुग्गलपन्नत्ती टिप्पणी (पंचप्पकरणा. II)

एस. संयुक्त निकाय

एस.एन. सुत्तनिपाता

ठग. थेरागाथा

उद. उदाना '

Vbh. विभंगा

विसुद्धिमाग्ग (§ संदर्भ, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस संस्करण के लिए)

विस ए. विशुद्धिमग्गा महा-टीका (परमत्थामंजुसा-सिंहली संस्करण। अध्याय xviii तक, बर्मी संस्करण। अध्याय xix-xxiii)

वि.वि. विमानवत्थु

याम. यामाका

विषय-सूची का विस्तृत विवरण (पैरा)

भाग IV

— श्लोक 758 का सारांश

भाग VI

अध्याय iv.—व्यवस्था का प्रतिरूप

पहला समूह 759

अनुसूची:

1. भ्रष्टाचार से संबंधित चर्चा का प्रकार

2. नैतिकता

3. ,, ,, ,, प्रवेश

4. ,, ,, ,, द एडेप्ट

5. ,, ,, ,, भ्रष्टाचार और नैतिकता

6. ,, ,, ,, भ्रष्टाचार और घुसपैठ

7. ,, ,, ,, भ्रष्टाचार और सिद्ध पुरुष

8. ,, ,, ,, भ्रष्टाचार, घुसपैठ और निपुण

9. ,, ,, ,, भ्रष्टाचार, नैतिकता और घुसपैठ

10. नैतिकता और पैठ

11. लालसा से भ्रष्टाचार

12. ,, ,, ,, दृष्टिकोण से भ्रष्टाचार

13. कदाचार द्वारा भ्रष्टाचार

14. लालसा से शुद्धि

15. ,, ,, ,, दृश्य से शुद्धिकरण

16. दुराचार से शुद्धि

अनुसूची:

i. (क) संसारों से संबंधित, (ख) संसारों से पृथक,

(सी) दोनों

ii. (क) प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया गया, (ख) विचारों के संदर्भ में व्यक्त किया गया,

(सी) दोनों

iii. (क) ज्ञान, (ख) जानने योग्य, (ग) दोनों

iv. (क) देखना, (ख) अस्तित्व में रखना, (ग) दोनों

(क) हमारा स्वयं का कथन, (ख) किसी अन्य व्यक्ति का कथन,

(सी) दोनों

vi. (a) उत्तर देने योग्य, (b) उत्तर न देने योग्य, (c) दोनों

vii. (a) क्रिया, (b) पकना, (c) दोनों

viii. (a) लाभदायक, (b) अलाभदायक, (c) दोनों

ix. (a) सहमत, (b) अस्वीकृत, (c) दोनों

x. शोक संदेश

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> नेत्तिपकरण >> ए.व्यापक खंड

नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित

पिछला <<<<-----||-2-||----->>>> अगला

ए. व्यापक अनुभाग (पैरा 1)
[पेज 3]

पथप्रदर्शक

(नेटिप्पकरण)

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स

[ए. व्यापक अनुभाग]

1.

[1] बुद्धिमान लोग व्यवस्था को जान सकते हैं

उस महान व्यक्ति की महिमा,

जिन्हें दुनिया और दुनिया के रक्षक

सदा आदर और श्रद्धा रखें। (1)

*

बारह शब्द 1 [सूत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं], 2 [जिनके] वाक्यांश और [जिनके] अर्थ दोनों ही मामलों में ज्ञात होने चाहिए:

यह वाक्यांश क्या है? इसका अर्थ क्या है? (2)

सोलह संदेश 3 [एक] मार्गदर्शक 4

[और] व्यवस्था के पांच दिशानिर्देश

खोजें [और] अठारह मूल-पद, 5 [भी],

महा-कक्काना 6 का प्रदर्शन (पे 3)। (3)

1/1 '12 पद' धारा 27-8 और 49ff में हैं। प्रस्तावना देखें, (धारा 7बी)।

1/2 इस सूत्र के 'धागा' या 'तर्क का धागा' के रूप में अनुवाद के लिए प्रस्तावना (खंड 8) देखें। इस ग्रंथ में इस शब्द का प्रयोग तीन प्रकार से किया गया है: 'धागा' के रूप में, बुद्ध के संपूर्ण ('नौ गुना') कथन के अर्थ में; 'धागे के एक प्रकार' के रूप में (उदाहरण के लिए, अंतिम अध्याय में प्रयुक्त); और 'एक धागा' के रूप में, जिसका अर्थ है कोई व्यक्तिगत प्रवचन या प्रवचन का कोई भाग। इस श्लोक में 'धागा' पहले अर्थ में है, जिसका अर्थ है कि संपूर्ण कथन '6 वाक्यांश-पदों' और '6 अर्थ-पदों' से आच्छादित है, जो '12 पदों' का निर्माण करते हैं (ऊपर नोट 1/1 देखें)। इस वाक्य का अनुवाद 'बारह शब्द एक धागा हैं' के रूप में करना व्याकरणिक रूप से तो बिल्कुल सही होगा, लेकिन अर्थ की दृष्टि से बिल्कुल गलत होगा।

1/3 प्रस्तावना देखें, (अनुभाग 8)।

1/4 इस अनुवाद के लिए प्रस्तावना देखें। यहाँ शब्द 1 नेट्टी' ('मार्गदर्शक') को मुख्य रूप से संज्ञा के रूप में लिया जाना चाहिए, न कि उचित नाम के रूप में, जिसे §965 में कार्य के अंतिम शीर्षक में उच्चारित किया गया है।

1/5 '18 मूल-पदों' के लिए परिचय देखें, (अनुभाग 7बी), साथ ही एन. 764/2.

1/6 नेटीए, कच्चयनगोत्तनिदित्था (एक पाठ जो पे पृष्ठ 3 पर भी दिखाई देता है) के अस्तित्व का उल्लेख करते हुए कहते हैं, 'इस श्लोक को यहाँ कार्य के उद्देश्य के सारांश के रूप में, गाइड का पाठ करने वालों द्वारा रखा गया माना जा सकता है, और इसी तरह प्रत्येक मोड ऑफ़ कन्वेइंग को समाप्त करने वाले समापन वाक्यांश के साथ' (पृष्ठ 10)।

[पृष्ठ 4] मार्गदर्शिका

संदेशवाहक धागे की जांच करते हैं

वाक्य रचना, तीन मार्गदर्शक बिंदु जो विषय के अर्थ को स्पष्ट करते हैं; 7

इन दोनों तरीकों से मिलकर बना एक धागा

इसे 'धागे के अनुसार' कहा जाता है। 8 (4)

♦

इसलिए, शिक्षण और शिक्षा के बीच

यदि दोनों का पता हो, तो क्रम निर्धारित किया जा सकता है।

अब यहां दिए गए निर्देशों का पालन करें और परीक्षण करें।

तर्क का नौ गुना सूत्र। 9 (5)

♦

व्यापक अनुभाग।

1/7 अन्य 2 दिशानिर्देश, दिशा-निर्देशों की योजना और हुक, केवल वाक्यांशों से संबंधित हैं (§§29-30); परिचय देखें, (अनुभाग 7बी)।

1/8 संभवतः प्राधिकरण के चार प्रमुख अपीलों का संकेत (§§120ff.)।

1/9 'तर्क का नौ गुना सूत्र' से तात्पर्य एम. आई, 133 में दिए गए वर्गीकरण से है, जैसे 'तर्क का सूत्र, गीत, गद्य-व्याख्या, पद्य, विस्मयादिबोधक, कथन, जन्म-कथा, अद्भुत और चमत्कारी विचार, और प्रश्नों के उत्तर'। इन नौ को §29 में उल्लिखित 'नौ पदों' से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> नेत्तिपकरण >> बी.भाग 1. 1. सांकेतिक उपखंड

नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित
पिछला <<<<-----||-3-||----->>>> अगला

बी.विनिर्देश अनुभाग
भाग I. 1. सांकेतिक उपधारा (पैरा 2 - 4)

[पृष्ठ 5]

बी. विनिर्देश अनुभाग

भाग 1. सांकेतिक उपधारा]

2. इसमें, संप्रेषण के सोलह तरीके क्या हैं (§1, श्लोक 3)? [ये संप्रेषण के सोलह तरीके हैं:]

1. शिक्षण, 1

2. एक जांच,

3. व्याख्या करना,

4. नींव,

5. विशेषताएँ,

6. एक चार गुना सरणी,

7. रूपांतरण,

8. एक विश्लेषण,

9. एक उलटफेर,

10. समानार्थी शब्द,

11. विवरण,

12. प्रवेश के तरीके,

13. एक स्पष्टीकरण,

14. अभिव्यक्ति की शर्तें,

15. आवश्यक शर्तें,

16. समन्वय {पी 3).

[2] यहाँ एक पुनर्कथन-श्लोक दिया गया है:

शिक्षण, जांच, व्याख्या के रूप में

नींव और विशेषताओं के रूप में,

चार गुना सरणी, और फिर रूपांतरण,

विश्लेषण, उलटफेर भी,

पर्यायवाची के रूप में, और विवरण के रूप में, (1)

प्रवेश के तरीकों के रूप में, सफाई करना,

अभिव्यक्ति की शर्तें, आवश्यक शर्तें,

और सोलहवें समन्वय के लिए (तुलना करें पे 3)। (2)

ये सोलह परिवहन विधियाँ हैं (तुलना करें पे 3);

और प्रत्येक के महत्व के संबंध में

2/1 इन और शेष तकनीकी शब्दों के स्पष्टीकरण के लिए, परिचय (अनुभाग 8) देखें। [पृष्ठ 6] मार्गदर्शिका

एक अलग कथन [इसके बाद आता है (धारा 5-20)]

प्रत्येक के लिए विस्तृत विधि-विश्लेषण के साथ 2 (3)

3. इसमें, पाँच दिशा-निर्देश क्या हैं (§1, उपधारा 3)? [वे इस प्रकार हैं:]

1. आनंद लेने का रूपांतरण,

2. तिपतिया घास, 1

3. शेरों का खेल;

4. दिशाओं का निर्धारण,

5. हुक (पी 3)।

यहां एक भावार्थ-श्लोक दिया गया है: 2

आनंद लेने की प्रक्रिया में बदलाव सबसे पहले आता है।

दूसरे स्थान पर ट्रेफोइल है, 3

उन्होंने इसे 'द लायंस प्ले' नाम दिया है।

तीसरे दिशानिर्देश सूत्र के लिए; (1)

चौथी गाइडलाइन को वे सबसे दुर्लभ कहते हैं

फिर दिशाओं की योजना बनाना

पांचवें को हुक कहा जाता है:

इसी प्रकार सभी पाँच दिशा-निर्देश आगे बढ़ते हैं (देखें पृष्ठ 4)। (2)

4. इसमें अठारह मूल-पद (§1, vse. 3) क्या हैं? वे नौ लाभदायक मूल-पद और नौ अलाभदायक मूल-पद हैं।

यहां, नौ अनुपयोगी मूल-पद कौन से हैं? [वे हैं:]

तीव्र इच्छा,

अज्ञानता;

लालच,

2/2 नेत्तिया कहते हैं कि यह श्लोक (पाली में अंतिम दो पंक्तियाँ) सभी पांडुलिपियों में नहीं है। (यह पाली में नहीं है।) इसके बाद में जोड़े जाने की संभावना बहुत अधिक है, क्योंकि इसमें 'अत्था' और 'नय अ' शब्दों का भ्रामक प्रयोग किया गया है, जो यहाँ न तो छठे अत्थापद (छठे बियंजनपद के विपरीत—§§27-8) और न ही पाँचवें नय (§§21-5) को संदर्भित करते हैं, बल्कि सोलह गुणों के व्यक्तिगत महत्व को संदर्भित करते हैं, जो स्वयं बियंजन से संबंधित हैं, अत्था से नहीं, और उनकी अलग-अलग व्याख्या की विस्तृत विधि को भी संदर्भित करते हैं (§§5-20)। प्रमुख तकनीकी शब्दों का ऐसा असंगत प्रयोग इस ग्रंथ के बाकी हिस्सों से अलग है। यहाँ नेत्तिया 'नय-विभत्ती' की व्याख्या 'उपायेन विभागो' से करते हैं (यहाँ विभत्ती शब्द विभत्ती-हारा को संदर्भित नहीं करता है)। यह विट्ठरेना के साथ विसंगतिपूर्ण विट्ठरताय (विट्ठरताय के लिए मेट्री कारण?) को उजागर करता है और विट्ठरा-नया के पढ़ने को बुरा मानकर खारिज कर देता है।

3/1 प्रस्तावना देखें, (खंड 7बी और 8)।

3/2 अनुगिति का यही अर्थ होना चाहिए; पी.ई.डी. में नहीं, सी.पी.डी. देखें। नेट्टिया संगहा-गाथा (पृष्ठ 19) के साथ व्याख्या करते हैं; अनुक्रमणिका देखें; साथ ही पी.ई. पृष्ठ 87 भी देखें।

3/3 यह क्रम केवल गणना का है। अध्याय 3 और अध्याय 8 देखें।
[पृष्ठ 7] विनिर्देश अनुभाग

घृणा,

भ्रम;

सौंदर्य की धारणा,

सुख की अनुभूति,

स्थायित्व की धारणा,

स्वयं की धारणा (तुलना करें पे 4)।

ये नौ अलाभकारी मूल-पद हैं, जिनमें अलाभकारी पक्ष से संबंधित सभी चीजें शामिल और संकलित की गई हैं।

यहां, नौ लाभदायक मूल शब्द कौन से हैं? [वे हैं:]

शांत,

अंतर्दृष्टि;

लोभ रहित

नफरत रहित

भ्रम रहित;

कुरूपता की धारणा

दर्द की अनुभूति,

अनित्यता की धारणा,

गैर-स्वयं की धारणा (cf. Pe 4)।

ये नौ लाभदायक मूल पद हैं, जिनमें लाभदायक पक्ष से संबंधित सभी चीजें समाहित और संकलित हैं।

इसे याद रखने का एक आसान तरीका यहाँ दिया गया है:

नौ पद: लालसा और अज्ञान

और लोभ, घृणा और भ्रम भी।

और विकृतियों के साथ चार और भी हैं

अपवित्रता के तल का गठन करते हैं। (1)

[3] नौ पद - शांत और फिर अंतर्दृष्टि

तीन लाभदायक जड़ों के साथ

और माइंडफुलनेस-फाउंडेशन्स चार 1

संकायों के तल का निर्माण करते हैं। (2)

लाभ के पक्ष में नौ शर्तों के साथ

और गैर-लाभकारी संस्थाओं की तरफ से नौ पद।

व्याख्या करने पर, ये मूल-पद [इस प्रकार] आते हैं

[कुल मिलाकर] अठारह पदों की संख्या तक (तुलना करें पे 4)। (3)

अंत: सांकेतिक उपखंड।

4/1 'सचेतनता के चार आधार' (चट्टारो सतिपथाना) शब्द का प्रयोग अविकृत बोध (विपल्लसा-वत्थुनी) के चार विषयों को संदर्भित करने के लिए असामान्य है। (तुलना करें पे 185)।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> नेत्तिपकरण >> भाग II.2.प्रदर्शनात्मक उपखंड

नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित
पिछला <<<<-----||-4-||----->>>> अगला

भाग II.2. प्रदर्शन उपधारा (पैरा 5 - 30)

[पृष्ठ 8]

[भाग 2. प्रदर्शनात्मक उपधारा]

5. यह मार्गदर्शिका का संक्षिप्त विवरण है।

[संचार के 16 तरीके]

संतुष्टि, निराशा,

पलायन, फल, साधन, भगवान बुद्ध का भक्तों को उपदेश, 1 यह विधि

क्या यह शिक्षा का संचार है (तुलना करें पे 81,11. 4-6)। (1)

6. इस चर्चा में क्या पूछा गया है और किसका उत्तर दिया गया है?

साथ ही एक श्लोक का भावार्थ भी,

और थ्रेड की [शब्द-] जांच 1

यह विधा जांच को दर्शाती है (cf. Pe 82)। (2)

7. सही और गलत व्याख्या की तलाश करना

सभी हस्तांतरणों के मामले में

विमान और रिसॉर्ट 1 [प्रदर्शन करेंगे]

व्याख्या को संप्रेषित करने का तरीका (cf. Pe 88,11. 3-4)। (3)

8. विजेता एक विचार सिखा रहा है

यह सिखाता है कि उस विचार में क्या है

आधार के रूप में; प्रत्येक विचार के साथ भी ऐसा ही है:

यह नींव ले जाने का तरीका है (पी 89,11. 8-9)। (4)

9. जब एक विचार का उल्लेख किया जाता है, तो सभी

समान विशेषताओं के विचार 1

इनका भी उल्लेख किया गया है: यह गठित करता है

विशेषताएँ व्यक्त करने का तरीका (cf. Pe 90)। (5)

5/1 ये छह शब्द (पहले तीन के लिए देखें, उदाहरण के लिए, ए. i, 258; एम. iii, 18; 8. v, 193) इस पद्धति की विशिष्ट विशेषताओं के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा की एक सामान्य प्रस्तुति के रूप में लिए जाने चाहिए, जैसे कि 4 सत्य, जिनके साथ इन्हें §48 में मेल कराया गया है। ये अध्याय 2, §§489ff में नहीं मिलते हैं। पे में ये इसके अध्याय 2 (शासनपट्टाना) के एक समूह में मिलते हैं, पद्धतियों में नहीं।

6/1 सभी ग्रंथों में पाविको पढ़ा जाता है, लेकिन नेट्टी ए (पृष्ठ 19) इसे पदा-विको का प्रतिनिधित्व करने के लिए लेता है और शब्दों i पदम विसिनाती' (§62; पीटीएस नेट्टी पृष्ठ 10) का संदर्भ देता है; पीटीएस नेट्टी पृष्ठ 252 और 259 और एमएए. i, 127-8 (यहां परिशिष्ट में पुनरुत्पादित) में इस मोड के उपचार की तुलना करें।

7/1 नेट्टी ए यहां प्लेन को 'वाक्य रचना' और रिसॉर्ट को 'अर्थ' के रूप में समझाती हैं।

9/1 टेना केसी के बजाय दोनों एमए.आई, 31 (जहां उद्धृत) और पे 90.

[पृष्ठ 9] विनिर्देश अनुभाग

10. वाक्यांश के माध्यम से, 1 (i) भाषाई, 2

(ii) आशय, और (iii) शिक्षा का स्रोत,

और (iv) क्रमानुसार अनुक्रम:

यह मोड एक चौगुना सरणी को दर्शाता है (cf. Pe 91)। (6)

11. वह तरीका, जब एक ही आधार हो,

बचे हुए आधार की तलाश

और फिर विपरीत को परिवर्तित करता है

क्या इससे रूपांतरण का संकेत मिलता है (पे 93)। (7)

12. यह विचार, आधार का विश्लेषण करता है,

[पुरुषों के प्रकारों का] तल, साझा

और साझा नहीं किया गया: इस मोड के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

जैसा कि विश्लेषण को संप्रेषित करना। 1 (8)

13. विपरीत में उलटना

लाभ और हानि के विचार

अस्तित्व में बनाए रखने और छोड़ने के लिए दिखाया गया

इसे मोड कन्वेइंग रिवर्सल कहा जाता है। (9)

14. [4] धागों का ज्ञाता वही है जो जानता है

एक के कितने पर्यायवाची शब्द हैं?

विचार इस थ्रेड में हैं: यह मोड

क्या यह पर्यायवाची शब्द व्यक्त कर रहा है (cf. Pe 96)। (10)

15. भगवान बुद्ध एक ही विचार की शिक्षा देते हैं।

अनेक प्रकार के वर्णनों के माध्यम से;

इस मनोदशा को इस प्रकार जाना जा सकता है

वह विधा जो विवरण प्रस्तुत करती है। (11)

16. आश्रित-उदय, संकाय,

श्रेणियाँ, तत्व, आधार:

वह विधि जिसके द्वारा इन साधनों से प्रवेश मिलता है

क्या यह प्रवेश के तरीकों को दर्शाता है? (12)

———————————————————————————————————————

10/1 बयांजनम के लिए यहां नामांकन के रूप में। इंस्ट्र के लिए खड़े, §184 में पुनर्कथन देखें (पीटीएस नेटी पृष्ठ 32)। इसके लिए, निरुत्ती, और पुब्बापारा- ('लगातार - क्रम') ए देखें। iii. 201.

10/2 'नेरुत्त—भाषाई': निरुत्ती ('भाषा'—किसी कम सरल शब्द की तलाश करने की आवश्यकता नहीं है) से प्रबलित रूप। दोनों रूप §185 में एक साथ दिखाई देते हैं। n. 186/1 भी देखें।

12/1 विभत्ती ('विश्लेषण' यहाँ), विभंग ('पृथक'—शीर्षक §31 ऊपर) और विभाग ('विनिर्धारण'—शीर्षक §2 ऊपर) शब्दों को भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

[पृष्ठ 10] गाइड

17. किसी प्रश्न का उत्तर मिलने पर उसकी अपेक्षा करना।

श्लोक में ऐसा क्या था जिसने उकसाया?

इसका प्रश्न स्पष्ट हुआ या नहीं:

यह तरीका स्पष्टता का संकेत देता है। (13)

18. विचारों को प्रदर्शित करने पर

एकता और विविधता दोनों

इसलिए किसी भी प्रकार के वियोजन की आवश्यकता नहीं है: 1

यह विधा अभिव्यक्ति के पदों को व्यक्त करती है। (14)

19. वे विचार जो प्रत्येक एक विचार को जन्म देते हैं

उचित संबंध में शर्तें भी हैं;

और इसके द्वारा 1 कारण का चयन करके

यह मोड आवश्यक जानकारी देता है (cf. Pe 104)। (15)

20. उन विचारों को साझा करना जिनकी जड़ें उनसे जुड़ी हैं।

और जिन्हें ऋषि ने दिखाया है

एक अर्थ यह है कि, समन्वय होना चाहिए:

यह मोड समन्वय को दर्शाता है (cf. Pe 110)। (16)

*

[5 दिशा-निर्देश]

21. लालसा और अज्ञानता द्वारा निर्देशित मार्गदर्शक रेखा

शांति और अंतर्दृष्टि द्वारा, और व्याख्या करते हुए

उचित रूप से चार सत्य

क्या आनंद लेने का रूपांतरण है (cf. Pe 259)। (17)

22. लाभ और [के विचारों] का मार्गदर्शन करना

उनकी [तिहरी] जड़ों से लाभहीन

वे वास्तव में, अवास्तविक नहीं हैं,

उस दिशा-निर्देश को वे तिपतिया घास कहते हैं (देखें पे 259)। (18)

18/1 शब्द विकप्पा व्याकरणविदों द्वारा वियोजक कण वा ('या') के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जैसे सम्पिंडना संयोजन च ('और') के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

19/1 'अवकड्ढयित्व—चुनकर निकालना' : शाब्दिक अर्थ है 'नीचे खींचना'। हालाँकि पीईडी में यह संदर्भ दिया गया है, लेकिन यह केवल जातक-अनुवाद अर्थ देता है, जो यहाँ उपयुक्त नहीं है। सीपीडी 1 s 'किसी पाठ से निकालना' नेत्तिआ के 'सुत्ततो निद्धरित्व' पर आधारित है; लेकिन यह बहुत शाब्दिक है। तुलना करें अपकड्ढति एट पी 74f. (पीडी या सीपीडी में नहीं, स्पष्ट रूप से इसका अर्थ है 'आरक्षित करना')। यहाँ तात्पर्य अनेक 'स्थितियों' में से एकमात्र 'कारण' को 'चुनकर निकालना' है।

[पृष्ठ 11] विनिर्देश अनुभाग

23. मार्गदर्शक सिद्धांतों में बुद्धिमानों ने इसे कहा है

लायंस प्ले जो कि संकायों द्वारा 1

क्या आस्था के सच्चे उद्देश्य 2 मार्गदर्शक हैं, और भी

विकृतियों और अपवित्रताओं द्वारा (तुलना करें पे 259)। (19)

24. मानसिक रूप से कौन 1 [विचारों] की रूपरेखा तैयार करता है?

लाभ और हानि का उल्लेख किया गया है

या फिर प्रदर्शनियों में इधर-उधर

वे इसे दिशाओं का निर्धारण कहते हैं (cf. Pe 259)। (20)

25. प्लॉटिंग के साथ इस प्रकार प्लॉटिंग करने के बाद

निर्देशों के बारे में, फिर क्या सामने आता है

सभी लाभ [विचार] और हानि

और उन्हें अंदर ले जाने वाले को हुक कहा जाता है (cf. Pe 259)। (21)

*

[संचार के तरीके और दिशा-निर्देश कैसे अपनाए जाते हैं]

26. सोलह परिवहन, प्रथम, सर्वेक्षण

फिर दिशाओं की रूपरेखा तैयार करने के साथ,

और हुक से इकट्ठा करने के बाद,

तीन दिशा-निर्देश 1 एक सूत्र को प्रदर्शित करते हैं। (22)

27. (i) पत्र, (ii) शब्द, और फिर (iii) वाक्यांश,

इसके अलावा (iv) भाषाई [विभक्ति],

(v) प्रदर्शन, और (vi) मनोदशा

छठे के रूप में: यह बात वाक्यांश से संबंधित है। (23)

28. [5] (vii) व्याख्या करना, (viii) प्रदर्शित करना, और (ix) खुलासा करना,

(x) विश्लेषण करना, (xi) प्रदर्शित करना, (xii) वर्णन करना:

इन छह शब्दों द्वारा यह प्रदर्शित किया गया है

एक अर्थ और एक क्रिया 1 भी। (24)

23/I यहाँ 'क्षमताओं' से तात्पर्य विश्वास, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता और समझ से है। लेकिन यहाँ इन क्षमताओं का इस मार्गदर्शिका में स्वभाव के अनुसार स्पष्ट वर्गीकरण का तात्पर्य है (देखें §§645fF. और साथ ही 947)।

23/2 सद्धम्म (यहाँ 'विश्वास का सच्चा लक्ष्य' - संस्कृत: सद्धर्म) को सद्दाहति ('विश्वास रखना', 'विश्वास स्थापित करना') का ग्द्दे माना जा सकता है, जो पाली में सद्ध ('विश्वास' - संस्कृत: श्रद्धा) के लिए क्रिया रूप में कार्य करता है। यहाँ चार अक्षत बोधों का उल्लेख है, जो अनित्यता के बोध से शुरू होते हैं।

24/1 'ओलोकायते—प्लॉट्स आउट': शाब्दिक अर्थ 'सर्वेक्षण करता है', 'नीचे देखता है'।

26/1 रेलिशिंग का उलटफेर, शेरों का खेल और तिपतिया घास।

28/1 नेत्तिया कहते हैं कि यहाँ 'अर्थ' (अत्था) एक धागे का है, जबकि 'क्रिया' (कम्म) संघनन (उग्घटना) आदि की है, देखें §§41-7।

[पृष्ठ 12] गाइड

29. भगवान बुद्ध के कथन का अर्थ

यह अपने अर्थ के लिए नौ शब्दों को जोड़ता है, अर्थात्:

पहले तीन दिशा-निर्देश, जिनमें से किसी को भी नहीं छोड़ा गया है (§§21-3),

और अर्थ-शब्द जिनकी संख्या छह है (§28)। (25)

30. नौ शब्दों (§29) के अर्थ के लिए, चौबीस

वाक्यांश की खोज के लिए भी, 1

इनकी कुल संख्या तैंतीस है।

और यही मार्गदर्शक है। (26)

♦

प्रदर्शनात्मक उपखंड।

30/1 अंकगणित इस प्रकार है: अर्थ के लिए 9 पद (§28) + वाक्यांश के लिए 24 (16 मोड (§§5-20) + 6 वाक्यांश-पद (§27) + अंतिम 2 दिशानिर्देश (§§24-5) से बना) :9+24 = 33.

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> नेत्तिपकरण >> भाग III । Ch-i-16 अलग उपचार
नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित

पिछला <<<<-----||-5-||----->>>> अगला

[पृष्ठ 13]

अंतर्वस्तु

भाग 3. प्रति-प्रदर्शन उपधारा

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके: अलग-अलग विश्लेषण

1. शिक्षा प्रदान करने के तरीके में नौ गुना धागा

31. इसमें, शिक्षा को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? शिक्षा को संप्रेषित करने का तरीका निम्नलिखित श्लोक में संक्षेप में बताया गया है:

'संतुष्टि, निराशा,
पलायन, फल, साधन, भगवान बुद्ध के
भक्तों के लिए आदेश: यह विधि
क्या यह शिक्षा का संप्रेषण है? (§5)।

[शिक्षण की क्रिया और जो पढ़ाया जाता है]

32. यह क्या सिखाता है? [यह निम्नलिखित प्रकार से सिखाता है:]
[सफलता, निराशा, मुक्ति, फल, साधन और आदेश के पहलुओं में],1 < भिक्षुओं, मैं तुम्हें एक सच्चा विचार सिखाऊंगा जो अच्छा है शुरुआत, मध्य में अच्छा, और अंत में अच्छा, अपने अर्थ और अपने वाक्यांश के साथ; मैं एक दिव्य जीवन प्रदर्शित करूँगा जो पूरी तरह से परिपूर्ण और शुद्ध है > (एम. आई, 280)।
33. इसमें संतुष्टि क्या है ?
जब कोई व्यक्ति कुछ इच्छा करता है , और यदि उसकी इच्छा पूरी हो जाती है,
उसे अपनी मनचाही चीज पाकर जरूर खुशी होगी ।
यही संतुष्टि है। (पे 45; एसएन 766)।
34. इसमें निराशा क्या है?
[6] इच्छा से उत्पन्न और स्वेच्छाचारी , यदि उसकी इच्छाएँ उससे दूर हो जाएँ ,
वह इतना विकृत हो जाता है मानो उसे किसी कांटे से छेदा गया हो> (एसएन. 767)।
यही निराशा की बात है।

32/1 इन छह शब्दों के लिए n. 5/1 देखें। यहाँ सभी छह शब्द (assadam . . . anattim) कर्म कारक में हैं और निम्नलिखित उद्धरण में शब्द dhammam ('एक सच्चा विचार') के समानांतर हैं। ये सभी उद्धरण में क्रिया desissami ('मैं सिखाऊँगा') द्वारा नियंत्रित हैं। इन छह शब्दों के बारे में और अधिक अभ्यास के लिए Pe 43-8 देखें।

[पृष्ठ 14]
पथप्रदर्शक
35. इसमें बचने का तरीका क्या है ?
जो व्यक्ति इच्छाओं से दूर रहता है, वह सांप के सिर को अपने पैर से कुचलने के समान है।
और सचेतनता इस संसार से लगाव से दूर रहती है ।
यही बचने का रास्ता है। (पे 46; एसएन 768)।
36. इसमें संतुष्टि क्या है?
खेत , बाग-बगीचे और धन, मवेशी और घोड़े, दास और मजदूर , स्त्रियाँ और रिश्तेदार: मनुष्य की अनेक इच्छाएँ होती हैं ।
यही संतुष्टि है। (संख्या 769)
36ए. इसमें निराशा क्या है ?
< अत्यंत अक्षम प्रतीत होने वाली विपत्तियाँ उसे अभिभूत कर देती हैं और कुचल देती हैं;
फिर दर्द उस पर हावी हो जाता है, जैसे पानी टूटी हुई नाव पर (Sn. 770)।
यही निराशा की बात है।
36बी. इसमें बचने का तरीका क्या है ?
अतः मनुष्य को इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से हमेशा दूर रहने का ध्यान रखना चाहिए;
उसे उन्हें त्यागकर बाढ़ पार करने दो > (स्न. 771)।
यही बचने का रास्ता है।
37. इसमें फल क्या है ?
जो व्यक्ति सच्चे आदर्श के मार्ग पर चलता है, वह उसकी रक्षा करता है ।
जैसे बारिश के समय एक बड़ी छतरी काम आती है।
आदर्श का सही मार्ग अपनाने पर मिलने वाला पुरस्कार यह है:
जो भी उस मार्ग पर चलता है, उसका गंतव्य कभी बुरा नहीं होता ।
यह फल है। (पे 44; तुलना करें थाग. 303)।
38. इसमें साधन क्या है ?

सभी निर्धारण क्षणभंगुर होते हैं, . . .
और सभी निर्णय भी कष्टदायी होते हैं ...
[और फिर इसके अलावा] अनात्म के अलावा सभी विचार हैं:
और जब वह इस प्रकार समझदारी से देखता है,
फिर वह दुख में भी वैराग्य पाता है;
यही वह मार्ग है जो शुद्धिकरण की ओर ले जाता है > (पे 44; ध . 277-9)।
यह साधन है।
39. [7] इसमें निषेधाज्ञा क्या है ?
ठीक वैसे ही जैसे अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति यात्रा करता है
ज्ञात खतरे वाले स्थानों से दूर रहना चाहिए।
एनीमेशन की इस दुनिया में भी यही बात लागू होती है।
बुद्धिमान लोग बुरी चीजों से दूर रहें > (उद. 50).
यह निषेधाज्ञा है।

[पृष्ठ 15]
पृथक उपचार में संप्रेषण के 16 तरीके
40. < हे मोगराज , संसार को शून्य समझो > यही आदेश है। < निरंतर सचेत रहना ही साधन है ।
< इस प्रकार आत्म-दृष्टि को जड़ से उखाड़ फेंककर , तुम मृत्यु को मात दे सकते हो > यही फल है (पे 45; एसएन 1119)।

[इसे कैसे पढ़ाया जाता है]
41. इसमें भगवान बुद्ध संक्षेपित ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को पलायन सिखाते हैं, 1 वे विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को निराशा और पलायन सिखाते हैं, 2 वे मार्गदर्शन योग्य व्यक्ति को संतुष्टि , निराशा और पलायन सिखाते हैं।
42. इसमें चार मार्ग और चार प्रकार के व्यक्ति हैं। 1 मंदबुद्धि स्वभाव वाला व्यक्ति, जो लालसा से भरा होता है, ध्यान के आधारों को आधार बनाकर और अपनी चेतना की शक्ति से, सुस्त परिचय के कष्टदायी मार्ग पर आगे बढ़ता है। 2 मंदबुद्धि स्वभाव वाला व्यक्ति, जो बुद्धिमान होता है , 2 चार ध्यान विधियों को आधार बनाकर और अपनी एकाग्रता की शक्ति से, तीव्र परिचय के कष्टदायी मार्ग पर आगे बढ़ता है। 3

41/1 ' उग्घतीत —संक्षिप्त': देखें ए. ii, 135; पुग. 41. यह संदिग्ध है कि पीईडी में दिए गए अर्थों में से कोई भी किसी संदर्भ के लिए सही है या नहीं, क्योंकि ये सभी ए . संदर्भ से व्युत्पन्न प्रतीत होते हैं। यहाँ अर्थ वही है जैसा कि प्रस्तुत किया गया है, जैसा कि यह संदर्भ स्पष्ट रूप से दर्शाता है। संबंधित क्रिया 'उग्घतीत' के लिए देखें n. 54/1. इस शब्द की व्याख्या पुग. 41 में भी की गई है। व्युत्पत्ति में संशोधन की आवश्यकता है। 41/2 ' 4 विपंचीत —विस्तारित': यहाँ भी वही टिप्पणियाँ लागू होती हैं जो ऊपर ' उग्घतीत' पर टिप्पणी में हैं। पीईडी का 'अविभ्रमित समझ, स्पष्ट बुद्धि, पूर्वाग्रह रहित' बिल्कुल गलत है। बात यह है कि जहाँ उग्घतीतन्नु को चार सत्यों का ज्ञान (अन्ना) प्राप्त करने के लिए केवल एक संक्षिप्त (उग्घतीत) कथन की आवश्यकता होती है, वहीं विपंचीतन्नु को उसी उद्देश्य के लिए एक विस्तृत (विपंचीत) कथन की आवश्यकता होती है। अत: वह दूसरे की तुलना में मंदबुद्धि है। 'मार्गदर्शनयोग्य' (नेय्या), यद्यपि मंदबुद्धि है, फिर भी मार्गदर्शन का पालन करने में सक्षम है। यह बात अ. ii, 135 पर लागू होती है। और विपंचना (§55) का अर्थ पीईडी में दिए गए 'वाक्य सुनाना' नहीं है, बल्कि 'संक्षिप्त कथन का विस्तार करना' है (जैसा कि उदाहरण के लिए, एम. सुत्त 18 में किया गया है)। इसी प्रकार व्युत्पन्न शब्द विपंचयति (§54) और विपंचीयन्त (§56) हैं। इस शब्द की व्याख्या पुग. 41 में भी की गई है ।
42/1 'तन्हा —लालसा': यह सामान्य अनुवाद है और ठीक है। यह शब्द संस्कृत के अनुवाद 'प्यास' के समान है, लेकिन इसका प्रयोग कभी भी 'प्यास' के लिए नहीं किया जाता, जिसके लिए ' पिपसा ' शब्द का प्रयोग होता है । 'आवश्यकता' शायद बेहतर अनुवाद होगा।

42/2 i उदत्त(ह)ा — बुद्धिमान ': नेट्टीए और सी ने उदत्था लिखा है और नेट्टीए ने ' उदा-अत्थो; उलारा-पन्नो ति अत्थो ' (पृष्ठ 43) की व्याख्या की है। बा और बीबी पीटीएस का समर्थन करते हैं । अर्थ के लिए पीईडी (केवल नेट्टी संदर्भ) 'उन्नत, उच्च, उदात्त, चतुर' देता है, लेकिन यहाँ यह मनआ ('सुस्त') का ठीक विपरीत है ।

42/3 t अभिनना —परिचय: इस शब्द (क्रिया अभिजनति से बना प्रतिस्थापन) के तीन मुख्य अर्थ हैं: (1) व्यक्तिगत अनुभव द्वारा प्रत्यक्ष परिचय, (2) पुस्तक ज्ञान द्वारा या किसी अन्य से सुनकर परिचय, 'मस्तिष्क करना', जो 'सुने गए ज्ञान' (§46) के समतुल्य है, और (3) छह प्रकार के अभिनना या पांच अलौकिक शक्तियां जो लोकों से संबंधित हैं और एक ज्ञान जो लोकों से अलग है और दोषों के निवारण का ज्ञान है, जिन्हें सामूहिक रूप से चलभिनना कहा जाता है । यहां अर्थ (2) या (3) के अर्थ में है।

[पृष्ठ 16]

पथप्रदर्शक

कम बुद्धि वाले व्यक्ति को सही प्रयासों और ऊर्जा के बल पर धीमी गति से चलने वाले सुखद संपर्कों के माध्यम से अपनी प्रतिभा को व्यक्त करने का रास्ता मिल जाता है। इसी प्रकार, बुद्धिमान व्यक्ति को सत्यों और समझ के बल पर तीव्र गति से चलने वाले सुखद संपर्कों के माध्यम से अपनी प्रतिभा को व्यक्त करने का रास्ता मिल जाता है।

43. दोनों प्रकार की व्यथाएँ, शांति द्वारा प्रकट अंतर्दृष्टि के माध्यम से, कामवासना के लुप्त होने से हृदय की मुक्ति की ओर अग्रसर होती हैं । दोनों प्रकार की दृष्टियाँ, अंतर्दृष्टि द्वारा प्रकट शांति के माध्यम से, अज्ञान के लुप्त होने से समझ की मुक्ति की ओर अग्रसर होती हैं ।

44. यहाँ, जो लोग शांति द्वारा घोषित मार्गों से निकास मार्ग (cf. §§529ff.) पाते हैं, उन्हें आनंद के रूपांतरण मार्गदर्शक रेखा (§§644-72) के माध्यम से 1 को त्यागने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जबकि जो लोग अंतर्दृष्टि द्वारा घोषित मार्गों से निकास मार्ग पाते हैं, उन्हें शेरों के खेल मार्गदर्शक रेखा (§§673-757) के माध्यम से त्यागने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

[इसे कैसे समझा जाता है]

45. [8] यह संदेश देने का तरीका वास्तव में कहाँ से आता है ? जब गुरु, या दिव्य जीवन में कोई सम्मानित साथी, किसी को सच्चा विचार सिखाता है, तो वह व्यक्ति, उस सच्चे विचार को सुनकर, विश्वास प्राप्त करता है।

46. इसमें, पूछताछ, रुचि, आकलन, जांच-पड़ताल, सुनी गई बातों से युक्त समझ है (देखें डी. iii, 219)। इसी प्रकार की पूछताछ, आकलन, जांच-पड़ताल, सुनी गई बातों को आधार बनाकर मानसिक अवलोकन करना, चिंतन से युक्त समझ है। ज्ञान-

---

43/1 यह संकेत ए. ii, 157 की ओर है। 'शांत' (समाथा) 'एकाग्रता' (समाधि) का पर्यायवाची है ।

43/2 अविज्जा —यहाँ 'अज्ञान'—को यहाँ 'अज्ञान' के रूप में अच्छी तरह से व्यक्त किया जा सकता है, जो विज्जा (यहाँ 'विज्ञान' के रूप में व्यक्त) का व्युत्पन्न-विपरीत है। तकनीकी रूप से अविज्जा चार सत्यों का 'अज्ञान' है, जबकि विज्जा के अर्थ हैं (1) व्यापक रूप से कोई भी ज्ञान या 'विज्ञान' (पुराने अर्थ में) और (2) तकनीकी रूप से 'त्रिविध विज्ञान' (तिविज्जा) जैसे कि भूतपूर्व जीवन का स्मरण (पुब्बेनिवासनुस्सति), दिव्य दृष्टि (दिब्ब-चक्खु) और दोषों के निवारण का ज्ञान (आसव-खया-नाना)।

44/1 ' हताब्बा - परित्यक्त करने के लिए लाया जा सकता है':/ एचडी परित्याग करने के लिए (?)। नेट्टिया कहते हैं ' यामेतब्बा; नेतब्बा ती अत्थो '; देखा गया। 181/ली.

[पृष्ठ 17]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

जब कोई व्यक्ति अपना ध्यान इन दो प्रकार की समझों से जोड़ता है, तो देखने के स्तर पर या अस्तित्व में बने रहने के स्तर पर जो समझ उत्पन्न होती है, वह अस्तित्व में बने रहने से संबंधित समझ है। [अब] सुनी गई बातों से संबंधित समझ दूसरे के कथन से उत्पन्न होती है। चिंतन से संबंधित समझ स्वयं के लिए गढ़े गए तर्कसंगत ध्यान से उत्पन्न होती है । अस्तित्व में बने रहने से संबंधित समझ वह ज्ञान है जो दूसरे के कथन और स्वयं के लिए गढ़े गए तर्कसंगत ध्यान से उत्पन्न होता है (देखें पे 233)।

47. जिसमें दो प्रकार की समझ होती है, अर्थात् श्रवण और चिंतन, वह संक्षेपित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है। जिसमें श्रवण संबंधी समझ तो होती है, पर चिंतन संबंधी समझ नहीं होती, वह विस्तृत ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है। जिसमें न तो श्रवण संबंधी समझ होती है और न ही चिंतन संबंधी समझ, वह मार्गदर्शन योग्य होता है (तुलना करें पीई 30)।

[चार सत्यों की प्रस्तुति के रूप में शिक्षा]

48. सच्चे विचार की शिक्षा क्या सिखाती है? चार सत्य, अर्थात् दुख, उत्पत्ति, समाप्ति और मार्ग।

निराशा और फल दुख हैं; संतुष्टि उत्पत्ति है; पलायन समाप्ति है; साधन और आदेश मार्ग हैं (धारा 32 देखें)। ये चार सत्य हैं।

46/1 तकनीकी शब्द 'दर्शन' (दशाना) प्रथम मार्ग को दर्शाता है, जिस क्षण निर्वाण का प्रथम दर्शन होता है। शेष तीन मार्गों के लिए 'अस्तित्व में बनाए रखना' (भावना - कारणवाचक संज्ञा, भू से उत्पन्न) समान तकनीकी शब्द है, जो निर्वाण के उस दर्शन को दोहराकर उसे अस्तित्व में बनाए रखते हैं। इस प्रकार इस अंतिम शब्द का एक महत्वपूर्ण तात्विक महत्व है।

46/2 ' योनिसो मनसिकारा —तर्कसंगत ध्यान'। योनि (शाब्दिक अर्थ 'गर्भ') का प्रयोग लाक्षणिक रूप से उस 'कारण' के लिए किया जाता है जिससे कोई विचार 'जन्म लेता है', अर्थात् एक अनिवार्य शर्त (पच्चया), देखें एम. iii, 142। मनसिकारा का अर्थ वही है जो यह कहता है, अर्थात् 'मन में क्रिया करना'। यह हमेशा अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। तकनीकी शब्द योनिसो मनसिकारा ('तर्कसंगत ध्यान') का अर्थ है अस्तित्व की विशिष्ट सशर्तता के संदर्भ में सोचना। इसका उत्कृष्ट उदाहरण एस. ii, 105f. में दिया गया है; इसका विपरीत, अयोनिसो मनसिकारा , विचारों की कोई भी ऐसी श्रृंखला है जो अस्तित्व की उस विशिष्ट सशर्त संरचना की अनदेखी करती है (देखें एम. i, 7), और जिसके परिणामस्वरूप गलत विचार बनते हैं और फलस्वरूप पीड़ा उत्पन्न होती है। इसे लौकिक ('ऐतिहासिक') कारणता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

46/3 'स्वयं के लिए ढाला गया' मुख्य रूप से एस . ii, 105f में वर्णित 'तर्कसंगत ध्यान' द्वारा मूल सोच को संदर्भित करता है।

46/4 तुलना करें. पे 1-2.

[पृष्ठ 18]

पथप्रदर्शक

49. [अब] यह सच्चे विचार का चक्र है, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है:

<' यह पीड़ा है * बनारस में , भिक्षुओं , इसिपताना के हिरण पार्क में , मेरे द्वारा सत्य विचार का अद्वितीय चक्र इस प्रकार चलाया गया था जिसे भिक्षु 1 या देवता 2 या भगवान या मारा या देवत्व या दुनिया में किसी के द्वारा रोका नहीं जा सकता था ... > और संपूर्ण 'सत्य विचार का चक्र' [प्रवचन उद्धृत किया जाना चाहिए] (cf. एस. v, 424)।

इसमें मापहीन शब्द, मापहीन अक्षर (देखें ए . ii, 182), वाक्यांश, भाव, भाषाविज्ञान और मापहीन प्रदर्शन (देखें §27) हैं, लेकिन उसी अर्थ [नौ गुना धागे में] की व्याख्या, प्रदर्शन, प्रकटीकरण, विश्लेषण, प्रस्तुतिकरण और वर्णन (देखें §28) भी है (देखें पे 5)। यही दुख का आर्य सत्य है।

50. <' यही दुख का मूल है': बनारस में , भिक्षुओं , इसिपताना के हिरण पार्क में , मेरे द्वारा सच्चे विचार का अद्वितीय चक्र घुमाया गया था ... >.. .

51. [9] < ' यह बनारस में दुखों का निवारण है , भिक्षुओं ,...>

52. <' यही दुख के निवारण का मार्ग है': बनारस में , भिक्षुओं , इसिपताना के हिरण पार्क में , मेरे द्वारा सत्य विचार का अद्वितीय चक्र इस प्रकार चलाया गया था जिसे भिक्षु, देवता, ईश्वर, मार, दिव्यता या संसार में किसी के द्वारा रोका नहीं जा सकता> (देखें एस.वी. , 424)।

इसमें असीमित माप के शब्द, असीमित माप के अक्षर, मुहावरे, भाव, भाषाविज्ञान और असीमित माप के प्रदर्शन हैं, लेकिन उसी अर्थ का स्पष्टीकरण, प्रदर्शन, प्रकटीकरण, विश्लेषण, प्रस्तुतिकरण और वर्णन है [नौ प्रकार के सूत्र में]। यही दुख के निवारण के मार्ग का आर्य सत्य है।

49/1 समना का कोई पर्याप्त अनुवाद नहीं है । एम.ए. i, 113 में इसे 'कोई भी व्यक्ति जो गृहस्थ जीवन से बाहर चला गया है' के रूप में परिभाषित किया गया है और एम.ए. ii, 201 में आगे समझाया गया है।

49/2 पाली भाषा के तीन शब्द ब्रह्मा ('दिव्य' जैसे ब्रह्मा-विहार = 'दिव्य निवास', ब्रह्मचर्य = 'दिव्य जीवन' (ब्रह्मचर्य), ' ब्रह्मयान = 'दिव्य वाहन' (श्लोक 4)), ब्रह्मा ('उच्च देवत्व'), और ब्राह्मण ('दिव्य', 'पुजारी देव, पुजारिन-देव जाति, 'दिव्य जाति का') व्युत्पत्ति और अर्थ दोनों दृष्टियों से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। इन शब्दों पर अक्सर शब्द-खेल होते हैं, और प्रत्येक शब्द का अर्थ दूसरे से प्रभावित होता है। ब्रह्मा (विशेषण) ब्रह्मा ईश्वर की पूर्णता के गुण को दर्शाता है, और ब्राह्मण जाति सृष्टिकर्ता माने जाने वाले ब्रह्मा से अपनी उत्पत्ति का दावा करती है ।

[पृष्ठ 19]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

[शिक्षण को विभिन्न तरीकों से कैसे प्रस्तुत किया जाता है]

53. इसमें भगवान बुद्ध अक्षरों द्वारा व्याख्या करते हैं, शब्दों द्वारा प्रदर्शित करते हैं, वाक्यांशों द्वारा प्रकट करते हैं, भावों द्वारा विश्लेषण करते हैं, भाषा विज्ञान द्वारा प्रदर्शित करते हैं और प्रदर्शनों द्वारा वर्णन करते हैं।

54. इसमें, भगवान बुद्ध अक्षरों और शब्दों द्वारा 1 को संक्षेपित करते हैं, वे वाक्यांशों और भावों द्वारा 2 का विस्तार करते हैं, वे भाषा विज्ञान और प्रदर्शनों द्वारा विस्तृत करते हैं।

55. इसमें, संक्षेपण 1 आरंभ है, विस्तार 2 मध्य है, और विस्तृत करना अंत है (देखें §32)।

56. यह सच्चा विचार और मार्गदर्शक (अनुशासन), जब संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो यह उस प्रकार के व्यक्ति का मार्गदर्शन (अनुशासन) करता है जो संक्षिप्त रूप से प्राप्त ज्ञान से लाभान्वित होता है; अतः 'आरंभ में अच्छा' कहा गया है (§32)। जब इसे विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो यह उस प्रकार के व्यक्ति का मार्गदर्शन (अनुशासन) करता है जो विस्तृत ज्ञान से लाभान्वित होता है; अतः 'मध्य में अच्छा' कहा गया है (§32)। जब इसे विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो यह उस प्रकार के व्यक्ति का मार्गदर्शन (अनुशासन) करता है जो मार्गदर्शन के योग्य होता है; अतः 'अंत में अच्छा' कहा गया है (§32)।

57. इसमें, छह शब्द अर्थ से संबंधित हैं, अर्थात् व्याख्या करना , प्रदर्शित करना , प्रकट करना , विश्लेषण करना , दिखाना और वर्णन करना (§28); ये छह शब्द अर्थ से संबंधित हैं। [और] छह शब्द वाक्यांश से संबंधित हैं, अर्थात् अक्षर , शब्द , वाक्यांश , भाव , भाषाई और प्रदर्शन (§27); ये छह शब्द वाक्यांश से संबंधित हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, <भिक्षुओं , मैं तुम्हें एक सच्चा विचार सिखाऊंगा जो आरंभ में अच्छा , मध्य में अच्छा और अंत में अच्छा है , अपने अर्थ और अपने वाक्यांश के साथ; मैं एक दिव्य जीवन प्रदर्शित करूंगा जो पूर्णतः परिपूर्ण और शुद्ध है> (§32)।

58. [10] 'पूरी तरह से': 1 संसारों से अलग, संसारों के साथ मिश्रित नहीं

54/1 ' उग्घतेति —संक्षेपित करना': (देखें n. 41/1) पीटीएस नेट्टी इंडेक्स में दिया गया और पीईडी में उद्धृत 'खोलना, प्रकट करना' का अर्थ गलत है। संभवतः वहाँ विज़. 113 और 327 में वर्णित < 'हसिना > के 'हटाने' (उग्घती) के साथ भ्रम है।

54/2 ' विपंचयति - विस्तार करना' (अर्थात, संक्षिप्त अर्थ का विस्तार करना): देखें n. 41 /2.

55/1 ' उग्घटना —(संघनन की क्रिया)': पी.ई.डी. में नहीं है।

55 1 2 ' विपंचन —(विस्तार करने की क्रिया)' (अर्थात, एक संक्षिप्त कथन का विस्तार करना) : देखें n. 41 /2.

56/1 उग्घातीयन्तो , विपंचीयन्तो और विट्ठरीयन्तो, पीटीएस नेट्टी इंडेक्स में बताए गए अनुसार संज्ञावाचक शब्द नहीं हैं , बल्कि क्रियावाचक रूप के वर्तमान कृदंत हैं। 58/1 यह अनुच्छेद, पूर्णता के लिए, उद्धरण (§32) के अंतिम खंड को लेता है और उसकी व्याख्या करता है, जो इस अभिव्यक्ति विधि का आधार बनता है और जिस पर अब तक चर्चा नहीं की गई है। पीटीएस में छोटे अक्षरों में छापने की कोई आवश्यकता नहीं है।

[पृष्ठ 20]

पथप्रदर्शक

विचार। ' परिपूर्ण ': परिपूर्ण, जिसमें किसी चीज की कमी न हो और कोई फालतू चीज न हो। ' शुद्ध ': बेदाग, सभी दाग-धब्बों से मुक्त, सभी प्रकार के भेदों के लिए उपयुक्त।

59. < इसे 'पूर्ण पुरुष का पदचिह्न ' , ' पूर्ण पुरुष द्वारा प्रयुक्त वस्तु ' और ' पूर्ण पुरुष द्वारा अंकित वस्तु ' कहा जाता है > x (एम. i, 182)। इससे यह दिव्य जीवन स्पष्ट होता है। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'मैं एक पूर्णतः परिपूर्ण और शुद्ध दिव्य जीवन प्रदर्शित करूँगा।'

[जिनके लिए यह शिक्षा अभिप्रेत है]

60. यह सत्य विचार की शिक्षा किसके लिए है? भक्तों के लिए। इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

'संतुष्टि, निराशा,
पलायन, फल, साधन, भगवान बुद्ध के
भक्तों के लिए कोमना; यह विधि
क्या यह शिक्षा का संप्रेषण है? (§5)।

शिक्षा प्रदान करने का यह माध्यम समाप्त हो गया है।

*

---

2. जांच को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा

61. इसमें, जांच को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? जांच को संप्रेषित करने का तरीका निम्नलिखित श्लोक में संक्षेप में बताया गया है:

'इस थ्रेड में क्या पूछा गया है और किसका उत्तर दिया गया है?'
साथ ही एक श्लोक का भावार्थ भी,
और थ्रेड की शब्द-जांच:
यह विधि जांच को दर्शाती है' (§6)।

62. यह किस बात की जाँच करता है ? 2. यह जाँच करता है:

(1) अवधि, प्रश्न, उत्तर, निरंतरता (§§63-115) ;*

(2) संतुष्टि, निराशा, पलायन; फल, साधन, आदेश * (मोड 1);

59/1 तथागतरंजितम् (इस प्रकार पढ़ें) — तथागत+अरंजिता; मूल उपमा के लिए एम. i, 178 देखें ।

62/1 नेटीए (पृष्ठ 52) बताते हैं कि जांच में शब्दों के व्याकरणिक पहलू शामिल हैं , चाहे अभिव्यक्ति प्रश्न के रूप में हो (या उत्तर के रूप में , या उत्तर किस प्रकार प्रश्न के उत्तर के बाद आता है), और साथ ही पहले तरीके से व्यक्त करने के प्रारंभ में दिए गए छह शीर्षक , और यदि कोई हो तो 'पुनर्कथन-श्लोक ' भी । ' एत्था अनुरुपम गीति “ अनुगिति ” ति अयम पि अत्थो इच्चितो ' (पृष्ठ 52)।

[पृष्ठ 21]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

(3) व्याख्या-श्लोक (§116);

(4) वह सब जो नौ गुना तर्क-सूत्र में है (§117)।

यह कैसा रहेगा?

[(1) अवधि , प्रश्न , उत्तर , क्रमिकता]

63. यह सर्वप्रथम पूज्य अजिता द्वारा सुत्तनिपात के परायण अध्याय में भगवान बुद्ध से पूछे गए प्रश्न के अनुसार होगा :

<'बताओ] दुनिया किससे घिरी हुई है?'
आदरणीय अजिता ने ऐसा कहा था।
और यह किस माध्यम से प्रदर्शित नहीं होता?
और इस पर क्या लगा है? बताइए।
और इसका सबसे बड़ा डर क्या होगा ?
(एसएन. 1032; पी.ई. 82).

64. ये चारों पद एक ही प्रश्न हैं। 1 क्यों? क्योंकि इनमें एक ही वस्तु समाहित है। [11] क्योंकि इस प्रकार पूछने पर '[बताओ] वह संसार क्या है जो V द्वारा बंद है ', वह संसार के संदर्भ में व्यक्त प्रश्न पूछता है, [पूछने पर] 'और यह क्यों प्रदर्शित नहीं है?' वह संसार के अप्रदर्शित होने के बारे में पूछता है, [पूछने पर] 'और क्या है?'

63/1 4 निवुता (बंद करना) और 4 निवारण (बाधा डालना) को प्रत्यक्ष अवरोध के रूप में नहीं, बल्कि सड़क पर यातायात को रोकने वाली बाड़ या नदी के तटबंधों के रूप में समझा जाना चाहिए, जो पार्श्व निकास को रोकते हैं। धारा 66 और 499 देखें।

64/1 Imani cattari padani pucchitani, so eko panho को एक वाक्य के रूप में पढ़ें । यह एक नियम का उदाहरण है (जिसका हमेशा पालन नहीं किया जाता, उदाहरण के लिए, Pe 117 देखें) जो संकेतवाचक और संबंधवाचक सर्वनामों को नियंत्रित करता है, जहाँ अलग-अलग लिंग, वचन या कारक वाले दो संज्ञाओं को, जिनमें से एक या दोनों के साथ संकेतवाचक सर्वनाम हों, समरूप क्रिया द्वारा जोड़ा जाता है। इस उदाहरण में पुल्लिंग एकवचन, so, यद्यपि अर्थ में नपुंसक पुल्लिंग cattari padani को संदर्भित करता है , फिर भी दूसरे संज्ञा, यहाँ पुल्लिंग एकवचन, panho, के लिंग, वचन और कारक से सहमत होना चाहिए , जो पहले संज्ञा पर आधारित है (यहाँ सहसंयोजक hoti द्वारा समझा जाता है)। आगे के उदाहरण नीचे दिए गए हैं (पीटीएस पृष्ठ 28, 42, 86: देखें n. 469/1), और अन्य पुस्तकों में, जैसे, 'अनिच्चा भिक्खवे कामा तुच्च मूसा मोगधम्म , मायाकतम् एतम् भिक्खवे बललपानम् (एम. ii, 261), जहाँ नपुंसक एकवचन, एतम् अर्थ में पुल्लिंग कृदंत कामा को संदर्भित करता है , लेकिन बललपानम् के साथ वचन, लिंग और कारक में मेल खाता है , जिसमें संयोजक होति को समझा जाता है ('अस्थायी, भिक्षुओं, (हैं) कामुक इच्छाएँ और खाली और झूठे और घमंड के विचार से अविभाज्य, वे (हैं) मूर्खों की बातें जो छल से बनी हैं')। इस नियम को लागू करते समय पहचानने में विफलता अर्थ के बहुत भ्रम और बिना विराम चिह्नों वाली पांडुलिपियों के गलत विराम चिह्नों का कारण बन सकती है।

[पृष्ठ 22]

पथप्रदर्शक

क्या यह किससे सना हुआ है? कहो , 'वह दुनिया के सने होने के बारे में पूछता है, [और पूछते हुए] ' और इसका सबसे बड़ा डर क्या होगा?' वह उसी दुनिया के सबसे बड़े डर के बारे में पूछता है।

दुनिया 2 तीन प्रकार की है: अपवित्रता की दुनिया, अस्तित्व की दुनिया और क्षमताओं की दुनिया।

65. इसका उत्तर यह है:

अज्ञानता के कारण संसार कैद है ।
भगवान बुद्ध ने कहा, 'अजिता।'
यह गलत इच्छा और उपेक्षा के कारण प्रदर्शित नहीं होता है ।
और लालसा इसे धूमिल कर देती है, मैं कहता हूँ;
पीड़ा ही इसका सबसे बड़ा भय है ।
(एसएन. 1033; पे 13, 83).

66. उन चार पदों का उत्तर इन चार पदों द्वारा दिया जाता है: पहले का उत्तर पहले से, दूसरे का उत्तर दूसरे से, तीसरे का उत्तर तीसरे से और चौथे का उत्तर चौथे से।

'अज्ञान से संसार अवरुद्ध है' (9) प्रश्न का उत्तर है: '[बताइए] संसार किससे अवरुद्ध है? संसार अवरोधों से अवरुद्ध है; क्योंकि सभी प्राणियों के लिए अज्ञान ही अवरोध है, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है: <भिक्षुओं, मैं कहता हूँ कि सापेक्षतः सभी प्राणियों , सभी प्राणवायु प्राणियों , सभी जीवों के लिए केवल एक ही अवरोध है , अर्थात् अज्ञान; क्योंकि सभी प्राणियों के लिए अज्ञान ही अवरोध है । और भिक्षुओं, अज्ञान के पूर्ण अंत से , उसे त्यागने और मुक्त करने से ही प्राणियों के लिए कोई अवरोध नहीं रह जाता , मैं कहता हूँ> ( )। इससे प्रथम पद का उत्तर उचित रूप से सिद्ध होता है।

67. [और फिर से] 'यह इच्छा और उपेक्षा के कारण प्रदर्शित नहीं होता ' प्रश्न 6 का उत्तर है। और यह क्यों प्रदर्शित नहीं होता ? जब कोई व्यक्ति

64/2 लोक ('विश्व') शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है, जिनमें विशेष रूप से (1) अन्य लोगों और वस्तुओं का जगत (जैसे, एम. iii, 120), जो 'त्रित तत्व' (§§80, 353) है, (2) यह शरीर (जैसे, 8. i, 62; iv, 52), आदि को भेदकर देखा जा सकता है। भजन i, 122 में दस परिभाषाएँ दी गई हैं, जबकि दर्शन 204 में एक और त्रिविध परिभाषा है। यहाँ प्रयुक्त 'विश्व' शब्द लगभग 'ब्रह्मांड' के समान है।

65/1 ' विविचा -मिसविशिंग': एनडी2 (बर्म. एड., पृष्ठ 13) मैकचरिया द्वारा ग्लोस। यह संदिग्ध लगता है कि क्या यह पीटीएस नेटी इंडेक्स और पीईडी द्वारा सुझाए गए vid का एक वांछनीय है। देखा गया। 67/ली. नेत्तिया (पृ. 54) कहते हैं, ' विविच्चा ति विकिसिच्चा-हेतु विविचमच्चरियां ति संगहे वुट्टम। सी एफ पग पर वेविचम । 19, आदि.

66/1 ' परियायतो - सापेक्षतः' को यहाँ करनतो ('तर्क के अनुसार') द्वारा नेट्टिया में व्याख्यायित किया गया है ।

[पृष्ठ 23]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

जब वह बाधाओं से घिरा होता है, तो वह गलत कामना करता है (विविच्छति), 1 और 'गलत कामना' (विविच्छति) 1 को ही अनिश्चितता (विविच्छति) कहा जाता है। जब वह अनिश्चित (विद्किच्छन्तो) होता है , तो वह अपने विश्वास को स्थिर नहीं करता। जब वह अपने विश्वास को स्थिर नहीं करता, तो वह अनुपयोगी विचारों के त्याग और लाभकारी विचारों के सत्यापन के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यहाँ वह लापरवाही में लीन रहता है। जब वह लापरवाह होता है, तो वह उन विचारों को जागृत नहीं करता जो श्वेत पक्ष से संबंधित हैं। 2 जागृत न होने के कारण, वे उसे प्रकट नहीं होते, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है:

सत्य दूर से ही प्रदर्शित होते हैं।
जैसे हिमालय का पर्वत है;
लेकिन असत्य बातें यहाँ दिखाई नहीं देतीं ।
रात में तीरों की तरह उड़ो > (ध . 304).
इन्हें गुणों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है,
प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि से > ( ).

68. इससे दूसरे पद के उत्तर की उचित व्याख्या की जाती है।

6 और लालसा इसे दूषित करती है, मैं कहता हूँ 9 ' और यह किससे दूषित होती है? बताइए' का उत्तर है । ' लालसा ' नाम से जानी जाने वाली चीज़ को ही व्याकुलता कहते हैं। यह कैसे दूषित करती है? भगवान बुद्ध द्वारा बताए गए तरीके से:

जो वासना में लिप्त रहता है, उसे कभी अर्थ का ज्ञान नहीं होता।
जो वासना में डूबा रहता है उसे कभी कोई विचार नहीं आता,
अंधकार की धुंध एक आदमी को घेर लेती है
जब वह वासना को सहन करेगा > (cf. ए. iv, 96)।

अस्तित्व से अत्यधिक लगाव रखने वाले व्यक्ति में इस प्रकार की तीव्र लालसा को जब घोर प्रचंडता के रूप में लिया जाता है, तो संसार उसी से 'कलंकित' हो जाता है। इस प्रकार तीसरे पद का उत्तर उचित रूप से व्यक्त होता है।

69. [और अंत में] ' पीड़ा ही इसका सबसे बड़ा भय है' प्रश्न का उत्तर है: ' और इसका सबसे बड़ा भय क्या होगा?' पीड़ा दो प्रकार की होती है: शारीरिक और मानसिक। शारीरिक पीड़ा दर्द है, जबकि मानसिक पीड़ा शोक है। सभी प्राणी पीड़ा के प्रति संवेदनशील होते हैं। चूंकि पीड़ा के बराबर कोई भय नहीं है, तो उससे बड़ा भय कैसे हो सकता है? पीड़ा तीन प्रकार की होती है: शारीरिक पीड़ा, परिवर्तन में पीड़ा और निर्धारण में पीड़ा (देखें डी. iii, 216) ।

67/1 ' विविचति - बुरी कामना करना': देखें n. 65/1; यह यहाँ संज्ञा श्लोक में संज्ञा से बना एक क्रिया है।

67/2 पढ़ें सुक्के धम्मे , सीएफ। पे 95 (सुक्कदम्मा) और 131 (सुक्कापक्खो), 69/1 सीएफ। पे 19-20.

[पृष्ठ 24]

पथप्रदर्शक
यहाँ, संसार कभी न कभी शारीरिक पीड़ा और परिवर्तन दोनों से सीमित रूप से मुक्त होता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि संसार में ऐसे लोग हैं जिन्हें कम बीमारियाँ होती हैं और वे दीर्घायु होते हैं। परन्तु केवल पूर्ण मृत्यु ही नियति की पीड़ा से मुक्ति दिलाती है। इसीलिए ' पीड़ा ही इसका सबसे बड़ा भय है', क्योंकि नियति की पीड़ा ही संसार की पीड़ा का अंतर्निहित कारण है। इस प्रकार चौथे प्रश्न का उत्तर उचित रूप से निकलता है।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, ' अज्ञान के कारण संसार बंद है ...' (§65)।

70. <' धाराएँ हर जगह लगातार बहती रहती हैं'
आदरणीय अजिता ने ऐसा कहा था।
'वह क्या है जो धाराओं को बंद कर देता है?'
तो फिर बताओ, धाराओं का अवरोध क्या होता है?
जिससे जलधाराएँ अवरुद्ध हो जाती हैं
(स्व..1034; पे 83). 1
71. [13] पूछे गए ये चार पद दो प्रश्न हैं (देखें §126)। क्यों? क्योंकि यहाँ [प्रश्न] अनेक पदनामों के साथ पूछा गया है। इस प्रकार से आगे बढ़ते हुए, इस प्रकार दूषित दुनिया के साथ, (1) इसका शुद्धिकरण और (2) इसका उद्‌भव क्या है?
72. तदनुसार उन्होंने कहा, ' धाराएँ हर जगह बहती रहती हैं ': जब कोई व्यक्ति एकाग्र नहीं होता और लोभ, द्वेष और लापरवाही में अधिक लिप्त होता है, तो ये भावनाएँ उसमें निरंतर बहती रहती हैं। यहाँ, 'लोभ' लोभ से उत्पन्न होने वाला निष्फल मूल है, 'द्वेष' घृणा से उत्पन्न होने वाला निष्फल मूल है, और 'लापरवाही' भ्रम से उत्पन्न होने वाला निष्फल मूल है। जब कोई व्यक्ति एकाग्र नहीं होता, तो उसकी छह आधारों में तृष्णा निरंतर बहती रहती है: रूपों की तृष्णा, ध्वनियों की तृष्णा, गंधों की तृष्णा, स्वादों की तृष्णा, स्पर्शनीय वस्तुओं की तृष्णा और विचारों की तृष्णा; जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है: 'यह बहती रहती है ', भिक्षुओं: यह स्वयं में छह आधारों का संकेत है। आँख सुखद रूपों की ओर बहती रहती है और अप्रिय रूपों का विरोध करती है । कान... नाक... जीभ... शरीर...

70/1 इसी सूत्र में एक बाद के श्लोक पर एस. ii, 47f. पर चर्चा की गई है; §72 में अप्रमाणित उद्धरण एक समान चर्चा का हिस्सा प्रतीत होता है।
72/1 ' पतिहन्नति - प्रतिरोध करता रहता है': यह यहाँ पतिघ ('प्रतिरोध') संज्ञा के लिए क्रिया के रूप में कार्य करता है ; §75 भी देखें। पी.ई.डी. में नहीं है , लेकिन वहाँ पतिहन्ती के अंतर्गत देखें, साथ ही §96 में अप्पतिहता ('अप्रतिरोधित') और पतिघता ('प्रतिरोध') भी देखें।

[पृष्ठ 25]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
मन सुखद विचारों की ओर निरंतर प्रवाहित होता रहता है और अप्रिय विचारों का विरोध करता रहता है ( )। इसलिए यह हर तरह से प्रवाहित होता रहता है ( ) ।
हर तरह से। इसीलिए उन्होंने कहा , ' धाराएँ हर जगह बहती रहती हैं।'
73. [इन शब्दों के साथ] ' वह क्या है जो धाराओं को बंद कर देता है?' वह जुनून के निवारण के बारे में पूछता है। यह शुद्धि है। [इन शब्दों के साथ] 'तो बताओ , धाराओं का अवरोध क्या है, जिससे धाराएँ बंद हो जाती हैं ?' वह अंतर्निहित प्रवृत्तियों के उन्मूलन के बारे में पूछता है। यह उद्‌भव है (देखें §71)।
74. ये रहे उत्तर:
दुनिया में जो भी धाराएँ हैं ,
भगवान बुद्ध ने कहा, 'अजिता'
वे सचेतनता से अलग हो जाते हैं;
मैं धाराओं के संयम के बारे में बताता हूँ, जिससे

इन्हें सील किया जा सकता है, यह समझना महत्वपूर्ण है ।

(एसएन. 1035; पे 17, 84).

75. जब शरीर पर केंद्रित ध्यान को निरंतर बनाए रखा जाता है और उस पर विशेष ध्यान दिया जाता है, तो आँख सुखद रूपों की ओर आकर्षित नहीं होती और अप्रिय रूपों के प्रति अप्रतिरोध्य रहती है। कान... नाक ... जीभ ... शरीर ... मन सुखद विचारों की ओर आकर्षित नहीं होता , अप्रिय विचारों के प्रति अप्रतिरोध्य रहता है (देखें श्लोक 4, 200)। इसका कारण क्या है? क्योंकि इंद्रियाँ नियंत्रित और बंद हो जाती हैं। [14] किस कारण से नियंत्रित और बंद होती हैं? ध्यान के संरक्षण द्वारा। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा , 'वे ध्यान द्वारा बंद हो जाती हैं।'

76. [और फिर] अंतर्निहित प्रवृत्तियों का त्याग समझ से होता है। अंतर्निहित प्रवृत्तियों का त्याग होने पर आसक्ति भी त्याग जाती है। अंतर्निहित प्रवृत्तियों के त्याग के साथ ही क्यों ? जैसे किसी वृक्ष को उसके तने सहित पूरी तरह उखाड़ने पर फूल, फल, कोंपलें और कलियों का क्रम टूट जाता है (भजन संहिता 2, 218 देखें), उसी प्रकार अंतर्निहित प्रवृत्तियों का त्याग होने पर आसक्ति का क्रम टूट जाता है, समाप्त हो जाता है, ढक जाता है। किसके द्वारा? समझ द्वारा। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा है कि ' समझ ही वह तरीका है जिससे इन्हें समाप्त किया जा सकता है '।

*

72/2 सब्बा ('सभी तरीकों से'): abl. adv.

75/1 4 अविंचति - आकर्षित होना': अविज्जति के अंतर्गत पी.ई.डी. देखें ; यहाँ §72 में सवती ('लगातार बहते रहना') के विकल्प के रूप में कार्य करता है। नेटिए (पृष्ठ 57) अकद्धति द्वारा व्याख्या करता है।

76/1 किस्सा ('क्यों') यहाँ सामान्य सर्वनाम क्रियाविशेषण है, न कि सामान्य प्रश्नवाचक सर्वनाम, अनुसयस्सा के अनुरूप। तुलना करें किस्सा (भी 'क्यों') §94 में।

[पृष्ठ 26]

पथप्रदर्शक

77. <' समझ और जागरूकता।'
आदरणीय अजिता ने ऐसा कहा था।
और अब, महोदय, यह नाम और प्रपत्र:
तो मुझे बताओ कि मैं तुमसे क्या पूछ रहा हूँ?
इसका अंत कहाँ होगा?'
आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न के संबंध में,
अजिता, मैं अब तुम्हें बताऊँगी।
जहां यह नाम और रूप दोनों आते हैं
उनकी शेषहीन मुक्ति के लिए:
चेतना के समाप्त होने के साथ,
'यहीं पर इसका अंत होता है '
(एसएन . 1036; पे 84-5).

78. यह प्रश्न अर्थ के क्रम के बारे में पूछता है (धारा 198f भी देखें)। अर्थ के क्रम के बारे में पूछते समय, यह किस बारे में पूछता है? बिना कोई निशान छोड़े विलुप्त होने के तत्व के बारे में ।

79. तीन सत्य निर्धारित हैं, जो समाप्ति के विचार से अविभाज्य हैं: वे हैं दुख, उत्पत्ति और मार्ग; समाप्ति अनिश्चित है। इसमें, उत्पत्ति को दो स्तरों पर त्यागा जाता है: देखने के स्तर पर और अस्तित्व में बने रहने के स्तर पर। 1 देखने से तीन बंधन त्यागे जाते हैं: देहधारण दृष्टि, 2 अनिश्चितता और सद्गुण एवं कर्तव्य की गलत धारणा। 3 सात बंधन त्यागे जाते हैं।

78/1 यदि Pe को हटा दिया जाए, तो संभवतः यह 'अनुसंधि ' का अर्थवाचक या तार्किक 'अनुक्रम' के रूप में सबसे पहला प्रयोग है । PED ने PTS नेट्टी इंडेक्स में दिए गए 'पूर्ण समाप्ति' के अनुमान पर सही सवाल उठाया है , जो कि वाक्यविन्यास नियम को विषय-वस्तु (अर्थात 'विलुप्ति') से भ्रमित करने के कारण हुई गलती है, जो कि यहाँ नियम का उदाहरण है।

78/2 सा-उपदिशेष ('अंक शेष रहने पर') और अनुपदिशेष ('अंक शेष न रहने पर') शब्दों के लिए एम. ii, 257 देखें, जहाँ एक गैर-रूपकात्मक उपयोग से पता चलता है कि ये मूल रूप से चिकित्सा संबंधी शब्द थे, जिन्हें बाद में सादृश्य के आधार पर क्रमशः अरहंत के जीवनकाल में काम, घृणा और भ्रम के निवारण और उनके जीवनकाल के अंत में पंचश्रेणी प्रक्रिया के (भविष्य काल में) निवारण के लिए विस्तारित किया गया। इस दूसरे अर्थ के लिए इति. 38 देखें।

79/1 देखा गया। 46/1।

79/2 'देह-दृष्टिकोण' (सक्काया-दित्थी) स्वयं (अत्ता) की पहचान के 20 तरीकों को 5 श्रेणियों (देखें एम. आई, 300 और एम.ए.) के साथ संदर्भित करता है , यानी, यह विश्वास कि वे किसी न किसी रूप में स्वयं को 'देह' करते हैं।

79/3 'सद्गुण और कर्तव्य की गलतफहमी' शब्द, 'अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों का पालन' की तुलना में अधिक शाब्दिक है, जो सिलब्बत्तपरमासा के लिए प्रयोग किया जाता है। देखें ए. iv, 55; तुलना करें वीभ. 365 और विस. 684 में परमासा की परिभाषाएँ । इसका अर्थ केवल पुरस्कार की गलत अपेक्षाएँ हैं, न केवल 'बैल-सद्गुण' आदि जैसे अनुष्ठानिक आदतों और कर्तव्यों के अभ्यास के संबंध में (उदाहरण के लिए, एम. सुत्त 57 देखें), बल्कि यह विश्वास भी कि एकाग्रता और समझ के बिना केवल सद्गुण ही पर्याप्त है (देखें §895)।

[पृष्ठ 27]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

इन बातों को बनाए रखना: कामुक इच्छा, द्वेष, रूप की लालसा, निराकारता की लालसा, अहंकार, 4 बेचैनी, और शेष अज्ञान। 5

80. ये त्रितत्व [अस्तित्व] में दस बंधन हैं: 1 पाँच इस तरफ से संबंधित हैं और पाँच दूर की तरफ से।

81. [15] इसमें, तीन बंधन, अर्थात् देहधारण का दृष्टिकोण, अनिश्चितता और सद्गुण एवं कर्तव्य की गलतफहमी, उस क्षमता की अभिव्यक्ति के साथ समाप्त हो जाते हैं जो यह दर्शाती है कि मैं अंततः उस चीज़ को जान लूँगा जो अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है, और सात बंधन, अर्थात् इंद्रिय-इच्छा, द्वेष, रूप के प्रति वासना, निराकारता के प्रति वासना, अहंकार, बेचैनी और शेष अज्ञान, अंतिम ज्ञान की क्रिया की अभिव्यक्ति के साथ समाप्त हो जाते हैं। अब दो प्रकार का ज्ञान, अर्थात् वह जो इस प्रकार जानता है कि 'मेरे लिए जन्म समाप्त हो गया है', जो समाप्ति का ज्ञान है, और वह जो इस प्रकार जानता है कि 'इसके आगे और कुछ नहीं है', जो गैर-उत्पत्ति का ज्ञान है, अंतिम ज्ञाता क्षमता का निर्माण करते हैं (देखें §890)।

82. इसमें, जो व्यक्ति अरहंतत्व के सर्वोच्च फल को प्राप्त करता है, उसमें 'मैं अंततः उस अज्ञात को जान लूँगा' की क्षमता और 'अंततः जानने की क्रिया' की क्षमता समाप्त हो जाती है।

यहाँ, दो प्रकार के ज्ञान, अर्थात् समाप्ति का ज्ञान और गैर-उत्पत्ति का ज्ञान, एक ही प्रकार की समझ हैं; परन्तु आरोपण के अनुसार इसके दो नाम हैं: 1. जो इस प्रकार समझता है कि 'मेरे लिए जन्म समाप्त हो गया है', उसके लिए इसका नाम 'समाप्ति का ज्ञान' है, जबकि जो इस प्रकार समझता है कि 'इसके आगे और कुछ नहीं है', उसके लिए इसका नाम 'गैर-उत्पत्ति का ज्ञान' है। यही 'समझ' (§77) है।

79/4 माना (अस्मि-मान के रूप में 'मैं हूँ' का अहंकार—देखें एस. iii, 128-32) मननना और मन्निता (जैसे, एम. iii, 246) और मननति (एम. i, 1) से निकटता से संबंधित है, जिनका अर्थ है 'अहंकार' और 'कल्पना करना'। इन सभी का मूल मन ('मापना', जिससे मनो 'मन' बनता है) है। पाली और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में 'अहंकार' और 'अहंकार' या 'अवधारणा' के रूप में 'अहंकार' के बीच का शब्द-क्रीड़ा जीवंत है। 'अभिमान' इस शब्द-क्रीड़ा को नष्ट कर देता है, लेकिन इसका प्रयोग अतिमाना के लिए किया जा सकता है , जिसके प्रयोग काफी सीमित हैं।

79/5 नेट्टी ए और बी बी द्वारा दिया गया अविज्जावसेसा पाठ शायद अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, हालांकि नेट्टी ए ने पीटीएस पाठ को वैकल्पिक बताया है , जिसका समर्थन बी और सी दोनों करते हैं। यदि निरवसेसा सही है, तो इसका अर्थ 'शेषरहित' ('कुछ भी शेष नहीं') होगा, न कि पीटीएस नेट्टी सूचकांक में दिए गए 'समावेशी' का।

80/1 'त्रित तत्व' इंद्रिय-इच्छा तत्व (या अस्तित्व का तरीका), रूप तत्व (या अस्तित्व का तरीका), और निराकार तत्व (या अस्तित्व का तरीका) है; देखें पे 116, और तुलना करें जैसे, एम. iii, 63.

83/1 ' संकेतेना - आरोपण के अनुसार': संकेत का शाब्दिक अर्थ है 'मुलाकात' या 'नियुक्ति', देखें §96. यहाँ तात्पर्य यह है कि समझ के अलग-अलग नाम होते हैं, इस बात के अनुसार कि यह किस बारे में है।

[पृष्ठ 28]

पथप्रदर्शक

समझ की क्रिया का अर्थ (तुलना करें भजन 1, 1), 2 और यह ' सचेतनता (§77) है, जो [अपनी वस्तु से] दूर न जाने की क्रिया के अर्थ में है 3 जैसा कि [इसने] देखा है।

84. इसमें, धारणा की पाँच श्रेणियाँ ' नाम-और-रूप ' (§77) का निर्माण करती हैं। 1 और इसमें, पाँचवें के रूप में संपर्क रखने वाले विचार 2 नाम का निर्माण करते हैं; जबकि पाँच रूप-सक्षमताएँ [आँख से शुरू होकर] रूप का निर्माण करती हैं; और ये दोनों, संबंधित चेतना के साथ, नाम-और-रूप का निर्माण करते हैं (cf. Pe 116)।

85. भगवान बुद्ध से उस [नाम-और-रूप] के अंत के बारे में पूछते हुए, पूज्य अजित ने पृच्छना में इस प्रकार कहा , ' समझ और जागरूकता। और [अब], हे प्रभु , इस नाम-और-रूप के बारे में , मुझे वह बताइए जो मैं आपसे पूछता हूँ , यह कहाँ समाप्त होता है ? (§77)।

86. यहाँ, सजगता और समझ चार क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं: सजगता दो क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् सजगता क्षमता और एकाग्रता क्षमता, जबकि समझ दो क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् समझ क्षमता और

83/2 अंग्रेजी, क्रिया 'समझना' के मामले में, पन्ना (पदनाम 'समझ') और पजानना (पदनाम '(समझने की क्रिया)') के दो रूपों के बीच अंतर नहीं करती है, जैसा कि वह समानांतर रूपों नाना (पदनाम 'ज्ञान') और जनाना (पदनाम 'जानना') के साथ करती है ।

83/3 ' अपिलापना —न भटकना': यह शब्द नेट्टी और इसी तरह के सभी संदर्भों के लिए पीईडी में दिए गए अर्थ से भिन्न है। यह शब्द अमूर्त रूप अपिलापनाता (अर्थात, अ + पिलापना + ता : पीईडी देखें) के समान है और नेट्टीए में इसे ओगहाना के साथ व्याख्यायित किया गया है। मूल शब्द पिन (तैरना या तैरना) है, लैप नहीं; पीईडी पिलावती और सीपीडी भी देखें । सचेतनता को मन को उसके विषय पर 'स्थिर' रखने और उसे उससे 'भटकने' से रोकने के रूप में माना जाता है।

84/1 सूत्रों में 'नाम-रूप' (नामरूप) में चेतना (विन्नन) कभी शामिल नहीं होती है —उदाहरण के लिए, एम. i, 53; डी. ii, 62-3; एम. iii, 17 देखें (यह बिंदु जितना अनुमान लगाया जा सकता है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है)—लेकिन बाद के साहित्य में इसे अक्सर (वास्तविक आश्रित-उत्पत्ति संदर्भों के बाहर) चेतना को शामिल करने के लिए लिया जाता है (अर्थात, सभी 5 श्रेणियों को शामिल करने के लिए, न कि केवल पहली चार को; उदाहरण के लिए, विज़. 590)। यह कृति अनिर्णीत प्रतीत होती है; यह अंश नाम-रूप को सभी 5 श्रेणियों के साथ पहचानता है, जिसकी पुष्टि §226 द्वारा की गई है, लेकिन §445 में 'नाम-शरीर' की परिभाषा भिन्न है और एम. i, 53 में दी गई परिभाषा के अधिक निकट है; तुलना करें §92 भी।

84/2 ' फस्सापंचमका —संपर्क पाँचवें के रूप में' (इस अभिव्यक्ति के लिए विज़. 626 और एम.ए. i, 276; iii, 262 देखें)। यहाँ जिस सूत्र का उल्लेख किया गया है, वह §445 में वर्णित 6 चीज़ें हैं, जिनमें से संपर्क पाँचवीं है। लेकिन एक अन्य समान अभिव्यक्ति, फस्सापंचक ('संपर्क-पंचक'), टीकाओं (जैसे, एम.ए. i, 249) में Dhs. §1 में सूचीबद्ध संज्ञान के पहले 5 अपरिहार्य सहवर्ती तत्वों, अर्थात् 'संपर्क, भावना, बोध, चुनाव, संज्ञान' को संदर्भित करने के लिए प्रयोग की जाती है । एम. i, 53 में 'नाम' की परिभाषा को 5 तत्वों, अर्थात् 'भावना, बोध, चुनाव, संपर्क और ध्यान' द्वारा परिभाषित किया गया है, और एम. iii, 26fF में 5 तत्वों के समूह 'संपर्क, भावना, बोध, चुनाव, संज्ञान' को भी देखें।

[पृष्ठ 29]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

ऊर्जा संकाय। इन चारों संकायों में विश्वास रखने का कोई भी कार्य, भरोसा करने का कार्य, आस्था संकाय कहलाता है।

87. इसमें, सर्वोपरिता में विश्वास के साथ संज्ञान का कोई भी एकीकरण इच्छाशक्ति की एकाग्रता है। संज्ञान की एकाग्रता के दौरान विकारों के दमन से प्राप्त कोई भी विचार-शक्ति, या अस्तित्व में बनाए रखने की कोई भी शक्ति, प्रयास है। 1 [16] इसमें, कोई भी श्वास लेना और छोड़ना, कोई भी चिंतन और अन्वेषण, कोई भी बोध और भावना, कोई भी स्मृति और इरादे, संकल्प हैं। अतः इच्छाशक्ति की पूर्व एकाग्रता, और फिर विकारों के दमन से प्राप्त प्रयास 1 —और ये संकल्प—इन दोनों को वह इस [प्रथम] <सफलता के आधार के रूप में अस्तित्व में रखता है जिसमें प्रयास 1 और संकल्पों के साथ इच्छाशक्ति की एकाग्रता होती है > (देखें एस.वी. , 254), जो < एकांत द्वारा समर्थित है, लुप्त होने द्वारा समर्थित है, समाप्ति द्वारा समर्थित है, और त्याग में परिवर्तित होती है > (एस.वी. , 340)।

88. इसमें, प्रमुखता में ऊर्जा के साथ संज्ञान का कोई भी एकीकरण ऊर्जा का संकेंद्रण है...

89. इसमें, प्रमुखता में संज्ञान के [प्राकृतिक संकेंद्रण] के साथ संज्ञान का कोई भी एकीकरण संज्ञान का संकेंद्रण है...

90. इसमें, ज्ञान और जिज्ञासा का सर्वोपरि एकीकरण जिज्ञासा का केंद्रीकरण है। जब ज्ञान केंद्रित होता है, तब विकारों के दमन से उत्पन्न विचार-शक्ति या अस्तित्व बनाए रखने की शक्ति प्रयास है। इसमें, प्रत्येक श्वास लेना और छोड़ना, कोई भी चिंतन और अन्वेषण, कोई भी बोध और भावना, कोई भी स्मृति और इरादे, संकल्प हैं। अतः, जिज्ञासा का पूर्व केंद्रीकरण, और फिर विकारों के दमन से उत्पन्न प्रयास—और ये संकल्प—इन दोनों को वह इस [चौथे] <सफलता के आधार के रूप में अस्तित्व में रखता है जिसमें जिज्ञासा , प्रयास और संकल्प तीनों समाहित हैं >, जो <एकांत, क्षीणन, समाप्ति और अंत में त्याग द्वारा समर्थित है>।

91. सभी एकाग्रता का मूल ज्ञान है, ज्ञान द्वारा ही इसकी घोषणा की जाती है, और ज्ञान के साथ इसका समानांतर घटित होना 1 है।

87/1 सभी संपादक पीटीएस पाठ ' पहाना' की पुष्टि करते हैं , हालांकि नेट्टिया ने 'पधाना' को एक विकल्प के रूप में दिया है और दोनों पर टिप्पणी की है। बाद वाला सूत्र 'सफलता के आधार' के लिए सूत्र (चंदा-) समाधि-पधाना-संखारा-सामन्नगत को देखते हुए अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, जिस पर यहां चर्चा की जा रही है।

91/1 'अनुपरिवत्तति - के साथ समानांतर घटित होना': सही अर्थ (जो पी.ई.डी. में नहीं दिया गया है) के लिए 'समानांतर' के अपने सामान्य अर्थ में ' आर्म ', ' पूर्ण ' के अपने व्यापक अर्थ में (= 'पूरी तरह से') और 'घटित होना' के अर्थ में वत्तति (तुलना करें: पावत्तति , निब्बत्तति , आदि) को लेना आवश्यक है ; अर्थात्, 'साथ-साथ घटित होता है'।

[पृष्ठ 30]

पथप्रदर्शक

वह खुले और अबाधित ज्ञान को स्पष्टता के साथ बनाए रखता है:
जैसा पहले , वैसा बाद में; जैसा बाद में , वैसा पहले; . . .
और जैसे रात में , वैसे ही दिन में; और जैसे दिन में , वैसे ही रात में >
(ए. आई, 236; एस. वी, 277).

92. पाँच लाभकारी शक्तियाँ [विश्वास आदि की] चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं , चेतना के उत्पन्न होने पर उत्पन्न होती हैं और चेतना के समाप्त होने पर समाप्त हो जाती हैं; 2 और नाम-रूप का कारण चेतना है, और इसका घटित होना चेतना के साथ इसकी स्थिति है। जब इसका कारण मार्ग द्वारा बाधित होता है, तो चेतना पोषण रहित, किसी भी प्रत्याशा से तृप्त न होने पर, 3 बिना किसी आधार के, बिना किसी पुनर्संबंध के, समाप्त हो जाती है (cf. §306)। बिना कारण और बिना किसी स्थिति के नए अस्तित्व में कोई नाम-रूप घटित नहीं होता है। [17] इसलिए चेतना के समाप्त होने के साथ, नाम-रूप समाप्त हो जाता है, और साथ ही समझ और जागरूकता भी। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:

आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न के संबंध में ,
अजिता , मैं अब तुम्हें बताऊँगी।
जहां यह नाम और रूप दोनों आते हैं
उनकी शेषहीन मुक्ति के लिए:
चेतना के समाप्त होने के साथ
' यहीं पर इसका अंत होता है' > (§77).

*
93. <' विचारों के स्वामी हैं'
आदरणीय अजिता ने ऐसा कहा था।
और यहाँ कई दीक्षा प्राप्त करने वाले लोग हैं:
महोदय, यदि पूछा जाए तो आपमें वह कौशल है।
मुझे उनके व्यवहार के बारे में बताने के लिए' > (Sn. 1038; Pe 85).

इसका अर्थ धारा 92 में स्पष्ट किया गया है, देखें Dhs . पृष्ठ 5. क्या PED का अर्थ 'घूमना-फिरना' कभी उचित है? देखें CPD , साथ ही n. 92/1 और Pe 82.

92/1 ' सहभु —साथ में विद्यमान': देखें ध्स. §1197. यह, अनुपरिवत्ती के विचार के साथ (अंतिम टिप्पणी देखें), बाद के टीका साहित्य में रूपधम्म और अरूपधम्म की घटना के संबंध में 'एक साथ उत्पन्न होने और समाप्त होने वाले विचार, और एक साथ उत्पन्न होने और अलग-अलग समाप्त होने वाले या अलग-अलग उत्पन्न होने और एक साथ समाप्त होने वाले विचार' के सिद्धांत में विकसित किया गया था (VbhA. 25ff.)।

92/2 cf. यामाहा ii, इफ़.

92/3 अभिनंदति (अपने संज्ञा अभिनंदन की तरह) का प्रयोग अधिकतर 'भविष्य की ओर आशापूर्वक देखने' के अर्थ में किया जाता है, जबकि नंदति का सीधा अर्थ 'आनंदित होना' है; लेकिन यह अंतर कठिन नहीं है।

[पृष्ठ 31]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

94. पूछे गए ये तीनों शब्द तीन प्रश्न हैं। क्यों? क्रमशः सिद्ध पुरुष, दीक्षित पुरुष, और अंतर्दृष्टि द्वारा घोषित त्याग के प्रकार के रूप में व्याख्या करके । क्योंकि जब उन्होंने कहा ' विचारों के स्वामी हैं', तो वे अरहंत पद के बारे में पूछ रहे थे; जब उन्होंने कहा ' और यहाँ कई दीक्षित पुरुष हैं ', तो वे सात प्रकार के दीक्षितों के बारे में पूछ रहे थे; और जब उन्होंने कहा 'महोदय, यदि पूछा जाए, तो आपमें उनके व्यवहार को बताने का कौशल है ' , तो उनसे अंतर्दृष्टि द्वारा घोषित त्याग के प्रकार के बारे में पूछा जा रहा था।

95. यहाँ उत्तर दिया गया है:
वह कामुक इच्छाओं को नहीं चाहेगा।
भगवान बुद्ध ने कहा, 'अजिता।'
'उनका मन शांत रहेगा;'
और सभी विचारों में निपुण, एक भिक्षु
वह अपनी यात्राओं में सचेत रहता है > (संख्या 1039; पतरस 85)। 1

96. भगवान बुद्ध की सभी शारीरिक क्रियाएँ ज्ञान द्वारा निर्देशित होती हैं और ज्ञान के साथ ही घटित होती हैं। उनकी सभी मौखिक क्रियाएँ ज्ञान द्वारा निर्देशित होती हैं और ज्ञान के साथ ही घटित होती हैं। उनकी सभी मानसिक क्रियाएँ ज्ञान द्वारा निर्देशित होती हैं और ज्ञान के साथ ही घटित होती हैं। उनका ज्ञान और दृष्टि अतीत काल, भविष्य काल और वर्तमान काल, सभी में अप्रतिबंधित है । उनके ज्ञान और दृष्टि में क्या प्रतिरोध हो सकता है?[18] ज्ञान और दृष्टि में प्रतिरोध वह अज्ञान और दृष्टिहीनता है जो अनित्य, पीड़ादायक और अनात्म से संबंधित है। जैसे कोई व्यक्ति तारों के रूप तो देख सकता है, पर उन्हें गिनने का तरीका नहीं जानता: यही ज्ञान और दृष्टि में प्रतिरोध है। परन्तु भगवान बुद्ध का ज्ञान और दृष्टि अप्रतिबंधित है; क्योंकि प्रबुद्धों, भगवान बुद्धों का ज्ञान और दृष्टि अबाधित है।

97. यहाँ एक दीक्षित व्यक्ति को दो प्रकार के विचारों के प्रति सचेत रहना होगा: उकसाने वाले विचारों के प्रति अज्ञानता से बचना होगा।

94/1 देखा गया। 76/1।

94/2 ' असेखा - सिद्ध' (शाब्दिक अर्थ: 'जिसका प्रशिक्षण पूरा हो चुका है') उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द है जिसने अरहंतत्व का फल प्राप्त कर लिया है। ' सेखा - दीक्षित' सात प्रकार के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त शब्द है, अर्थात् वे व्यक्ति जिन्होंने चार मार्ग और प्रथम तीन फल प्राप्त कर लिए हैं।

95 /I प्रबुद्ध व्यक्ति के स्वरूप की जाँच -पड़ताल यहाँ एक रूप में, यहाँ वर्णित संचार विधि के रूप में, और दूसरे रूप में §§541-94 में (उसी विधि का संयुक्त विवेचन) प्रस्तुत है। बुद्ध का कथन, पूछताछ करने के आदेश के रूप में, विशेष रूप से एम. सुत्त 47 (विमंसक-सुत्त) में पाया जाता है, देखें एम. सुत्त 91 भी।

96/1 सर्वज्ञता के लिए n. 326/2 देखें।

[पृष्ठ 32]

पथप्रदर्शक

वासना से प्रेरित और जुनून को भड़काने वाले विचारों के प्रति घृणा से प्रेरित। 1

98. इनके संबंध में भगवान बुद्ध ने कहा, ' वह कामुक इच्छाओं को नहीं चाहेगा ' (§93) किसी भी इच्छा, मोह, आकांक्षा, लालसा या क्रीड़ा के विरुद्ध चेतावनी देते हुए ; और ' वह मन से अविचलित रहेगा ' शब्दों के साथ उन्होंने आसक्ति के निवारण का उल्लेख किया । क्योंकि जब कोई दीक्षित व्यक्ति इस प्रकार चाहता है तो वह अजन्मे दोष को जागृत करता है और उत्पन्न दोष को बढ़ाता है। परन्तु जो व्यक्ति अविचलित इरादे से (देखें पे 146) और बिना किसी चाहत के प्रयास करता है, <(i) वह अजन्मे बुरे और लाभहीन विचारों के अजन्मे होने के लिए इच्छा उत्पन्न करता है , प्रयास करता है , ऊर्जा को प्रेरित करता है , ध्यान लगाता है और प्रयास करता है; (ii) वह उत्पन्न बुरे और लाभहीन विचारों के त्याग के लिए इच्छा उत्पन्न करता है , प्रयास करता है , ऊर्जा को प्रेरित करता है , ध्यान लगाता है और प्रयास करता है ; (iii) वह अजन्मे लाभकारी विचारों के उद्भव के लिए इच्छाशक्ति उत्पन्न करता है , प्रयास करता है , ऊर्जा को प्रेरित करता है , ध्यान लगाता है और परिश्रम करता है , और (iv) वह उत्पन्न लाभकारी विचारों की निरंतरता , स्मरण , वृद्धि , प्रचुरता , निरंतरता और पूर्ति के लिए इच्छाशक्ति उत्पन्न करता है , और वह प्रयास करता है , ऊर्जा को प्रेरित करता है , ध्यान लगाता है और परिश्रम करता है।

(एम. ii, 11).

99. (i) अजन्मे, बुरे और निष्फल विचार क्या हैं? ये हैं इंद्रिय-संबंधी सोच, द्वेषपूर्ण सोच और क्रूरतापूर्ण सोच। ये अजन्मे, बुरे और निष्फल विचार हैं। (ii) उत्पन्न, बुरे और निष्फल विचार क्या हैं? ये अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ हैं, निष्फलता की जड़ें हैं। ये उत्पन्न, बुरे और निष्फल विचार हैं। (iii) अजन्मे, लाभकारी विचार क्या हैं? ये वे क्षमताएँ हैं जो धारा-प्रवेशकर्ता से संबंधित हैं। ये अजन्मे, लाभकारी विचार हैं। [19] (iv) उत्पन्न, लाभकारी विचार क्या हैं? ये वे क्षमताएँ हैं जो उस व्यक्ति से संबंधित हैं जो [किसी मार्ग पर] खड़ा है। ये उत्पन्न, लाभकारी विचार हैं।

97/1 नेट्टिया पतिघत्थनियेसु और परि-युत्थनियेसु को अस्वीकार किए बिना वैकल्पिक पाठन पर चर्चा करता है ।

98/1 पुच्चा की जगह C, Ba और Bb के साथ मुच्चा पढ़ें।

98/2 यह अंश 4 सही प्रयासों (समप्पधान) का वर्णन करता है।

99/I नेटिया यहाँ 'उत्पन्न होने' के प्रकार को संदर्भित करता है जिसे 'बढ़ने के लिए मिट्टी मिलने से उत्पन्न होना' कहा जाता है (विज़. 687)। यहाँ 'अंतर्निहित प्रवृत्तियों' के विचार में निहित उत्पन्न होने की क्षमता का तात्पर्य है। इस 'उत्पन्न क्षमता' या दायित्व को यहाँ उत्पन्न बुराई के रूप में माना गया है।

99/2 ' अत्थमकस्स - जो किसी मार्ग पर खड़ा हो': §274 भी देखें, जहाँ संदर्भ द्वारा अर्थ स्पष्ट किया गया है (तुलना करें भजन 2, 193; केव 243-51; याम 1, 322; 2, 197; एमएए 1, 137)। पीईडी और सीपीडी दोनों में दिए गए स्पष्टीकरण सही नहीं हो सकते, और अरहंतत्व के फल के स्वामी को प्रथम मानकर 'आठ व्यक्तियों' की गिनती पीछे की ओर करने और इस प्रकार इस शब्द के लिए धारा-प्रवेश मार्ग तक पहुँचने का कोई पूर्व उदाहरण नहीं दिखता। वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है कि यह अत्था ('आठ') से व्युत्पन्न नहीं है, बल्कि अ + था ('खड़े होना') से व्युत्पन्न है, इस स्थिति में यह पतिपन्नक का पर्यायवाची है। नेट्टिया , धारा 274 पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि धारा 274 में पहले उल्लेख के लिए 'अत्थमकस्सा [साधन] उस व्यक्ति का है जो धारा-प्रवेश के फल के सत्यापन के मार्ग पर है (पतिपन्नस्स) ', और फिर से ' अत्थमकस्सा [पुनः उल्लेखित] [साधन] उस व्यक्ति का है जो वापसी के मार्ग पर खड़ा है' (पृष्ठ 95-96)।

अतः इस अनुच्छेद में, क्रमांक (iii) धारा-प्रवेश के फल के धारक की क्षमताएँ हैं, और क्रमांक (iv) किसी भी मार्ग पर 'खड़े' व्यक्ति की क्षमताएँ हैं। देखें अभिव्यक्ति चतुमग्गत्थ पुग्गला (अभिधम्मत्थसंगहा , संखीपवन्नन-लोकोत्तरचित्त खंड)।

[पृष्ठ 33]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

100. जिस शक्ति से वह इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से प्रेरित चिंतन को रोकता है, वह सजगता है। जिस शक्ति से वह द्वेष से प्रेरित चिंतन को रोकता है, वह एकाग्रता शक्ति है। जिस शक्ति से वह निर्दय और बुरे विचारों को उत्पन्न होते ही त्याग देता है , समाप्त कर देता है , नष्ट कर देता है और सहन नहीं करता है (एम. i, 11), वह समझ शक्ति है। और इन चारों शक्तियों पर भरोसा करने का कोई भी कार्य विश्वास शक्ति है (cf. §96)।

101. < यहाँ, आस्था की क्षमता कहाँ मिलती है? धारा-प्रवेश के चार कारकों में। ऊर्जा की क्षमता कहाँ मिलती है? चार सही प्रयासों में (देखें §98)। जागरूकता की क्षमता कहाँ मिलती है? जागरूकता के चार आधारों में। एकाग्रता की क्षमता कहाँ मिलती है? चार ध्यान में। समझ की क्षमता कहाँ मिलती है? चार आर्य सत्यों में > (तुलना करें पीई 128; एस.वी.वी. , 196)।

102. इसीलिए भगवान बुद्ध ने लाभकारी विचारों में तल्लीन रहने वाले दीक्षित व्यक्ति के बारे में मानसिक अविचलितता का वर्णन किया है। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'वह मन से अविचलित रहेगा।'

103. 'सभी विचारों में कुशल': संसार तीन प्रकार का है: अपवित्रता का संसार, अस्तित्व का संसार और क्षमताओं का संसार (§64)।

104. इसमें, अस्तित्व (सम्मोहन) का जगत अशुद्धता के जगत के माध्यम से उत्पन्न होता है। यही इंद्रियों की उत्पत्ति का कारण बनता है। जब इंद्रियों को अस्तित्व में रखा जाता है, तब ज्ञान का निदान होता है। 1 उस निदान की दो प्रकार से जांच की जानी चाहिए: दृष्टि द्वारा निदान और त्याग द्वारा निदान। क्योंकि जब कोई ज्ञाता ज्ञान को समझता है, तब ज्ञान का निदान 1 दृष्टि और ध्यान के साथ-साथ वैराग्य से होता है, और तब उसमें दो विचार निपुणता प्राप्त करते हैं: दृष्टि की निपुणता और अस्तित्व में बनाए रखने की निपुणता।

104/1 बा और नेट्टिया के साथ नेय्यम पढ़ना, और केवल पहली बार बी बी ; सी पीटीएस का समर्थन करता है ।

[पृष्ठ 34]

पथप्रदर्शक

उस ज्ञान को पांच भागों में समझा जाना चाहिए, अर्थात् परिचय, निदान, त्याग, अस्तित्व में बनाए रखना और सत्यापन।

105. [20] इसमें, परिचय क्या है? यह विचारों की व्यक्तिगत विशेषताओं (§§159ff.) और विचारों के भेदभाव तथा अर्थों के भेदभाव के बारे में कोई भी ज्ञान है। यही परिचय है।

106. इसमें निदान क्या है? इन तरीकों से परिचित होने के बाद, यह निम्नलिखित प्रकार का कोई भी निदान है: 'यह लाभदायक है, यह अलाभदायक है, यह निंदनीय है, यह निर्दोष है, यह काला है, यह उज्ज्वल है, इसकी खेती की जानी चाहिए, इसकी खेती नहीं की जानी चाहिए, इन विचारों को इस प्रकार लेने पर यह फल प्राप्त होता है—इस प्रकार लेने पर इनका यही अर्थ है।' यही निदान है।

107. इस प्रकार निदान करने के बाद, तीन प्रकार के विचार शेष रहते हैं: जिन्हें त्यागना है, जिन्हें अस्तित्व में रखना है, और जिन्हें सत्यापित करना है।

108. इसमें किन विचारों को त्यागना है? वे सभी विचार जो लाभहीन हैं।

109. इसमें किन विचारों को कायम रखा जाना चाहिए? कोई भी विचार जो लाभदायक हो।

110. इसमें किन विचारों का सत्यापन किया जाना है? अनिर्धारित विचारों का ।

111. जो इसे जानता है, वह अर्थों में कुशल, विचारों में कुशल, अच्छाई में कुशल, फलों में कुशल, मार्गों में कुशल, बेचैनी में कुशल, आराम में कुशल, महान कौशल से युक्त कहलाता है।

इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'सभी विचारों में निपुण' (§95)।

112. 'भिक्षु अपने भ्रमण में सचेत रहता है' (§95): उसे यहाँ और अभी सुखद निवास के उद्देश्य से आगे बढ़ने और पीछे हटने में, देखने और दूर देखने में, मुड़ने और फैलाने में, चितकबरा लबादा, कटोरा और [अन्य] वस्त्र पहनने में, खाने, पीने, चबाने और स्वाद लेने में,

शौच करने और शौच करने में, चलने, खड़े होने, बैठने, सोने, जागने, बात करने और चुप रहने में सचेत और जागरूक रहना चाहिए (तुलना करें डी. ii, 292)।

113. भगवान बुद्ध द्वारा स्वीकृत आचरण के दो प्रकार ये हैं: एक उन लोगों के लिए जो पहले से ही शुद्ध हो चुके हैं, और दूसरा उन लोगों के लिए जो अभी शुद्धिकरण की प्रक्रिया में हैं। जो लोग पहले से ही शुद्ध हो चुके हैं, वे कौन हैं? वे अरहंत हैं। जो लोग अभी शुद्धिकरण की प्रक्रिया में हैं, वे कौन हैं? वे दीक्षा प्राप्त करने वाले हैं; एक अरहंत की इंद्रियों ने अपना कार्य पूरा कर लिया है।

114. खोजी जा सकने वाली चीज़ चार प्रकार की है: पीड़ा के निदान की प्राप्ति, उत्पत्ति के त्याग की प्राप्ति, मार्ग के अस्तित्व में बने रहने की प्राप्ति और समाप्ति के सत्यापन की प्राप्ति। यही चार प्रकार की खोजी जा सकने वाली चीज़ है।

---

110 1 1 यम असंखतम का नपुंसक लिंग यहाँ उल्लेखनीय है।

[पृष्ठ 35]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

115. जो इसे जानता है [21] उसे सचेत होकर आगे बढ़ने वाला, सचेत होकर पीछे हटने वाला कहा जाता है (cf. एम. iii, 135), कामवासना की समाप्ति, घृणा की समाप्ति और भ्रम की समाप्ति के साथ।

इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:

वह कामुक इच्छाओं को नहीं चाहेगा ।
वह मन से अविचलित रहेगा;
और सभी विचारों में निपुण , एक भिक्षु
अपनी यात्राओं में सचेत रहता है > (§95).

इस प्रकार से प्रश्न पूछा जा सकता है , और इस प्रकार से उत्तर दिया जा सकता है (देखें §62)।

[(2) संतुष्टि , आदि: मोड देखें]।

(3) श्लोक का पुनर्कथन]

116. और किसी वाक्य के पुनर्कथन-श्लोक (§62) को अर्थ और वाक्यांश दोनों के संदर्भ में उचित रूप से निर्देशित किया जाना चाहिए; क्योंकि अर्थहीन वाक्यांश निरर्थक बकवास है। साथ ही, गलत तरीके से प्रस्तुत शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ को समझने के लिए कोई दिशा-निर्देश लागू करना कठिन है (देखें ए. i, 58-9, iii, 178)। इसीलिए [एक पुनर्कथन-श्लोक] को अर्थ और वाक्यांश दोनों से युक्त तरीके से पद्यबद्ध किया जाना चाहिए।

[(4) जो कुछ भी नौ गुना तर्क-सूत्र में है]

117. इस तर्क-सूत्र की भी इस प्रकार जाँच की जानी चाहिए: यह किस प्रकार का तर्क-सूत्र है? क्या यह एक मूल कथन से बना है, 1 एक कथन जो अर्थों के अनुक्रम को स्पष्ट करता है? 2 एक

116/1 C, Ba, Bb , सभी में PTS के sangahitabbam के बजाय sangayitabbam लिखा है। यह शब्द संभवतः अनुच्छेद का अंत करता है क्योंकि suttan ca pavicitabbam शब्द आगे आने वाले भाग की शुरुआत प्रतीत होते हैं; वे §§6 और 62 का संदर्भ देते प्रतीत होते हैं और आगे आने वाले भाग में उनका विस्तार किया जाना है।

117/1 'अहच्च-वचन - एक मूल कथन': एक कठिन शब्द का स्वतंत्र अनुवाद। तुलना करें DhsA. 9, Miln. 148. सामान्य अर्थ बुद्ध द्वारा स्वयं दिए गए कथन का प्रतीत होता है, इस मामले में यह, उदाहरण के लिए, एम. सुत्त 18 में बुद्ध द्वारा दिए गए दो संक्षिप्त कथनों का वर्णन कर सकता है, जो वहाँ दूसरे कथन के एल्डर महाकच्चन के विस्तार के विपरीत है (अगली टिप्पणी भी देखें)। लेकिन नेत्तिआ की व्याख्या के लिए हान ('टकराना') आवश्यक है , जो इस प्रकार है: ' भगवतो थाना-करणदिम अहच्च अभिहन्त्व पावत्त-वचनम्; सम्मसंबुद्धेन समम् देसितयुत्तन ति अत्थो ' (पृष्ठ 67), जिसका अनुवाद 'भगवान बुद्ध की (मौखिक) स्थिति, उपकरण आदि को आपस में टकराने से उत्पन्न कथन' के रूप में किया जा सकता है; इसका अर्थ है, 'पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति के स्वयं के शिक्षण के लिए उपयुक्त'। इस तकनीकी व्याकरणविद् द्वारा थाना-करण-आदि के प्रयोग के लिए रूपसिद्धि देखें : ' थानाकरणप्पयतनेहि वन्न जयन्ते' 'अक्षर मुखीय

स्थिति (अर्थात, कंठ्य, तालव्य, मस्तिष्कीय, दंत्य, ओष्ठ्य), उपकरण (अर्थात, जीभ, आदि) और ध्वनि (अर्थात, करणी है या नहीं) के माध्यम से उत्पन्न होते हैं' (बर्मी लिपि पाली शब्दकोश सद्दा-त्थारतनवली में उद्धृत)।

117/2 ' अनुसंधि-वचन —अर्थ के क्रम का कथन': एक अन्य वाक्यविन्यास संबंधी शब्द। नेत्तिआ कहते हैं, 'शिष्य द्वारा उच्चारित; क्योंकि इसे ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह भगवान बुद्ध के कथन के बाद क्रमानुसार आता है (अनुसंधेत्व) ' (पृष्ठ 67)। यह उदाहरण के लिए, एम. सूत्र 18 में वरिष्ठ महा-कच्चना द्वारा दिए गए व्याख्यात्मक प्रवचन पर लागू होता है। इस प्रकार इसका अर्थ अनुच्छेद 198 के बाद के संधि के अर्थ से भिन्न है ।

[पृष्ठ 36]

पथप्रदर्शक

जिसका अर्थ पहले से ही निर्देशित है? जिसका अर्थ अभी निर्देशित होना बाकी है? 3 और क्या यह भ्रष्टाचार से संबंधित है, नैतिकता से संबंधित है, 4 जो भेदन से संबंधित है, 5 या जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है (देखें §760)? इस तर्क-सूत्र में चारों सत्य कहाँ मिलते हैं: इसके आरंभ में, इसके मध्य में, या इसके अंत में? इसी प्रकार तर्क-सूत्र की जाँच की जानी चाहिए।

118. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

'इस थ्रेड में क्या पूछा गया है और किसका उत्तर दिया गया है?'
साथ ही एक श्लोक का भावार्थ भी,
और थ्रेड की शब्द-जांच:
यह विधि जांच को दर्शाती है' (§6)।
जांच की प्रक्रिया यहीं समाप्त होती है।

♦

---

3. व्याख्या करने के तरीके में नौ गुना धागा

119. इसमें, व्याख्या को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? व्याख्या को संप्रेषित करने का तरीका यह है:

117/3 ' नित्तत्था —जिसका अर्थ पहले से ही निर्देशित है' और ' नेय्यात्था — जिसके अर्थ को मार्गदर्शन की आवश्यकता है' अ. i, 60 पर मिलते हैं; इन्हें क्रमशः 'स्पष्ट अर्थ के साथ' और 'अस्पष्ट अर्थ के साथ' के रूप में समझा जा सकता है, हालांकि यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यहां 'अर्थ' का अर्थ ' उद्देश्य के रूप में अर्थ' है। शेष 4 प्रकार चौथे अध्याय (§760) से हैं।

117/4 ' वासंद - नैतिकता': से. वास 'निवास करना', देखें एसएन. 1009, मिल्न. 263, विस. 185. यहाँ संदर्भों से पता चलता है कि इसका अर्थ पुण्य की खेती है, अतः 'नैतिकता'; लेकिन तुलना करें विन. iv, 120, जहाँ मिट्टी को दुर्गंधयुक्त होने से रोकने के लिए 'उपचार' या 'इलाज' (vdsetum) करने की अनुमति है।

li7/5 सभी संस्करणों में nibbedha लिखा गया है , जिसका अर्थ है vidh (= संस्कृत vyadh); फिर भी संभवतः सभी उदाहरणों में nibbheda ('भिद से 'बाहर निकलना') पढ़ा जा सकता है। abhinibbhida और n. 326/1 देखें। ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों का vid (nibbida , 'वैराग्य') के साथ कुछ वास्तविक विलय हो गया है ।

[पृष्ठ 37]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
सही और गलत की व्याख्या की तलाश करना
सभी हस्तांतरणों के मामले में
विमान और रिसॉर्ट प्रदर्शित करेंगे
व्याख्या करने का तरीका 5 (§7)।

120. इसका क्या अर्थ है? अधिकार के चार प्रमुख आह्वान (देखें ए. ii, 167)। ये हैं: प्रबुद्ध व्यक्ति को अधिकार के रूप में मानना, समुदाय को अधिकार के रूप में मानना, अनेक वरिष्ठों को अधिकार के रूप में मानना और एक ही वरिष्ठ को अधिकार के रूप में मानना। ये अधिकार के चार प्रमुख आह्वान हैं। 1

121. [अधिकार के लिए ऐसे सभी अपीलों में] <ये शब्द और वाक्यांश, धागे के मामले में, प्रवेश के तरीकों के अनुरूप होने चाहिए,1 और, बहिर्मार्गदर्शन (अनुशासन) के मामले में, स्वयं के लिए [वहाँ] देखे जाने चाहिए> (ए. ii, 167), और उन्हें, विचार की आवश्यक प्रकृति के मामले में,2 इसके अनुकूल होना चाहिए।

122. [22] वह कौन सा सूत्र है जिसके प्रवेश मार्गों के अनुरूप उन्हें होना चाहिए (धारा 351 भी देखें)? चार आर्य सत्य।

123. वह कौन सा मार्गदर्शन (अनुशासन) है जिसे स्वयं देखना आवश्यक है? कामवासना का मार्गदर्शन, घृणा का मार्गदर्शन और भ्रम का मार्गदर्शन।

124. उस विचार का मूल स्वरूप क्या है जिसके लिए उन्हें अनुकूलनीय होना चाहिए? आश्रित उत्पत्ति (देखें §462; एस. ii, 25)।

125. यदि आर्य सत्यों के मामले में, उनमें प्रवेश करने का कोई मार्ग है, 1 और यदि दोषों के निवारण के मामले में, यह मार्ग है

120/1 यह अंश स्पष्ट रूप से महापदेश को महा + अपदेश से बना मानता है , न कि महा + पदेश से । पीईडी में ए. ii, 167 का संदर्भ अपदेश के अंतर्गत होना चाहिए , न कि पदेश के अंतर्गत , और डी. ii, 123 का संदर्भ वहाँ जोड़ा जाना चाहिए; सीपीडी में अपदेश के अंतर्गत का उल्लेख नहीं है । इस प्रकार अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है; क्योंकि यह स्वयं प्राधिकार नहीं है, बल्कि प्राधिकार के समक्ष की गई अपील है, जिसकी सत्यता की जाँच सूत्रों और विनय के संदर्भ में करने की अनुशंसा की जाती है।

121/1 ओतारायितब्बा ('प्रवेश के तरीकों के अनुरूप होना चाहिए'—अर्थात, 4 सत्यों के अनुरूप) के लिए प्रस्तावना (अनुभाग 8) देखें।

121/2 धम्मत (शाब्दिक अर्थ 'विचार-प्रथा'—वह विशिष्ट विचार जिसके द्वारा 'वस्तु' की पहचान की जाती है) 'विचार' (धम्म), 'प्रकृति' (पकति) और 'सार' (भाव —पिटक काल के बाद के प्रयोग में) की अवधारणाओं को समाहित करता है, बल्कि अंग्रेजी अभिव्यक्ति 'यह सार का है...' के अर्थ में। यहाँ जिस बात का उल्लेख किया गया है वह है आश्रित उत्पत्ति, जो समस्त अस्तित्व की अनिवार्य बद्धता है।

125/1 ' अवतारति —प्रवेश का एक मार्ग है': = ओतारति ; पीईडी में नहीं , सीपीडी देखें ; लेकिन सीपीडी में 'उतरना' का अनुवाद , शाब्दिक होते हुए भी, इस संदर्भ के लिए उपयुक्त नहीं है।

[पृष्ठ 38]

पथप्रदर्शक

स्वयं देखने पर, यदि विचार के मूल स्वरूप के संदर्भ में कोई विरोधाभास न हो, तो किसी प्रकार का दोष उत्पन्न नहीं होता। चारों प्रमुख आधिकारिक अपीलों में से जो भी व्याख्या योग्य हो, उसे स्वीकार किया जा सकता है, चाहे वह किसी भी प्रकार से व्याख्या योग्य हो और किसी भी तरह से व्याख्या की गई हो।

126. जब [चर्चा के दौरान] किसी से कोई प्रश्न पूछा जाता है, तो उस प्रश्न को उसके शब्दों के संदर्भ में इस प्रकार समझा और परखा जाना चाहिए: 'प्रश्न में कितने शब्द हैं (धारा 63f देखें)? यदि सभी शब्द एक ही अर्थ के अनुरूप हैं, तो वह एक ही प्रश्न है। यदि चार शब्द एक ही अर्थ के अनुरूप हैं, तो वह एक ही प्रश्न है। यदि तीन शब्द एक ही अर्थ के अनुरूप हैं, तो वह एक ही प्रश्न है। यदि दो शब्द एक ही अर्थ के अनुरूप हैं, तो वह एक ही प्रश्न है। यदि एक शब्द एक ही अर्थ के अनुरूप है, तो वह एक ही प्रश्न है।'

127. इसकी जांच करते समय, हमें यह पहचानने की आवश्यकता है: 'क्या ये विचार अर्थ में भिन्न हैं और वाक्यांश में भिन्न हैं, या इन विचारों का एक ही अर्थ है, केवल वाक्यांश भिन्न है (cf. एम. i, 297)।

128. यह कैसे होगा? जैसा कि देवता ने भगवान बुद्ध से निम्नलिखित प्रश्न पूछे:

दुनिया: किस चीज से तबाह हुई है?
और फिर यह किस चीज से ग्रस्त है?
इसे किस कांटे ने दर्ज किया है?
और जिसके द्वारा 1 को लगातार परेशान किया गया V > (एस. आई, 40).

129. पूछे गए ये चार शब्द तीन प्रश्न हैं: इसकी पहचान कैसे होती है? क्योंकि भगवान बुद्ध ने देवता को इस प्रकार उत्तर दिया:

मृत्यु ने दुनिया को नष्ट कर दिया ।

और फिर यह बुढ़ापे की चपेट में आ जाता है।
और लालसा का कांटा उसमें प्रवेश कर चुका है।
और इच्छाएँ इसे लगातार परेशान करती हैं' > (एस.आई , 40).
130. इसमें, वृद्धावस्था और मृत्यु दो निर्धारित विशेषताएँ हैं।

ठीक है; इसके लिए 'प्रवेश का मार्ग प्रदान करना या अनुमति देना (अर्थात, चार सत्यों में)' के अधिक विशिष्ट अर्थ की आवश्यकता है। इसका पूरा अर्थ बारहवें विधि (§§351ff.) में दिया गया है।

127/1 'एवा - केवल': यह बहुत आम तौर पर पाया जाता है, लेकिन इसका अर्थ प्राचीन संहिता में नहीं मिलता। 128/1 ' धूपायिता - परेशान': प्राचीन संहिता में इसका कोई उपयुक्त अर्थ नहीं दिया गया है ; शाब्दिक अर्थ 'धूम्रपान किया' है, लेकिन यहाँ नेत्तिया ने इसे संतापिता के रूप में व्याख्यायित किया है ; तुलना करें स्तोत्र 448। इसी प्रकार धूपयना (§136) भी । तुलना करें ए. ii, 215 पर धूपयति ।

[पृष्ठ 39]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

निर्धारित का; क्योंकि वृद्धावस्था <स्थिरता में परिवर्तन> है [और] मृत्यु <अवसाद> है (ए. i, 152)। 1

131. यहाँ वृद्धावस्था और मृत्यु के अर्थों में अंतर है। इसका क्या कारण है? [23] क्योंकि जो लोग मरते हैं
गर्भ कभी बूढ़ा नहीं होता। और देवताओं में मृत्यु होती है, यद्यपि उनके शरीर बूढ़े नहीं होते। 1 बुढ़ापे से तो बचा जा सकता है , लेकिन मृत्यु से नहीं, सिवाय उन लोगों के जो असाधारण सफलता (शक्ति; देखें डी. ii, 99) रखते हैं ।

132. अब जब कहा जाता है कि ' लालसा का कांटा उसमें प्रवेश कर गया है', तो कामवासना से रहित लोग वृद्ध होकर मर जाते हैं। और यदि लालसा वृद्धावस्था और मृत्यु के समान होती, तो सभी युवा लालसा से रहित होते। और यदि जिस प्रकार लालसा दुख का कारण है, उसी प्रकार वृद्धावस्था और मृत्यु भी दुख का कारण होती, तो वृद्धावस्था और मृत्यु वास्तव में दुख का कारण होती और लालसा दुख का कारण नहीं होती; परन्तु वृद्धावस्था और मृत्यु दुख का कारण नहीं हैं, बल्कि लालसा दुख का कारण है। और यदि जिस प्रकार लालसा मार्ग से नष्ट हो सकती है, उसी प्रकार वृद्धावस्था और मृत्यु भी नष्ट हो सकती, तो वृद्धावस्था और मृत्यु भी मार्ग से नष्ट हो सकती।

133. इस प्रकार की संरचना के माध्यम से अन्य कई कारणों से यह जांच की जा सकती है कि क्या संरचना स्वयं के लिए देखी जाती है और क्या अर्थ की भिन्नता समन्वित है (cf. §§465ff.); और इसकी वाक्यांश रचना के संदर्भ में भी जांच की जानी चाहिए।

134. अब, 'चुभन' और ' उत्पीड़न' (धारा 128) इन दो विचारों के मामले में, अर्थ में एकरूपता है; क्योंकि ' इच्छाओं' और ' लालसा ' (धारा 129) के अर्थों में कोई अंतर नहीं है। जब लालसा की भावना पूरी नहीं होती, तो नौ आधारों (देखें ए.वी. , 408) के संबंध में क्रोध और द्वेष उत्पन्न होता है।

135. इस संरचना के माध्यम से वृद्धावस्था, मृत्यु और लालसा के अर्थों में भिन्नता है।

136. हालांकि, जब भगवान बुद्ध इसे 'इच्छा' और 'लालसा' इन दो नामों से पुकारते हैं, तो यह उन बाह्य कारणों के कारण होता है जो

130/1 पढ़ें जरा यं थितस्सा अन्नथत्तम; मरारियम वायो.

131/1 देवताओं की मृत्यु के लिए देखें इति. 76f.

131 /2 ' पटिक्कमम कटुम — काम चलाना': पीडी में नहीं , शाब्दिक अर्थ 'बाई-पास करना'; तुलना करें परिक्कमनया (एम . आई, 43)। शायद यहाँ पाठ परिक्का - मम होना चाहिए।

133/1 'विभिन्न अन्य' या 'यह और अन्य' के रूप में अन्नमन्ना का यह उपयोग असामान्य है, शायद इस काम के लिए अजीब है, सामान्य अर्थ 'एक दूसरे' या 'परस्पर' है। नेत्तिया कहते हैं ' अन्नमन्नेहि ति अन्नेहि करनुपपत्ति: अत्थतो सी अन्नट्टम तदन्नम पि; ब्यंजनातो गवेसीताब्बन ति अत्थो' (पृ. 72)।

[पृष्ठ 40]

पथप्रदर्शक

इसका उद्देश्य ही इसे 'इच्छा' और 'लालसा' दो नामों से पुकारना है; क्योंकि सभी लालसाओं में एक ही विशेषता होती है - किसी चीज से चिपके रहना। जिस प्रकार सभी अग्नि का एकमात्र गुण ऊष्मा उत्पन्न करना है, यद्यपि इसके उपभोग के अनुसार इसके अनेक अन्य नाम हैं, जैसे कि 'लकड़ी की आग', 'घास की आग', 'झाड़ियों की आग', 'गोबर की आग', 'भूसे की आग' और 'कूड़े की आग' (देखें एम. आई, 259), फिर भी सभी अग्नि का केवल ऊष्मा उत्पन्न करने का गुण होता है, उसी प्रकार सभी लालसा का भी केवल एक ही गुण होता है, अर्थात् आसक्ति का गुण, [24] यद्यपि इसके उद्देश्य के अनुसार इसे विभिन्न अन्य नामों से पुकारा जाता है, जैसे कि 'इच्छाएँ', 'लालसा', 'चुभन', 'उत्पीड़न', ' धारा ', 'आसक्ति', 'स्नेह (नमी)', 'यातना', 'लता', '[मैं] और 'मेरा] के संदर्भ में कल्पना करना', 'जिम्मेदारी', 'आवश्यकता'। 'प्यास' और 'प्रतीक्षा-आनंद'; फिर भी सभी लालसा में केवल एक ही विशेषता होती है, अर्थात् आसक्ति की विशेषता, जैसा कि [संचार का तरीका] पर्यायवाची शब्दों में कहा गया है (देखें §§285fif.):

137. < आवश्यकता और लालसा , प्रत्याशापूर्ण आनंद ,
प्रलोभन 1 कई तत्वों पर आधारित है ,
वह लालसा जिसका अस्तित्व अज्ञान में निहित है:
मैंने उन सभी चीजों का अंत कर दिया जिनकी जड़ तक पहुंच चुकी थी ।
(पी 17; तुलना करें एस. i, 181; देखें §286)।

138. यह लालसा का पर्यायवाची है, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है: < तिस्सा , जब कोई कामवासना से रहित नहीं होता , इच्छा से रहित नहीं होता , प्रेम से रहित नहीं होता , प्यास से रहित नहीं होता , बुखार से रहित नहीं होता, दूर रूप से ... भावना से ... बोध से ... संकल्प से ... चेतना से ...> इन सभी तर्कों को विस्तार से उद्धृत किया जा सकता है (देखें एस. iii, 107)।

139. लालसा 1 के इस पर्यायवाची शब्द की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'दुख की सभी पहुँच का मूल निर्धारण इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं की लालसा से होता है।' इसकी व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'सभी

136/1 'सरिता - धारा' का अर्थ 'स्मृति-निर्माता' हो सकता है और यह एम. iii, 132 के सारा-संकप्पा या एम. iii, 217 के समनुस्सारतो को संदर्भित करता है , जो मूल पर निर्भर करता है।

137/1 'सारा—प्रलोभन': यह शब्द सम्युत्त पाठ में नहीं है, जो इस उद्धरण से काफी भिन्न है। नेत्तिया (पृष्ठ 99) इसे तन्हा के समतुल्य मानता है , लेकिन कहीं भी इस शब्द की व्याख्या नहीं करता।

139/1 C , Ba और Bb इस बात पर सहमत हैं कि शब्द tanhay ' etam vevacanam evam yujjati एक ही उपवाक्य हैं। Ba और Bb इसे पहले वाले शब्द के साथ जोड़ते हैं, जबकि C अगले अनुच्छेद की शुरुआत इसी से करता है, जो अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

[पृष्ठ 41]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

वैराग्य प्राप्त करने के लिए इंद्रिय सुख की लालसा का कुछ हद तक का होना आवश्यक है।' 2

इस संरचना के माध्यम से इसे अन्य कई कारणों से भी जांचा जा सकता है।

140. जिस प्रकार भगवान बुद्ध कामवासना से ग्रस्त व्यक्ति को कुरूपता का उपदेश देते हैं, घृणा से ग्रस्त व्यक्ति को प्रेम का उपदेश देते हैं, और भ्रम से ग्रस्त व्यक्ति को आश्रित-उत्पत्ति का उपदेश देते हैं—क्योंकि यदि वे कामवासना से ग्रस्त व्यक्ति को प्रेम की हृदय-मुक्ति, या सुस्त परिचय का सुखद मार्ग, या तीव्र परिचय का सुखद मार्ग, या अंतर्दृष्टि द्वारा घोषित त्याग का उपदेश देते, तो उपदेश की व्याख्या नहीं की जा सकती थी—उसी प्रकार, जो कुछ भी कामवासना के त्याग के अनुरूप है, जो कुछ भी घृणा के त्याग के अनुरूप है, और जो कुछ भी भ्रम के त्याग के अनुरूप है, [25] उन सभी की व्याख्या, ज्ञान के तल तक, जांच के तरीके से जांच करने के बाद, व्याख्या के तरीके से की जा सकती है।

141. जब कोई प्रेम और दया में रहता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'इच्छा उसके हृदय को जकड़े रखती है,' बल्कि इस प्रकार की जा सकती है: 'इच्छा का त्याग हो जाता है और वह उसमें विलीन हो जाती है।'

142. जब कोई करुणा में रहता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'क्रूरता उसके हृदय को जकड़े रखती है,' बल्कि इस प्रकार की जा सकती है: 'क्रूरता का त्याग हो जाता है और वह उसमें विलीन हो जाती है।'

143. जब कोई व्यक्ति प्रसन्नता में रहता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'ऊब उसके हृदय को जकड़े रखती है,' बल्कि इस प्रकार की जा सकती है: 'ऊब का त्याग हो जाता है और वह उसमें विलीन हो जाती है।'

144. जब कोई व्यक्ति प्रत्यक्षदर्शी समभाव में रहता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'कामना उसके हृदय को जकड़े रखती है,' बल्कि इस प्रकार की जा सकती है: 'कामना का त्याग हो जाता है और वह उसमें विलीन हो जाती है।'

145. जब कोई व्यक्ति चिह्नहीन अवस्था में रहता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'उसकी जानकारी संकेतों का अनुसरण करके इस या उस माध्यम से प्राप्त होती है,' बल्कि शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'उसमें कोई भी चिह्न त्याग दिया जाता है और लुप्त हो जाता है।'

146. जब 'मैं' की अवधारणा अनुपस्थित होती है, तो शिक्षा नहीं दी जा सकती।

139/2 'कामतन्हापरिक्खरमुलको —जिसकी जड़ में इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं की लालसा का कुछ आवश्यक तत्व है' को नेट्टीए द्वारा वस्तुनिष्ठ इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं (वांछित वस्तुओं) के रूप में व्यक्तिपरक इंद्रिय-संबंधी इच्छा (लालसा) के आधार के रूप में समझाया गया है। एन डी जे. 1 में वस्तु-काम और क्लेसा-काम के बीच अंतर देखें।

140/1 जहां पीटीएस में यथा भगव, सी में यथा अहा भगव , ब और ब में यथा ही भगव है।

144/1 Cf. एम. i, 424, जिसमें यहाँ पतिघा है, राग नहीं।

[पृष्ठ 42]

पथप्रदर्शक

इस प्रकार व्याख्या की जा सकती है: "मैं इस प्रकार नहीं देखता कि 'मैं यह हूँ', फिर भी अनिश्चितता और आश्चर्य का चुभन 'मैं क्या हूँ?, मैं कैसे हूँ? ' मेरे मन को जकड़े रखता है ।" शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: "अनिश्चितता और आश्चर्य का चुभन त्याग दिया जाता है और [मुझमें] गायब हो जाता है।"

147. [पुनः,] जब कोई व्यक्ति प्रथम ध्यान अवस्था में प्रवेश कर चुका होता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'इंद्रिय सुख और द्वेष की लालसा उसकी भेद्यता में उत्पन्न होती है ' ; शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी निम्न अवस्था में उत्पन्न होती हैं'; या वैकल्पिक रूप से, शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'बिना विचार के जो कुछ भी है, उसके साथ बोध और ध्यान उसकी निम्न अवस्था में उत्पन्न होते हैं'; शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी भेद्यता में उत्पन्न होती हैं।'

148. जब कोई व्यक्ति द्वितीय ध्यान अवस्था में प्रवेश कर लेता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'धारणा और ध्यान, जो चिंतन और अन्वेषण से युक्त हैं, उसकी विशिष्टता में घटित होते हैं'; शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी निम्न अवस्था में घटित होते हैं'; या वैकल्पिक रूप से, शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'धारणा और ध्यान, जो अवलोकन-समभाव से प्राप्त आनंद से युक्त हैं, उसकी निम्न अवस्था में घटित होते हैं'; शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी विशिष्टता में घटित होते हैं'।

149. [26] जब कोई व्यक्ति तृतीय ध्यान में प्रवेश कर चुका होता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'उसकी विशिष्टता में सुख के कारण प्राप्त होने वाले सुख से युक्त बोध और ध्यान होता है,' शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी निम्न अवस्था में होते हैं/ या वैकल्पिक रूप से, शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'उसकी निम्न अवस्था में अवलोकन-समभाव के कारण प्राप्त होने वाली शुद्धता से युक्त बोध और ध्यान होता है/ शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी विशिष्टता में होते हैं।'

150. जब कोई व्यक्ति चौथी ध्यान अवस्था में प्रवेश कर लेता है, तो शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जा सकती: 'दृष्टि और ध्यान के साथ-साथ जो कुछ भी देखने से प्राप्त होता है, वह समभाव है ।'

146/1 जहां पीटीएस में किसमिन्सी कैटासमिन ती है , बा में किसमिनसी कैटासमिन ती है और बीबी और सी में किसमिनसी कैटस्मीन ती है, नेट्टिया नजरअंदाज कर देता है। चूँकि संकेत निश्चित रूप से एम की ओर है। i, 8, Bb और C सही हैं और संकल्प इस प्रकार है किम अस्मि? ती, कथम अस्मि? ति.

147/1 पीटीएस पृष्ठ 25, पंक्ति 23 (= §147 का आरंभ) पर स्थित शब्द यथा व पाना, पीटीएस पृष्ठ 26, पंक्ति 38 ('इसी प्रकार' §156 में) पर स्थित एवं से संबंधित होना चाहिए। फलस्वरूप, पाली में §§147-56 एक ही वाक्य हैं , जिसकी शुरुआत 'जैसे...' से मानी जा सकती है, जिसके बाद उचित समय पर '...इसी प्रकार...' आता है। 147/2 ' समवत्तन्ति —घटित होना': यह अर्थ, जो असामान्य नहीं है, पीईडी में नहीं दिया गया है ; तुलना करें निब्बत्तति और पवत्तति।
150/1 उपेक्खसुखसहागाता पढ़ें।

[पृष्ठ 43]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
'उसकी भेद में,' इस शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी निम्न अवस्था में घटित होते हैं;' या वैकल्पिक रूप से, 'अंतरिक्ष की अनंतता से युक्त आधार के साथ बोध और ध्यान उसकी निम्न अवस्था में घटित होते हैं ' इस शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: 'वे उसकी भेद में घटित होते हैं।'
151. जब कोई व्यक्ति अंतरिक्ष की अनंतता से युक्त आधार में प्रवेश कर चुका होता है, तो यह शिक्षा इस प्रकार नहीं समझी जा सकती कि 'उसके भेद में रूप सहित बोध और ध्यान घटित होते हैं,' बल्कि यह इस प्रकार समझी जा सकती है कि 'वे उसकी निम्न अवस्था में घटित होते हैं;' या वैकल्पिक रूप से, यह शिक्षा इस प्रकार नहीं समझी जा सकती कि 'उसके निम्न अवस्था में चेतना की अनंतता से युक्त बोध और ध्यान घटित होते हैं,' बल्कि यह इस प्रकार समझी जा सकती है कि 'वे उसकी भेद में घटित होते हैं।'
152. जब कोई व्यक्ति चेतना की अनंतता से युक्त आधार में प्रवेश कर चुका होता है, तो यह शिक्षा इस प्रकार नहीं समझी जा सकती कि 'उसकी भेदभाव में अनंतता से युक्त आधार के साथ बोध और ध्यान घटित होते हैं,' बल्कि यह शिक्षा समझी जा सकती है कि 'वे उसकी निम्न अवस्था में घटित होते हैं;' या वैकल्पिक रूप से, यह शिक्षा इस प्रकार नहीं समझी जा सकती कि 'उसकी निम्न अवस्था में अनाप-स्वामित्व से युक्त आधार के साथ बोध और ध्यान घटित होते हैं,' बल्कि यह शिक्षा समझी जा सकती है कि 'वे उसकी भेदभाव में घटित होते हैं।'
153. जब कोई व्यक्ति किसी आधार पर प्रवेश कर चुका हो जिसमें कोई भी शामिल न हो-

---

150/2 ' आकाश —स्थान': पाली भाषा का अर्थ उपसर्ग a+ (संस्कृत + kas 'प्रकाशित होना') से है (हालाँकि यह रहस्य है कि रूप रहित स्थान ऐसा कैसे कर सकता है)। पाली की पुरानी परिभाषाएँ सभी नकारात्मक हैं और उपसर्ग d- को एक सशक्त नकारात्मक (जैसे कि किंचन्ना में) + या तो kds (संस्कृत y'fcas) 'प्रदर्शित करना', 'प्रकाशित होना' या फिर y'kas (संस्कृत krs) 'रेखा खींचना', 'हल चलाना' के रूप में दर्शाती हैं; आकाश तब या तो 'वह जो प्रकाशित नहीं होता' या 'वह जिस पर कोई रेखा नहीं खींची जा सकती' होता है (देखें एम. i, 127 पर उपमा : स्थान (एक kdsa) पर चित्र बनाने की असंभवता)। विभाविनी टीका अद अभिधम्मत्थसंगह में नकारात्मक परिभाषा देखें: 'न कस्सति ति आकाशो , न कसो वा' अकासो\ बहुत देर से और संस्कृतकृत अभिधानप्पदीपिका टीका एक सकारात्मक परिभाषा को स्वीकार करती है, हालांकि: 'भूसम कासन्ते दिप्पंते पदत्थ एतेना ति अकदसो; न कसासति न विलेख्यति ति वा अकसो'।
152/1 ' अकिंचनयतना - स्वामित्वहीनता से युक्त आधार': पीईडी अकिंचन को नकारात्मक उपसर्ग अ- + सर्वनाम किम + प्रत्यय -काना से व्युत्पन्न करता है ; लेकिन यह शब्द + किक ('दबाना', 'बाधा डालना') का नकारात्मक व्युत्पन्न प्रतीत होता है ; देखें एम. i, 298 'रागो किंचनो ' ('वासना एक स्वामित्व है'), आदि, जिसकी व्याख्या एम.ए. ii, 354 में किंचति - मद्दति द्वारा की गई है। एम . ii, 263 और एम.ए. iv, 64 = विस . 654 में किंचनता (इस प्रकार पढ़ा गया) की भी तुलना करें । अकिंचनयतना के वर्णन में ' न'अत्थी किंची' (एम. i, 41) शब्द दो अलग-अलग शब्दों किंची (सर्वनाम) और किंचन (प्रतिरूप/ किक) पर आधारित है । अन्यथा 'शून्यता से युक्त आधार' द्वारा इसे अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है।

[पृष्ठ 44]
पथप्रदर्शक
यह मानते हुए कि, 'चेतना की अनंतता से युक्त आधार के साथ बोध और ध्यान उसकी विशिष्टता में घटित होते हैं' इस प्रकार शिक्षा की व्याख्या नहीं की जा सकती; या वैकल्पिक रूप से, 'बोध और ध्यान, जो न तो बोध और न ही अबोध से युक्त आधार के साथ उसकी

निम्न अवस्था में घटित होते हैं' इस प्रकार शिक्षा की व्याख्या की जा सकती है; या इस प्रकार शिक्षा की व्याख्या की जा सकती है कि 'बोध और ध्यान उसकी विशिष्टता में घटित होते हैं'।

154. जब कोई व्यक्ति ऐसी अवस्था में प्रवेश कर चुका हो जिसमें न तो बोध हो और न ही अबोध, तो यह शिक्षा इस प्रकार नहीं समझी जा सकती कि 'बोध की प्राप्ति उसकी भेद्यता में होती है,' बल्कि यह इस प्रकार समझी जा सकती है कि 'यह उसकी निम्न अवस्था में होती है;' या वैकल्पिक रूप से, यह शिक्षा इस प्रकार नहीं समझी जा सकती कि 'बोध और ध्यान, बोध और भावना की समाप्ति के साथ, उसकी निम्न अवस्था में होते हैं,' बल्कि यह इस प्रकार समझी जा सकती है कि 'यह उसकी भेद्यता में होती है।'

155. इस प्रकार शिक्षण की व्याख्या नहीं की जा सकती है कि 'संज्ञान स्वस्थ होता है जब वह निर्देशात्मक प्रबंधन के अधीन नहीं होता है,' 1 इस प्रकार शिक्षण की व्याख्या की जा सकती है कि 'संज्ञान स्वस्थ होता है जब वह निर्देशात्मक प्रबंधन के अधीन होता है।'

156. इस प्रकार सभी नौ गुना धागे को, जांच के तरीके के अनुसार सभी तरीकों (§62) में जांच किए जाने के बाद, व्याख्या के तरीके के अनुसार व्याख्या की जानी चाहिए, ऐसा सच्चे विचार के अनुसार, मार्गदर्शक (अनुशासन) [27] के अनुसार, और गुरु के विधान के अनुसार किया जाना चाहिए।

157. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

सही और गलत की व्याख्या की तलाश करना
सभी हस्तांतरणों के मामले में
विमान और रिसॉर्ट प्रदर्शित करेंगे
व्याख्या करने का तरीका' (§7)।

व्याख्या करने की प्रक्रिया समाप्त हो गई है।

♦

154/1 नेटी ए बताते हैं कि इस मामले में ऐसी धारणा और ध्यान उस तैयारी के काम के साथ होता है जो उस व्यक्ति द्वारा किया जाता है जिसने धारणा और भावना की समाप्ति की प्राप्ति में प्रवेश करने का निर्णय लिया है (पृष्ठ 76)।

166/1 ' अभिनिहारा - निर्देशात्मक प्रबंधन': इसका अर्थ है, संकल्प लेना और उसे बनाए रखना, लेकिन इस शब्द का तकनीकी संदर्भ भी है जो दुनिया से संबंधित 5 अलौकिक अभिन्न के विकास से संबंधित है (देखें, उदाहरण के लिए, डी. i, 76)।

[पृष्ठ 45]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

4. नींव ले जाने के तरीके में नौ गुना धागा

158. इसमें नींव को स्थानांतरित करने का तरीका क्या है? नींव को स्थानांतरित करने का तरीका इस प्रकार है:

'विक्टर एक विचार सिखा रहा है'
यह सिखाता है कि उस विचार में क्या है
आधार के रूप में; प्रत्येक विचार के साथ भी ऐसा ही है:
यह नींव ले जाने का तरीका है (§9)।

159. यह [मोड] क्या सिखाता है? [यह इस प्रकार सिखाता है:]

[18 मूल शब्दों की परिभाषाएँ— धारा 4 देखें]

अज्ञान की विशेषता यह है कि वह वास्तविकता के अनुसार विचारों को भेद नहीं पाता; इसका आधार चार विकृतियाँ हैं। लालसा की विशेषता यह है कि वह किसी चीज़ से चिपकी रहती है; इसका आधार आकर्षक रूप या मोहक रूप है। लोभ की विशेषता यह है कि वह आकांक्षा रखती है; इसका आधार वह लेना है जो दिया नहीं गया है। [घृणा 1 की विशेषता यह है कि वह बुराई की कामना करती है; इसका आधार जीवित प्राणियों को मारना है। भ्रम की विशेषता यह है कि वह चीजों के बारे में गलत सिद्धांत बनाती है; इसका आधार गलत सिद्धांत है। 2] सौंदर्यबोध की विशेषता यह है कि वह रंग, आकार और विशेषताओं को समझती है; 3 इसका आधार इंद्रियों (आँख से शुरू होकर) पर नियंत्रण न रखना है। सुखबोध की विशेषता यह है कि वह दोषों से प्रभावित संपर्क के करीब जाती है; इसका आधार संतुष्टि है। स्थायित्व का बोध उन विचारों को अनदेखा करने की विशेषता रखता है जो निर्धारित (कि वे ऐसे हैं) हैं; इसका आधार

चेतना है। स्वयं की धारणा में अनित्यता और पीड़ा की धारणा के साथ न देखने की विशेषता होती है; इसका आधार नाम-शरीर है (cf. Pe 121f.)।

160. विज्ञान में सभी विचारों को भेदने की विशेषता होती है; इसका आधार ज्ञेय है। शांति में चेतना के विकर्षण को रोकने की विशेषता होती है; इसका आधार कुरूपता के प्रकार हैं ।

159/1 घृणा और भ्रम के लिए खंड सभी संस्करणों में अजीब तरह से गायब हैं; उन्हें §160 में उनके समकक्षों से आसानी से पुनर्निर्मित किया जा सकता है।

159/2 देखा गया। 160/2।

159/3 इस संदर्भ में ' ब्यंजना ' को 'वेश्यावृत्ति' के रूप में प्रस्तुत करने का कोई औचित्य नहीं है जैसा कि पीटीएस नेट्टी सूचकांक में किया गया है; यहाँ 'व्यक्तिगत विशेषताओं' जैसे नाक, हाथ आदि का तात्पर्य है।

160/1 'कुरूपता के प्रकार' को शरीर के 31 (या 32) भागों (जैसे, डी. ii, 293) या 9 शव-ध्यान (डी. ii, 295f.), या विभिन्न शव-ध्यान (जैसा कि ए. i, 42 पर) के रूप में लिया जा सकता है।

[पृष्ठ 46]

पथप्रदर्शक

लोभहीनता की विशेषता इच्छाओं का सहारा लेने से रोकना है; इसका आधार वह न लेना है जो दिया नहीं गया है। घृणाहीनता की विशेषता द्वेषहीनता है; इसका आधार सजीव प्राणियों की हत्या न करना है। भ्रमहीनता की विशेषता चीजों के बारे में गलत सिद्धांत न बनाना है ; इसका आधार सही सिद्धांत है। कुरूपता की अनुभूति की विशेषता फीके पड़े [लाश-अवस्था] और सड़ते [लाश-अवस्था] को समझना है; इसका आधार वैराग्य है। पीड़ा की अनुभूति की विशेषता दोषों से प्रभावित संपर्क का निदान करना है; इसका आधार भावना है। अनित्यता की अनुभूति की विशेषता उन विचारों को देखना है जिनमें निश्चितता की विशेषता होती है; [28] इसका आधार उत्थान और अवसाद (पतन) है। अनात्म की अनुभूति की विशेषता सभी विचारों के मामले में गैर-जोरदारता है ; इसका आधार विचारों की अनुभूति है (cf. Pe 127f.) ।

[अतिरिक्त परिभाषाएँ]

161. इंद्रिय-इच्छा के पाँच सूत्र इंद्रिय-इच्छाओं के प्रति वासना का आधार हैं। पाँच इंद्रियाँ (आँख से शुरू होकर) जिनका स्वरूप होता है, स्वरूप के प्रति वासना का आधार हैं । छठा आधार (अर्थात् मन) अस्तित्व के प्रति वासना का आधार है। अस्तित्व को घटित होते हुए देखने वाले की अवस्था पाँच प्रकार की धारणाओं का आधार है। पूर्व जन्मों का स्मरण ज्ञान और दृष्टि का आधार है ।

160/2 4 अविप्पतिपादना - गलत सिद्धांत के बिना': पी.ई.डी. में नहीं , सी.पी.डी. देखें।

160/3 'सम्मापतिपट्टी -सही सिद्धांत': इस अर्थ में पतिपत्ति PED में नहीं है, अंतिम नोट देखें। यह शब्द विस में प्रकट होता है। (पृ. 468, 471, आदि), जिसने निस्संदेह इसे यहीं से उधार लिया था; सी एफ पीई 33, 35; मिल्न. 96.A. iii पर , 325 मिच्चापतिपन्ना मिच्चादित्तिका के साथ होता है ।

160/4 सी पीटीएस रीडिंग की पुष्टि करता है ; बा और बब सब्बाधम्म-अभिनिवेश-; परंतु इंद्रिय देमानस सब्बधम्मनाभिनिवेश---सब्बधम्मनं अनाभि-निवेश-।

160/5 संयुक्त शब्द सब्बधम्म को सब्बे धम्म के समतुल्य माना जाना चाहिए और इसका अनुवाद 'सभी विचार' के रूप में किया जाना चाहिए; लेकिन संयुक्त शब्दों की अस्पष्टता के कारण इसे 'सभी के विचार' के अर्थ में भी लिया जा सकता है, जैसे कि 'सभी' (सब्बा: विशेष रूप से एम. i, 3; 329; और एस. iv, 15 देखें) की धारणा पर आधारित कल्पनाएँ (मन्नाना) , हालाँकि यह एक असंभावित अर्थ है।

160/6 एक संकेत, स्पष्ट रूप से, §38 में उद्धृत धम्मनुपस्सना 279 के लिए, लेकिन साथ ही साथ माइंडफुलनेस (धम्मनुपस्सना) के चौथे आधार के लिए , देखें n. 4/1.

161/1 सभी प्राच्य संस्करणों और नेट्टिया में (सही) चत्थयातनम लिखा है। यहाँ संकेत केवल 'छठी' (अर्थात मन) अवस्था के अस्तित्व की ओर है, जो चार निराकार अवस्थाओं में से एक है।

161/2 'अनुपस्सिता - चिंतन की अवस्था': स्त्रीलिंग सार संज्ञा, पी.ई.डी. में नहीं, सी.पी.डी. देखें ।

[पृष्ठ 47]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

[पांच संकायों की परिभाषाएँ]

162. आस्था का गुण है भरोसा करना, और इसकी अभिव्यक्ति है विश्वास। विश्वास का गुण है अविचलित रहना, और इसकी अभिव्यक्ति है भरोसा करना (स्पष्टीकरण)। 1 आस्था का गुण है विश्वास करना; 2 इसका आधार अनुभव से प्राप्त विश्वास है। 3 विश्वास का गुण है अविचलित रहना; इसका आधार आस्था है।

163. ऊर्जा में प्रेरणा का गुण होता है; इसका आधार सही प्रयास है। सजगता में भटकाव न होने का गुण होता है; इसका आधार सजगता की नींव है। एकाग्रता में एकीकरण का गुण होता है; इसका आधार ध्यान है। समझ में समझने की क्रिया का गुण होता है; इसका आधार चार सत्य हैं (देखें §295; साथ ही पतरस 128-9)।

[आश्रित उत्पत्ति के सूत्र के सदस्यों की परिभाषाएँ]

164. एक अन्य दिशानिर्देश:

अतार्किक ध्यान संतुष्टि की ओर ध्यान केंद्रित करने की विशेषता रखता है; इसका आधार अज्ञान है। अज्ञान सत्य को भ्रमित करने की विशेषता रखता है; यह निर्णयों का आधार है। निर्णयों में नवीनीकरण विकसित करने की विशेषता होती है ।

162/1 ' पसाद —विश्वास' का शाब्दिक अर्थ है 'पारदर्शिता' या 'स्थिरता' (अर्थात, मैला पानी का साफ हो जाना), और ' पसिदाति' शब्द का प्रयोग पानी के साफ होने और विश्वास प्राप्त करने दोनों के लिए किया जाता है। इस प्रकार, विश्वास को संदेह की अशांति के शांत होने और संकल्प या भरोसे द्वारा मन के साफ होने के रूप में देखा जाता है।

162/2 ' अभिपत(ह)याना - विश्वास': पी.ई.डी. में नहीं , सी.पी.डी. देखें ; नेट्टिया , जो अभिपत्थियाना की वर्तनी करता है , ' सद्दाहनम एव' ('केवल विश्वास रखना', पृष्ठ 78) द्वारा व्याख्या करता है।

162/3 ' अवेक्का —अनुभव करने के बाद': यह अनुवाद शाब्दिक और सटीक दोनों है। जर्मन शब्द ava- ('नीचे', 'के नीचे') + i ('जाना') से बना है। इसका अर्थ म. सूत्र 47 (म. i, 320) के सार को देखकर स्पष्ट किया जा सकता है । अवेक्का-पसदा ('अनुभव करने के बाद विश्वास') का अर्थ है (तीन रत्नों में) वह विश्वास जो स्वयं प्रथम मार्ग की प्राप्ति से प्राप्त होने वाली तृष्णा की समाप्ति का अनुभव करने के कारण होता है, क्योंकि उस अनुभव से पहले केवल सुनी-सुनाई बातों पर ही विश्वास होता था।

163/1 देखा गया। 83/3.

164/1 ' तम -यह', लिंग, वचन और कारक में पदत्थनम (नपुंसक) से सहमत होते हुए भी, अर्थ में अविज्जा (स्त्रीलिंग) को संदर्भित करता है। इस वाक्यविन्यास नियम के लिए n. 64/1 देखें। पाली में इस अनुच्छेद में उदाहरणों की एक श्रृंखला है।

164/2 4 विरोहना —विकासशील': पी.ई.डी. में नहीं ; कारणवाचक संज्ञा fn. विरुहति.

[पृष्ठ 48]

पथप्रदर्शक

अस्तित्व (होना); ये चेतना का आधार हैं। चेतना में पुनरागमन का मार्ग खोलकर घटना को घटित करने की विशेषता होती है; 3 यह नाम-और-रूप का आधार है। नाम-और-रूप में नाम-शरीर और रूप-शरीर को जोड़ने की विशेषता होती है; 4 यह छह गुना आधार का आधार है। 5 छह गुना आधार में [छह] इंद्रियों को परिभाषित करने की विशेषता होती है; यह संपर्क का आधार है। 6 संपर्क में आँख, रूप और चेतना की समरूपता उत्पन्न करने की विशेषता होती है; यह भावना (प्रभावशीलता) का आधार है। भावना में इच्छित और अनपेक्षित के साथ सह-अत्यावश्यक होने की विशेषता होती है ; 7 यह लालसा का आधार है। 8 लालसा में आसक्ति की विशेषता होती है; यह धारणा का आधार है। 9 धारणा पुनरागमन का मार्ग खोलती है; 3 यह अस्तित्व (होना) का आधार है। 10 अस्तित्व (होना) नाम-शरीर और रूप-शरीर को वास्तविक अस्तित्व (होना) प्रदान करने की विशेषता रखता है; [29] यह जन्म का आधार है। जन्म श्रेणियों को प्रकट अस्तित्व (होना) प्रदान करने की विशेषता रखता है ; यह वृद्धावस्था का आधार है। वृद्धावस्था

164/3 'ओपपच्चयिका - पुन: प्रकट होने का मार्ग खोलना'; उपपत्ति + अया + क से उत्पन्न; पीईडी में नहीं ; नेट्टी ए चेतना की परिभाषा में पहले उल्लेख के बारे में कहते हैं , 'इसका अर्थ है कि इसका व्यक्तिगत सार अस्तित्व-रूप-प्रकट अवस्था के रूप में घटित होने का कारण है (उपपत्ति-भाव-भावन , इस शब्द के लिए भजन 1, 52 देखें)' और धारणा की परिभाषा में दूसरे उल्लेख के बारे में कहते हैं, 'यह पुन: प्रकट होने [नए अस्तित्व में] में श्रेणियों के घटित होने का कारण बनता है' (पृष्ठ 79)।

164/4 पीईडी , नामरूपा के अंतर्गत , उस शब्द को नामाकाया के समतुल्य मानता है —जो एक घोर त्रुटि है। §445 में परिभाषा देखें; साथ ही n. 84/1 भी देखें।

164/5 'छह गुना आधार' (सलायतन) आँख, कान, नाक, जीभ, शरीर और मन के लिए एक शब्द है।

164/6 'फासा - संपर्क': परिभाषा देखें, उदाहरण के लिए, एम.आई , 111.

164/7 'अनुभवना —सह-अंतर्निहित होना': अनु- = 'समानांतर' या 'सह-', और भू 'होना', जिसका तात्विक महत्व यहाँ किसी अन्य व्याख्या से अस्पष्ट नहीं होना चाहिए, यह याद रखते हुए कि आश्रित उत्पत्ति का सूत्र सकारात्मक और नकारात्मक दोनों अस्तित्व (भाव) की संरचना (और समाप्ति की क्षमता) के साथ-साथ इसकी जटिलता का वर्णन करने के लिए है; यहाँ भावात्मक उत्तेजना की लालसा भविष्य के अस्तित्व को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करती है ...

164/8 ' तन्हा -तृष्णा': देखें एन. 42/1. अज्होसाना ('क्लीविंग टू') के लिए देखें, उदाहरणार्थ, डीईएफ़। एमए में अज्झोसया तिट्ठति की । द्वितीय, 311' तंहज्जहोसनेन गिलित्वा परिणित्थ- पेत्वा गंहति।

164/9 ' उपादान -मानना': अधिकतर 'चिपकना' द्वारा अनुवादित; लेकिन प्रस्तावना देखें, (खंड 14)।

164/10 ' भव - अस्तित्व (अस्तित्व)': अनुवाद के लिए KhpA. Trsln. Appx. I देखें। 164/11 ' पटुभवन - प्रकट अस्तित्व प्रदान करना': patu(r) ('प्रकट') + bhu ('होना') से; जन्म (ऐतिहासिक आरंभ के रूप में) वैयक्तिक 5-श्रेणी प्रक्रिया को प्रकट नवीकृत अस्तित्व में लाता है।

[पृष्ठ 49]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

इसमें अस्तित्व के मूल तत्वों को अतिपरिपक्व करने की विशेषता है; 12 यह मृत्यु का आधार है। मृत्यु में जीवन-संधि को बाधित करने की विशेषता है; यह शोक का आधार है। शोक (सोका) चिंता (उसुक्का) का कारण बनता है; यह विलाप का आधार है। विलाप निरंतर रोने का कारण बनता है; यह पीड़ा का आधार है। पीड़ा शरीर का दमन है; यह शोक का आधार है। शोक चेतना का दमन है; यह निराशा का आधार है। निराशा समर्पण का कारण बनती है; 13 यह अस्तित्व का आधार है (तुलना करें पे 117-18)।

[अस्तित्व की उत्पत्ति कैसे होती है]

165. जब ये अस्तित्व के कारक 1 सामंजस्य में घटित होते हैं , तब वह अस्तित्व है; वह पुनर्जन्मों के चक्र का आधार है।

[अतिरिक्त परिभाषाएँ]

166. मार्ग में निकास प्रदान करने की विशेषता होती है; यह समाप्ति का आधार है।

167. जल-स्रोतों का ज्ञान, पर्याप्त मात्रा में पीने के ज्ञान का आधार है (देखें एम. i, 220)। पर्याप्त मात्रा में पीने के ज्ञान का आधार है...

164/12 ' उपाधि —अस्तित्व के आवश्यक तत्व': उप + धा (रखना)। यहाँ जीवन के लिए आवश्यक किसी भी तत्व को व्यापक अर्थ में समझा जा सकता है। लेकिन तुलना करें पे 117: इंद्रियानम परिभेदो उपनाहो (गलत अनुवाद, उपादहो या उपाधि पढ़ें ?) परिपको और (पृष्ठ 118) उपनाय- (गलत अनुवाद, उपादहा- या उपाधि- भी पढ़ें ?) परिपकलक्खना जरा। 164/13 ' ओदहन —समर्पण' (यदि यह अनुवाद सही है): पीईडी में 'रखना, लाक्षणिक अर्थ, ध्यान, भक्ति' का अर्थ , इस संदर्भ में, उचित नहीं है क्योंकि यह संदर्भ को ध्यान में नहीं रखता है। नेट्टिया कहते हैं 'अवदहनम, अत्तनो निस्सयस्स संतप्पनम एव* ('= अवदहन, सीधे शब्दों में अपने ही भौतिक आधार को सताना'—पृष्ठ 79)।

165/1 ' भवंग —अस्तित्व का कारक': नेत्तिया कहते हैं, ' भवंगणी का अर्थ या तो “अस्तित्व के कारक” है या “अस्तित्व कहलाने वाले कारक”। इनमें से, दोष “अस्तित्व के कारक” हैं और कर्म के परिपक्व होने का चक्र “अस्तित्व कहलाने वाले कारक” हैं। “सामंजस्य” का अर्थ यह सब है' (पृष्ठ 70)। आचार्य बुद्धघोष और अन्य विद्वानों द्वारा इस शब्द का प्रयोग अक्सर चेतना की निरंतरता को समझाने के

लिए किया जाता है। यद्यपि उन्होंने यह शब्द पत्थाना से लिया है, जो त्रिपिटक में एकमात्र स्थान है जहाँ यह मिलता है (हालाँकि बिना किसी व्याख्या के— पिटक 159, 160, 169, 324), किसी भी पिटक टीका में इसकी कोई व्याख्या नहीं दी गई है। यहाँ इसका अर्थ शायद उतना स्पष्ट नहीं है, और यह अधिक सरल अर्थ प्रतीत होता है कि आश्रित उत्पत्ति के सूत्र में प्रत्येक तत्व ('अज्ञान' से लेकर 'मान्यता' तक) को 'अस्तित्व का कारक' (स्वयं सूत्र का एक सदस्य) माना जाना चाहिए।

[पृष्ठ 50]

पथप्रदर्शक

[उचित] मात्रा। 1. [उचित] मात्रा (मत्तन्नुता) का ज्ञान आत्मज्ञान (अत्तन्नुता) का आधार है। आत्मज्ञान पूर्व में किए गए पुण्य कर्मों की अवस्था का आधार है। पूर्व में किए गए पुण्य कर्मों की अवस्था उपयुक्त स्थानों में रहने का आधार है। उपयुक्त स्थानों में रहना सच्चे पुरुषों की सेवा करने का आधार है। सच्चे पुरुषों की सेवा करना आत्म-मार्गदर्शन में सही स्वभाव का आधार है (देखें ए. 2, 32)। आत्म-मार्गदर्शन में सही स्वभाव सद्गुणों का आधार है। सद्गुणों के प्रकार प्रसन्नता का आधार हैं। प्रसन्नता शांति का आधार है। शांति आनंद का आधार है। आनंद एकाग्रता का आधार है। एकाग्रता चीजों के स्वरूप को जानने और देखने का आधार है। चीजों के स्वरूप को जानना और देखना वैराग्य का आधार है। वैराग्य कामवासना के लुप्त होने का आधार है। कामवासना का लुप्त होना ही मुक्ति का आधार है। मुक्ति ही मुक्ति को जानने और देखने का आधार है।

168. इस प्रकार सभी प्रकार के सामान्य समर्थन, सभी प्रकार की शर्तें, एक आधार हैं ।

169. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

'विक्टर एक विचार सिखा रहा है'
यह सिखाता है कि उस विचार में क्या है
आधार के रूप में; सभी विचारों के साथ भी ऐसा ही है:
यह नींव ले जाने का तरीका है (§8)।
नींव ले जाने का कार्य समाप्त हो गया है।

*

5

5. विशेषताओं को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा

170. [30] इसमें, विशेषताओं को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? विशेषताओं को संप्रेषित करने का तरीका यह है:

167/1 नेट्टिया मत्तन्नुता के स्थान पर पट्टान्नुता पढ़ता है और इसे 'अस्तित्व में बने रहने के माध्यम से प्राप्त ज्ञान' के रूप में समझाता है (पृष्ठ 79)। लेकिन सभी संपादक पीटीएस की पुष्टि करते हैं , जो भोजने मत्तन्नुता का सुझाव देता है (देखें एम. iii, 2), हालांकि तब संबंध बहुत स्पष्ट नहीं होता है।

167/2 ' अत्तनुता —स्वयं का ज्ञान' का अर्थ है 'प्रयास के पाँच कारकों से युक्त होना (देखें ए. iii, 65)' नेटीए के अनुसार । यह यहाँ 'अत्त' को 'अ + दा ' ('अपनाया गया ज्ञान') के रूप में लेने को अस्वीकार करता है , तुलना करें असामत्त (§§575f.)।

168/1 C y Ba और Bb PTS का समर्थन करते हैं , लेकिन NettiA में yo koci upanissayo balavapaccayo लिखा है , हालाँकि इसमें एक वैकल्पिक पाठ evam yo koci upanisa yogato ca paccayato ca का उल्लेख है, जो Pe ग्रंथों के अनुरूप एक उल्लेखनीय विकृति का संकेत देता है । यह वाक्य नीचे §463 में दोहराया गया है।

[पृष्ठ 51]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

'जब एक विचार का जिक्र होता है, तो सभी
समान विशेषताओं के विचार

इनका भी उल्लेख किया गया है: यह गठित करता है
विशेषताओं को व्यक्त करने का तरीका (§9)। 1

171. यह कैसे विशेषता बताता है? [यह इस प्रकार बताता है: जब] कुछ विचारों में एक ही [सामान्य] विशेषता होती है, तो जब उनमें से एक विचार कहा जाता है, तो बाकी विचार भी कहे जाते हैं।

172. यह कैसे होगा? उदाहरण के लिए, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है: <भिक्षुओं, आँख अस्थिर , छोटी, तुच्छ, क्षणभंगुर है; इसके अलावा (?) यह पीड़ादायक, नाशवान, विस्थापित होने योग्य, राख (?) है; यह एक दृढ़ संकल्प (?) है; यह शत्रुओं के बीच वध के लिए एक बलि है> ( )। अब जब इस आँख का उल्लेख किया जाता है, तो अपने भीतर के शेष आधारों (कान से शुरू होकर) का उल्लेख किया जाता है। इसका क्या कारण है ? क्योंकि अपने भीतर के सभी आधारों में वध के लिए बलि के रूप में एक ही (सामान्य) विशेषता है ।

173. और जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है: <राधा, अतीत के रूप की लालसा से पीछे मुड़कर मत देखो ; भविष्य के रूप की आशा मत रखो; वर्तमान रूप के प्रति वैराग्य, कामवासना का नाश , निरोध , त्याग और परित्याग का मार्ग अपनाओ > ( )। अब जब इस रूप श्रेणी का उल्लेख किया जाता है, तो शेष श्रेणियों का भी उल्लेख किया जाता है। इसका कारण क्या है? क्योंकि यमकोवाद सूत्र (श्लोक 3, 113) में, ग्रहण की सभी पाँच श्रेणियों में वध के लिए बलि के रूप में एक ही विशेषता है।

174. और जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है:
वे लोग जो शरीर के प्रति सजग रहते हैं
लगातार अच्छी तरह से प्रेरित किया जाता है
जो काम नहीं करना चाहिए, उसे कभी न करें।
और हमेशा वही करो जो किया जाना चाहिए> (ध. 293; पे 91)।

अतः जब शरीर से संबंधित ध्यान की बात की जाती है, तो भावना से संबंधित ध्यान, चेतना से संबंधित ध्यान और विचारों से संबंधित ध्यान की बात की जाती है (देखें डी. सुत्त 22, एम. सुत्त 119)। और इसी प्रकार जब कुछ भी, चाहे वह देखा जाए या सुना जाए,

---

170/1 यानी, एक बात कही गई है, बाकी बातें सकारात्मक या नकारात्मक रूप से निहित हैं। 172/1 यह अज्ञात उद्धरण, जिसे नेट्टिया और टीका अनदेखा करते हैं, कई कठिनाइयों से भरा है। यह स्पष्ट नहीं है कि परतो (जिसका अनुवाद 'इसके अतिरिक्त' किया गया है) का क्या अर्थ लिया जाए; इसका अर्थ 'पराया' हो सकता है। साथ ही, इस संदर्भ में कुक्कुलम और संखारम शब्द अस्पष्ट हैं।

172/2 वधाकत्थेना पढ़ें.

173/I वाक्य के अंत में ' पतिपज्जा ' को देखते हुए , होटी के स्थान पर होही पढ़ें ।

[पृष्ठ 52]

पथप्रदर्शक

बोध 1 कहा गया है, जो बोध किया गया है वह कहा गया है। और भगवान बुद्ध ने तदनुसार कहा: [31] <इसलिए , भिक्षुओं , शरीर को शरीर के रूप में ध्यान करते हुए , उत्साही, जागरूक और सचेत होकर , संसार के प्रति लोभ और दु:ख को दूर करते हुए, ध्यान लगाओ> (cf. एम . iii, 83)।

यहां 'उत्साही' से तात्पर्य ऊर्जा शक्ति से है, 'जागरूक' से समझ शक्ति से, 'सचेत' से ध्यान शक्ति से और 'लोभ और दु:ख को दूर करने' से एकाग्रता शक्ति से। अतः जब कोई शरीर को शरीर के रूप में ध्यान में रखता है, तो चेतना में बने रहने से ध्यान के चारों आधार पूर्ण हो जाते हैं। इसका कारण क्या है? क्योंकि चारों शक्तियों का एक ही गुण होता है।

175. जब ध्यान के चार आधारों को बनाए रखा जाता है, तो चारों सही प्रयास उनके बने रहने से पूर्ण हो जाते हैं। जब चारों सही प्रयास बने रहते हैं, तो सफलता के चार आधार (शक्ति के मार्ग) उनके बने रहने से पूर्ण हो जाते हैं। जब सफलता के चार आधार बने रहते हैं, तो पाँचों शक्तियाँ (विश्वास से शुरू होकर) उनके बने रहने से पूर्ण हो जाती हैं। जब पाँचों शक्तियाँ बनी रहती हैं, तो पाँचों शक्तियाँ उनके बने रहने से पूर्ण हो जाती हैं। जब पाँचों शक्तियाँ बनी रहती हैं, तो ज्ञान के सात कारक उनके बने रहने से पूर्ण हो जाते हैं। जब ज्ञान के सात कारक बने रहते हैं, तो आर्य अष्टांगिक मार्ग उनके बने रहने से पूर्ण हो जाता है। और वे सभी विचार जो ज्ञान की ओर प्रवृत्त होते हैं

और ज्ञान में भाग लेते हैं, वे उनके बने रहने से पूर्ण हो जाते हैं। इसका क्या कारण है? क्योंकि ज्ञानोदय की ओर अग्रसर होने वाले और ज्ञानोदय में भाग लेने वाले सभी विचारों में एक ही विशेषता होती है, और वह है अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करना। अपनी इसी एक विशेषता के कारण वे अस्तित्व में बने रहने से पूर्णता प्राप्त करते हैं (धारा 451-2 भी देखें)।

174/1 ' मुता —अनुभूति': यह एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ है वह सब कुछ जिसे सूंघा, चखा और छुआ जा सकता है (देखें Nd2 ad Sn. 789); स्पष्ट रूप से इसका अर्थ कभी भी 'विचार, अनुमान, कल्पना' नहीं होता जैसा कि PED में दिया गया है, जो संभवतः गलत व्युत्पत्ति के कारण है। इसका मूल अभी निश्चित नहीं है। यह ध्यान देने योग्य है कि पाह दित्था-सुता-मुता-विन्नता का संस्कृत संस्करण drste . . . srute cintite vijnate है (देखें लैमोट, पृष्ठ 608) जो पाली टीकाओं में मुता की व्याख्या से भिन्न है (देखें निद्देसा , आदि)।

175/1 '5 शक्तियाँ' (बल) वही पाँच हैं जो '5 संकाय' (इन्द्रिय) हैं , लेकिन उनके 'संभाव्यता' या 'प्रधानता' के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि उनके संबंधित विरोधों के विरुद्ध शक्तियों के रूप में बने रहने पर उनकी 'अविचलता' के दृष्टिकोण से विचार किया जाता है (देखें भजन 1, 21)।

175/2 'आठ-कारक पथ' अधिक सुरुचिपूर्ण और परिचित 'आठ गुना पथ' की तुलना में केवल अधिक शाब्दिक है।

[पृष्ठ 53]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

176. इसके अलावा, निरर्थक विचार अपनी एकरूपता के कारण त्याग दिए जाते हैं और लुप्त हो जाते हैं। जब सचेतनता के चार आधारों को बनाए रखा जाता है, तो विकृतियाँ त्याग दी जाती हैं, पोषक तत्व पहचाने जाते हैं, व्यक्ति मान्यताओं के संबंध में धारणाओं से मुक्त हो जाता है, व्यक्ति बंधनों से मुक्त हो जाता है, व्यक्ति संबंधों से अलग हो जाता है, व्यक्ति दोषों से अछूता हो जाता है, व्यक्ति बाढ़ को पार कर लेता है, व्यक्ति कांटों के संबंध में कांटों से रहित हो जाता है, चेतना के स्थिर बिंदु पहचाने जाते हैं , और व्यक्ति बुरे रास्तों पर चलने के संबंध में कोई गलत रास्ता नहीं अपनाता है (cf. §§484-7)। [32] इस प्रकार भी व्यक्ति के निरर्थक विचार त्याग दिए जाते हैं और लुप्त हो जाते हैं।

177. अन्यथा, जहाँ किसी रूप वाली संकाय (जैसे आँख आदि) को सिखाया जाता है, वहाँ रूप तत्व, रूप श्रेणी और रूप आधार भी सिखाए जाते हैं।

178. अन्यथा, जहाँ सुखद अनुभूति सिखाई जाती है, वहाँ सुख की अनुभूति, आनंद की अनुभूति और दुख की उत्पत्ति को आर्य सत्य के रूप में सिखाया जाता है।

179. अन्यथा, जहाँ पीड़ादायक भावना सिखाई जाती है, वहाँ पीड़ा की अनुभूति, शोक की अनुभूति और पीड़ा को एक महान सत्य के रूप में भी सिखाया जाता है।

180. अन्यथा, जहाँ न दुखदायी और न सुखदायी भावना सिखाई जाती है, वहाँ प्रत्यक्ष समभाव और सभी आश्रित उत्पत्ति भी सिखाई जाती है। 1 इसका क्या कारण है? क्योंकि अज्ञान न दुखदायी और न सुखदायी भावना का आधार है (देखें एम. i, 303); अज्ञान की स्थिति में निर्धारण; निर्धारण की स्थिति में चेतना; चेतना की स्थिति में नाम और रूप; नाम और रूप की स्थिति में छह गुना आधार; छह गुना आधार की स्थिति में संपर्क; संपर्क की स्थिति में,

---

176/1 ' विन्नानत्थिति —चेतना का स्थिर बिंदु': इनकी व्याख्या कुछ हद तक §§304, 306 में की गई है (अनुक्रमणिका में दिए गए संदर्भ भी देखें)। D. iii, 228 में चार प्रकार और D. iii, 253 में सात प्रकार (एक अलग आधार पर) दिए गए हैं। PED स्पष्टीकरण से अधिक अस्पष्टता पैदा करता है; क्योंकि 'अवधि' और 'चरण' का प्रत्यक्ष रूप से अभिप्रेत नहीं है, बल्कि उस विशेष 'मूल चुनाव' का अभिप्रेत है जिसके द्वारा चेतना सर्वप्रथम अपने मूल विषय पर जड़ जमाती है, जिस पर जीवन के अनुभव में शाखाएँ निकलती हैं। मृत्यु के समय 'स्थिर बिंदु' खो जाता है और लालसा की क्रिया द्वारा दूसरा स्थिर बिंदु ग्रहण कर लिया जाता है, और इस प्रकार उस पर एक नया जीवन फिर से शाखाबद्ध हो जाता है। और इसी प्रकार आगे भी। (धारा 840 में उद्धृत S. ii, 65 भी देखें)।

180/1 नेटिया कहती हैं, 'इसका निर्माण इस प्रकार है: आश्रित उत्पत्ति का संपूर्ण सूत्र भी सिखाया जाता है; क्योंकि अज्ञान की अंतर्निहित प्रवृत्ति के कारण न तो कष्टदायक और न ही सुखदायक अनुभूति अंतर्निहित होती है (देखें एम. i, 303)। अतः इस प्रकार की अनुभूति अज्ञान को दर्शाती है, और अज्ञान आश्रित उत्पत्ति के संपूर्ण सूत्र को दर्शाता है, जिसका यह प्रारंभिक सदस्य है' (पृष्ठ 83)।

[पृष्ठ 54]

पथप्रदर्शक

भावना; भावना के साथ, लालसा; लालसा के साथ, ग्रहण करना; ग्रहण करने के साथ, अस्तित्व; अस्तित्व के साथ, जन्म; जन्म के साथ, वृद्धावस्था और मृत्यु का वास्तविक अस्तित्व है, और साथ ही दुःख और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा भी; इसी प्रकार इस संपूर्ण श्रेणी के दुःख का उद्गम है (देखें धारा 2, 1)।

181. अब इस [आश्रित उत्पत्ति] को कामवासना, घृणा और भ्रम से प्रभावित होकर भ्रष्टता की ओर ले जाने वाले तत्वों के माध्यम से त्यागा जा सकता है; और इसे कामवासना, घृणा और भ्रम से रहित श्रेष्ठ विचारों के माध्यम से भी त्यागा जा सकता है ।

182. इस प्रकार, उन विचारों के संबंध में जिनमें उनके कार्य 1 और उनकी विशेषता और उनकी व्यापकता में, और साथ ही उनकी मृत्यु और पुन: प्रकट होने में एक ही विशेषता होती है, जब इनमें से एक विचार कहा जाता है तो ऐसे बाकी विचार भी कहे जाते हैं।

183. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

जब एक विचार का जिक्र होता है, तो सभी

समान विशेषताओं के विचारों का भी उल्लेख किया गया है: यह विशेषताओं को व्यक्त करने वाले तरीके का गठन करता है (§9)।

विशेषताओं को संप्रेषित करने का तरीका समाप्त हो गया है।

*

181/1 हताब्बा के लिए n. 44/1 देखें। नेत्तिया (पृष्ठ 83) इस प्रकार व्याख्या करते हैं: '"और" का अर्थ नकारात्मक (ब्यतिरेका , अर्थात् समाप्ति) है, जिससे वे यह स्पष्ट करते हैं कि यह आश्रित उत्पत्ति "साथ" और "विरुद्ध" के रूप में दोहरी है, जैसा कि बाद में बताया जाएगा। जिसे "विकृति की ओर" (अर्थात "उत्पत्ति") कहा जाता है वह पूर्व है और दूसरा (अर्थात "समाप्ति") बाद वाला है।' यहाँ हताब्बा वाक्यांश को संभवतः 'उचित तर्क द्वारा लालसा के त्याग की ओर लाया जाना' के अर्थ में लिया जा सकता है।

182/1 नेत्तिया निम्नलिखित रूप से भेद करता है: '"कार्य" का अर्थ है, उदाहरण के लिए, पृथ्वी का रूप के घटक के रूप में धारण करना, या संपर्क का मेल कराना (देखें n. 164/6), जो निराकार है, या किसी उत्पन्न अवस्था-विचार का किसी उपयुक्त रूप से सशर्त उत्पन्न विचार को प्रभावित करना। "विशेषता" का अर्थ है कोई भी व्यक्तिगत सार, जैसे पृथ्वी की कठोरता, या संपर्क का स्पर्श। "सामान्यीकरण" का अर्थ है रूप (रूप) की "विरूपणशीलता" (रूपना), नाम (नामा) का " नामकरण के लिए झुकाव" (नामना)। "मृत्यु और पुन: प्रकट होना" का अर्थ है निर्धारित विचारों का विघटन और पुन: उद्भव, या रूप और निराकार का सह-उत्पत्ति और सह-समाप्ति (देखें n. 92/1)।'

[पृष्ठ 55]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

6. चार गुना सरणी को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा

184. इसमें, चार गुना सरणी का संप्रेषण क्या है? [यह] यह है:

'शब्दों के माध्यम से, (i) भाषाई,

(ii) आशय, और (iii) शिक्षा का स्रोत,

और (iv) क्रमानुसार अनुक्रम:

यह मोड एक चौगुना सरणी को व्यक्त करता है' (§10)।

वाक्य रचना के माध्यम से, थ्रेड की भाषाई प्रकृति, उसका आशय (इरादा), उसका स्रोत [जैसे कि उसके उच्चारण की परिस्थिति], और उसका क्रम-क्रम की जांच की जानी चाहिए।

[(i) भाषाई]
185. [33] इसमें, भाषाई क्या है? यह कोई भी भाषा है जो शब्दों का प्रयोग करती है, विचारों का कोई भी ज्ञान नाम से। 1
186. जब कोई भिक्षु किसी अर्थ का नाम और किसी विचार का नाम जानता है, और वह उसे तदनुसार लागू करता है , तो उसे अर्थों में कुशल, विचारों में कुशल, वाक्यांशों में कुशल, भाषा में कुशल, क्रमविन्यास (सिंटेक्स) में कुशल, शिक्षण में कुशल, भूतकाल के पदनामों में कुशल, भविष्यकाल के पदनामों में कुशल, वर्तमान काल के पदनामों में कुशल, स्त्रीलिंग के पदनामों में कुशल, पुल्लिंग के पदनामों में कुशल, नपुंसक लिंग के पदनामों में कुशल, एकवचन के पदनामों में कुशल, बहुवचन के पदनामों में कुशल कहा जाता है (देखें पे 91-2)। 2 सभी क्षेत्रीय भाषाविज्ञान (देखें एम. iii, 234-5) और सभी क्षेत्रीय भाषाओं को इस प्रकार माना जा सकता है। यह 'शब्दों का प्रयोग करने वाली भाषा' है।
[(ii) आशय (इरादा)]
187. इसमें क्या आशय (उद्देश्य) है? [उदाहरण के लिए, निम्नलिखित अंश लें:]

185/1 एनबी नामा ('नाम') व्याकरणविदों द्वारा संज्ञाओं, विशेषणों और सर्वनामों के लिए सामूहिक शब्द है, जो प्राच्य व्याकरण में 'भाषण के चार भागों' में से एक है (नाम, आख्यात, उपासग्ग , निपात - 'नाम, क्रिया, पूर्वसर्ग (उपसर्ग), और कण')।
186/1 अभिनिरोपेति और निरुत्ती के बीच यहाँ अर्थ संबंधी संबंध निरुत्ती के साथ vac (cf. vutta; Skr. uk) के बजाय uh के साथ एक व्यंग्यात्मक जुड़ाव को दर्शाता है ।
186/2 इन शर्तों में अंतर देखें पृष्ठ 91-2 पर।

[पृष्ठ 56]
पथप्रदर्शक
जो व्यक्ति सच्चे आदर्श के मार्ग पर चलता है, वह उसकी रक्षा करता है।
जैसे बारिश के समय एक बड़ी छतरी काम आती है ।
सही ढंग से अमल में लाने पर इस विचार का पुरस्कार यह है:
जो उसमें चलता है उसका कोई बुरा गंतव्य नहीं होता> (§37).
भगवान बुद्ध का यहाँ क्या तात्पर्य है? [यह है कि] जो लोग अभाव की अवस्थाओं से मुक्ति पाना चाहते हैं, वे ही सच्चे दर्शन के मार्ग पर चलने वाले होंगे: यही भगवान बुद्ध का यहाँ तात्पर्य है।
188. [पुनः:]
ठीक वैसे ही जैसे कोई लुटेरा घर में सेंध लगाते हुए पकड़ा गया हो।
वह अपने कृत्य से ग्रस्त है और इसके लिए जिम्मेदार भी है ।
इसी प्रकार , भविष्य में जब मनुष्य की मृत्यु हो जाएगी , तब भी ऐसा ही होगा।
वह अपने कृत्य से ग्रस्त है और उसके लिए जिम्मेदार है> (cf. एम. ii, 74)।
भगवान बुद्ध का यहाँ क्या तात्पर्य है? [उनका तात्पर्य यह है कि] जब किसी व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से किए गए कर्मों का फल भोगने के लिए संचित हो जाता है, तो उनका अनचाहा और अप्रिय परिणाम भविष्य की स्थिति के साथ अंतर्निहित होगा। यही भगवान बुद्ध का यहाँ तात्पर्य है।
189. [पुनः:]
जो दंड से प्राणियों पर क्रूरता करता है
जो आनंद की प्राप्ति के इच्छुक हैं
उसके चले जाने पर कोई सुख नहीं मिलेगा ।
वह चाहे जितना भी सुख चाहे (ध . 131).
भगवान बुद्ध का यहाँ क्या तात्पर्य है? [यथा] जो सुख की प्राप्ति चाहते हैं, वे बुरे कर्म न करें: यही भगवान बुद्ध का यहाँ तात्पर्य है।
190. [34] [पुनः:]
अत्यधिक भोजन करने से सुस्त पड़ा एक मंदबुद्धि व्यक्ति ।

नींद में डूबा हुआ , जो लेटे-लेटे कराह रहा है
जैसे कोई बड़ा सूअर चर्बीदार भोजन से भरा हो ,
बार-बार दुनिया में लौटता है> (ध. 325).
भगवान बुद्ध का यहाँ क्या तात्पर्य है? [यह है कि] जो लोग वृद्धावस्था और मृत्यु से दुखी होना चाहते हैं, वे ऐसे होंगे जो भोजन की सही मात्रा जानते हों और अपनी इंद्रियों के द्वार खुले रखते हों।

188/1 ' सा-कम्मुना . . . बज्झते —अपने कर्म के लिए उत्तरदायी है'; बज्झती (शाब्दिक रूप से 'बंधा हुआ है') के इस अर्थ के लिए, पी.ई.डी. में नहीं , §912 देखें, साथ ही ख्मा. 28f.
190/1 ' अत्तियितम —शाब्दिक रूप से 'आहत महसूस करना'; ए. आई, 145 का संकेत ।

[पृष्ठ 57]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
सावधान रहते हैं, रात के पहले और आखिरी [तीन] पहरों में जागृति के प्रति समर्पित रहते हैं (देखें एम. iii, 2), लाभकारी विचारों के संबंध में अंतर्दृष्टि का अभ्यास करते हैं, और दिव्य जीवन में अपने साथियों का सम्मान करते हैं चाहे वे बड़े हों, नए हों या मध्य [भिक्षु]: 2 यह भगवान बुद्ध का तात्पर्य है।
191. [पुनः:]
अमर अवस्था परिश्रम है;
मृत्यु और उपेक्षा का विषय:
मेहनती व्यक्ति कभी नहीं मरता;
लापरवाही करने वाला लगभग मृत ही होता है> (ध. 21; पे 92)।
भगवान बुद्ध का यहाँ क्या तात्पर्य है ? [यह है कि] जो लोग अमरत्व की खोज में लगे रहना चाहते हैं, वे लगन से लगे रहेंगे। यही भगवान बुद्ध का यहाँ तात्पर्य है।
[(iii) स्रोत]
192. यहाँ स्रोत क्या है? [उदाहरण के लिए, यह किसी सूत्र के उच्चारण का कारण है,] जैसा कि पशुपालक धानिया 1 ने भगवान बुद्ध से कहा था।
' बच्चों वाला व्यक्ति अपने बच्चों के माध्यम से आनंद प्राप्त करता है।'
और इसी प्रकार एक पशुपालक भी अपने पशुओं के माध्यम से ऐसा ही करता है।
जीवन की ये मूलभूत बातें मनुष्य के लिए आनंद का स्रोत हैं;
जिनके पास ये नहीं हैं, उन्हें कभी भी इनका आनंद नहीं मिलेगा (खंड 33)।
और जैसा कि भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया
'बच्चे वाला आदमी अपने बच्चों के माध्यम से दुख पाता है;'
और इसी प्रकार एक पशुपालक भी अपने पशुओं के माध्यम से ऐसा ही करता है।
जीवन की ये मूलभूत बातें ही मनुष्य के दुख का कारण हैं;
जिनके पास ये नहीं हैं, उन्हें कभी दुःख नहीं मिलेगा। (Sn. 34; cf. Pe 55)
यहां 2 यह ज्ञात है कि इस परिस्थिति के साथ, इस स्रोत के साथ, भगवान बुद्ध एक बाहरी वस्तु को अस्तित्व के एक आवश्यक तत्व के रूप में बताते हैं।

190/2 'वरिष्ठ भिक्षु' को पूर्ण दीक्षा (उपसंपदा) के बाद दस वर्ष या उससे अधिक का अनुभव होता है, 'मध्य भिक्षु' को पाँच से दस वर्ष का अनुभव होता है, और 'नव भिक्षु' को पाँच वर्ष से कम का अनुभव होता है। गर्भाधान के 20वें वर्ष के पूरा होते ही पूर्ण दीक्षा दी जा सकती है।
192/1 एस.एन. पाठ में यह धनिया नहीं बल्कि मारा है जो यह कहता है।

192/2 इधा पूर्ववर्ती न्यति से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है बजाय अनुवर्ती भगव . . . अहा के।

[पृष्ठ 58]

पथप्रदर्शक

193. और जब दुष्ट मारा ने युल्चुर-पीक चट्टान से एक बड़ा पत्थर गिराया, तो भगवान बुद्ध ने कहा:
भले ही आप स्थानांतरित होने का विकल्प चुनें
पूरा वल्चर-पीक, निश्चित रूप से।
कोई भी पूर्णतः मुक्त जागृत व्यक्ति नहीं है
इस कारण से परेशान होंगे' > (एस. आई, 109)
[और]
अगर आकाश फट जाए, अगर धरती कांप उठे, अगर सब कुछ
जिन चीजों से डर पैदा होता है, अगर तुम उनमें डूब जाओ तो
उसके दिल में खंजर, कोई जागृत व्यक्ति नहीं
अस्तित्व की अनिवार्यताओं में शरण लेता है' > (एस. आई, 107).
यहां यह ज्ञात है कि इसी परिस्थिति और इसी स्रोत को ध्यान में रखते हुए, भगवान बुद्ध शरीर को अस्तित्व का एक अनिवार्य तत्व बताते हैं।

194. और जैसा उसने कहा...
दृढ़ निश्चयी व्यक्ति इसे कभी भी मजबूत बंधन नहीं कहेगा।
लोहे से बना हुआ या लकड़ी या पट्टियों से युक्त। 1
लेकिन गहनों [और रत्नों] की लालसा से भरा लालच
और पत्नी और बच्चों के लिए भी चिंता: . . .
लेकिन गहनों [और रत्नों] की लालसा से भरा लालच
(एस.आई. , 77; अगला पैराग्राफ देखें)।
यहां यह ज्ञात है कि इसी परिस्थिति और इसी स्रोत के आधार पर भगवान बुद्ध ने बाह्य वस्तुओं की लालसा की बात की है।

195. और जैसा उसने कहा
दृढ़ निश्चयी लोग इन्हीं को मजबूत बंधन कहेंगे।
जो मनुष्य को नीचे की ओर खींचता है , सूक्ष्म होता है, जिससे मुक्त होना कठिन होता है;
फिर भी वे इसे भी तोड़ देते हैं और [स्वतंत्रता में] भटकते हैं।
उदासीन, और सभी इंद्रिय सुखों का त्याग कर दिया गया ।
(एस.आई , 77; पे 25, 214).
यहां यह ज्ञात है कि इसी परिस्थिति और इसी स्रोत को ध्यान में रखते हुए, भगवान बुद्ध ने बाह्य वस्तुओं की लालसा का त्याग करने की बात कही है।

196. और जैसा उसने कहा

194/1 पीडी (यह संदर्भ) पब्बाजा (यहाँ 'पट्टियाँ' के रूप में प्रस्तुत) को बब्बाजा (जड़ों के गुच्छे वाली एक प्रकार की घास) के बराबर मानता है, लेकिन यह संदर्भ से मेल नहीं खाता। यहाँ पब्बाजा शब्द पब्बा ('खंड', 'लता की जोड़-से-जोड़ लंबाई', आदि) और जा ('से उत्पन्न', 'से बना') से मिलकर बना हो सकता है। &A इसे अनदेखा करता है।

[पृष्ठ 59]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

यह बीमार , अशुद्ध , घिनौनी , बदबूदार चीज
शवों से रिसने वाले स्रावों से भरा हुआ
दिन-रात लगातार:
[केवल] एक मूर्ख ही इसका आनंद ले सकता है'> (cf. Thag. 394).
यहां यह ज्ञात है कि इसी परिस्थिति और इसी स्रोत को ध्यान में रखते हुए, भगवान बुद्ध अपने भीतर वस्तुओं की लालसा का त्याग करने की बात करते हैं।
197. और जैसा उसने कहा
[36]< ' स्वयं के प्रति स्नेह को त्याग दो ,
जैसे हाथ से शरद ऋतु की लिली को छूना;
और इसलिए शांति के मार्ग का अनुसरण करो ।
परम पूज्य ने जो सिखाया, उसे बुझाना (ध. 285)।
यहां यह ज्ञात है कि, इसी परिस्थिति को आधार बनाकर, इसी स्रोत को मानते हुए, भगवान बुद्ध अपने भीतर वस्तुओं की लालसा का त्याग करने की बात करते हैं।
[(iv) क्रमिक अनुक्रम]
198. यहाँ, क्रमिक अनुक्रम क्या है? यह भगवान बुद्ध के कथनानुसार है, अर्थात्:
' इंद्रिय सुख के अंधकार में फँसा हुआ '
और लालसा के बंधन से अवरुद्ध ,
उपेक्षा की बाड़ से घिरे हुए, जैसे मछली किसी फनल-ट्रैप में फंसी हो।
ये बुढ़ापे और मृत्यु के बाद घटित होते हैं।
जैसे दूध पीने वाला बछड़ा अपनी माँ से दूध पीता है (पे 24; उद. 76)।
यहां जिस बात का जिक्र किया गया है वह है इंद्रिय सुख की तीव्र इच्छा। इसे किस क्रम से समझा जा सकता है?
199. यह उनके कहे अनुसार है
जो वासना में लिप्त रहता है, उसे कभी अर्थ का ज्ञान नहीं होता ।
जो वासना में डूबा रहता है उसे कभी कोई विचार नहीं आता;
अंधकार की धुंध एक आदमी को घेर लेती है
जब वह वासना से पीड़ित होगा> (§68).
200. अतः वही लालसा 'अंधकार 5' और 'फंसे होने' (§198) शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है। और जब कहा जाता है 'इंद्रिय अंधकार के जाल में फंसा हुआ, और लालसा के बंधन से अवरुद्ध' (§198), और जब कहा जाता है 'जो वासना करता है वह कभी अर्थ नहीं जानता, जो वासना करता है वह कभी कोई विचार नहीं देखता' (§199), तो वही लालसा इन शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है जो जुनून को दर्शाते हैं।

[पृष्ठ 60]
पथप्रदर्शक
201. 'अंधकार' (§198) पीड़ा का मूल है, और यही वह लालसा है जो अस्तित्व का नवीनीकरण प्रदान करती है।
202. और जब 'इंद्रिय-संबंधी' (§198) कहा जाता है, तो यह कामुकता-इच्छा को अपवित्रता के रूप में दर्शाता है; और जब 'जाल में फँसा हुआ' (§198) कहा जाता है, तो उन्हीं कामुकता-इच्छाओं को साधन बनाकर आसक्ति को दर्शाया जाता है। परिणामस्वरूप, लालसा को अपवित्रता और आसक्ति के रूप में 'बाड़' (§198) कहा जाता है। ये ऐसी ही हैं जो 'बुढ़ापे और मृत्यु के बाद आती हैं' (§198) ।
203. [37] भगवान बुद्ध द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित श्लोक यह दिखाने के लिए दिया गया है कि वे किस शक्ति 1 का अनुसरण करते हैं बुढ़ापे और मृत्यु के बाद:
जिसके पास कोई स्थिर बिंदु नहीं है, कोई विविधीकरण नहीं है , 2
चेन और बार के बगल वाले हिस्से को किसने पीछे छोड़ दिया है:

यहां तक कि समस्त देवताओं से युक्त संसार भी नहीं जान सकता।
उस शांत व्यक्ति का आचरण जो लालसा से मुक्त है > (उद. 77)।
204. 'विविधताएँ' लालसा, दृष्टिकोण और अहंकार हैं, और इनसे सक्रिय रूप से निर्धारित होने वाले निर्धारण हैं। 'स्थिरता बिंदु' अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ हैं । 'श्रृंखला ' लालसा से ग्रस्त जुनून है, जो लालसा के जाल द्वारा खोजे गए छत्तीस मार्ग हैं (देखें ए. ii, 211ff.)। 'बाधा' भ्रम है। विविधताओं, स्थिरता बिंदुओं, श्रृंखला और बाधा द्वारा निर्धारित निर्धारण: जो कोई भी इन सभी पर विजय प्राप्त कर लेता है, उसे 'लालसा से मुक्त' कहा जाता है।

203/1 पढ़ें ais दो शब्द या तो yathanikkhittagatha balena या . . . phalena? §205 बाद वाले का सुझाव देता है लेकिन §209 पहले वाले का।
203/2 पापंचा ('विविधीकरण' या 'द्वंद्वात्मकता') के लिए, जिस अर्थ में 'p.' का प्रयोग सूत्रों में निब्बाना (जिसे अप्पपंचा और निप्पपंचा कहा जाता है) के विपरीत के रूप में किया गया है, ख्पीए. अनुवाद, परिशिष्ट I ' निरोध देखें , साथ ही §297 भी देखें। यह जोर दिया जा सकता है कि इन संदर्भों में पापंचा का अनुवाद 'बहुलता' द्वारा ठीक से नहीं किया जा सकता है, जो निब्बाना (निप्पपंचा के रूप में) को एकतरफा 'एकता' बना देगा। पाली में 'बहुलता' और 'एकता' के लिए क्रमशः ननत्ता और एकत्ता शब्द हैं , जिनका प्रयोग 'रूप' (रूप - सन्ना : एम. i, 41) और उसके विपरीत, अर्थात् चार निराकार (अरूप) अवस्थाओं के लिए किया जाता है। पापंचा और निप्पपंचा की ऐसी व्याख्या से (संखता) अरूप-धातु और असंखता-धातु (निर्वाण) के बीच आसानी से भ्रम उत्पन्न हो सकता है । परन्तु रूप और अरूप दोनों ही समान रूप से 'निर्धारित' हैं। मात्र 'बहुलता' और 'एकता' के बीच का 'विविधीकरण' या 'द्वंद्वात्मकता' स्वयं एक निर्धारण है, जबकि निर्वाण अनिर्धारित रहता है। बहुलता-एकता और निर्वाण के लिए, उदाहरण के लिए, खंड 714 देखें । निर्वाण को 'विशेषता के विपरीत निरपेक्ष' (ल कसिना ' अद्वय ') या दार्शनिक रूप से 'परमात्मा' के रूप में गलत समझा जा सकता है।
204/1 लेकिन 'स्थिरीकरण बिंदुओं' (थिति) के लिए धारा 484 और आगे देखें। अनुसया द्वारा थिति की यह परिभाषा असामान्य है। नोट 176/1 भी देखें।

[पृष्ठ 61]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
205. यहाँ, आसक्ति के कारण उत्पन्न संकल्पों को वर्तमान क्षण में (उनके परिपक्व होने पर) अनुभव किया जा सकता है, या अगली बार प्रकट होने पर (या किसी बाद के समय में) अनुभव किया जा सकता है। अतः लालसा तीन प्रकार से फल देती है: वर्तमान क्षण में (इस जीवन में), या अगली बार प्रकट होने पर (या किसी बाद के समय में)।
206. इसलिए भगवान बुद्ध ने कहा: < जो भी कर्म वह शरीर, वाणी या मन से लोभ के कारण करता है , वह उसके अस्तित्व को उसके परिपक्वता के साथ सह-अनिवार्य बना देता है , चाहे वह यहीं हो या अगले पुनर्जन्म में या किसी बाद के काल में> (cf. ए. i, 134)।
इसे भगवान बुद्ध के कथनों के क्रमबद्ध अनुक्रम के रूप में समझा जाता है।
207. यहाँ, आसक्ति वह क्रिया है जिसका परिपक्व होना यहीं और अभी महसूस किया जा सकता है, या यह वह क्रिया है जिसका परिपक्व होना अगली बार प्रकट होने पर महसूस किया जा सकता है, या यह वह क्रिया है जिसका परिपक्व होना किसी बाद के काल में महसूस किया जा सकता है। अतः क्रिया इन तीन तरीकों से परिपक्व होती है : यहीं और अभी [इस अस्तित्व में] या अगली बार प्रकट होने पर या किसी बाद के काल में। जैसा कहा गया है:
208. <और जब मूर्ख वह होता है जो यहाँ साँस लेने वाले प्राणियों को मारता है , . . . गलत दृष्टिकोण रखता है , परिणामस्वरूप वह यहाँ और अभी या अगली पुनरावृति पर या किसी बाद की अवधि में उस परिपक्वता को महसूस करता है> ( )।
[38] यह भगवान बुद्ध के [कथनों] के एक क्रमिक अनुक्रम द्वारा समझा जाता है।
209. यहाँ, विचार-विमर्श की शक्ति के माध्यम से आसक्ति को त्यागा जा सकता है, दृष्टि की शक्ति के माध्यम से निर्धारणों को त्यागा जा सकता है, और लालसा द्वारा खोजे गए छत्तीस तरीकों को अस्तित्व में बनाए रखने की शक्ति के माध्यम से त्यागा जा सकता है। अतः लालसा को तीन तरीकों से त्यागा जा सकता है।
210. 'लालसा से मुक्ति' (§203) विलुप्ति का वह तत्व है जिसका कोई अंश शेष नहीं रहता, परन्तु शरीर के विघटन के साथ यह विलुप्ति का वह तत्व है जिसका कोई अंश शेष नहीं रहता। 'विविधीकरण' (§203) को ही एक साथ बंधे रहने का नाम दिया गया है।

211. और जब भगवान बुद्ध कहते हैं <वह अतीत , भविष्य या वर्तमान में उत्पन्न हुए किसी रूप से प्रेरित होकर विविधता उत्पन्न करता है जिसे आँख से देखा जा सकता है> (

---

207 /I विपच्चति। शायद न तो इस शब्द, न ही पच्चति, और न ही इनके व्युत्पन्न शब्दों का अनुवाद कर्म संदर्भों में 'पकाना' के रूप में किया जाना चाहिए, विशेषकर जहाँ नरकों का उल्लेख हो। आग के बावजूद, नरक में बुरे कर्मों का 'परिपक्व होना' ही अभिप्रेत है, यानी उनका पकने का क्षण पाना और साथ ही साथ स्वयं को समाप्त करना। यह उपमा रसोई के चूल्हे से नहीं, बल्कि फल के पकने से प्रेरित प्रतीत होती है।

210/1 ' अनुबंध - एक साथ बांधे रखना': क्या इसका अर्थ विपरीत विचारों को एक साथ बांधे रखना है या 'बाधा डालना'? नेट्टी ए केवल 'तन्हादिनम अनुप्पबंधनपवत्ति ' (पृष्ठ 86) कहते हैं।

[पृष्ठ 62]

पथप्रदर्शक

), और जब भगवान बुद्ध कहते हैं <राधा, अतीत के रूप की लालसा से पीछे मुड़कर मत देखो, भविष्य के रूप की आशा से प्रसन्न मत रहो, वर्तमान में उत्पन्न रूप के लिए वैराग्य, कामवासना के लुप्त होने, रुकने, त्यागने और परित्याग के मार्ग का अभ्यास करो> (§173), तो इसे भगवान बुद्ध के [कथन] की निरंतरता से समझा जाता है।

212. और यद्यपि विविधताएँ, निर्धारण, और अतीत, भविष्य और वर्तमान में उत्पन्न हुए का आनंद लेना एक विलक्षणता है, फिर भी भगवान बुद्ध द्वारा विभिन्न अन्य शब्दों, विभिन्न अन्य अक्षरों, विभिन्न अन्य वाक्यांशों के साथ व्यक्त किए गए सच्चे विचार की शिक्षा का अर्थ असीमित है (cf. §49)।

213. इस प्रकार, धागे को धागे से मिलाकर, अनुक्रम को क्रमिकता के आधार पर जोड़कर, धागे को प्रदर्शित किया जाता है। 1

[लगातार अनुक्रम के 4 प्रकार]

214. अब यह क्रमिक अनुक्रम चार प्रकार का है: अर्थ-अनुक्रम, वाक्यांश-अनुक्रम, शिक्षण-अनुक्रम और प्रदर्शन-अनुक्रम।

215. (i) यहाँ, अर्थ-अनुक्रम छह पद हैं, अर्थात् व्याख्या करना, प्रदर्शित करना, खुलासा करना, विश्लेषण करना, प्रदर्शित करना और वर्णन करना (§53)।

216. (ii) वाक्यांश-अनुक्रम छह पद हैं, अर्थात् अक्षर, पद, वाक्यांश, मनोदशा, भाषा और प्रदर्शन (§53)।

217. (iii) शिक्षण-क्रम: वह पृथ्वी को आधार बनाकर ध्यान नहीं करता, फिर भी वह ध्यान करने वाले के रूप में ध्यान करता है। वह जल... अग्नि... [39] वायु... अनंत अंतरिक्ष से बने आधार... अनंत चेतना से बने आधार... स्वामित्वहीनता से बने आधार... न तो बोध और न ही अबोध से बने आधार पर ध्यान नहीं करता। वह इस संसार या दूसरे संसार को आधार बनाकर ध्यान नहीं करता, फिर भी वह ध्यान करने वाले के रूप में ध्यान करता है। और इन दोनों के बीच जो कुछ भी है—देखा, सुना, महसूस किया, जाना, खोजा , सोचा, खोजा और मन से विचारा—वह उसे भी आधार बनाकर ध्यान नहीं करता, फिर भी वह ध्यान करने वाले के रूप में ध्यान करता है। 2. इस संसार में, अपने देवताओं, अपने मारों और अपने उच्च देवत्वों के साथ, इस पीढ़ी में अपने भिक्षुओं और धर्मगुरुओं, अपने राजकुमारों और मनुष्यों के साथ, जब ऐसा कोई व्यक्ति बिना किसी सहारे के ध्यान करता है, तो वह ज्ञात नहीं होता (देखें ए.वी. , 324एफ.)। ठीक वैसे ही जैसे

213/1 सैंडहिम यहाँ सद्धिम की तुलना में बेहतर पाठ प्रतीत होता है ।

217/1 देखें एन. 174/1.

217/2 यह क्रम सूत्रों में पाई जाने वाली सामान्य गणना का क्रम है। इसे एम.ए. i, 175 पर यथानुसंधि कहा जाता है , जैसा कि वहाँ वर्णित 3 प्रकारों में से एक है।

[पृष्ठ 63]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

दुष्ट मारा, गोधिका नामक कुल के व्यक्ति की चेतना की खोज में, न तो उसे जान सका और न ही देख सका (श्लोक 1, 120f.; पे 11); क्योंकि व्यथा का त्याग करने के बाद वह विविधता से परे चला गया था, और उसके विचारों का कोई आधार नहीं रह गया था। और गोधिका की ही तरह वक्कली भी (श्लोक 3, 119ff.)। जब ऐसे लोग बिना किसी आधार के ध्यान करते हैं, तो वे संसार के देवताओं, मारों और उच्च देवों, इस पीढ़ी के भिक्षुओं और धर्मगुरुओं, राजकुमारों और मनुष्यों द्वारा ज्ञात नहीं होते।
यह शिक्षण क्रम है।
218. (iv) इसमें प्रदर्शन-अनुक्रम क्या है?
जिनके पास समर्थित संज्ञान (cf. §364) है, उन्हें लाभहीन पक्ष के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिनके पास असमर्थित संज्ञान (cf. §364) है, उन्हें लाभप्रद पक्ष के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिनके संज्ञान का प्रमाण मौजूद है, उसे भ्रष्टाचार के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिनके संज्ञान का प्रमाण नहीं है, उसे शुद्धिकरण के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिन लोगों को इस बात की जानकारी है, उन्हें गोलचक्कर के बनने से दर्शाया जा सकता है; जिन लोगों को इस बात की जानकारी नहीं है, उन्हें गोलचक्कर के न बनने से दर्शाया जा सकता है।
जिन लोगों में समर्थित चेतना होती है, उन्हें लालसा और अज्ञान के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिन लोगों में असमर्थित चेतना होती है, उन्हें शांति और अंतर्दृष्टि के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिन लोगों को इस बात का पुख्ता प्रमाण होता है, उन्हें निर्विरोध और निर्लज्जता के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिन लोगों को इस बात का पुख्ता प्रमाण नहीं होता, उन्हें विवेक और लज्जा के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिन लोगों में समर्थित चेतना होती है, उन्हें असावधानी और अनभिज्ञता के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिन लोगों में असमर्थित चेतना होती है, उन्हें सचेतनता और जागरूकता के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
समर्थित संज्ञान वाले लोगों को बिना किसी कारण के (देखें एम. iii, 140) और [40] अतार्किक ध्यान के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है (देखें एम . i, 7); और असमर्थित संज्ञान वाले लोगों को कारण और तर्कसंगत ध्यान के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिन व्यक्तियों में समर्थित चेतना होती है, उन्हें आलस्य और कठिन निंदनीयता के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिन व्यक्तियों में असमर्थित चेतना होती है, उन्हें ऊर्जा के उत्तोलन और आसान निंदनीयता के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है। 1

218/1 'डोवाकासाटा - कठिन चेतावनी' और 'सोवाकासाटा - आसान चेतावनी' का शाब्दिक अर्थ है 'ऐसे व्यक्ति की स्थिति जिससे बात करना कठिन या आसान हो (उसकी गलतियों को बताने के लिए)'। इनका क्रमशः कोई अर्थ नहीं है।

[पृष्ठ 64]
पथप्रदर्शक
जिनके संज्ञान का समर्थन किया जा सकता है, उन्हें अविश्वास और लापरवाही के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिनके संज्ञान का समर्थन नहीं किया जा सकता, उन्हें विश्वास और परिश्रम के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिन लोगों में पुष्ट चेतना होती है, उन्हें आस्था के सच्चे विषय से इतर बातों को सुनने और संयम न बरतने के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जबकि जिन लोगों में पुष्ट चेतना नहीं होती, उन्हें आस्था के सच्चे विषय को सुनने और संयम बरतने के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिनके पास समर्थित ज्ञान है, उसे लोभ और दुर्भावना के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिनके पास असमर्थित ज्ञान है, उसे लोभहीनता और दुर्भावनाहीनता के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिन लोगों में चेतना का समर्थन होता है, उन्हें बाधाओं और बंधनों के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है; जबकि जिन लोगों में चेतना का समर्थन नहीं होता, उन्हें कामवासना के लुप्त होने से हृदय की मुक्ति और अज्ञान के लुप्त होने से समझ की मुक्ति के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
जिनके पास समर्थित ज्ञान है, उन्हें विनाश के दृष्टिकोण और शाश्वतता के दृष्टिकोण से प्रदर्शित किया जा सकता है; जिनके पास असमर्थित ज्ञान है, उन्हें निशान शेष रहने के साथ विलुप्त होने के तत्व और निशान शेष न रहने के तत्व के माध्यम से प्रदर्शित किया जा

सकता है।

यह प्रदर्शन-क्रम है।
219. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'शब्दों के माध्यम से कहें तो, भाषाई,
इसका आशय और शिक्षा का स्रोत
और क्रमिक अनुक्रम:
यह मोड एक चौगुना सरणी को व्यक्त करता है' (§10)।
चार गुना सरणी को संप्रेषित करने का तरीका समाप्त हो गया है।

---

7. रूपांतरण को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा
220. इसमें, रूपांतरण को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? यह इस प्रकार है:
'वह तरीका, जब एक ही आधार होता है,
बचे हुए आधार की तलाश
और फिर विपरीत को परिवर्तित करता है
क्या यह रूपांतरण को दर्शाता है? (§11)।

'बुरे ढंग से बोलने वाला' और 'अच्छे ढंग से बोलने वाला'। देखें Dhs. 1325 और 1327; साथ ही A. v, 90 (suvaca = khamo padakkhinagahi anusasanim)। 'अच्छे ढंग से बोलने वाला' = kalyanavaca (A. v, 155)।

[पृष्ठ 65]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
221. < स्वयं को प्रेरित करो, आगे बढ़ो, समर्पित करो
[आप स्वयं] प्रबुद्ध व्यक्ति के युग में;
मृत्यु की सेनाओं को तितर-बितर कर दो
जैसे हाथी सरकंडों की झोपड़ी बनाता है >
(पे 71; एस. आई, 157).
'स्वयं को प्रेरित करो, आगे बढ़ो' ये शब्द ऊर्जा का आधार हैं। 'प्रबुद्ध व्यक्ति के उपदेशों में स्वयं को समर्पित करो' ये शब्द एकाग्रता का आधार हैं। 'मनुष्यों की सेनाओं को उसी प्रकार तितर-बितर कर दो जैसे हाथी सरकंडों की झोपड़ी को तितर-बितर कर देता है' ये शब्द समझ का आधार हैं।
'स्वयं को प्रेरित करो, आगे बढ़ो' ये शब्द ऊर्जा शक्ति का आधार हैं। 'प्रबुद्ध व्यक्ति के मार्गदर्शन में स्वयं को समर्पित करो' ये शब्द एकाग्रता शक्ति का आधार हैं। 'मनुष्यों की सेनाओं को उसी प्रकार तितर-बितर कर दो जैसे हाथी सरकंडों की झोपड़ी को तितर-बितर कर देता है' ये शब्द समझ शक्ति का आधार हैं।
[41] ये आधार शिक्षा का गठन करते हैं ['स्वयं को उकसाओ' से शुरू करते हुए]।
222. यह प्रेरणा उन प्राणियों के लिए है जो या तो पहले से ही समर्पित हैं या जो अभी तक समर्पित नहीं हैं।
223. यहाँ, जो लोग अभी तक स्वयं को समर्पित नहीं कर रहे हैं, वे लापरवाही में डूबे होने के कारण स्वयं को समर्पित नहीं कर रहे हैं। वह लापरवाही दो प्रकार की होती है: लालसा में निहित और अज्ञान में निहित।
224. यहाँ, अज्ञानता में निहित उस [लापरवाही] के संबंध में, ऐसी [लापरवाही] जो इस प्रकार के अज्ञान से घिरी हुई है कि वह यह नहीं समझ पाती कि पाँच श्रेणियाँ उत्पत्ति और अवसाद के विचार से अविभाज्य हैं, लापरवाही में निहित है।
ऐसी [लापरवाही] जो लालसा में निहित है, तीन प्रकार की होती है: (i) जब कोई व्यक्ति अप्राप्त गुणों के उत्पन्न होने की खोज करता है तो वह लापरवाही में पड़ जाता है; [और जब वह खोज करता है] (ii) संरक्षण के संकेत, और

उपयोग के संकेत, उत्पन्न गुणों के संबंध में, वह लापरवाही का शिकार हो जाता है।

संसार में लापरवाही के चार प्रकार हैं: एक प्रकार अज्ञान के कारण और तीन प्रकार लालसा के कारण।

225. इसमें नाम-शरीर अज्ञान का आधार है, और रूप-शरीर लालसा का आधार है। ऐसा क्यों है? रूप वाले अस्तित्व में उनसे आसक्ति होती है, और निराकार अस्तित्व में उनके प्रति भ्रम होता है।

यहां, रूप-शरीर 1 रूप श्रेणी है, [और] नाम-शरीर चार निराकार श्रेणियां हैं (cf. §§84 और 445)।

226/1 देखा गया। 84/1।

[पृष्ठ 66]

पथप्रदर्शक

227. किस आधार पर धारणा के साथ, पाँचों धारणा की श्रेणियाँ हैं? लालसा और अज्ञान के आधार पर।

228. यहाँ, लालसा दो प्रकार की धारणाएँ हैं, अर्थात् इंद्रिय-इच्छा धारणा और सद्गुण-कर्तव्य धारणा, जबकि अज्ञान दो प्रकार की धारणाएँ हैं, अर्थात् दृष्टिकोण धारणा और आत्म-सिद्धांत धारणा ।

229. इन चार प्रकार की मान्यताओं के कारण किसी भी प्रकार की मान्यताएँ (देखें एम. iii, 16) दुख का कारण होती हैं। भगवान बुद्ध इन मान्यताओं के निदान और त्याग के लिए सत्य विचार का उपदेश देते हैं: दुख के निदान और उसके मूल कारण के त्याग के लिए।

230. यहाँ, लालसा में निहित तीन प्रकार की उपेक्षाओं में से कोई भी (1) अ-उत्पन्न संपत्तियों के उत्पन्न होने की कामना करता है, और (2) उत्पन्न संपत्तियों के संरक्षण के लिए कार्य करता है, और (3) उत्पन्न संपत्तियों के उपयोग का संकेत देता है।

231. शांति पूर्ण अंतर्दृष्टि के माध्यम से उस [उपेक्षा] से रक्षा करती है और उसे रोकती है। यह कैसे संभव है? जब कोई इंद्रिय सुखों के संदर्भ में संतुष्टि को संतुष्टि के रूप में, निराशा [42] को निराशा के रूप में, मुक्ति को मुक्ति के रूप में, और साथ ही पतन, भ्रष्टाचार और शुद्धि को, और त्याग के लाभों को जानता है, तो उसमें कोई भी पूछताछ, कोई भी जांच, अंतर्दृष्टि है। ये दो विचार बने रहने से, अर्थात् शांति और अंतर्दृष्टि से पूर्ण होते हैं। जब ये दो विचार बने रहते हैं, तो दो विचार त्याग दिए जाते हैं, अर्थात् तृष्णा और अज्ञान। जब ये दो विचार त्याग दिए जाते हैं, तो चारों प्रकार के आरोहण समाप्त हो जाते हैं; आरोहण के समाप्त होने से, अस्तित्व समाप्त हो जाता है; अस्तित्व के समाप्त होने से, जन्म समाप्त हो जाता है; जन्म के समाप्त होने से, वृद्धावस्था और मृत्यु समाप्त हो जाती है, और साथ ही दुःख और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा भी समाप्त हो जाती है; इस प्रकार दुख की इस पूरी श्रेणी का अंत हो जाता है।

232. अतः ये दो प्रथम सत्य हैं, अर्थात् दुख और उत्पत्ति; शांति और अंतर्दृष्टि ही मार्ग हैं; और अस्तित्व का अंत ही निर्गमन है। ये चार सत्य हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'स्वयं को प्रेरित करो, आगे बढ़ो,...'

*

233. < जिस प्रकार एक वृक्ष, भले ही काट दिया जाए, फिर से उग आता है
जब तक इसकी जड़ मजबूत और अक्षुण्ण है,
इसी प्रकार यह दर्द भी बार-बार उभरता रहता है।
लालसा की प्रवृत्ति अबाधित > (ध. 338).

228/1 'धारणा (मानना)' के लिए n. 164/9 देखें। यहाँ और §257 में 4 प्रकार वही हैं जो सुत्तों में हैं (जैसे, एम. i, 67), लेकिन §§484-7 और 678 में सिलब्बत्तुपादन को भावुपादन से प्रतिस्थापित किया गया है । क्या बाद वाला शब्द पे 94 को छोड़कर इस ग्रंथ के बाहर कहीं और दिखाई देता है?

[पृष्ठ 67]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

यह लालसा की मूल प्रवृत्ति है। किस प्रकार की लालसा? अस्तित्व की लालसा। इस विचार की शर्त अज्ञान है; क्योंकि अज्ञान की शर्त पर ही अस्तित्व की लालसा उत्पन्न होती है। ये दो दोष हैं, अर्थात् लालसा और अज्ञान। और ये चार प्रकार की धारणाएँ हैं (देखें §228)।

234. इन चार प्रकार की धारणाओं के आधार पर किसी भी प्रकार की धारणाएँ दुख का कारण बनती हैं। ये चार प्रकार की धारणाएँ उत्पत्ति हैं, जबकि पाँच श्रेणियाँ दुख हैं। भगवान बुद्ध इनके निदान और त्याग के लिए सत्य विचार का उपदेश देते हैं: दुख के निदान और उत्पत्ति के त्याग के लिए।
235. [43] वह विधि जिससे लालसा की अंतर्निहित प्रवृत्ति का उन्मूलन होता है, मौन है; वह विधि जिससे अज्ञान का अंत होता है, जो लालसा की अंतर्निहित प्रवृत्ति की स्थिति है, अंतर्दृष्टि है। ये दोनों विचार, अर्थात् मौन और अंतर्दृष्टि, को बनाए रखने से पूर्ण होते हैं।
236. इसमें, शांति का फल कामवासना के लुप्त होने से हृदय की मुक्ति है; अंतर्दृष्टि का फल अज्ञान के लुप्त होने से समझ की मुक्ति है।
237. अतः ये दो प्रथम सत्य हैं, अर्थात् दुख और उसका उद्गम; शांति और अंतर्दृष्टि ही मार्ग हैं; और दो प्रकार की मुक्ति ही निवारण है। ये चार सत्य हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'जैसे एक वृक्ष... (§233)।
*
238. किसी भी प्रकार की बुराई न करना,
लाभदायक कौशल को परिपूर्ण करना,
और अपने हृदय को शुद्ध करना:
यह बुद्धों का उपदेश है।
(पीई 54, 91; डीएच. 183; डी. द्वितीय, 49)।
जिसे 'किसी भी प्रकार की बुराई' कहा जाता है, वह तीन प्रकार के दुराचार हैं, अर्थात् शारीरिक दुराचार, मौखिक दुराचार और मानसिक दुराचार। ये दस निष्फल कर्म हैं, अर्थात् सजीव प्राणियों को मारना, बिना दी हुई वस्तु लेना और इंद्रिय-इच्छाओं में लिप्त होना; झूठी वाणी, द्वेषपूर्ण वाणी, कठोर वाणी और चुगली; और लोभ, दुर्भावना और गलत दृष्टिकोण। 1

238/1 पहले 3 को शारीरिक, अगले 4 को मौखिक और अंतिम 3 को मानसिक, लाभहीन क्रिया के रूप में जाना जाता है।

[पृष्ठ 68]
पथप्रदर्शक
239. ये दो प्रकार की क्रियाएँ हैं, अर्थात् चुनाव और संज्ञान का सहवर्ती (तुलना करें पे 35-6)। 1
240. इसमें, सजीव प्राणियों को मारना, द्वेषपूर्ण वाणी और कठोर वाणी घृणा से उत्पन्न होती हैं; बिना दी हुई वस्तु लेना, कामुक इच्छाओं में लिप्त होना और झूठ बोलना लोभ से उत्पन्न होता है; और चुगली भ्रम से उत्पन्न होती है। ये सात प्रकार के कर्म चुनाव के रूप में कर्म हैं ।
241. लोभ, निरर्थक का मूल है; दुर्भावना, निरर्थक का मूल है; गलत दृष्टिकोण, गलत मार्ग है। ये तीनों प्रकार की क्रियाएँ, बोध के साथ होने वाली क्रियाएँ हैं। इसीलिए कहा गया है कि 'क्रिया एक विकल्प के रूप में और क्रिया एक बोध के साथ होती है' (देखें §239)।
242. जब निष्लाप का कोई मूल [शरीर या वाणी से युक्त] साधनों द्वारा [अभिव्यक्ति] में आता है, तो वह [चार बुरे मार्गों] में से एक के रूप में] अभिव्यक्ति में आता है, अर्थात् इच्छा, घृणा, भय या भ्रम के माध्यम से।
243. [44] इसमें, जब इच्छा के माध्यम से बुरे मार्ग की अभिव्यक्ति की बात आती है, तो यह लालच से आकारित होता है; जब घृणा के माध्यम से बुरे मार्ग की अभिव्यक्ति की बात आती है, तो यह घृणा से आकारित होता है; जब भय और भ्रम के माध्यम से बुरे मार्गों की अभिव्यक्ति की बात आती है, तो यह भ्रम से आकारित होता है।
244. इसमें, कुरूपता पर चिंतन के द्वारा लोभ का त्याग किया जाता है, प्रेम और करुणा के द्वारा घृणा का और समझ के द्वारा भ्रम का। इसी प्रकार, समभाव के द्वारा लोभ का त्याग किया जाता है, प्रेम और करुणा के द्वारा घृणा का और सहानुभूतिपूर्ण प्रसन्नता के द्वारा भ्रम का त्याग किया जाता है और वह विलीन हो जाता है। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'किसी भी प्रकार की बुराई न करो।' (§243)
245. और जिसे 'किसी भी प्रकार की बुराई ' कहा जाता है , वह आठ गलतियां हैं, अर्थात् गलत दृष्टिकोण, गलत इरादा, गलत वाणी, गलत कर्म, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत जागरूकता और गलत

239/1 यह दोहरा विभाजन इस कृति और पे के लिए विशिष्ट प्रतीत होता है। निम्नलिखित अनुच्छेदों से, पहला स्पष्ट रूप से शारीरिक और मौखिक क्रिया दोनों को दर्शाता है और दूसरा मानसिक क्रिया को।

240/1 यहाँ क्रिया के विश्लेषण को समझना आसान हो जाता है यदि निम्नलिखित भेदों को ध्यान में रखा जाए। 'क्रिया का क्रम' (कम्मपथ) एक पूर्ण 'ऐतिहासिक क्रिया' है जिसे उसकी पहली योजना से लेकर उसके क्रियान्वयन तक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया माना जाता है, जिसमें शरीर और/या वाणी शामिल होती है। यहाँ 'चयन' (चेतना) क्रिया के प्रत्येक चरण में क्षणिक मानसिक 'इच्छा' (या 'पुष्टि') है। 'मानसिक क्रिया'—यहाँ 'संज्ञान के साथ होने वाली क्रिया'—केवल लोभ, दुर्भावना और गलत दृष्टिकोण है, और उनके क्रमशः लाभकारी विपरीत रूप हैं। देखें धस अ. 82 और आगे।

[पृष्ठ 69]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

एकाग्रता। इन्हें 'किसी भी प्रकार की बुराई' कहा जाता है। इन आठ गलतियों में से किसी का भी न होना, न करना, न अभ्यास करना 'किसी भी प्रकार की बुराई न करना' कहलाता है।

246. जब आठ कुकर्मों का त्याग कर दिया जाता है, तो आठ गुण उत्कृष्टता (संपज्जन्ति) प्राप्त कर लेते हैं। आठ गुणों में उत्कृष्टता उत्पन्न करने वाला कोई भी कार्य (संपदन) 'उपसंपदा (लाभदायक कौशल)' कहलाता है।

247. 'और अपने हृदय को शुद्ध करना' प्राचीन मार्ग (श्लोक 2, 105) का क्रियान्वयन और पालन करना है, यह उसी का ध्यान है। जब हृदय शुद्ध हो जाता है, तो सभी श्रेणियाँ शुद्ध हो जाती हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, <भिक्षुओं, हृदय की शुद्धि के उद्देश्य से एक पूर्ण पुरुष के अधीन दिव्य जीवन व्यतीत किया जाता है > ( )

248. शुद्धि दो प्रकार की होती है, अर्थात् बाधाओं का त्याग और अंतर्निहित प्रवृत्तियों का उन्मूलन। शुद्धि के दो स्तर भी हैं, अर्थात् दृष्टि का स्तर और यथार्थ का स्तर।

249. इसमें, जिसके प्रवेश से शुद्धि होती है वह दुख है। जिससे शुद्धि होती है वह मूल है। जिसके द्वारा शुद्धि होती है वह मार्ग है। और जो शुद्ध होता है वह निश्चिंतता है (देखें पे 91)। ये चार सत्य हैं। इसलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'किसी भी प्रकार का पाप न करो... (§238)।
*

250. < सच्चा विचार चलने वाले की रक्षा करता है
उसमें,
जैसे बारिश के समय एक बड़ी छतरी काम आती है।
[45] सही मार्ग पर चलने पर आदर्श का पुरस्कार यह है:
जो भी उस मार्ग पर चलता है, उसका गंतव्य कभी बुरा नहीं होता ।
(§37).

जिसे 'सच्चा विचार' कहा जाता है, वह दो प्रकार का होता है, अर्थात् (1) संभाव्यता-संयम और (2) मार्ग। 'बुरा गंतव्य' दो प्रकार का होता है, जैसा कि नीचे दिया गया है: देवताओं और मनुष्यों की तुलना में, बेचैनी की अवस्थाएँ।

247/1 'प्राचीन मार्ग' का तात्पर्य 'महान मार्ग' के अलावा किसी अन्य मार्ग से नहीं है, जैसा कि पीटीएस नेट्टी , पृष्ठ 222 पर टिप्पणी 1 में सुझाया गया है । टीका में वैकल्पिक शब्द (वा) 'प्राचीन' (अतीत) को या तो 'पूर्व बुद्धों, जिनमें बुद्ध विपस्सी भी शामिल हैं, द्वारा खोजे गए प्राचीन महान मार्ग' या 'प्राचीन बुद्ध विपस्सी द्वारा खोजे गए महान मार्ग' के संदर्भ में प्रस्तुत करना चाहता प्रतीत होता है। यह वही मार्ग है जिसे सभी बुद्ध खोजते हैं।

[पृष्ठ 70]

पथप्रदर्शक

पुन: प्रकट होना एक बुरा गंतव्य है; लेकिन विलुप्ति की तुलना में, सभी प्रकार के पुन: प्रकट होना एक बुरा गंतव्य है।

251. (1) यहाँ, संयम के रूप में सद्गुण के मामले में, इसे अटूट रखना है (देखें ए. iv, 53, और नीचे §299), और यह सच्चा विचार जब सही ढंग से पालन किया जाता है तो व्यक्ति को बेचैनी की अवस्थाओं से बचाता है। तदनुसार भगवान बुद्ध ने कहा <भिक्षुओं, सद्गुणी व्यक्ति के लिए दो प्रकार के गंतव्य हैं: देवता और मनुष्य> ( )।

और तदनुसार, नालंदा नगर में गमानी असिबंधकपुत्त ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे पूज्यवर, पश्चिम देश (f) के कुछ धर्मगुरु हैं, 1 जो कमनालु (तपस्वी का पीने का पात्र) का उपयोग करते हैं, 2 जो जलीय शैवाल की माला पहनते हैं, जो सुबह-शाम जल में उतरते हैं और अग्नि की पूजा करते हैं। जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो वे उसे फुसलाते और विवश करते हैं , 3 ताकि उसे स्वर्ग में स्थान मिल सके । 4 हे पूज्यवर, क्या भगवान बुद्ध ऐसा कर सकते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर समस्त संसार एक शुभ स्थान, स्वर्गलोक में पुनः प्रकट हो सके?" - "इस विषय में, गमानी, मैं आपसे एक प्रश्न पूछूंगा; आप जैसा चाहें उत्तर दें। आप इसे कैसे समझते हैं, गमानी?" यहाँ एक व्यक्ति जीवित प्राणियों का हत्यारा , बिना माँगे लेने वाला, कामुक इच्छाओं में लिप्त, झूठ बोलने वाला, द्वेषपूर्ण वक्ता , कठोर वक्ता, चुगलखोर, लालची, द्वेषपूर्ण हृदय वाला और गलत विचारों वाला हो सकता है। तब लोगों का एक बड़ा समूह इकट्ठा हुआ और उन्होंने हाथ जोड़कर विनती की, "हे प्रभु, शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, यह व्यक्ति स्वर्गलोक में एक शुभ स्थान पर पुनः प्रकट हो।" हे गमानी, आप इसे कैसे समझते हैं? लोगों के उस बड़े समूह की विनती, उनकी प्रार्थना, उनके हाथ जोड़कर प्रार्थना करने के कारण, क्या वह व्यक्ति शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, स्वर्गलोक में एक शुभ स्थान पर पुनः प्रकट होगा? - 'नहीं, आदरणीय महोदय' - ' गमानी, मान लीजिए कि...'

251/1 देखें एस.ए. iii, 104.

251/2 कामनालुका - कुंडिका (अभ्प. 443)। एसए के पास केवल 'सकामनालूनो ' कस्सा जलास्सा मनाओ पस्न्नाभावो कामनाओ , तम लटि ती कामनालु 9 (अभ्प. टीका) है।

251/3 नेट्टिया ने उपरी यापेंती (= एसए. iii, 104) द्वारा उय्यपेंती ('आग्रह') और सम्मा यापेंती (पृष्ठ 92; एसए: सम्मा नेपेंती - एक गलत वर्तनी?) द्वारा सन्नापेंती ('जबरदस्ती') को दर्शाया है । तो सन्नापेंती साम्यपेंती की वर्तनी के रूप में प्रकट होती है (संयोजना के लिए सीएफ। सन्नोजाना), और दोनों शब्द कारक एफएम हैं। ya क्रमशः उपसर्गों u(d) और sam के साथ। न ही PED में है . (सन्नपेटि भी संजानाति का एक संभावित कारक रूप है , लेकिन इसका मतलब यहां नहीं है।)

251/4 NettiA में okkamenti के लिए uggamenti है , जो C द्वारा समर्थित है ; Ba और Bb PTS का समर्थन करते हैं ।

[पृष्ठ 71]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

एक आदमी ने एक बड़े ठोस पत्थर को पानी के एक गहरे कुंड में फेंक दिया, और फिर लोगों का एक बड़ा समूह [46] इकट्ठा हुआ और उन्होंने हाथ जोड़कर विनती की, गिड़गिड़ाया और गिड़गिड़ाया, "हे सज्जनों, ठोस पत्थर को उभरने दो, हे सज्जनों, ठोस पत्थर को ऊपर तैरने दो, हे सज्जनों, ठोस पत्थर को सूखी भूमि पर तैरने दो", हे गमानी , आप इसे कैसे समझते हैं, उनकी विनती के कारण, उनकी गिड़गिड़ाहट के कारण, हाथ जोड़कर विनती करने के कारण, क्या वह ठोस पत्थर उभरेगा, क्या वह ऊपर तैरेगा, क्या वह सूखी भूमि पर तैरेगा? V — 'नहीं, आदरणीय महोदय' — 'तो हे गमानी, जब कोई व्यक्ति जीवित प्राणियों का हत्यारा होता है, . . . और उनकी दृष्टि में यह गलत है, भले ही बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होकर हाथ जोड़कर विनती करें, "हे ईश्वर, मृत्यु के बाद जब इस व्यक्ति का शरीर नष्ट हो जाए, तो वह स्वर्ग में, अच्छे स्थान पर पुनः प्रकट हो", फिर भी मृत्यु के बाद, वह व्यक्ति बेचैनी की स्थिति में, बुरे स्थान पर, नरक में, विपत्ति में पुनः प्रकट हो सकता है। हे गमानी, आप इसे कैसे समझते हैं? यहाँ एक व्यक्ति जीवित प्राणियों को मारने से परहेज कर सकता था , ... उनकी दृष्टि में यह सही था। फिर लोगों का एक बड़ा समूह इकट्ठा हुआ और उन्होंने हाथ जोड़कर विनती की, "हे प्रभु, शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद , यह व्यक्ति बेचैनी की स्थिति में, बुरे गंतव्य में , नरक में, पुनर्प्रकट हो जाए।" हे गमानी, आप इसे कैसे समझते हैं? क्या इतने सारे लोगों की विनती, उनकी प्रार्थना और हाथ जोड़कर की गई प्रार्थना के कारण, शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, वह व्यक्ति बेचैनी की स्थिति में, बुरे गंतव्य में, नरक में, पुनर्प्रकट हो जाएगा? - नहीं, आदरणीय महोदय। —' गामनी, मान लीजिए कि एक व्यक्ति ने घी या तेल का बर्तन एक गहरे तालाब में डुबो दिया और उसे इस प्रकार स्थापित कर दिया कि उसमें मौजूद कोई भी रेत या बजरी नीचे बैठ जाए और उसमें मौजूद कोई भी घी या तेल ऊपर आ जाए, और फिर लोगों का एक बड़ा समूह इकट्ठा हुआ और उन्होंने हाथ जोड़कर विनती की, "हे महोदय, घी , तेल को नीचे बैठने दीजिए; हे महोदय, घी, तेल को नीचे जाने दीजिए", गामनी, आप

इसे कैसे समझते हैं, [47] लोगों के उस बड़े समूह की विनती, उनकी विनती, उनके हाथ जोड़कर विनती करने के कारण, क्या वह घी, वह तेल नीचे बैठ जाएगा, नीचे चला जाएगा? —' नहीं, आदरणीय महोदय।' इसी प्रकार, गामनी, जब कोई व्यक्ति सजीव प्राणियों को मारने से परहेज करता है, . . . उनकी दृष्टि में यह बिल्कुल सही था, भले ही लोगों का एक बड़ा समूह इकट्ठा होकर हाथ जोड़कर विनती करे, गिड़गिड़ाए और प्रार्थना करे, "हे ईश्वर , शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, यह व्यक्ति बेचैनी की स्थिति में, बुरे गंतव्य में, विनाश में , नरक में फिर से प्रकट हो", फिर भी वह व्यक्ति, शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद

[पृष्ठ 72]

पथप्रदर्शक

मृत्यु , अच्छे गंतव्य में , स्वर्गिक लोक में फिर से प्रकट हो सकती है' (एस. iv, 312ff.)।

अतः यही सच्चा विचार है, जिसका सही ढंग से पालन करने पर व्यक्ति बेचैनी की अवस्थाओं से सुरक्षित रहता है।

252. (2) इसमें, मार्ग की तीव्रता, उसकी उत्कृष्टता ही 'सच्चा विचार' है, जिस पर सही ढंग से चलने पर व्यक्ति सभी प्रकार के पुनर्जन्मों से सुरक्षित रहता है। तदनुसार भगवान बुद्ध ने कहा:

अतः उसकी चेतना को सतर्क रखा जाए ।
चरागाह के लिए सही इरादा रखते हुए ,
सही दृष्टिकोण को सर्वोपरि महत्व देना, ज्ञान के माध्यम से।
उठना और गिरना; उनींदापन से परे जाना
और आलस्य , भिक्षु को हो सकता है
सभी बुरे गंतव्यों को त्याग दो > (उद. 38).

253. यहाँ, बुरे गंतव्यों का कारण लालसा और अज्ञान है। ये चार प्रकार के अनुमान हैं (देखें §228)।

254. इन चार प्रकार के आलिंगनों के आधार पर उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रकार के आलिंगन दुख हैं। ये चार प्रकार के आलिंगन ही मूल हैं, जबकि पाँच प्रकार के आलिंगन दुख हैं। भगवान बुद्ध इनके निदान और त्याग के लिए सत्य विचार का उपदेश देते हैं: दुख के निदान और उसके मूल के त्याग के लिए।

255. इसमें, पाँच इंद्रियाँ जिनका आकार है, वे लालसा का आधार हैं जबकि मन की इंद्रिय अज्ञान का आधार है।

256. जो व्यक्ति सजीव पाँच इंद्रियों की रक्षा करता है, वह एकाग्रता बनाए रखता है और लालसा को रोकता है, जबकि जो व्यक्ति मन की इंद्रिय की रक्षा करता है, वह अंतर्दृष्टि बनाए रखता है और अज्ञान को रोकता है।

257. भोग की इच्छा के निवारण से दो प्रकार के अनुमान त्याग दिए जाते हैं, अर्थात् इंद्रिय-इच्छा अनुमान और सद्गुण-और-कर्तव्य अनुमान, जबकि अज्ञान के निवारण से दो प्रकार के अनुमान त्याग दिए जाते हैं, अर्थात् दृष्टिकोण अनुमान और आत्म-सिद्धांत अनुमान।

258. [48] जब चार प्रकार के आशय त्याग दिए जाते हैं, तो दो विचार अस्तित्व में बने रहने के माध्यम से पूर्ण होते हैं, अर्थात् शांति और अंतर्दृष्टि: इसे दिव्य जीवन कहा जाता है।

259. यहाँ, दिव्य जीवन का फल भिक्षु अवस्था के चार फल हैं, अर्थात् धारा-प्रवेश का फल, एक बार वापसी का फल, अनावर्तीता का फल और सर्वोच्च फल जो अरहंतत्व है। ये दिव्य जीवन के चार फल हैं (देखें पे 130, 135)।

252/1 रक्खिताचित्तसा को रक्खिताचित्तो असा में हल करना।

[पृष्ठ 73]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

260. अतः ये दो प्रथम सत्य हैं, अर्थात् दुख और उसका उद्गम (§254); शांति, अंतर्दृष्टि और दिव्य जीवन ही मार्ग हैं; और दिव्य जीवन के फल और अनिर्धारित तत्व, जो इन सबका विषय है, ही निश्चिंतता हैं। ये चार सत्य हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'सच्चा विचार रक्षा करता है...' (§250)।

261. इसमें, जिसके प्रवेश से यह रक्षा करता है वह दुख है। जिससे यह रक्षा करता है वह उत्पत्ति है। जिसके द्वारा यह रक्षा करता है वह मार्ग है। और जो रक्षा करता है वह समाप्ति है (देखें §249)। ये चार सत्य हैं।
262. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'वह तरीका, जब एक ही आधार होता है,
बचे हुए आधार की तलाश
और फिर विपरीत को परिवर्तित करता है
क्या यह रूपांतरण को दर्शाता है? (§11)।
रूपांतरण प्रक्रिया समाप्त हो गई है।
*

---

8. विश्लेषण को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना सूत्र
263. इसमें विश्लेषण को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
'यह विचार, आधार का विश्लेषण करता है,
[पुरुषों के प्रकारों का] तल, साझा
और साझा नहीं किया गया: इस मोड के बारे में जानकारी होनी चाहिए।
जैसा कि विश्लेषण को संप्रेषित करना (§12)।
264. दो प्रकार के सूत्र, अर्थात् नैतिकता से संबंधित और प्रवेश से संबंधित (देखें §§117 और 270), दो मार्ग हैं, अर्थात् योग्यता से संबंधित और [दिव्य जीवन के] फल से संबंधित (देखें §444), जो सद्गुण के दो प्रकार हैं, अर्थात् संयम के रूप में सद्गुण और त्याग के रूप में सद्गुण।
265. यहाँ, योग्यता से निपटने के तरीके के उद्देश्य से ही यह कहा गया है कि

260/1 Tadarammana ca asamkhatadhatu : 'अनिर्धारित तत्व'
(असंखतधातु —एक ऐसा शब्द जो केवल निर्वाण के लिए आरक्षित है) को टीकाओं में कभी-कभी ' संसारों से विरक्त चेतना' का 'विषय' (अरम्मना —शाब्दिक अर्थ 'जिससे चिपका हुआ है' या 'जिस पर टिका हुआ है') कहा जाता है। यहाँ संयुक्त शब्द तदराममन का प्रयोग सामान्य टीकात्मक प्रयोग नहीं है, जिसे 'उसका विषय होना' (स्वतंत्र रूप से 'पंजीकरण': देखें I 7 /.*. 459-60) के रूप में अनुवादित किया जा सकता है; परन्तु यहाँ इसका अर्थ है 'जो उसका विषय है' (पे. 108 पर प्रयोग देखें)।

[पृष्ठ 74]
पथप्रदर्शक
भगवान बुद्ध नैतिकता से संबंधित एक उपदेश देते हैं। जिसे इस प्रकार के उपदेश की आवश्यकता होती है, वह इससे संयम के रूप में सद्गुणों में स्थिर हो जाता है, और वह इस प्रकार के दिव्य जीवन के द्वारा दिव्य जीवन का अनुभव करता है।
266. [49] इसमें, भगवान बुद्ध ने [दिव्य जीवन के] फल से निपटने के मार्ग के उद्देश्य से प्रवेश से संबंधित एक सूत्र का उपदेश दिया है। जिसे [इस प्रकार के उपदेश की आवश्यकता है] वह त्याग के रूप में सद्गुण में स्थिर हो जाता है, और वह उस प्रकार के दिव्य जीवन द्वारा दिव्य जीवन जीने वाला होता है।
267. इसमें, नैतिकता से संबंधित सूत्र क्या है? नैतिकता से संबंधित सूत्र यह है: दान पर चर्चा, सद्गुण पर चर्चा, स्वर्ग पर चर्चा और इंद्रिय सुख में निराशा तथा त्याग के लाभ (देखें एम. आई, 379)।
268. इसमें प्रवेश से संबंधित धागा क्या है? प्रवेश से संबंधित धागा यह है: चार सत्यों का कोई भी प्रदर्शन।
269. नैतिकता से संबंधित विषय में न तो समझ की क्रिया होती है, न ही मार्ग होता है, और न ही मार्ग का फल होता है। वहीं, अंतर्मन से संबंधित विषय में समझ की क्रिया होती है, मार्ग होता है, और मार्ग का फल होता है।

270. ये चार प्रकार के धागों में से पहले दो प्रकार हैं (देखें §§117 और 760) जिनकी सभी प्रकार से (§62) जांच के बाद, इन चार प्रकार के धागों की शिक्षा, फल, गुण और दिव्य जीवन (देखें §§264-5) के संबंध में व्याख्या की जानी चाहिए , जहाँ तक ज्ञान का तल विस्तारित होता है (cf. §156)।

*

271. (1) इसमें, किस प्रकार के विचार समान रूप से साझा किए जाते हैं? 1

270/I यह वाक्य बहुत ही संक्षिप्त और जटिल है; लेकिन टिप्पणी के साथ या उसके बिना भी, इससे वह अर्थ निकालना असंभव प्रतीत होता है जो पीटीएस पृष्ठ 223, टिप्पणी 1 में दिया गया है (और वास्तव में इसका क्या अर्थ है?)। नेटीए, केवल ' देसनया ति देसननायेना' कहने के बाद आगे कहते हैं * "जांच की विधि के अनुसार सभी प्रकार से जांच किए जाने के बाद": इसे जांच की विधि के माध्यम से, ग्यारह शीर्षों (धारा 62 में) के अंतर्गत संसाधित करके सभी भागों के संबंध में जांचा जाना चाहिए। "व्याख्या की विधि के अनुसार व्याख्या की जानी चाहिए": इससे वह यह दर्शाता है कि जांच और व्याख्या की विधियाँ (विचाराहार-युत्तिहारा पढ़ें) विश्लेषण की विधि के लिए प्रारंभिक कार्य का क्षेत्र हैं। "ज्ञान के तल के संदर्भ में": इससे वह दर्शाता है कि विश्लेषण को संप्रेषित करने का तरीका कितना व्यापक क्षेत्र रखता है' (पृष्ठ 94)। 270/2 सी और नेटीए दोनों योजेतब्बानी; बीए और बीबी पीटीएस का समर्थन करते हैं ।
271/1 आम लोगों और स्ट्रीम-एंटरर्स द्वारा साझा किया गया, सबसे पहले, §272 देखें।

[पृष्ठ 75]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

दो प्रकार के विचार समान रूप से साझा किए जाते हैं, अर्थात् नाम के माध्यम से साझा किए गए विचार और किसी वस्तु या व्यक्ति या किसी अन्य प्रकार के विचार के माध्यम से साझा किए गए विचार।

272. दृष्टि द्वारा त्यागे जाने वाले दोष (देखें एम. i, 7f.) सामान्य मनुष्यों में पाए जाते हैं, चाहे वे गलत के प्रति निश्चित हों या अनिश्चित। कामुक इच्छाओं और द्वेष की लालसा सामान्य मनुष्य और धारा में प्रवेश करने वाले दोनों में समान है। परलोक के बंधन सामान्य मनुष्य और अनावर्ती दोनों में समान हैं। किसी भी दीक्षा प्राप्त श्रेष्ठ शिष्य द्वारा प्राप्त की गई कोई भी उपलब्धि उसके और वासना रहित लोगों के लिए समान है। क्योंकि साझा किए गए विचार इस प्रकार प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र की क्रमिक सीमाओं के भीतर ही रहते हैं, और इनमें से किसी भी विचार से युक्त व्यक्ति का प्रकार उस विचार द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक नहीं होता।

इस तरह के विचार सभी में समान रूप से पाए जाते हैं।

273. यहाँ, यह जाँच करनी होगी कि किस प्रकार के विचार आम तौर पर साझा नहीं किए जाते हैं, यह देखते हुए कि शिक्षा दीक्षा प्राप्त करने वालों या सिद्ध पुरुषों [कुलीन व्यक्तियों के मामले में] के बारे में है या उन लोगों के बारे में है जो [इस जीवन में ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हैं, साधारण पुरुषों के मामले में]।

274. कामुक इच्छाओं और द्वेष की लालसा [50] धारा में प्रवेश करने वाले (जो उस मार्ग पर खड़ा है) और साधारण मनुष्य दोनों में समान है , परन्तु धारा में प्रवेश के विचार का मूल स्वरूप दोनों में समान नहीं है। और परवर्ती बंधन उस मार्ग पर खड़े (जो उस मार्ग पर खड़ा है) और उससे नीचे वालों दोनों में समान हैं , परन्तु (जो उस मार्ग पर खड़ा है) और (जो उस मार्ग पर खड़ा है) दोनों में समान नहीं हैं। (परमप्रशिक्षित का नाम) सभी सात प्रकार के दीक्षितों में समान है, परन्तु (प्रत्येक प्रकार के विचार का मूल स्वरूप) शेषों में समान नहीं है। (मार्ग पर) नाम अपने-अपने मार्गों पर चलने वाले सभी चार प्रकारों में समान है, परन्तु (प्रत्येक प्रकार के विचार का मूल स्वरूप) शेषों में समान नहीं है। दीक्षा प्राप्त करने वालों का सद्गुण सभी प्रकार के दीक्षा प्राप्त करने वालों में समान होता है, परन्तु प्रत्येक प्रकार के दीक्षा प्राप्त करने वालों के विचार का मूल स्वरूप भिन्न होता है। इसी कारण निम्न, उच्च और मध्यम स्तरों के अनुसार, भेदों को समझने वाले व्यक्ति द्वारा इसका परीक्षण किया जाना चाहिए।

272/1 'सिद्धांत के प्रति आश्वस्त' (सम्मत्त-नियाता) का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने पहली बार अष्टांगिक मार्ग को प्राप्त किया हो। 'अशुद्धता के प्रति आश्वस्त' (मिच्छत्त-नियाता) का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने मार्ग को प्राप्त नहीं किया है और कोई ऐसा कर्म किया है या कोई ऐसा गलत मत धारण किया है, जिसका पुनर्जन्म होने पर निश्चित रूप से दोष सिद्ध हो जाता है। 'इस प्रकार आश्वस्त नहीं' का अर्थ उन सभी पर लागू होता है जिन्होंने मार्ग को प्राप्त नहीं किया है। तुलना करें §562, और पे 32।

274/1 देखें एन. 99/2.

[पृष्ठ 76]

पथप्रदर्शक

275. (2) देखने का तल (3) निश्चितता में आधार खोजने का आधार है। 1 (2) अस्तित्व में बने रहने का तल (3) उच्चतर फलों को प्राप्त करने का आधार है । सुस्त परिचय का कष्टदायक मार्ग शांति का आधार है। तीव्र परिचय का सुखद मार्ग अंतर्दृष्टि का आधार है। दान देने से पुण्य कमाने का आधार (देखें अनुच्छेद 2, 241) वह साझा आधार है, जो दूसरे के कथन से [सच्चे विचार के बारे में सुनने] के लिए आवश्यक है। सद्गुण से पुण्य कमाने का आधार वह साझा आधार है, जो चिंतन से प्राप्त समझ (देखें अनुच्छेद 46) के लिए आवश्यक है। अस्तित्व में बने रहने से पुण्य कमाने का आधार वह साझा आधार है, जो अस्तित्व में बने रहने से प्राप्त समझ के लिए आवश्यक है। दान देने से पुण्य कमाने का आधार वह साझा आधार है, जो दूसरे के कथन से [सच्चे विचार के बारे में सुनने] और सुनी गई बातों से प्राप्त समझ के लिए आवश्यक है। सद्गुण से उत्पन्न पुण्य का आधार वह साझा आधार है, जो चिंतन से उत्पन्न समझ और तर्कसंगत ध्यान का आधार बनता है। अस्तित्व में बने रहने से उत्पन्न पुण्य का आधार वह साझा आधार है, जो अस्तित्व में बने रहने से उत्पन्न समझ और सही दृष्टिकोण का आधार बनता है।

उपयुक्त स्थानों में रहना (देखें अनुच्छेद 2, 32) एकांत और एकाग्रता का साझा आधार है। सच्चे पुरुषों की प्रतीक्षा करना, अनुभव से प्राप्त तीन प्रकार के विश्वास (देखें उदाहरण के लिए §788) और शांति का साझा आधार है। आत्म-मार्गदर्शन में आठ प्रकार की प्रवृत्ति, विवेक और अंतर्दृष्टि का साझा आधार है।

अनुपयोगी मार्ग का त्याग करना, लाभकारी मार्ग की खोज और एकाग्रता के लिए साझा आधार है। सच्चे विचार का सुप्रसिद्ध होना, लाभकारी जड़ बोने और मार्गों के फल प्राप्त करने के लिए साझा आधार है। समुदाय का उत्तम मार्ग से प्रगति करना, समुदाय की अच्छाई के लिए साझा आधार है। गुरु की श्रेष्ठता, अविश्वासियों में विश्वास जगाने और पहले से ही आत्मविश्वासी लोगों को मजबूत करने के लिए साझा आधार है। पतिमोक्ख नियम [51] का विरोध न करने की स्थिति , अवज्ञाकारी व्यक्तियों को रोकने और धर्मपरायण व्यक्तियों को सांत्वना देने के लिए साझा आधार है।

275/1 नियमवक्कन्ति (== नियदमोक्कन्ति: देखें एस. iii, 225) शब्द धारा-प्रवेश मार्ग को संदर्भित करता है, जिसे 'देखना' भी कहा जाता है। इन संदर्भों में 'अस्तित्व में बने रहना' 3 उच्चतर मार्गों को संदर्भित करता है।

[पृष्ठ 77]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

276. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

यह विचार, आधार का विश्लेषण करता है,

[पुरुषों के प्रकारों का] तल, साझा

और साझा नहीं किया गया: इस मोड के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

जैसा कि विश्लेषण को संप्रेषित करना (§12)।

विश्लेषण प्रस्तुत करने का मोड समाप्त हो गया है।

*

---

9. उलटफेर को दर्शाने के तरीके में नौ गुना धागा

277. इसमें उलटफेर को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

'विपरीत में उलटना

लाभ और हानि के विचार

अस्तित्व में बनाए रखने और छोड़ने के लिए दिखाया गया

इसे 'मोड कन्वेइंग रिवर्सल' कहा जाता है (§13)।
278. सही दृष्टिकोण वाले परिपक्व व्यक्ति में गलत दृष्टिकोण समाप्त हो जाता है, और गलत दृष्टिकोण के कारण उत्पन्न होने वाले अनेक लाभहीन विचार भी समाप्त हो जाते हैं, और सही दृष्टिकोण के कारण वास्तविक अस्तित्व प्राप्त करने वाले अनेक लाभकारी विचार अस्तित्व में बने रहने के कारण उसमें पूर्णता प्राप्त कर लेते हैं (देखें एम. iii, 76)।
एक परिपक्व व्यक्ति में, सही इरादे के साथ...
...सही भाषण...
। । । सही कार्रवाई । । ।
...सही आजीविका...
...सही प्रयास...
...सही जागरूकता...
...सही एकाग्रता...
...सही मुक्ति...
एक परिपक्व व्यक्ति में, उद्धार के सही ज्ञान और दृष्टि से, उद्धार के गलत ज्ञान और दृष्टि का उन्मूलन हो जाता है, और उद्धार के गलत ज्ञान और दृष्टि से उत्पन्न होने वाले अनेक बुरे और लाभहीन विचार भी समाप्त हो जाते हैं, तथा उद्धार के गलत ज्ञान और दृष्टि से उत्पन्न होने वाले अनेक लाभकारी विचार भी समाप्त हो जाते हैं।

[पृष्ठ 78]
पथप्रदर्शक
अपनी स्थिति से मुक्ति का सही ज्ञान और दर्शन प्राप्त करने से वे उसमें पूर्णता प्राप्त करते हैं ।
279. जो व्यक्ति सजीव प्राणियों को मारने से परहेज करता है, उसने सजीव प्राणियों को मारना छोड़ दिया है।
जो व्यक्ति अनचाही वस्तुएँ लेने से परहेज करता है, वह अनचाही वस्तुएँ लेने का त्याग कर चुका होता है।
जो व्यक्ति दिव्य जीवन जीता है, वह उस चीज का त्याग कर चुका है जो दिव्य जीवन नहीं है।
सत्य बोलने वाला व्यक्ति असत्य का त्याग कर देता है। निस्वार्थ भाव से बोलने वाला व्यक्ति द्वेषपूर्ण बातों का त्याग कर देता है।
समय पर बोलने वाला व्यक्ति कठोर भाषा का प्रयोग नहीं करता।
लोभ [52] ने लोभ रहित व्यक्ति में त्याग दिया है।
जिस व्यक्ति को दुर्भावना का ज्ञान नहीं होता, वह दुर्भावना का त्याग कर चुका होता है।
सही दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति ने गलत दृष्टिकोण को त्याग दिया है।
280. यदि कोई आठ-कारक मार्ग की निंदा करता है, तो उनके कथनों से स्वयं देखने योग्य कुछ वैध निष्कर्ष निकलते हैं जो निंदनीय हैं (एम. iii, 77) [इस प्रकार]।
281. क्योंकि जब योग्य व्यक्ति सही दृष्टिकोण की निंदा करते हैं, तो इसका परिणाम यह होता है कि गलत दृष्टिकोण रखने वालों को योग्य व्यक्तियों द्वारा सम्मानित और सराहा जाना चाहिए।
क्योंकि जब वे योग्य व्यक्ति सही इरादे के विचार की निंदा करते हैं।
...सही भाषण...
। । । सही कार्रवाई । । ।
...सही आजीविका...
...सही प्रयास...
...सही जागरूकता...
...सही एकाग्रता...
...सही मुक्ति...
क्योंकि जब योग्य व्यक्ति मुक्ति के सही ज्ञान और दृष्टि के विचार की निंदा करते हैं , तो इसका परिणाम यह होता है कि जिन लोगों को मुक्ति का गलत ज्ञान और दृष्टि है, उन्हें योग्य व्यक्तियों द्वारा सम्मानित और सराहा जाना चाहिए (cf. एम. iii, 77)।

282. और यदि कोई यह कहे कि 'इंद्रिय सुख की इच्छाओं को नियंत्रित किया जाना चाहिए'

278/1 'दस सही बातें' आमतौर पर मार्ग के 8 कारकों के साथ-साथ 'सही ज्ञान' और 'सही मुक्ति' से मिलकर बनी होती हैं (एम. iii, 78)। यह प्रस्तुति विधि सीधे एम. सूत्र 117, अंत से ली गई है ।

[पृष्ठ 79]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

आनंद लिया जाना चाहिए, कामुक इच्छाओं में आनंद लिया जाना चाहिए, कामुक इच्छाओं को दोहराया जाना चाहिए, कामुक इच्छाओं का उपयोग किया जाना चाहिए, कामुक इच्छाओं को अस्तित्व में रखा जाना चाहिए, कामुक इच्छाओं को बहुत महत्व दिया जाना चाहिए' (cf. एम. i, 130), तो उनके अनुसार कामुक इच्छाओं से परहेज करना सच्चा विचार नहीं है।

या यदि कोई ऐसा है जो कहता है 'सच्चा विचार आत्म-यातना के प्रति समर्पण है' (cf. एम. i, 92f.), तो सच्चा विचार जो आउटलेट है, उनके अनुसार सच्चा विचार नहीं है।

और अगर कोई ऐसा है जो कहता है 'सच्चा विचार कष्टदायक है' (cf. एम. i, 93f.), तो उनके अनुसार सुखद सच्चा विचार सच्चा विचार नहीं है।

283. जिस प्रकार एक भिक्षु कुरूपता का चिंतन करते समय सभी निर्धारणों में सौंदर्य की धारणा को त्याग देता है, जिस प्रकार वह पीड़ा का चिंतन करते समय सुख की धारणा को त्याग देता है, जिस प्रकार वह अनित्यता का चिंतन करते समय स्थायित्व की धारणा को त्याग देता है, और जिस प्रकार वह अनात्म का चिंतन करते समय आत्म-बोध को त्याग देता है (देखें भजन 1, 46-7), तो वह जिस भी विचार का चयन या अनुमोदन करता है, [इस प्रकार] वह ऐसे किसी भी विचार के विपरीत को अवांछित के रूप में शामिल कर लेता है।

284. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

'विपरीत में उलटना
लाभ और हानि के विचार
अस्तित्व में बनाए रखने और छोड़ने के लिए दिखाया गया
इसे 'मोड कन्वेइंग रिवर्सल' कहा जाता है (§13)।
उलटफेर की सूचना देने का माध्यम समाप्त हो गया है।
*

---

10. पर्यायवाची शब्दों को व्यक्त करने के तरीके में नौ गुना धागा

285. [53] इसमें, समानार्थी शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

धागों का ज्ञाता वही है जो जानता है
एक के कितने पर्यायवाची शब्द हैं?
इस थ्रेड में ये विचार हैं: यह मोड
क्या यह पर्यायवाची शब्द संप्रेषित कर रहा है? (§14)

286. जिस प्रकार भगवान बुद्ध अनेक पर्यायवाची शब्दों के माध्यम से एक ही विचार को स्पष्ट करते हैं। [उदाहरण के लिए:]

[पृष्ठ 80]

पथप्रदर्शक

आवश्यकता और लालसा, प्रत्याशापूर्ण आनंद, विभिन्न तत्वों पर आधारित प्रलोभन, अज्ञान में निहित लालसा:
मैं उन सभी चीजों को उनकी जड़ से समाप्त करता हूँ > (§137).

287. जिसे 'आवश्यकता' (आसा) कहा जाता है, वह किसी लाभ के लिए होने वाली लालसा (असिंसन) है; *■ 'आवश्यकता' इस प्रकार उत्पन्न होती है 'निश्चित रूप से यह आएगा'।

288. जिसे 'लालसा' कहा जाता है, वह वर्तमान में प्राप्त किसी लाभ की आकांक्षा है, या फिर किसी बेहतर व्यक्ति को देखकर मन में यह लालसा उत्पन्न होती है कि 'काश मैं भी वैसा ही हो जाऊं' ।
289. लाभ के उत्पादन को बढ़ावा देना ही 'प्रतीक्षित आनंद' कहलाता है, या इस प्रकार कोई प्रिय रिश्तेदार की अपेक्षा करता है, या इस प्रकार किसी प्रिय विचार की अपेक्षा करता है, या इस प्रकार किसी अप्रिय चीज़ की अपेक्षा करता है।
290. 'विभिन्न तत्व' हैं: आँख तत्व, रूप तत्व और आँख-चेतना तत्व; कान तत्व, ध्वनि तत्व और कान-चेतना तत्व; नाक तत्व, गंध तत्व और नाक-चेतना तत्व; जीभ तत्व, स्वाद तत्व और जीभ-चेतना तत्व; शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व और शरीर-चेतना तत्व; मन तत्व, विचार तत्व और मन-चेतना तत्व (cf. एम. iii, 62)।
291. 'प्रलोभन': कुछ रूपों में विश्वास करते हैं, कुछ ध्वनियों में विश्वास करते हैं, कुछ गंधों में विश्वास करते हैं, कुछ स्वादों में विश्वास करते हैं, कुछ मूर्त चीजों में विश्वास करते हैं, कुछ विचारों में विश्वास करते हैं (cf. §568)।
इसमें चौबीस शब्द, अर्थात् गृहस्थ जीवन को आधार बनाकर शोक के छह प्रकार (देखें एम. iii, 218), गृहस्थ जीवन को आधार बनाकर आनंद के छह प्रकार (देखें एम. iii, 217), त्याग को आधार बनाकर शोक के छह प्रकार (देखें एम . iii, 218), त्याग को आधार बनाकर आनंद के छह प्रकार (देखें एम. iii, 217), लालसा से संबंधित पक्ष में होने के कारण लालसा के पर्यायवाची हैं।
लेकिन गृहस्थ जीवन को आधार बनाकर समभाव बनाए रखने के छह प्रकार (देखें एम. iii, 219) विचारों से संबंधित हैं। आकांक्षा की अवस्था में वही [समभाव बनाए रखने का भाव], सत्य विचार का आनंद लेना, सत्य विचार से प्रेम करना, सत्य विचार से जुड़े रहना, लालसा का पर्यायवाची है (cf. §506)।
293. संज्ञान, [54] मन, और चेतना, 1 संज्ञान के पर्यायवाची हैं (cf. एस . ii, 94)।

287/1 भविस्सास्सा: भविष्य कृदंत का जनन.
288/1 पढ़ें पत्तन, सेय्यातरम वा दिस्व 'एडिसो । . .
293/1 mano vinnanam को दो शब्दों के रूप में पढ़ें।

[पृष्ठ 81]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
294. मन की क्षमता, मन का तत्व, मन का आधार और सचेत होने की क्रिया, मन के पर्यायवाची हैं।
समझ की क्षमता, समझ की शक्ति, उच्च समझ में प्रशिक्षण, समझ की श्रेणी, विचारों की जांच, ज्ञान का कारक, ज्ञान, सही दृष्टिकोण, निर्णय, अंतर्दृष्टि, किसी विचार के बारे में ज्ञान, किसी अर्थ के बारे में ज्ञान, किसी निष्कर्ष के बारे में ज्ञान, थकावट के बारे में ज्ञान, गैर-उत्पत्ति के बारे में ज्ञान, मैं अंततः उस चीज़ को जान लूँगा जो अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है, अंतिम ज्ञान की क्षमता, अंतिम ज्ञाता की क्षमता, दृष्टि (आँख), विज्ञान, खोज, व्यापकता, बुद्धि, प्रकाश, या इस तरह के कोई अन्य शब्द: ये सभी समझ के पर्यायवाची हैं (cf. §440)।
295. जब सभी पाँचों इंद्रियाँ संसार से अलग हो जाती हैं, तो वे समझ बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त, आस्था में प्रभुत्व का भाव होता है, ऊर्जा में प्रेरणा का भाव होता है, सजगता में [अपने विषय से] विचलित न होने का भाव होता है, एकाग्रता में विचलित न होने का भाव होता है, और समझ में समझने की क्रिया का भाव होता है (cf. §§162-3)।
296. और जैसा कि प्रबुद्ध व्यक्ति के स्मरण में कहा गया है: <भगवान बुद्ध ऐसे हैं क्योंकि वे सिद्ध हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध हैं, 1 विज्ञान और आचरण में परिपूर्ण हैं , उदात्त हैं , संसारों के ज्ञाता हैं, मनुष्यों के अतुलनीय नेता हैं जिन्हें वश में किया जाना है , देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक हैं, प्रबुद्ध हैं, धन्य हैं> (पे 131; ए. iii, 285), [और आगे] वे जो शक्तियों को उत्पन्न करने आए हैं, 2 निर्भीकता के प्रकारों तक पहुँचे हैं, विवेक तक पहुँचे हैं, चार बंधनों को पीछे छोड़ दिया है, बुरे रास्तों से परे चले गए हैं, कांटों को निकाल दिया है, घावों को ठीक कर दिया है, 3 कांटों को कुचल दिया है, जुनूनों का इलाज किया है, बंधन से आगे निकल गए हैं, बंधनों को खोल दिया है, प्रवृत्ति से परे चले गए हैं, अंधकार को भंग कर दिया है; वह कौन है जो दृष्टि का स्वामी है, जिसने सांसारिक विचारों पर विजय प्राप्त कर ली है, जो वांछित और अवांछित विचारों के बीच पक्ष लेने और विरोध करने से विरक्त है, जो संचय का सहारा नहीं लेता, जो बंधन से परे चला गया है, जिसने युद्ध करना छोड़ दिया है, जो सबसे प्रख्यात है, जो मशालवाहक है, प्रकाश -निर्माता है, प्रकाशक है, अंधकार को दूर करने

वाला है, संघर्ष का त्याग करने वाला है, गुणों में असीम है, गुणों में विशाल है, गुणों में अगणनीय है, दीप्ति का निर्माता है, प्रकाशमान है, सच्चे आदर्श का प्रकाशक है, प्रबुद्ध है, धन्य है।

296/1 शायद संबुद्ध को अनुबुद्ध ('दूसरे द्वारा प्रबुद्ध') के विपरीत 'स्वयं प्रबुद्ध' के रूप में अनुवादित किया जाना चाहिए ।

296/2 Read balanipphattigato.

296/3 ' निरुलहवानो - जिसने घाव ठीक किया है' : पी.ई.डी. में इस अर्थ में निरुलह नहीं।

296/4 ' ओक्कधारो - मशाल वाहक': रूप पी.ई.डी. में नहीं है, जहाँ ukkd देखें ; सी. और बी.बी. में u kkadharo है, लेकिन बा. पी.टी.एस. का समर्थन करता है ।

[पृष्ठ 82]

पथप्रदर्शक

ये प्रबुद्ध व्यक्ति की स्मृति के पर्यायवाची हैं।

297. और जैसा कि सच्चे विचार के स्मरण [55] में कहा गया है < सच्चे विचार को भगवान बुद्ध द्वारा अच्छी तरह से घोषित किया गया है, जिसे स्वयं देखा जाना चाहिए, विलंबित नहीं (कालजयी), निरीक्षण के लिए आमंत्रित, आगे बढ़ने वाला, और बुद्धिमानों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा सकता है > (ए. iii, 285), < अर्थात्, अहंकार का मोहभंग, प्यास का मार्गदर्शन , निर्भरता का उन्मूलन , चक्र का अंत, शून्य, बहुत कठिन प्राप्ति, लालसा की समाप्ति, लुप्त होना, समाप्ति, विलुप्त होना > (पे 131; cf. ए. ii, 34), [और आगे:]

अनिर्धारित, अनंत और निष्कलंक
सत्य, दूर का किनारा, सूक्ष्म, जिसे देखना बहुत कठिन है,
जो शाश्वत, अमर और कभी नष्ट न होने वाला है,
कोई उपस्थिति न दिखाना, 1 अविविधीकरण, शांति,
अमर, सर्वोच्च, आनंदमय और सुरक्षित, प्यास की अतृप्ति, अद्भुत, चमत्कारी,
जो विपत्तियों से मुक्त हैं, जिनका स्वभाव ही विपत्तियों से मुक्त होना है।
विलुप्ति (देखें अनुच्छेद 4, 368-71)—यही वह शिक्षा है जो परम पूज्य ने दी है—
अजन्मे और अस्तित्व में न आए हुए (उद. 80),
खतरों से मुक्त,
अजन्मा (उद. 80), और शोकरहित, शोकमुक्त,
जो खतरे से मुक्त है, जिसका स्वभाव ही खतरे से मुक्त होना है, उसका अस्तित्व समाप्त हो जाना—यही परम पूज्य ने सिखाया है—
गहन, और साथ ही समझना भी बहुत मुश्किल।
उत्कृष्ट भी, और अतुलनीय भी।
वह भिन्न है, उसकी कोई समानता नहीं है।
इसे सर्वोपरि और सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है।
ढाल, आश्रय, बिना संघर्ष के, 2 बिना किसी दोष के,
बेदाग, निर्मल, जैसा कि इसे कहा जाता है।
दीपक (द्वीप), और परमानंद, असीम, स्थिति, गैर-स्वामित्व, गैर-विविधीकरण कहलाते हैं।
ये "सच्चे विचार की स्मृति" के पर्यायवाची शब्द हैं।

297/1 ' अनिदासना —जो प्रकट नहीं होता': यह शब्द एम. i, 329 पर मिलता है (जहाँ यह बुद्ध द्वारा बोला गया है, ब्रह्मा द्वारा नहीं—देखें एम. का बर्मी चत्था-सांग्लती संस्करण) और डी. i, 223 पर दोहराया गया है, और यह अभिधम्म मतिका या 'अनुसूची' (धस्. पृ. 3) के 9वें द्वैत में भी एक शब्द है। आमतौर पर इसका अनुवाद 'अदृश्य' किया जाता है। देखें ख्या. अनुवाद. परिशिष्ट I/ भू.

297/2 पीटीएस नेट्टी इंडेक्स यहां सरना के लिए 'शरण' देता है , इसे एस. iv, 372 पर 'परना' के बराबर मानते हुए । सर-आना (y'sar 'बहना' से प्रतिस्थापन) को सा-राना ('संघर्ष के साथ') के साथ भ्रमित करना आसान है, जो अरना का विपरीत है (देखें एम. iii, 235)। 'अरानो ती अराजो निक्कीलेसो ' (एमए. वी., 32)।

[पृष्ठ 83]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

298. और जैसा कि समुदाय के स्मरण में कहा गया है < भगवान बुद्ध के श्रोताओं का समुदाय अच्छे मार्ग से आगे बढ़ा है, भगवान बुद्ध के श्रोताओं का समुदाय सीधे मार्ग से आगे बढ़ा है, भगवान बुद्ध के श्रोताओं का समुदाय सच्चे मार्ग से आगे बढ़ा है, भगवान बुद्ध के श्रोताओं का समुदाय उचित मार्ग से आगे बढ़ा है, अर्थात् , चार जोड़ी पुरुष, आठ प्रकार के परिपक्व व्यक्ति । भगवान बुद्ध के श्रोताओं का यह समुदाय दान के योग्य है, आतिथ्य के योग्य है, भेंट के योग्य है, आदरपूर्वक अभिवादन के योग्य है, क्योंकि यह दुनिया के लिए अतुलनीय पुण्य क्षेत्र है > (ए. iii, 286), [56] [और आगे] सद्गुण में परिपूर्ण, एकाग्रता में परिपूर्ण, मुक्ति में परिपूर्ण, मुक्ति के ज्ञान और दर्शन में परिपूर्ण; यह प्राणियों का मूल तत्व है (देखें एम. iii, 80), प्राणियों का सूक्ष्म सार, प्राणियों का सूक्ष्म अर्क, प्राणियों का स्तंभ, प्राणियों की सुगंध का फूल, 1 जिसे देवताओं और मनुष्यों द्वारा सम्मानित किया जाना चाहिए। ये समुदाय की स्मृति के पर्यायवाची हैं।

299. और जैसा कि सद्गुणों के स्मरण में कहा गया है < वे सद्गुण जो अखंड, अक्षत, बेदाग, बेदाग, श्रेष्ठ, श्रेष्ठों द्वारा वांछित , मुक्तिदायक, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित, गलत न समझे जाने वाले और एकाग्रता में सहायक होते हैं> (ए. iii, 286), [और आगे] सद्गुण सर्वोच्च अंग को सुशोभित करने वाले आभूषण के रूप में, 1 और सद्गुण सभी दोषों पर विजय प्राप्त करने के अर्थ में संचित खजाने के रूप में, और सद्गुण लक्ष्य को भेदने के लिए धनुर्धर की कला के रूप में, और सद्गुण उल्लंघन न करने के अर्थ में नियम के रूप में, और सद्गुण दरिद्रता को समाप्त करने के अर्थ में अनाज के धन के रूप में, और सद्गुण [शांति और अंतर्दृष्टि के] विचारों का अवलोकन करने के उद्देश्य से दर्पण के रूप में, और सद्गुण अवलोकन के लिए एक महल के रूप में, और सद्गुण जो चारों तलों के साथ समानांतर घटित होने के कारण, 2 अमरता में समाप्त होता है। ये सद्गुणों के स्मरण के पर्यायवाची हैं।

300. और जैसा कि उदारता की स्मृति में कहा गया है <एक पर

298/1 'सुरभि-पसुना - सुगंध से खिलना': एक यौगिक के रूप में पढ़ें। सुरभि (सुगंध, सुगंध) पीईडी में नहीं, जेडी देखें । vi, 236, Abhp. 146; पसुना पीईडी में नहीं है । नेत्तिया : ' सुरभि-कुसुमन ति अथच >' (पृ. 102). एबीएचपी देखें । टीएलकेडी एबीएचपी। 16.

299/1 उत्तमांगोपशोभनाटय पढ़ें और उत्तमांग ('सिर') -एफ- उपसोभनाटय में संकल्प लें। पीटीएस नेटी इंडेक्स ('उत्तमंगा (एम.)') में नोट '(एम.)' ने संधि ओ (— ए -\-यू) को मास्क समझ लिया है। नामांकित. गाओ, समाप्ति.

299/2 इसका अर्थ है कि यह अस्तित्व के 3 तलों (इंद्रिय-इच्छा, रूप और निराकारता) के साथ-साथ असंलग्न (अपरिदपन्न) चौथे तल (सकारात्मक या नकारात्मक, अस्तित्व का नहीं) के साथ भी सहविस्तारित है, जो संसारों से विच्छेदित है और समाप्ति (अमर अंत) से संबंधित है।

[पृष्ठ 84]

पथप्रदर्शक

वह अवसर जिस पर एक नेक श्रोता घर में रहता है, उदार, खुले हाथों वाला, त्याग करने में प्रसन्न, भीख मांगे जाने का आदी, और देने और साझा करने में प्रसन्न ...> (ए. iii, 287)। ये उदारता की स्मृति के पर्यायवाची हैं।

301. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

धागों का ज्ञाता वही है जो जानता है

एक के कितने पर्यायवाची शब्द हैं?

इस थ्रेड में ये विचार हैं: यह मोड

क्या यह पर्यायवाची शब्द संप्रेषित कर रहा है? (§14)

पर्यायवाची शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका समाप्त हो गया है।

*

11. वर्णन संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा
302. इसमें, विवरण संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
भगवान बुद्ध एक ही विचार सिखाते हैं
अनेक प्रकार के वर्णनों के माध्यम से:
इस मनोदशा को इस प्रकार जाना जा सकता है
वह विधि जो विवरण व्यक्त करती है' (§15)।
303. [57] किसी भी वस्तु के स्वरूप के बारे में व्याख्यात्मक प्रवचन द्वारा दिया गया कोई भी शिक्षण, प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है। 1 और किसी भी वस्तु के स्वरूप के बारे में व्याख्यात्मक प्रवचन के रूप में दिया गया शिक्षण क्या है? यह चार सत्य हैं, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा है: <यह दुख है > (§49)। यह एक वर्णन है। यह पाँच श्रेणियों, छह तत्वों, अठारह तत्वों, बारह आधारों और दस इंद्रियों पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है। 2

303/1 ' निक्खेपपन्नत्ति - प्रस्तुति के संदर्भ में वर्णन': नेत्ति ए : 'यह भगवान बुद्ध के अर्थ को, उनके आशय के अनुसार, एक मार्गदर्शक निरंतरता (अर्थात, एक प्रशिक्षित व्यक्ति के मन में) में प्रस्तुत करता है (निक्खिपति , शाब्दिक रूप से "बाहर फेंकता है"), इसलिए इसे "प्रस्तुति" (निक्खेपा) कहा जाता है (पृष्ठ 102)। टीका आगे कहती है ' निक्खिपति ति पतित्थापेति, यथा चत्तरो सुत्तनिक्खेपा (एमए. i, 15) आदि अत्था-कथासु वच्चति' (पृष्ठ 70)। यहाँ दिए गए 'वर्णन' के प्रकारों का पुग ए में सूचीबद्ध सेटों से कोई संबंध नहीं है (पृष्ठ नोट अध्याय viii, टिप्पणी 11 देखें : वहाँ इसे 'अवधारणा' के रूप में प्रस्तुत किया गया है)।
303/2 नेटिया के अनुसार , 'दस इंद्रियां' 'आठ इंद्रियां हैं जिनमें रूप होता है (अर्थात, आंख, कान, नाक, जीभ, शरीर, स्त्रीत्व, पुरुषत्व और जीवन—देखें,

[पृष्ठ 85]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
304. भिक्षुओं, यदि शारीरिक पोषण के लिए कामवासना, लालसा, या तृप्ति हो, तो वहाँ चेतना को स्थिरता मिलती है और वह विकसित होती है। जहाँ कहीं भी चेतना को स्थिरता मिलती है और वह विकसित होती है, वहाँ नाम-रूप का आधार स्थापित होता है। जहाँ कहीं भी नाम-रूप का आधार स्थापित होता है, वहाँ संकल्प परिपक्व होते हैं। जहाँ कहीं भी संकल्प परिपक्व होते हैं, वहाँ भविष्य में नवजन्म होता है। जहाँ भविष्य में नवजन्म होता है, वहाँ भविष्य में जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। जहाँ भविष्य में जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु होती है, वह दुःख, कष्ट और निराशा से भरी होती है, भिक्षुओं, मैं कहता हूँ। यदि संपर्क के लिए कामवासना हो, तो निराशा होती है। यदि मन की इच्छा के लिए विशालता हो, तो निराशा होती है। यदि चेतना के लिए कामवासना हो , तो निराशा होती है। निराशा > (पे 49, 97; एस. ii, 101ff.). 2
305. यह दुख और उसके मूल के लिए दिए जाने-अस्तित्व के संदर्भ में वर्णन है।
306. भिक्षुओं , यदि शारीरिक पोषण के लिए कामवासना, भोग-विलास और लालसा न हो, तो चेतना को स्थिरता न मिलती है और न ही उसका विकास होता है। जहाँ चेतना को स्थिरता न मिलती है और न ही उसका विकास होता है, वहाँ नाम-रूप का आधार नहीं मिलता। जहाँ नाम-रूप का आधार नहीं मिलता, वहाँ संकल्प परिपक्व नहीं होते। जहाँ संकल्प परिपक्व नहीं होते, वहाँ भविष्य में अस्तित्व का नवीकरण नहीं होता। जहाँ भविष्य में अस्तित्व का नवीकरण नहीं होता , [58] वहाँ भविष्य में जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती। जहाँ भविष्य में जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती, वहीं दुख रहित, भिक्षुओं, निर्मल और निराशा से मुक्त, मैं कहता हूँ। यदि संपर्क की कामवासना न हो, तो निराशा से मुक्त । यदि मन की कामवासना न हो-

उदाहरण के लिए, विज़. 491), मन-सत्ता, और भाव-सत्ता (पाप, आनंद, पीड़ा, दुःख और समभाव को एक मानते हुए)' (पृष्ठ 102)। यह क्रमांकन असामान्य है। अन्य 10 के लिए §405 देखें।

304/1 'पोषण' (आहार) की अवधारणा बौद्ध चिंतन का मूल आधार है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'प्राप्त करना' और इसका प्रयोग मूलतः भौतिक भोजन के लिए किया जाता है, लेकिन सादृश्य के आधार पर इसे अन्य तीन प्रकार के भोजनों पर भी लागू किया जाता है, और इस प्रकार यह ' अनिवार्य स्थिति ' (पच्चय) का पर्यायवाची है। तुलना करें: 'सभी प्राणी पोषण से ही जीवित रहते हैं' (अ.व. , 50-1), एक ऐसा तथ्य जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिए (डी. iii, 273)। इसलिए, किसी भी प्रकार के पोषण के बिना स्व-निर्भर मानी जाने वाली स्थिति को मात्र एक काल्पनिक अमूर्त अवधारणा माना जाएगा, जिसका सत्यापन संभव नहीं है और जिसे प्रभावी रूप से शून्य से अलग नहीं किया जा सकता है।

304/2 यह उद्धरण और इसका प्रतिरूप §306 में अनुभव की सशर्तता को गतिशील रूप में वर्णित करते हैं, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि अस्तित्व (होना) अज्ञान और निर्धारणों के माध्यम से कैसे विकसित होता है। §840 में उद्धरण देखें।

[पृष्ठ 86]

पथप्रदर्शक

विकल्प, . . . निराशा से मुक्त। यदि कोई वासना नहीं है . . . चेतना के लिए, . . . निराशा से मुक्त > (एस. ii, 102f.; पे 49, 97)।

307. यह पीड़ा पर लागू निदान का वर्णन है, उत्पत्ति पर लागू त्याग का वर्णन है, मार्ग पर लागू अस्तित्व में बनाए रखने का वर्णन है, समाप्ति पर लागू सत्यापन का वर्णन है।

308. < भिक्षुओं, एकाग्रचित्त रहो: जो भिक्षु परिश्रमी, विवेकशील, सचेत और एकाग्रचित्त होता है, वह समझता है कि [चीजें] कैसी हैं। वह चीजों को कैसे समझता है? आँख क्षणभंगुर है: इसी तरह वह चीजों को समझता है। रूप क्षणभंगुर हैं: इसी तरह वह चीजों को समझता है। दृष्टि चेतना क्षणभंगुर है: इसी तरह वह चीजों को समझता है। नेत्र संपर्क क्षणभंगुर है: इसी तरह वह चीजों को समझता है। नेत्र संपर्क के कारण जो भी अनुभूति होती है, चाहे वह सुखद हो या पीड़ादायक या न पीड़ादायक-न ही सुखद, वह भी क्षणभंगुर है: इसी तरह वह चीजों को समझता है। कान क्षणभंगुर हैं... ध्वनियाँ क्षणभंगुर हैं... नाक क्षणभंगुर है... गंध क्षणभंगुर हैं... जीभ क्षणभंगुर है... स्वाद क्षणभंगुर हैं... शरीर क्षणभंगुर है... स्पर्शनीय वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं ... मन क्षणभंगुर है: वह इसे इसी प्रकार समझता है। विचार क्षणभंगुर हैं: वह इसे इसी प्रकार समझता है। मन-चेतना क्षणभंगुर है: वह इसे इसी प्रकार समझता है। मन-संपर्क क्षणभंगुर है: वह इसे इसी प्रकार समझता है। जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, चाहे वह सुखद हो, दुखदायी हो या न दुखदायी हो , जो मन-संपर्क के साथ उत्पन्न होता है, वह भी क्षणभंगुर है: वह इसे इसी प्रकार समझता है (देखें श्लोक 4, 80)।

309. यह मार्ग पर लागू होने के संदर्भ में एक विवरण है, पीड़ा पर लागू होने वाले निदान के संदर्भ में एक विवरण है, उत्पत्ति पर लागू होने वाले त्याग के संदर्भ में एक विवरण है, समाप्ति पर लागू होने वाले सत्यापन के संदर्भ में एक विवरण है।

310. [59] < राधा, रूप का त्याग करो, उसे चकनाचूर कर दो, उसे खेल से बाहर कर दो, समझ के माध्यम से, कृप के अंत का मार्ग अपनाओ। कृप के अंत से दुख का अंत होता है। दुख के अंत से मृत्यु होती है। भावना का त्याग करो... बोध का त्याग करो... संकल्पों का त्याग करो... चेतना का त्याग करो , उसे चकनाचूर कर दो, उसे खेल से बाहर कर दो, समझ के माध्यम से, कृप के अंत का मार्ग अपनाओ। कृप के अंत से दुख का अंत होता है। दुख के अंत से मृत्यु होती है > (देखें श्लोक iii, 190)।

311. यह समाप्ति के संदर्भ में समाप्ति पर लागू किया गया एक विवरण है, वैराग्य के संदर्भ में संतुष्टि पर लागू किया गया एक विवरण है, एक

[पृष्ठ 87]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

पीड़ा के लिए निदान के संदर्भ में वर्णन, उत्पत्ति के लिए त्याग के संदर्भ में वर्णन, मार्ग के लिए अस्तित्व में बनाए रखने के संदर्भ में वर्णन, और समाप्ति के लिए सत्यापन के संदर्भ में वर्णन।

312. < 'यही पीड़ा है': वह इसे इसी प्रकार समझता है। ' यही पीड़ा का मूल है, वह इसे इसी प्रकार समझता है। 'यही पीड़ा का अंत है, वह इसे इसी प्रकार समझता है।

'यही वह मार्ग है जो पीड़ा के अंत की ओर ले जाता है ': वह इसे इसी तरह समझता है > (एम. आई, 183; पे 41)।

313. यह सत्यों पर लागू प्रवेश के संदर्भ में एक विवरण है, देखने के तल पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक विवरण है, पथ पर लागू अस्तित्व में बनाए रखने के संदर्भ में एक विवरण है, धारा-प्रवेश के फल पर लागू सत्यापन के संदर्भ में एक विवरण है।
314. <' ये दोष हैं': वह इसे इसी प्रकार समझता है। ' यह दोषों का मूल है': वह इसे इसी प्रकार समझता है। 'यह दोषों का निवारण है': वह इसे इसी प्रकार समझता है। 'यह दोषों के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग है': वह इसे इसी प्रकार समझता है > (एम. आई, 183)।
315. यह उत्पत्ति के संदर्भ में एक वर्णन है जो थकावट के ज्ञान पर लागू होता है, अवसर के संदर्भ में एक वर्णन है जो गैर-उत्पत्ति के ज्ञान पर लागू होता है, अस्तित्व में बनाए रखने के संदर्भ में एक वर्णन है जो मार्ग पर लागू होता है, निदान के संदर्भ में एक वर्णन है जो पीड़ा पर लागू होता है, त्याग के संदर्भ में एक वर्णन है जो उत्पत्ति पर लागू होता है, उकसाने के संदर्भ में एक वर्णन है जो ऊर्जा संकाय पर लागू होता है, 'कीड़ों' पर लागू 'हटाने' 1 के संदर्भ में एक वर्णन है (देखें एम. आई, 220; ए. वी, 347ff.), अस्तित्व में बनाए रखने के तल पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है, और बुरे अनुपयोगी विचारों पर लागू प्रतिकार 2 के संदर्भ में एक वर्णन है।
316. <' यह पीड़ा है': ऐसा ही दर्शन, ज्ञान , समझ, विज्ञान, प्रकाश था जो उन विचारों के संबंध में उत्पन्न हुआ जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे। 'यह पीड़ा का मूल है': ऐसा ... ' यह पीड़ा का निवारण है': ऐसा... ' यह पीड़ा के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग है': ऐसा ही दर्शन, ज्ञान, समझ , विज्ञान, प्रकाश था जो उन विचारों के संबंध में उत्पन्न हुआ जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे (तुलना करें एस.वी. , 424एफ.)।
317. यह सत्यों पर लागू शिक्षण के संदर्भ में एक विवरण है, समझ पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक विवरण है।

315/1 ' अहतना -हटाना': पी.ई.डी. में नहीं है ।
315/2 'अभिनिघात - प्रतिकार': पी.ई.डी. में नहीं , सी.पी.डी. देखें ; तुलना भी निघाटा।

[पृष्ठ 88]
पथप्रदर्शक
जो सुना जाता है उसमें निहित, सत्यापन के संदर्भ में एक विवरण जो 'मैं अंततः उस अभी तक अनिर्धारित ज्ञात संकाय को जान लूँगा' पर लागू होता है, 'सच्चे विचार के पहिये (आशीर्वाद)' पर लागू 'चालू करने' (घटित करने) के संदर्भ में एक विवरण।
318. <' इस पीड़ा का निदान किया जाना चाहिए ': ऐसा ही दर्शन , ज्ञान , समझ , विज्ञान , प्रकाश था जो उन विचारों के संबंध में उत्पन्न हुआ जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे। 'पीड़ा के इस मूल को त्याग देना चाहिए ' : ऐसा ... 'पीड़ा के इस निवारण की पुष्टि की जानी चाहिए... 'पीड़ा के निवारण की ओर ले जाने वाले इस मार्ग को बनाए रखना चाहिए 9 : ऐसा ही दर्शन , ज्ञान , समझ , विज्ञान , प्रकाश था जो उन विचारों के संबंध में उत्पन्न हुआ जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे ।
(तुलना करें /एस.वी, 424एफ.).
319. यह मार्ग पर लागू होने के संदर्भ में एक विवरण है, समझ-संकल्पित-चिंतन पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक विवरण है, अंतिम-ज्ञान संकाय पर लागू सत्यापन के संदर्भ में एक विवरण है।
320. <' इस पीड़ा का निदान हो गया है ': ऐसा ही दर्शन , ज्ञान , समझ , विज्ञान , प्रकाश उन विचारों के संबंध में उत्पन्न हुआ जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे। 'पीड़ा का यह मूल त्याग दिया गया है ': ऐसा... ' पीड़ा की इस समाप्ति की पुष्टि हो गई है ': ऐसा... ' पीड़ा की समाप्ति की ओर ले जाने वाली यह संभावना बनी हुई है': ऐसा ही दर्शन , ज्ञान , समझ ,
विज्ञान , प्रकाश, जो मेरे द्वारा पहले नहीं सुने गए विचारों के संबंध में उत्पन्न हुआ > (cf. एस. वी, 424)।
321. यह मार्ग पर लागू होने के संदर्भ में एक वर्णन है, अस्तित्व में बने रहने में निहित समझ पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है, अंतिम ज्ञाता संकाय पर लागू सत्यापन के संदर्भ में एक वर्णन है, और 'सच्चे विचार के पहिये' पर लागू 'चालू करने' के संदर्भ में एक वर्णन है।
*
322. < स्थिर एक ने अस्तित्व-निर्धारक को त्याग दिया
इससे अस्तित्व को मापा और अनमापा दोनों रूप मिलते हैं।
और वह स्वयं में प्रसन्न और एकाग्रचित्त था।
उसने कवच की तरह, आत्म-अस्तित्व को विखंडित कर दिया ।

{पे 68; एस.वी , 263).
323. [61] 'मापा गया' निर्धारण-तत्व है। 'अमापा गया' विलुप्तिकरण-तत्व है।
'जो अस्तित्व को मापित और अमापित करता है' एक वर्णन है

[पृष्ठ 89]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
परिचय के संदर्भ में, सभी विचारों पर लागू होने वाला विवरण, विचारों के भेदभाव पर लागू होने वाली प्रस्तुति के संदर्भ में एक विवरण है।
324. 'स्थिर व्यक्ति ने अस्तित्व-निर्धारक को त्याग दिया' उत्पत्ति पर लागू त्याग के संदर्भ में एक वर्णन है, पीड़ा पर लागू निदान के संदर्भ में एक वर्णन है।
325. 'और अपने आप में प्रसन्न और एकाग्र' शरीर के साथ व्यस्त माइंडफुलनेस पर लागू होने वाले अस्तित्व में बने रहने के संदर्भ में एक वर्णन है, चेतना के एकीकरण पर लागू स्थिरता के संदर्भ में एक वर्णन है।
326. 'उसने कवच की तरह आत्म-अस्तित्व को विच्छेदित किया' यह वर्णन 'भटकने' 1 के संदर्भ में संज्ञान पर लागू होता है, यह वर्णन 'मानने' 2 के संदर्भ में सर्वज्ञता पर लागू होता है, यह वर्णन 'अज्ञान के अंडे के छिलके' पर लागू 'फटने' के संदर्भ में होता है (cf. एम. i, 104)।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:
'स्थिर व्यक्ति ने अस्तित्व-निर्धारक को त्याग दिया'
जो अस्तित्व को मापा और अनमापा देता है...' (§322)।
*
327. मनुष्य कामुक इच्छाओं के आगे कैसे झुक सकता है ?
किसने पीड़ा देखी है और यह कहाँ से उत्पन्न होती है?
कौन जाने, वे दुनिया से चिपके रहने के लिए ही बने हैं।
उन्हें दूर ले जाने में सचेत प्रशिक्षण देना चाहिए > (पे 15; एस. आई, 117)।

326/1 'अभिनिबिदा —उभरना': मूल शब्द भिद होना चाहिए , न कि विधि या विद, और यहाँ सही वर्तनी वास्तव में अभिनिबिदा या अभिनिबिधा (जैसा कि पीडी और पीटीएस नेट्टी इंडेक्स नोट में है) नहीं बल्कि अभिनिभिदा (जैसा कि §574 = पीटीएस नेट्टी पृष्ठ 98 में है) है; सीपीडी देखें । इसका अर्थ 'उभरना' है, और प्रत्यक्ष संकेत एम. i, 104 (जहाँ अभिनिभिदा लिखा गया है) की ओर है। हालाँकि, उल्लिखित तीनों मूल शब्द आपस में जुड़ने की प्रवृत्ति दर्शाते हैं। नेट्टिया यहां कहते हैं ' अभिनिबिदा-पन्नति (एसआईसी) चित्तस्स ती आयुसंखरोस्साजनवसेना चित्तस्स अभिनिहारपन्नति ' (पृ. 104), लेकिन §574 पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं एल न च भब्बो अभिनिबिधा (एसआईसी) गनटुन ती किलेसा- भिसंखरम अभिनिबिज्जनतो (एसआईसी) अभिनिबिधा-संखतम (एसआईसी) अरिया-मग्गम अभिगन्तुम न च भब्बो ' (पृ. 140)। एनबी वर्तनी जैसा कि वे उद्धृत संस्करण में दिखाई देते हैं। क्या इन स्पष्टीकरणों का अर्थ यह है कि टिप्पणीकार ने उन्हें एक ही शब्द नहीं माना? क्या उसने उन्हें एम. आई, 104 से जोड़ा? 326/2 'उपादान-पन्नति -धारणा के संदर्भ में विवरण': नेट्टिया गहना-पन्नति के साथ चमकता है । तकनीकी रूप से सर्वज्ञ ज्ञान (§594 भी देखें) केवल संसारों से संबंधित है (नेट्टिया पृ. 147-8)। शब्द 'सर्वज्ञता 1 (सब्बन्नु-ता) पहली बार पीएस में दिखाई देता है। i, 131. बुद्ध ने सभी के एक साथ ज्ञान को अस्वीकार कर दिया (एम. ii, 127)। चर्चा के लिए पीपीएन देखें। चौ. vii, नोट 7.
327/1 ' नेमय्या ' शाब्दिक रूप से 'झुकना' और 'नाम देना' को नेट्टिया में अभिनेमय्या के साथ व्याख्यायित किया गया है (पीडी या सीपीडी में नहीं ; एसए. शब्द की व्याख्या नहीं करता है)।

[पृष्ठ 90]
पथप्रदर्शक

328. 'जो दर्द' दर्द (पीड़ा) के लिए लागू एक पर्यायवाची के संदर्भ में एक वर्णन है और यह उस पर लागू निदान के संदर्भ में एक वर्णन है।
329. 'और वह जिससे यह उत्पन्न होता है' उत्पत्ति पर लागू होने वाले देने-होने के संदर्भ में एक वर्णन है और यह उस पर लागू होने वाले त्याग के संदर्भ में एक वर्णन है।
330. 'देखा है' ज्ञान की आँख पर लागू एक पर्यायवाची के संदर्भ में एक वर्णन है और यह उस पर लागू पैठ के संदर्भ में एक वर्णन है।
331. 'मनुष्य कामुक इच्छाओं के आगे कैसे झुक सकता है' यह कामुक इच्छाओं के संदर्भ में एक वर्णन है जो कामुक इच्छाओं की लालसा पर लागू होता है और यह उस पर लागू आग्रह के संदर्भ में एक वर्णन है।
332. 'कौन जानता है कि वे संसार में आसक्ति पैदा करते हैं' यह वर्णन 'शत्रु को देखने' के संदर्भ में कामुक इच्छाओं पर लागू किया गया है; क्योंकि कामुक इच्छाओं की उपमा कोयले के गड्ढे (एम . i, 130), मांस के लोथड़े (एम. i, 130) से है, वे आग की लपटों (ए. iv, 128f.) के समान हैं, और उनकी उपमा खाई और सर्प के सिर (एम. i, 130; साथ ही §35) से है।
333. 'सचेत... उन्हें' परित्याग पर लागू फैलाव के संदर्भ में एक वर्णन है, शरीर के साथ व्यस्त सचेतनता पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है, और मार्ग पर लागू अस्तित्व में बनाए रखने के संदर्भ में एक वर्णन है।
334. 'मार्गदर्शन करने में प्रशिक्षित होना चाहिए... दूर' यह एक ऐसा वर्णन है जो वासना, घृणा और भ्रम को दूर करने के लिए प्रवेश के संदर्भ में लागू होता है।
335. 'एक आदमी' एक भक्त पर लागू होने वाले पर्यायवाची के संदर्भ में एक वर्णन है।
336. अब जब कोई भक्त यह समझ लेता है कि 'वे आसक्ति उत्पन्न करते हैं', तो वह इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं को उत्पन्न किए बिना लाभकारी विचारों को जागृत करता है, वह अप्रकट लाभकारी विचारों को जागृत करने का प्रयास करता है। [62] यह अभी तक अछूते तक पहुँचने के प्रयास के संदर्भ में एक वर्णन है, यह उस असंतोष के प्रति प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है जो इस पक्ष से संबंधित है।
337. इसमें, <वह उत्पन्न 'लाभदायक विचारों' की स्थिरता के लिए प्रयास करता है> (एम . ii, 11): यह अस्तित्व में बनाए रखने के लिए लागू परिश्रम के संदर्भ में एक विवरण है, ऊर्जा संकाय के लिए लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक विवरण है, लाभदायक विचारों के लिए लागू संरक्षण के संदर्भ में एक विवरण है, उच्च चेतना में प्रशिक्षण के लिए लागू स्थिरता के संदर्भ में एक विवरण है।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:

[पृष्ठ 91]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
'कोई व्यक्ति कामुक इच्छाओं के आगे कैसे झुक सकता है?'
किसने पीड़ा देखी है और यह कहाँ से उत्पन्न होती है?
(§338)
*
338. दुनिया भ्रम के बंधन में जकड़ी हुई है ।
और ऐसा लगता है मानो यह सक्षम हो:
असमंजस में डूबा एक मूर्ख पकड़ा हुआ है
जीवन के मूलभूत तत्वों के बंधन में;
जो इसे देखेगा, उसे यह खाली ही दिखाई देगा।
विशेषताओं में से, उसके पास वहाँ कोई स्वामित्व नहीं होगा 1 > (उद. 79)।
339. 'दुनिया भ्रम के बंधन में जकड़ी हुई है' विकृतियों पर लागू शिक्षा के संदर्भ में वर्णन है।
340. 'और केवल ऐसा प्रतीत होता है जैसे 'यह सक्षम है' विकृत के संदर्भ में दुनिया पर लागू किया गया एक वर्णन है।
341. 'एक मूर्ख अस्तित्व के मूल तत्वों द्वारा बंधन में जकड़ा हुआ है' यह बुरी इच्छाओं के सहारा लेने के संदर्भ में देने-होने के संदर्भ में एक वर्णन है, जुनून के संदर्भ में कार्य 1 के संदर्भ में एक वर्णन है, विकारों के संदर्भ में शक्ति के संदर्भ में एक वर्णन है, और निर्धारणों के संदर्भ में विकास के संदर्भ में एक वर्णन है।
342. 'भ्रम में लिपटा हुआ' अज्ञानता के अंधकार पर लागू शिक्षण के संदर्भ में एक वर्णन है, और इस पर लागू एक पर्यायवाची के संदर्भ में एक वर्णन है।

343. 'यह विशेषताओं से रहित प्रतीत होगा' यह वर्णन दिव्य दृष्टि से देखने के संदर्भ में है, यह वर्णन समझ की दृष्टि से प्रस्तुति के संदर्भ में है।
344. 'जो देखता है... उसका वहाँ कोई स्वामित्व नहीं होगा' प्राणियों पर लागू प्रवेश के संदर्भ में एक वर्णन है: <वासना एक स्वामित्व है , घृणा एक स्वामित्व है, भ्रम एक स्वामित्व है> (cf. एम. i, 298)।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:
'विश्व भ्रम के बंधन में जकड़ा हुआ है...' (§338)।
*
345. भिक्षुओं , एक अजन्मा, एक अजन्मा, एक अनिर्मित, एक अनिर्धारित है। यदि वह अजन्मा, अजन्मा, अनिर्मित, अनिर्धारित न होता, तो जन्म, जन्म, निर्माण और निर्धारण से मुक्ति का कोई मार्ग यहाँ स्पष्ट न होता। और इसका कारण यह है कि

338/1 किंकाना के लिए 'स्वामित्व' के रूप में देखें n. 152/1.
341/1 तुलना करें. पे 102.

[पृष्ठ 92]
पथप्रदर्शक
एक अजन्मा, एक अन-अस्तित्व में लाया गया, एक अनिर्मित, एक अनिर्धारित है, इसलिए जन्म, अस्तित्व में लाए गए , निर्मित, निर्धारित से मुक्ति स्पष्ट है > (Vd . 80f.)।
346. [63] 'यदि वह अजन्मा, अस्तित्वहीन, अनिर्मित, अनिर्धारित नहीं होता' यह विलुप्ति पर लागू शिक्षा के संदर्भ में एक वर्णन है, और इस पर लागू समानार्थी शब्दों के संदर्भ में एक वर्णन है।
347. 'जन्मजात, अस्तित्व में लाए गए, निर्मित, निर्धारित से कोई बच निकलने का रास्ता यहाँ स्पष्ट नहीं होगा' यह निर्धारित पर लागू समानार्थी शब्दों के संदर्भ में एक वर्णन है, और इस पर लागू मार्गदर्शक-उदाहरण 1 के संदर्भ में एक वर्णन है।
348. 'और ऐसा इसलिए है क्योंकि एक अजन्मा, एक अस्तित्वहीन, एक अनिर्मित, एक अनिर्धारित है' विलुप्ति पर लागू पर्यायवाची शब्दों के संदर्भ में एक वर्णन है, और इस पर लागू दृष्टांत प्रमाण के संदर्भ में एक वर्णन है।
349. 'इसलिए जन्म, अस्तित्व, निर्माण, निर्धारण से मुक्ति स्पष्ट है' विलुप्ति पर लागू पर्यायवाची शब्दों के संदर्भ में एक वर्णन है, पथ पर लागू आउटलेट के संदर्भ में एक वर्णन है, पुनर्जन्म के चक्र पर लागू पलायन के संदर्भ में एक वर्णन है।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा: 'यदि ऐसा न होता तो... ' (§345)।
*
350. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
भगवान बुद्ध एक ही विचार सिखाते हैं
अनेक प्रकार के वर्णनों के माध्यम से;
इस मनोदशा को इस प्रकार जाना जा सकता है
वह विधि जो विवरण व्यक्त करती है' (§15)।
विवरण संप्रेषित करने का तरीका समाप्त हो गया है।
*

347/1 ' उपनयन ; - मार्गदर्शक उदाहरण': शास्त्रीय भारतीय न्यायशास्त्र में उदाहरण के लिए सामान्य तार्किक शब्द । नेत्तिया कहते हैं, 'यहाँ, (इस उदाहरण में, जहाँ तक) "मार्गदर्शक उदाहरण के संदर्भ में वर्णन" का संबंध है, मार्गदर्शक उदाहरण का वर्णन विपरीत विपरीत में मध्य पद (हेतु) देता है। (जहाँ तक) "उदाहरण के संदर्भ में वर्णन" (§348) का संबंध है, वर्णन प्रस्ताव की विषयवस्तु (पतिन्नतस्स अत्थस्स) की स्थापना (सिद्धि) का प्रदर्शन है (पृष्ठ 106)।

[पृष्ठ 93]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
12. सत्यों तक पहुँचने के मार्गों को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा
351. इसमें प्रवेश के तरीकों को संप्रेषित करने का तरीका क्या है?
[यह यह है:]
'आश्रित-उदय, संकाय,
श्रेणियाँ, तत्व, आधार:
वह विधि जिसके द्वारा इन साधनों से प्रवेश मिलता है
क्या यह प्रवेश के तरीकों को बताता है' (§16)।
352. ऊपर , नीचे, हर तरह से मुक्त,
और यह बिल्कुल भी न देखते हुए कि 'मैं यह हूँ'
इस प्रकार मुक्त होकर उसने बाढ़ पार कर ली है।
पहले पार नहीं किया गया, प्राणियों के नवीनीकरण न होने के कारण >
(पे 24; उद. 74).
353. 'ऊपर' रूप-तत्व और निराकार-तत्व है। 'नीचे' इंद्रिय-इच्छा तत्व है। 'हर तरह से मुक्त': यही त्रितत्व [अस्तित्व के] में सिद्ध पुरुष की मुक्ति है। यही सिद्ध पुरुष की पाँच इंद्रियाँ हैं। यही इंद्रियों द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
354. इन्हीं सिद्ध पुरुषों की पाँचों इंद्रियाँ विज्ञान हैं। विज्ञान के उदय से अज्ञान का अंत होता है; अज्ञान के अंत से निर्धारणों का अंत होता है; निर्धारणों के अंत से चेतना का अंत होता है; चेतना के अंत से नाम-रूप का अंत होता है; नाम-रूप के अंत से छह प्रकार के आधारों का अंत होता है; छह प्रकार के आधारों के अंत से संपर्क का अंत होता है; संपर्क के अंत से संवेदना का अंत होता है; संवेदना के अंत से लालसा का अंत होता है; लालसा के अंत से ग्रहणशीलता का अंत होता है; ग्रहणशीलता के अंत से अस्तित्व का अंत होता है; अस्तित्व के अंत से जन्म का अंत होता है; जन्म के अंत से वृद्धावस्था और मृत्यु का अंत होता है, और शोक, विलाप, पीड़ा, दुःख और निराशा का भी अंत होता है; इस प्रकार दुखों की इस पूरी श्रेणी का अंत होता है। यह आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का तरीका है।
355. उन्हीं सिद्ध पुरुषों की पाँचों इंद्रियाँ तीन श्रेणियों में समाहित हैं, अर्थात् सद्गुण श्रेणी, एकाग्रता श्रेणी और समझ श्रेणी। 1 श्रेणियों के अनुसार प्रवेश का यही तरीका है।

355/1 ये एम.आई. , 301 में दिए गए 8-कारक पथ के 3 विभाजन हैं। नेटी ए (पृष्ठ 106) कहते हैं कि चूंकि सही इरादे को सही दृष्टिकोण के समान श्रेणी में गिना जाता है 'क्योंकि यह सही दृष्टिकोण के लिए सहायक है' (देखें एम.ए. ii, 36If.)।

[पृष्ठ 94]
पथप्रदर्शक
356. उन्हीं सिद्ध पुरुष की पाँचों शक्तियाँ निर्धारणों में समाहित हैं। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों से मुक्त और अस्तित्व के कारक नहीं—विचार-तत्व के भीतर समाहित हैं। यही तत्वों द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
357. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो आधार [इस मामले में] दोषों से मुक्त है और अस्तित्व का कारक नहीं है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।
358. 'और यह बिल्कुल न देखते हुए कि “मैं यह हूँ”': यही देहधारण के दृष्टिकोण का उन्मूलन है। यही दीक्षित की मुक्ति है। यही दीक्षित की पाँचों इंद्रियाँ हैं। यही इंद्रियों द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
359. उन्हीं दीक्षितों की पाँचों इंद्रियाँ विज्ञान हैं। विज्ञान के उद्भव के साथ... (जैसा कि §354 में पूर्ण है)... इस प्रकार संपूर्ण आश्रित उत्पत्ति। आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का यही मार्ग है।
360. वही विज्ञान समझ की श्रेणी है। श्रेणियों के माध्यम से प्रवेश करने का यही तरीका है।
361. वही विज्ञान निर्धारणों में समाहित है। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों से मुक्त और अस्तित्व के कारक नहीं—विचार-तत्व के भीतर समाहित हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

362. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो [इस मामले में] दोषों से मुक्त है और अस्तित्व का कारक नहीं है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।
363. यह वह व्यक्ति है जो दीक्षित की मुक्ति और सिद्ध पुरुष की मुक्ति के माध्यम से मुक्त हुआ है, जिसने 'अस्तित्व के नवीनीकरण न होने के कारण पहले कभी पार न की गई बाढ़ को पार कर लिया है'।
[65] इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:
'ऊपर, नीचे, . . .' (§352).
*
364. < जिस पर सहारा दिया गया है, वह हिल सकता है; जिस पर सहारा नहीं दिया गया है, वह हिल नहीं सकता। जब हिलने की कोई संभावना नहीं होती , तब शांति होती है। जब शांति होती है , तब नामकरण की प्रवृत्ति नहीं होती। जब नामकरण की प्रवृत्ति नहीं होती , तब आना-जाना नहीं होता। जब आना-जाना नहीं होता , तब मृत्यु और पुनर्जन्म नहीं होता। जब मृत्यु और पुनर्जन्म नहीं होता, तब...

इसी प्रकार, पाँच संकायों को 'विज्ञान' कहा गया है (§354), पहले चार को समझ के लिए उनकी 'सहायता' के कारण पथ-श्रेणियों के भीतर वर्गीकृत किया जा सकता है, क्योंकि समझ सही दृष्टिकोण से मेल खाती है।

[पृष्ठ 95]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
यहाँ या उससे परे या बीच में: यही पीड़ा का अंत है > (पे 18, 110; उद . 81, एम. iii, 266 पर उद्धृत)।
365. 'सहारा पाने वाला भी विस्थापित हो सकता है': सहारा दो प्रकार का होता है, अर्थात् लालसा द्वारा सहारा और दृष्टि द्वारा सहारा। यहाँ, कामवासना से ग्रस्त व्यक्ति द्वारा किया गया कोई भी चुनाव लालसा द्वारा सहारा है, और भ्रमित व्यक्ति द्वारा किया गया कोई भी चुनाव दृष्टि द्वारा सहारा है।
366. अब चुनाव ही निर्धारण है। निर्धारण को शर्त मानकर ही चेतना का वास्तविक अस्तित्व है; चेतना को शर्त मानकर ही नाम-रूप का अस्तित्व है; . . . और इसी प्रकार संपूर्ण आश्रित उत्पत्ति (तुलना करें पे 110) 1 [तक . . . जन्म को शर्त मानकर ही वृद्धावस्था और मृत्यु का वास्तविक अस्तित्व है, और [साथ ही] दुःख और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा का भी; इसी प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा वर्ग का उद्गम है।] आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का यही मार्ग है।
367. यहाँ वासना से ग्रस्त व्यक्ति की कोई भी भावना सुखद भावना है, और भ्रमित व्यक्ति की कोई भी भावना न तो कष्टदायक है और न ही सुखद। ये भावनाएँ भावना श्रेणी में आती हैं। श्रेणियों के अनुसार प्रवेश का यही तरीका है।
368. इसमें, सुखद अनुभूति दो इंद्रियों से संबंधित है, अर्थात् [शारीरिक] सुख की इंद्री और [मानसिक] आनंद की इंद्री, और न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति समभाव की इंद्री है। इंद्रियों द्वारा प्रवेश का यही मार्ग है।
369. वही क्षमताएँ निर्धारणों में समाहित हैं। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों और अस्तित्व के कारकों से प्रभावित—विचार-तत्व के भीतर समाहित हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।
370. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो आधार [इस मामले में] दोषों और अस्तित्व के कारक से प्रभावित है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।
371. 'असमर्थित व्यक्ति विस्थापन के योग्य नहीं है 5 : लालसा से असमर्थित और शांति के कारण, और दृष्टि से असमर्थित और अंतर्दृष्टि के कारण।
372. कोई भी अंतर्दृष्टि विज्ञान है। विज्ञान के उदय के साथ अज्ञान का अंत होता है; अज्ञान के अंत के साथ निर्धारणों का अंत होता है; निर्धारणों के अंत के साथ चेतना का अंत होता है; ...और इस प्रकार संपूर्ण आश्रित उत्पत्ति होती है। [66] आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का यही मार्ग है।

366/1 यह अंश /Vs 16वें मोड से लिया गया है और यहाँ बेहतर रूप में रखा गया है।

[पृष्ठ 96]

पथप्रदर्शक

373. वही अंतर्दृष्टि समझ की श्रेणी है। श्रेणियों के माध्यम से प्रवेश का यही तरीका है।

374. वही अंतर्दृष्टि दो संकाय हैं, अर्थात् ऊर्जा संकाय और समझ संकाय। संकायों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

375. वही अंतर्दृष्टि निर्धारणों में समाहित है। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों से मुक्त और अस्तित्व के कारक नहीं—विचार-तत्व के भीतर समाहित हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

376. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो आधार [इस मामले में] दोषों से मुक्त है और अस्तित्व का कारक नहीं है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।

377. 'जब शांति होती है': शांति दो प्रकार की होती है, शारीरिक और मानसिक। कोई भी शारीरिक सुख शारीरिक शांति है, और कोई भी मानसिक सुख मानसिक शांति है। जिसे शारीरिक शांति प्राप्त होती है, वह सुख का अनुभव करता है। जब वह प्रसन्न होता है, तो उसकी चेतना एकाग्र हो जाती है (देखें एम. i, 37)। जो एकाग्र होता है, वह समझता है कि चीजें कैसी हैं। जब वह समझता है कि चीजें कैसी हैं, तो उसे वैराग्य प्राप्त होता है। वैराग्य प्राप्त होने पर उसकी कामवासना समाप्त हो जाती है। कामवासना के समाप्त होने से वह मुक्त हो जाता है। उसे यह ज्ञान होता है कि 'मैं मुक्त हो गया हूँ'। वह समझता है कि 'जन्म समाप्त हो गया है, दिव्य जीवन जी लिया गया है, जो करना था वह हो गया है, इसके बाद कुछ भी नहीं है* (देखें एम. iii, 280)।

378. कामुकता की समाप्ति, घृणा की समाप्ति, भ्रम की समाप्ति के कारण, रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों, मूर्त वस्तुओं या विचारों के संबंध में उसमें 'नामकरण की प्रवृत्ति नहीं' है।

379. वह उस रूप की पूर्ण समाप्ति से मुक्त हो जाता है, जो उस रूप के क्षीण होने, लुप्त होने, समाप्त होने, त्यागने और परित्याग करने के कारण होता है, जिसके द्वारा वह किसी पूर्ण सत्ता का खड़े या चलते हुए वर्णन कर सकता है। वह यह मानकर नहीं चलता कि 'एक पूर्ण सत्ता है' (देखें §908); और वह यह मानकर नहीं चलता कि 'नहीं है'; वह यह मानकर नहीं चलता कि 'है भी और नहीं भी है'; वह यह मानकर नहीं चलता कि 'न है न नहीं भी है' (देखें एम. i, 486; एस. iv, 383); बल्कि [वह जानता है] कि कामवासना, घृणा और भ्रम की समाप्ति के कारण उसे गहन, असीम (देखें §783), अगणनीय और क्षीण माना जाता है।

380. वह भावनाओं की पूर्ण समाप्ति में मुक्त हो जाता है...

381. ...धारणा का...

382. ... निर्धारणों का . . .

[पृष्ठ 97]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

383. वह चेतना की पूर्ण समाप्ति में मुक्त हो जाता है [67], जो उस चेतना के समाप्त होने, लुप्त होने, रुकने, त्यागने और छोड़ने के कारण होती है जिसके द्वारा वह किसी पूर्ण सत्ता को खड़े या चलते हुए वर्णित कर सकता है। वह यह मानकर नहीं चलता कि 'एक पूर्ण सत्ता है'; और वह यह मानकर नहीं चलता कि 'नहीं है'; वह यह मानकर नहीं चलता कि 'है भी है और नहीं भी है'; वह यह मानकर नहीं चलता कि 'न है न नहीं है'; बल्कि [वह जानता है] कि कामवासना, घृणा और भ्रम के समाप्त होने के कारण वह गहन, असीम, अगणनीय और शांत हो जाता है।

384. 'आना' का अर्थ है यहाँ आना। 'जाना' का अर्थ है इस जीवन से विदा होने के बाद कोई भी अस्तित्व। आना और जाना दोनों ही अब नहीं रहते।

385. 'न ही यहाँ': [वह स्वयं को नहीं देखता] स्वयं में छह आधारों में।

386. 'और न ही परे': [वह स्वयं को नहीं देखता] छह बाह्य आधारों में।

387. 'न ही बीच में': 1 वह संपर्क से उत्पन्न विचारों में स्वयं को नहीं देखता। 2

388. 'यह दुख का अंत है' आश्रित उत्पत्ति है। यह दो प्रकार की होती है, अर्थात् संसार से संबंधित और संसार से विरक्त। इसमें, संसार से संबंधित उत्पत्ति अज्ञान की स्थिति और निर्धारण से शुरू होकर वृद्धावस्था और मृत्यु तक जाती है (धारा 2, 1)। संसार से विरक्त उत्पत्ति एक गुणी व्यक्ति के पश्चातापहीन होने से शुरू होकर इसके परे के अस्तित्व तक जाती है (धारा 806 देखें)।

इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'सहारा पाने वाला भी विस्थापित हो सकता है, सहारा न पाने वाला विस्थापित नहीं हो सकता... यही दुख का अंत है' (§364)।

♦

389. < चाहे कितने भी दुख, विलाप , पीड़ाएँ हों
दुनिया में अनेक प्रकार के जीव पाए जाते हैं।
उनका अस्तित्व किसी प्रिय चीज की बदौलत है;
जिन लोगों को कोई प्रिय चीज नहीं होती, उनका कभी अस्तित्व ही नहीं होता।
इसलिए वे आनंदित हैं, दुःख से मुक्त हैं।
दुनिया में किसी भी चीज को वह बिल्कुल भी प्रिय नहीं मानता।

387/1 उदा. उभयंतरेना के अंतर्गत ' भवन्तर ' ('जन्म और मृत्यु के बीच का अंतराल') की अवधारणा की अनुपयुक्तता पर चर्चा करता है। 387/2 यह चेतना के उत्पन्न होने के साथ ही उत्पन्न होने वाली भावना (प्रभावशीलता), आदि को संदर्भित करता है (उदाहरण के लिए, एम. iii, 279, 285 देखें; साथ ही §308 की भी तुलना करें)। 'संपर्क' का अर्थ 'उपस्थिति' है, एम. iii, 285 में दिए गए विवरण को देखें।

[पृष्ठ 98]
पथप्रदर्शक
तो क्या तुम दुःख रहित और निष्कलंक बनना चाहते हो?
दुनिया में किसी भी चीज को प्रिय न मानो > (पतरस 14; उदा. 92)। 1

390. 'इस संसार में अनेक प्रकार के जितने भी दुःख, विलाप, पीड़ाएँ पाई जाती हैं, उनका अस्तित्व किसी प्रिय वस्तु के कारण ही है': यह पीड़ादायक भावना है। 'जिनके लिए कोई प्रिय वस्तु न हो, वे कभी अस्तित्व में नहीं आतीं' : यह सुखद भावना है। [68] भावनाएँ, भावना श्रेणी हैं। श्रेणियों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

391. भावना को शर्त मानकर, तृष्णा; तृष्णा को शर्त मानकर, ग्रहण करना; ग्रहण करने को शर्त मानकर, जन्म; जन्म को शर्त मानकर, वृद्धावस्था और मृत्यु... और इसी प्रकार अन्य सभी। यही आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का मार्ग है।

392. यहाँ, सुखद अनुभूति दो इंद्रियों से मिलकर बनी है, अर्थात् सुख और आनंद की इंद्री। दुखदायी अनुभूति भी दो इंद्रियों से मिलकर बनी है, अर्थात् पीड़ा और शोक की इंद्री। इंद्रियों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

393. वही क्षमताएँ निर्धारणों में समाहित हैं। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों और अस्तित्व के कारकों से प्रभावित—विचार-तत्व के भीतर समाहित हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

394. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो आधार [इस मामले में] दोषों और अस्तित्व के कारक से प्रभावित है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।

395. 'इसलिए वे आनंदित हैं, दुःख से मुक्त हैं, संसार में किसी भी चीज़ को प्रिय नहीं मानते। तुम भी दुःख रहित और निर्मल बनो, संसार में किसी भी चीज़ को प्रिय न मानो': यही लालसा का त्याग है। लालसा के त्याग से धारणा का त्याग होता है; धारणा के त्याग से अस्तित्व का त्याग होता है; ...और इसी प्रकार बाकी सब कुछ। यही आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का मार्ग है।

396. उसी लालसा का त्याग ही शांति है। वह शांति दो प्रकार की होती है, अर्थात् जागरूकता और एकाग्रता। यही इंद्रियों द्वारा प्रवेश का मार्ग है।

397. वही शांति एकाग्रता श्रेणी है। श्रेणियों के अनुसार प्रवेश का यही तरीका है।

398. वही शांति निर्णयों में भी शामिल है। ये निर्णय—[इस मामले में] दोषों से मुक्त और अस्तित्व के कारकों से रहित—

389/1 वही भावनाएँ §192 में उद्धृत सुत्तनिपात के श्लोकों में दिखाई देती हैं और एम. सुत्त 87 और उद. 91-2 में बहुत तीक्ष्णता से प्रस्तुत की गई हैं। लेकिन तुलना करें एसएन. 262। कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि अस्तित्व में जो 'सबसे बड़ा आशीर्वाद' है, वह स्वतः ही अपनी अनित्यता में आशीर्वाद नहीं है :

[पृष्ठ 99]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
ये सभी विचार-तत्व के अंतर्गत समाहित हैं। तत्वों के प्रवेश का यही तरीका है।
399. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो [इस मामले में] दोषों से मुक्त है और अस्तित्व का कारक नहीं है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।
*
400. <[69] < जब कोई व्यक्ति इच्छा करता है, यदि उसकी इच्छा पूरी हो जाती है,
उसे अपनी मनचाही चीज पाकर जरूर खुशी होगी।
इच्छा से प्रेरित और दृढ़ निश्चयी, यदि उसकी इच्छा विफल हो जाए ,
उसका चेहरा इस कदर विकृत हो जाता है मानो उसे किसी कांटे से छेद दिया गया हो।
जो इच्छाओं को उसी प्रकार त्यागता है जैसे सांप का सिर अपने पैर से कुचलता है,
और सचेत है, दुनिया से इस लगाव से बचता है > (§§33-5)।
401. यहाँ 'सुख' स्वीकृति है। 'वह इतना विकृत हो जाता है मानो किसी कांटे से छेद दिया गया हो' से जो बात कही गई है, वह प्रतिरोध है। स्वीकृति और प्रतिरोध दोनों ही लालसा के पहलू हैं। रूप 1 वाले दस आधार लालसा की नींव हैं। यही आधारों द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
402. वही आधार, जिनमें रूप होता है, नाम से संबंधित रूप-शरीर होते हैं। 1 ये दोनों मिलकर नाम-और-रूप हैं। नाम-और-रूप को शर्त मानकर, छह प्रकार का आधार; छह प्रकार के आधार को शर्त मानकर, संपर्क; संपर्क को शर्त मानकर, भावना; भावना को शर्त मानकर, लालसा; . . . और इसी प्रकार बाकी सभी। यह आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
403. वही नाम और स्वरूप पाँच श्रेणियाँ हैं। श्रेणियों के अनुसार प्रवेश का यही तरीका है।
404. वही नाम और स्वरूप अठारह तत्व हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।
405. यहाँ, रूप-शरीर पाँच रूपधारी इंद्रियाँ हैं, 1 और नाम-शरीर पाँच निराकार इंद्रियाँ हैं। ये दस इंद्रियाँ हैं। इंद्रियों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।
406. इसमें, 'जो इच्छाओं से इस प्रकार दूर रहता है जैसे साँप अपने पैर से अपना सिर समेट लेता है, और सचेत रहता है, वह संसार से इस आसक्ति से बच जाता है' द्वारा जो कहा गया है, वही है।

401/1 'रूप धारण करने वाले दस आधार' पाँच युग्म प्रतीत होते हैं, अर्थात् आँख-सह-रूप, . . . शरीर-सह-स्पष्ट वस्तुएँ। नेट्टिया इसे अनदेखा करती है। यह गणना पृष्ठ 99 से ली गई है। एक भिन्न संख्यात्मक गणना विस. 590 पर दी गई है।
402/1 नामासम्पायुत्तो को एक यौगिक के रूप में पढ़ें।
405/1 'रूप धारण करने वाली पाँच इंद्रियाँ' आँख, कान, नाक, जीभ और शरीर की इंद्रियाँ मानी जा सकती हैं, और 'रूपहीन पाँच इंद्रियाँ' आस्था, ऊर्जा, सजगता, एकाग्रता और समझ की इंद्रियाँ मानी जा सकती हैं। इस प्रकार ये '10 इंद्रियाँ' वही 10 इंद्रियाँ नहीं हैं जो धारा 303 में वर्णित हैं, कम से कम नेट्टिया द्वारा दिए गए पूर्वोक्त वर्णन के अनुसार , जो इन्हें अनदेखा करता है।

[पृष्ठ 100]
पथप्रदर्शक
यह विलुप्त हो चुके तत्वों का वह रूप है जिसके केवल कुछ अंश शेष रह जाते हैं। तत्वों के प्रवेश का यही तरीका है।
407. वही विलुप्तिकरण तत्व, जिसका अंश शेष रह जाता है, विज्ञान है। विज्ञान के उदय के साथ अज्ञान का अंत; अज्ञान के अंत के साथ निर्धारणों का अंत; . . . और इसी प्रकार बाकी सब। [70] यह आश्रित उत्पत्ति के [दो] पहलुओं द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
408. वही विज्ञान समझ की श्रेणी है। श्रेणियों के माध्यम से प्रवेश का यही तरीका है।
409. वही विज्ञान दो संकायों से मिलकर बना है, अर्थात् ऊर्जा संकाय और समझ संकाय। संकायों द्वारा प्रवेश का यही मार्ग है।
410. वही विज्ञान निर्धारणों में समाहित है। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों से मुक्त और अस्तित्व के कारक नहीं—विचार-तत्व के भीतर समाहित हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।

411. वह विचार-तत्व विचार-आधार में समाहित है, जो आधार [इस मामले में] दोषों से मुक्त है और अस्तित्व का कारक नहीं है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।

इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'जब कोई मनुष्य इच्छा करता है...' (§400)।

412. इस बिंदु पर आश्रित उत्पत्ति, शक्तियों, श्रेणियों, तत्वों और आधारों को प्रवेश के मार्ग और मिलन स्थल बना दिया गया है। इस प्रकार आश्रित उत्पत्ति, शक्तियों, श्रेणियों और आधारों को प्रवेश के मार्ग के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

413. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

'आश्रित-उदय, संकाय,
श्रेणियाँ, तत्व, आधार:
वह विधि जिसके द्वारा इन साधनों से प्रवेश मिलता है
क्या यह प्रवेश के तरीकों को बताता है' (§16)।

प्रवेश के मार्गों को संप्रेषित करने का माध्यम समाप्त हो गया है।

---

13. स्पष्टीकरण देने के तरीके में नौ गुना धागा

414. इसमें स्पष्टीकरण देने का तरीका क्या है? [इस आयत में बताया गया है]:

♦

[पृष्ठ 101]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
किसी प्रश्न का उत्तर मिलने पर उसकी तलाश करना
श्लोक में ऐसा क्या था जिसने उकसाया?
इसका प्रश्न स्पष्ट हुआ या नहीं:
यह तरीका स्पष्टीकरण को दर्शाता है' (§17)।

415. उदाहरण के लिए, परायण [सुत्तनिपात के अध्याय] में पूज्य अजित ने भगवान बुद्ध से प्रश्न पूछा [और उन्हें इस प्रकार उत्तर प्राप्त हुआ:]

<' [बताओ] दुनिया किससे घिरी हुई है?
और इसे प्रदर्शित क्यों नहीं किया जा रहा है?
और इस पर क्या लगा है? बताइए।
और इसका सबसे बड़ा डर क्या होगा?
अज्ञानता के कारण संसार कैद है ।
भगवान बुद्ध ने कहा, 'अजिता।'
' यह इच्छा की कमी और उपेक्षा के कारण प्रदर्शित नहीं होता है।'
और लालसा इसे धूमिल कर देती है , मैं कहता हूँ।
पीड़ा ही इसका सबसे बड़ा भय है' (§§63, 65)।

416. प्रश्न के संदर्भ में, '[बताइए] संसार किससे घिरा हुआ है?' भगवान बुद्ध [अपने उत्तर के साथ] कहते हैं, 'अज्ञान से संसार घिरा हुआ है', जिससे एक शब्द स्पष्ट हो जाता है, लेकिन कारण स्पष्ट नहीं होता। 1 प्रश्न के संदर्भ में, 'और यह क्यों प्रदर्शित नहीं होता?' भगवान बुद्ध [अपने उत्तर के साथ] कहते हैं, 'यह इच्छा और उपेक्षा के कारण प्रदर्शित नहीं होता।' इससे एक शब्द स्पष्ट हो जाता है, लेकिन कारण स्पष्ट नहीं होता। प्रश्न के संदर्भ में, 'और यह किससे मढ़ा हुआ है? बताइए', भगवान बुद्ध [अपने उत्तर के साथ] कहते हैं, 'और मैं कहता हूँ, लालसा इसे मढ़ती है।' इससे एक शब्द स्पष्ट हो जाता है, लेकिन कारण स्पष्ट नहीं होता। [लेकिन] प्रश्न के संदर्भ में, 'और इसका सबसे बड़ा भय क्या होगा?' भगवान बुद्ध [अपने उत्तर के साथ] कहते हैं, 'दु:ख इसका सबसे बड़ा भय है।' इससे एक शब्द स्पष्ट हो जाता है, और कारण भी स्पष्ट हो जाता है।

इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'अज्ञान से संसार घिरा हुआ है...' (§415)।

*

416/1 ' आरंभ —उत्तेजना' (अर्थात, 'प्रारंभिक रूप से प्रेरित करने वाला विषय-वस्तु'): रभ 'शुरू करना, उकसाना'। शब्द का यह प्रयोग इस रचना और पे (जैसे, पृष्ठ 101) के लिए विशिष्ट प्रतीत होता है। नेट्टिया के पास इस बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं है। तुलना करें आरंभ-धातु ('उत्तेजना का तत्व' या 'पहल का तत्व': एस. वी, 66) और जर्मन अरभ का क्रियाविशेषण के रूप में प्रयोग 'द्वारा उकसाया गया', 'द्वारा प्रेरित', 'पर निर्भर' (§17; साथ ही विज़. 197) के अर्थ में। यह मूल कभी-कभी लानिब (लटकाना, तुलना करें आलमबना और अरम्मना) और राध (संतुष्ट करना, आमंत्रित करना, जिसके साथ यह अपना पीपी. ए रद्ध साझा करता है) के साथ जुड़ जाता है।

[पृष्ठ 102]
पथप्रदर्शक
417. [फिर से निम्नलिखित प्रश्न और उत्तर हैं:]
हर जगह धाराएँ लगातार प्रवाहित हो रही हैं ।
आदरणीय अजिता ने ऐसा कहा था।
'वह क्या है जो धाराओं को बंद कर देता है?'
तो फिर बताओ, धाराओं का अवरोध क्या होता है ?
जिससे धाराएँ सील हो जाती हैं V
दुनिया में जो भी धाराएँ हैं ,
भगवान बुद्ध ने कहा, 'अजिता'
'वे सचेतनता से अलग-थलग हो गए हैं;'
मैं धाराओं के संयम के बारे में बताता हूँ, जिससे
इन्हें सील किया जा सकता है , यह समझ है' > (§§70 और 74)।
418. प्रश्न के संदर्भ में, "धाराएँ हर जगह बहती रहती हैं; उन्हें कौन रोकता है? " भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया, "संसार में जो भी धाराएँ हैं, वे ध्यान से रुक जाती हैं।" इससे एक शब्द स्पष्ट हो जाता है, लेकिन मूल प्रश्न नहीं। प्रश्न के संदर्भ में, "तो फिर बताइए, धाराओं को रोकने का क्या तरीका है, जिससे धाराएँ रुक जाती हैं? " उत्तर में, "धाराओं को रोकने का तरीका, जिससे वे रुक जाती हैं, वह है समझ।" इससे मूल प्रश्न स्पष्ट हो जाता है।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'संसार में जो भी धाराएँ हैं... (§417)।
♦
419. [पुनः,] प्रश्न के मामले में
समझ और जागरूकता
आदरणीय अजिता ने ऐसा कहा था।
और अब, महोदय, यह नाम और प्रपत्र ,
तो मुझे बताओ कि मैं तुमसे क्या पूछ रहा हूँ ?
इसका अंत कहाँ होता है ? (§77)
[उत्तर सहित]
आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न के संबंध में,
अजिता, मैं अब तुम्हें बताऊँगी।
जहां यह नाम और रूप दोनों आते हैं
उनकी शेषहीन मुक्ति के लिए:
चेतना के समाप्त होने के साथ ,
'यहीं पर इसका अंत होता है' > (§77).
उकसावे का कारण स्पष्ट हो गया है।

[पृष्ठ 103]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'तुम्हारे प्रश्न के संबंध में...'
420. [72] जहाँ कहीं भी इस तरह उकसावे को स्पष्ट कर दिया जाता है, प्रश्न का उत्तर मिल जाता है; परन्तु जहाँ कहीं भी उकसावे को स्पष्ट नहीं किया जाता, उस प्रश्न का उत्तर अभी तक नहीं मिला है।
421. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
किसी प्रश्न का उत्तर मिलने पर उसकी तलाश करना
श्लोक में ऐसा क्या था जिसने उकसाया?
इसका प्रश्न स्पष्ट हुआ या नहीं:
यह तरीका स्पष्टीकरण को दर्शाता है' (§17)।
स्पष्टीकरण देने का माध्यम समाप्त हो गया है।
*

---

14. अभिव्यक्ति के शब्दों को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा
422. इसमें, अभिव्यक्ति के शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
'विचारों को प्रदर्शित करने पर
एकता और विविधता दोनों
इसलिए किसी भी प्रकार के वियोग का सामना नहीं करना पड़ेगा:
यह विधि अभिव्यक्ति की शर्तों को व्यक्त करती है (§18.)
423. उन [विचारों] को याद रखना चाहिए जैसा कि वे वहाँ प्रदर्शित होते हैं जहाँ वे दिखाई देते हैं [उनके संदर्भों में इस प्रकार]।
424. 'पीड़ा' एक एकता है।
यहां दुख क्या है? < जन्म दुख है , बुढ़ापा दुख है, बीमारी दुख है, मृत्यु दुख है , नापसंद लोगों के साथ रहना दुख है, प्रिय लोगों से बिछड़ना दुख है, इच्छा पूरी न होना दुख है; संक्षेप में, ये पांचों प्रकार के दुख हैं > (एस.वी. 421; तुलना करें पे 5): रूप दुख है, भावना दुख है, बोध दुख है, संकल्प दुख हैं, चेतना दुख है। यह विविधता है।
425. 'दुख की उत्पत्ति' एक एकता है।
तो दुख का मूल कारण क्या है? < यह वह लालसा है जो अस्तित्व को नवीकृत करती है, जिसमें आनंद और कामवासना होती है , इस और उस का आनंद लेना , अर्थात् इंद्रिय सुख की लालसा , अस्तित्व की लालसा, गैर-अस्तित्व की लालसा > (एस.वी. , 421)। यह विविधता है।

[पृष्ठ 104]
पथप्रदर्शक
426. 'दुखों का निवारण' एक एकता है।
इसमें दुख का निवारण क्या है ? < यह उसी लालसा का पूर्णतः लुप्त होना, उसका रुक जाना , उसे त्याग देना, उसे छोड़ देना, उस पर निर्भर न रहना और उसे अस्वीकार करना है > (एस.वी. , 421)। यही विविधता है ।
427. 'दुखों के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग' एक एकता है।
[73] इसमें, दुख के निवारण का मार्ग क्या है ? < यह आर्य अष्टांगिक मार्ग है, अर्थात् सही दृष्टि, सही आशय, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता > (एस.वी. , 421-2)। यह विविधता है
428. 'पथ' एक एकता है।

यहां, मार्ग क्या है? यह नरक की ओर जाने वाला मार्ग है, पशु गर्भ की ओर जाने वाला मार्ग है, प्रेतलोक की ओर जाने वाला मार्ग है, असुर गर्भ की ओर जाने वाला मार्ग है, स्वर्ग की ओर जाने वाला मार्ग है, मानवता की ओर जाने वाला मार्ग है, विनाश की ओर जाने वाला मार्ग है। यही विविधता है।

429. 'समाप्ति' एक एकता है।

इसमें, समाप्ति क्या है? यह जानबूझकर की गई समाप्ति है, अनजाने में की गई समाप्ति है; स्वीकृति की समाप्ति, प्रतिरोध की समाप्ति; अहंकार की समाप्ति, तिरस्कार की समाप्ति, प्रभुत्व की समाप्ति, ईर्ष्या की समाप्ति, लोभ की समाप्ति, सभी विकारों की समाप्ति। यही विविधता है।

430. 'रूप' एक एकता है।

इसमें, रूप क्या है? रूप चार महान सत्ताएँ हैं (cf. एम. आई.

429/1 ' पतिसंख-निरोध - जानबूझकर समाप्ति' और 'अत्यंतसंखनिरोध - अनजाने में समाप्ति': ये दोनों यौगिक शब्द पीईडी में नहीं हैं और बाद वाला सीपीडी (खंड 1) में नहीं है; देखें केवी. 226 और केवी. अनुवाद ('विवाद के बिंदु') 137, टिप्पणी; मिल्न भी देखें (तुलना करें पीई 151, पंक्ति 15 निरोधसमापत्ति(म) अप्तसंखया)। नेटिआ कहते हैं, ' पतिसंखनिरोध जानबूझकर (पतिसंखया) के कारण, विरोध को अस्तित्व में रखने (उत्पन्न होने - पतिपक्खभावनया) के कारण समाप्ति है ; या जब उस तरह से विरोध नहीं हुआ है, तो यह उस चीज का न उत्पन्न होना है जो उत्पन्न होने के लिए तैयार है, क्योंकि उसके उत्पन्न होने का विरोध पहले से ही अस्तित्व में है।' अप्पा - तिसंखनिरोध का अर्थ है निर्धारित विचारों और उनके व्यक्तिगत स्वरूपों का अंत: इसका तात्पर्य क्षण-क्षण के लिए होने वाला अंत है (पृष्ठ 109)। यह उल्लेखनीय है कि ये दोनों शब्द यहाँ उपस्थित हैं जबकि पे में अनुपस्थित हैं। नेत्तिया के अनुसार, दूसरे शब्द का अर्थ है अनित्यता की प्रक्रिया में निरंतर घटित होने वाला अंत। तुलना करें केवीए (बर्मी संस्करण, पृष्ठ 140) और केवीएए (बर्मी संस्करण, पृष्ठ 56)। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं दिखता कि इन शब्दों के बाद के स्वतंत्र संस्कृत महायान विकास का यहाँ किसी भी तरह से संकेत दिया गया है (जिसके लिए देखें, उदाहरण के लिए, ओ. रोसेनबर्ग, डाई प्रोब्लेमे डेर बुद्धिस्टिशेन फिलोसोफिक, हीडलबर्ग, 1924, पृष्ठ 128; ई. ओबरमिलर, द डॉक्ट्रिन ऑफ प्रज्ञा-परमिता , लेनिनग्राद, 1932; और ई. लामोट, हिस्टोइरे डू बौद्धिस्मे इंडेन , लौवेन, 1958, पृष्ठ 675)।

[पृष्ठ 105]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

185), और चार महान संस्थाओं को मानने वाले रूप का कोई भी विवरण (एम. iii, 17)।

431. इसमें चार प्रमुख तत्व क्या हैं? वे हैं पृथ्वी तत्व, जल तत्व, अग्नि तत्व और वायु तत्व। इन तत्वों को दो रूपों में समझाया जा सकता है, संक्षेप में [जैसा कि ऊपर बताया गया है] और विस्तार से।

432. तत्वों को विस्तार से कैसे समाहित किया जाता है? पृथ्वी तत्व को बीस भावों में, जल तत्व को बारह भावों में, अग्नि तत्व को चार भावों में तथा वायु तत्व को छह भावों में विस्तार से समाहित किया जाता है।

433. पृथ्वी तत्व को किन बीस अवस्थाओं में विस्तार से वर्णित किया जा सकता है? [74] इस शरीर में सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा; मांस, नसें, हड्डियाँ, अस्थि मज्जा, गुर्दा; हृदय, यकृत, मध्य भाग, तिल्ली, आंतें; आंत्र, अंतःस्त्रावी अंग, गला, मल (तुलना करें एम. i, 421), और सिर में मस्तिष्क (भजन 1, 7) हैं। पृथ्वी तत्व को इन बीस अवस्थाओं में विस्तार से वर्णित किया जा सकता है।

434. बारह भावों में जल तत्व का विस्तृत वर्णन किस प्रकार होता है? इस शरीर में पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा; आँसू, चिकनाई, थूक, नाक का पानी, जोड़ों का तेल और मूत्र होते हैं (देखें एम. i, 422)। जल तत्व का विस्तृत वर्णन इन बारह भावों में होता है।

435. किन चार अवस्थाओं में अग्नि तत्व का विस्तृत वर्णन होता है? इनमें वे अवस्थाएँ शामिल हैं जिनसे शरीर को गर्मी मिलती है, जिनसे बुढ़ापा आता है, जिनसे शरीर जलता है, और जिनसे खाया, पिया, चबाया और चखा गया भोजन पूरी तरह से पच जाता है (देखें एम. आई, 422)। इन चार अवस्थाओं में अग्नि तत्व का विस्तृत वर्णन होता है।

436. वायु तत्व को विस्तार से किन छह भावों में समाहित किया जा सकता है? ऊपर की ओर जाने वाले बल, नीचे की ओर जाने वाले बल, पेट में लगने वाले बल, उदर में लगने वाले बल, अंगों से होकर गुजरने वाले बल और श्वास अंतर्ग्रहण एवं श्वास बहिर्ग्रहण (देखें एम. आई, 422)। इस प्रकार वायु तत्व को छह भावों में विस्तार से समाहित किया जा सकता है।

437. जो व्यक्ति इन बयालीस अवस्थाओं में व्यक्तिगत सार 1 के संदर्भ में तत्वों का विस्तृत पुनर्वर्णन, आकलन, विश्लेषण, पूछताछ और समीक्षा करता है, उसे शरीर या शरीर के किसी भी अंग में कुछ भी लेने योग्य नहीं दिखता। जैसे कोई गंदे नाले की जाँच करे तो उसे कुछ भी लेने योग्य नहीं दिखेगा, जैसे कोई शौचालय की जाँच करे तो उसे कुछ भी लेने योग्य नहीं दिखेगा, उसी प्रकार [75] जो व्यक्ति इन बयालीस अवस्थाओं में व्यक्तिगत सार 1 के संदर्भ में तत्वों का विस्तृत पुनर्वर्णन, आकलन, विश्लेषण, पूछताछ और समीक्षा करता है, उसे शरीर या शरीर के किसी भी अंग में कुछ भी लेने योग्य नहीं दिखता।

437/1 देखें n. 453/1. इस पैराग्राफ के लिए यह भी देखें Vis. ch. viii, §47 /p. 241.

[पृष्ठ 106]

पथप्रदर्शक

इन बयालीस मनोदशाओं में व्यक्तिगत सार के संदर्भ में, शरीर या शरीर के किसी भी अंग को लेने लायक कुछ भी नहीं दिखता है।

438. इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा: < अब अपने भीतर के पृथ्वी तत्व और बाह्य पृथ्वी तत्व दोनों को, उनके स्वरूप को सही ढंग से समझते हुए, इस प्रकार देखना चाहिए: 'मैं यह नहीं हूँ, यह मेरा नहीं है, यह मैं नहीं हूँ, यह मेरा स्वरूप नहीं है।' 9 इस प्रकार, उनके स्वरूप को सही ढंग से समझते हुए देखने पर, व्यक्ति को पृथ्वी तत्व में वैराग्य प्राप्त होता है, और पृथ्वी तत्व के प्रति वासना उसके हृदय से विलीन हो जाती है । अब अपने भीतर के जल तत्व और बाह्य जल तत्व ... अपने भीतर के अग्नि तत्व और बाह्य अग्नि तत्व ... अपने भीतर के वायु तत्व और बाह्य वायु तत्व दोनों को, उनके स्वरूप को सही ढंग से समझते हुए, इस प्रकार देखना चाहिए: 'मैं यह नहीं हूँ, यह मेरा नहीं है, यह मैं नहीं हूँ, यह मेरा स्वरूप नहीं है ।' इस प्रकार, उनके स्वरूप को सही ढंग से समझते हुए देखने पर, व्यक्ति को वायु तत्व में वैराग्य प्राप्त होता है, और वायु तत्व के प्रति वासना उसके हृदय से विलीन हो जाती है > (cf. एम. i, 421)। यह विविधता है।

439. 'अज्ञान' एक एकता है।

यहाँ, अज्ञान क्या है? यह दुख के बारे में अनभिज्ञता, दुख के कारण के बारे में अनभिज्ञता, दुख के निवारण के बारे में अनभिज्ञता और दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग के बारे में अनभिज्ञता है (देखें पे 116); अतीत के बारे में अनभिज्ञता, भविष्य के बारे में अनभिज्ञता, अतीत और भविष्य दोनों के बारे में अनभिज्ञता; विशिष्ट परिस्थिति और आश्रित रूप से उत्पन्न विचारों के बारे में अनभिज्ञता; यह ऐसी कोई भी अनभिज्ञता, दृष्टिहीनता, अवास्तविकता, दूसरे से ज्ञान प्राप्त करने में विफलता, स्वयं को ज्ञान प्राप्त करने में विफलता, अंतर्भेदनहीनता, विशेषता बताने में विफलता, पुनर्विशेषता बताने में विफलता, प्रतिविशेषता बताने में विफलता [76], उपेक्षा, अनुभवहीनता, बुद्धिहीनता, मूर्खता, अनभिज्ञता, भ्रम, माया, उलझन, अज्ञान, अज्ञान की बाढ़, अज्ञान का बंधन, अज्ञान की अंतर्निहित प्रवृत्ति, अज्ञान का जुनून, अज्ञान का बंधन, निष्फलता की जड़ के रूप में भ्रम है। यह विविधता है।

440. 'विज्ञान' एक एकता है।

यहाँ विज्ञान क्या है? यह दुख के बारे में ज्ञान है, दुख के कारण के बारे में ज्ञान है, दुख के निवारण के बारे में ज्ञान है, दुख के निवारण के मार्ग के बारे में ज्ञान है; अतीत के बारे में ज्ञान है, भविष्य के बारे में ज्ञान है, अतीत और भविष्य दोनों के बारे में ज्ञान है; विशिष्ट परिस्थितियों और आश्रित विचारों के बारे में ज्ञान है; यह इस प्रकार का कोई भी अंतर्संबंधी ज्ञान है।

438/1 यह वाक्यांश, nev' csaham , इस सूत्र के सामान्य कथन के अतिरिक्त है।

[पृष्ठ 107]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

स्थिर रहना, समझ की क्रिया , जांच, पुनर्जांच, विचारों की जांच, चरित्र-निर्धारण, पुनर्-चरित्र-निर्धारण, प्रति-चरित्र-निर्धारण, ज्ञान, कौशल, चतुराई, स्पष्टीकरण, चिंतन , जांच-पड़ताल, व्यापकता, बुद्धि, मार्गदर्शन, अंतर्दृष्टि, जागरूकता, प्रेरणा , समझने की क्षमता,

समझने की शक्ति, समझने का हथियार, समझने का [कहानी वाला] महल, समझने का प्रकाश, समझने की रोशनी, समझने की स्पष्टता, समझने का रत्न, भ्रमहीनता, विचारों की जांच, सही दृष्टिकोण, विचारों की जांच, ज्ञानोदय कारक, मार्ग में शामिल पथ-कारक (धस्. 292; तुलना करें पे 122)। यह एक विविधता है।

441. 'उपलब्धि' एक एकता है।

इसमें, प्राप्ति क्या है? प्रत्यक्ष प्राप्ति, अप्रत्यक्ष प्राप्ति, न प्रत्यक्ष न अप्रत्यक्ष प्राप्ति, शून्यता की प्रत्यक्ष प्राप्ति, और समाप्ति की प्राप्ति। यह विविधता है।

442. 'ध्यान करने वाला' एक एकता है।

यहाँ, ध्यान करने वाला कौन है? एक दीक्षित ध्यान करने वाला है, एक सिद्ध ध्यान करने वाला है, एक न दीक्षित न सिद्ध ध्यान करने वाला है, एक 'शुद्ध नस्ल' का ध्यान करने वाला है, एक 'शौकिया' ध्यान करने वाला है (देखें ए. वी, 323; तुलना करें पे 146), एक ध्यान करने वाला है जो विचारों से शासित है, एक ध्यान करने वाला है जो लालसा से शासित है, एक ध्यान करने वाला है जो समझ से शासित है। [77] यह एक विविधता है।

443. 'एकाग्रता' एक एकता है।

यहां एकाग्रता क्या है? संघर्ष के साथ एकाग्रता, संघर्ष के बिना एकाग्रता; जोखिम के साथ एकाग्रता , जोखिम के बिना एकाग्रता; दुर्भावना के साथ एकाग्रता, दुर्भावना रहित एकाग्रता; सुख के साथ एकाग्रता [अर्थात, पहले दो ध्यान], सुख रहित एकाग्रता [अर्थात, अंतिम दो ध्यान]; भौतिकवादी एकाग्रता, गैर-भौतिकवादी एकाग्रता; प्रेरणा -प्रेरित संकल्पों के साथ एकाग्रता, एकाग्रता-

---

441/1 ' विभूतसन्नसमापत्ति - शून्यता की अनुभूति करने वाला बोध': नेत्तिआ: 'चेतना की अनंतता से युक्त आधार की प्राप्ति; क्योंकि यह प्रथम निराकार अवस्था (अर्थात, अंतरिक्ष) का संज्ञान करने वाली चेतना (अब समाप्त और विगत) और प्रथम निराकार अवस्था का संज्ञान करने वाली चेतना (सचेतन बोध) की शून्यता (विभवनातो) (इसके अब समाप्त और अतीत होने के कारण) के कारण है, इसलिए इसे ऐसा कहा जाता है (देखें विस. अध्याय x, §§60-5/पृष्ठ 339-40)। लेकिन कुछ लोग इसे विभूतरूपसन्न पढ़ते हैं, और उनके मत में इसका अर्थ शेष निराकार अवस्थाएँ होगा' (पृष्ठ 113)। यह व्याख्या अस्पष्ट विभवति को उसके नकारात्मक अर्थ में लेती है। देखें n. 843 /I लेकिन यहां संदर्भ शायद ' पथविसन्न विभूत' आदि का है, ए. वी., 325 पर । 441/2 निरोधसमापत्ति को §580 पर पढ़ें ।

443/1 सा-राना और अ-राना के लिए n. 297/2 देखें।

443/2 ' अमिसा —भौतिकवादी': यह शब्द सामान्यतः भोजन और दवा जैसी भौतिक आवश्यकताओं को संदर्भित करता है, और समिसा का संबंध इनसे है।

[पृष्ठ 108]

पथप्रदर्शक

बिना किसी प्रोत्साहन के निर्धारण; 3 एकतरफा एकाग्रता, द्विपक्षीय एकाग्रता, और दोनों तरीकों से बनी रहने वाली एकाग्रता; 4 विचार और अन्वेषण के साथ एकाग्रता, बिना विचार और मात्र अन्वेषण के एकाग्रता, बिना विचार और बिना अन्वेषण के एकाग्रता (देखें डी. iii, 219); निम्न अवस्था से संबंधित एकाग्रता, स्थिरता से संबंधित एकाग्रता, भेद से संबंधित एकाग्रता, भेद से संबंधित एकाग्रता (देखें पी.एस. i, 48); संसारों से संबंधित एकाग्रता, संसारों से अलग एकाग्रता; गलत एकाग्रता, सही एकाग्रता। यही विविधता है।

444. 'मार्ग' एक एकता है।

यहाँ मार्ग क्या है? विलासिता का मार्ग है, सादगी का मार्ग है, मध्य मार्ग है (ए. i, 295); अधीर का मार्ग है, धैर्यवान का मार्ग है; शांत करने का मार्ग है, वश में करने का मार्ग है (डी. iii, 229 देखें); सुस्त परिचय का कष्टदायक मार्ग है, तीव्र परिचय का कष्टदायक मार्ग है, सुस्त परिचय का सुखद मार्ग है, तीव्र परिचय का सुखद मार्ग है (डी. iii, 228 देखें)। यह विविधता है (धारा 264 भी देखें)।

445. 'शरीर' एक एकता है।

इसमें शरीर क्या है? नाम-शरीर और रूप-शरीर हैं। इसमें रूप-शरीर क्या है? यह सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा; मांस, नसें, हड्डियाँ, अस्थि मज्जा, गुर्दा; हृदय, यकृत, मध्य भाग, तिल्ली, फेफड़े; आंतें, अंतर्वस्त्र, गला, गोबर; पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा; आँसू, चिकनाई, थूक, नाक का पानी, जोड़ों का तेल, मूत्र; और सिर में स्थित मस्तिष्क (भजन संहिता 1, 7 देखें)। [78] यह रूप-

शरीर है (धारा 226 देखें)। नाम-शरीर में भावना, बोध, चुनाव, संज्ञान, संपर्क और ध्यान शामिल हैं। यह नाम-शरीर है (धारा 226 देखें)। यह विविधता है।

446. इस प्रकार, जबकि कुछ विचार [जैसे, 'जन्म'] का सार समान होता है।

जबकि निरमिसा उससे विरक्त है। 'शरीर और आत्मा' भी इन्हीं विपरीत भावों को व्यक्त करते हैं।

443/3 ' ससंखारा —प्रेरणा-निर्धारण के साथ' और ' असंखारा —प्र.-डी. के बिना' पीईडी में नहीं हैं ; बाद वाला सीपीडी में है। धस. 146 और ए. iv, 72 भी देखें । 443/4 नेटिआ : '"एकतरफा रूप से अस्तित्व में रखी गई एकाग्रता" वह है जो एक नंगे-(शुष्क-) अंतर्दृष्टि कार्यकर्ता में होती है (नीचे देखें)। "द्विपक्षीय रूप से अस्तित्व में रखी गई एकाग्रता" वह है जिसका वाहन शांत है (विज़. अध्याय xviii. §3/पृष्ठ 587); और "एकाग्रता जिसका अस्तित्व में रहना दोनों तरह से अस्तित्व में रखा जाता है" एक शरीर-साक्ष्य में एकाग्रता है (एम. i, 478; पुग. 14; विज़. अध्याय xxi, §§74-5/ पृष्ठ 659 देखें); क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति है जिसकी एकाग्रता दोनों तरीकों से (अधिकतम शांति और अंतर्दृष्टि के साथ) बनी रहती है (पृष्ठ 114)। 'शुद्ध अंतर्दृष्टि कार्यकर्ता' (सुक्खा विपस्सक) शब्द के लिए दर्शनशास्त्र के अध्याय 18 और 21 देखें ।

[पृष्ठ 109]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

[अर्थात इस उदाहरण में 'पीड़ा'] किसी [अन्य संबंधित] विचार के रूप में, [जैसे, इस उदाहरण में 'बुढ़ापा'], वह पूर्व विचार इस बाद वाले विचार के साथ [उनकी सामान्य] एकता के माध्यम से एकता पाता है, फिर भी यह उस चीज़ के कारण इससे भिन्न है जिसके द्वारा इसकी विशिष्ट विशेषता है।

अतः जब किसी से शिक्षण के सभी रूपों को समाहित करने वाले पद्य-प्रकार, या गद्य-व्याख्याओं, या पद्य-व्याख्याओं के बारे में पूछा जाए, तो प्रश्न इस प्रकार पूछा जाना चाहिए: 'तो फिर, वह एकता या विविधता के अनुसार कैसे पूछता है? ' यदि एकता के अनुसार पूछा जाए, तो उत्तर एकता के अनुसार दिया जाना चाहिए। यदि विविधता के अनुसार पूछा जाए, तो उत्तर विविधता के अनुसार दिया जाना चाहिए। यदि प्राणियों के संदर्भ में पूछा जाए, तो उत्तर प्राणियों के संदर्भ में दिया जाना चाहिए। यदि विचारों के संदर्भ में पूछा जाए, तो उत्तर विचारों के संदर्भ में दिया जाना चाहिए (देखें अनुच्छेद 860 और 943)। जैसा प्रश्न पूछा गया है, वैसा ही उत्तर दिया जाना चाहिए।

447. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:

'विचारों को प्रदर्शित करने पर
एकता और विविधता दोनों
इसलिए किसी भी प्रकार के वियोग का सामना नहीं करना पड़ेगा:
यह मोड अभिव्यक्ति की शर्तों को व्यक्त करता है (§18)।
अभिव्यक्ति के शब्दों को संप्रेषित करने का माध्यम समाप्त हो गया है।

*

---

15. आवश्यकताओं को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा

448. इसमें आवश्यकताओं को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

'ऐसे विचार जो प्रत्येक विचार को जन्म देते हैं'
उचित संबंध में शर्तें भी हैं;
और इसके द्वारा कारण का पता लगाकर
यह मोड आवश्यक को व्यक्त करता है' (§15)।

449. कोई भी विचार जो किसी विचार को जन्म देता है, वह उस विचार की आवश्यकता है।

450. आवश्यक वस्तु की विशेषता क्या है? आवश्यक वस्तु में जनरेटर की विशेषता है।

449/1 यानी, एक विचार जो दूसरे विचार की अनिवार्य शर्त है , जैसे, मान लीजिए, अज्ञानता निर्धारण के लिए है।

[पृष्ठ 110]

पथप्रदर्शक

451. दो प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं, अर्थात् कारण और शर्त।

452. इसमें, कारण की विशेषता क्या है? स्थिति की विशेषता क्या है? कारण की विशेषता यह है कि वह साझा नहीं होता, जबकि स्थिति की विशेषता यह है कि वह साझा होती है। 1

453. ऐसा कैसे हो सकता है? उसी तरह जैसे किसी बीज के अंकुरण के लिए बीज और अंकुर एक समान नहीं होते, जबकि मिट्टी और जल दोनों बीज और अंकुर के लिए समान होते हैं; क्योंकि यद्यपि मिट्टी और जल दोनों अंकुरण के लिए एक शर्त हैं, फिर भी उसका कारण उसका व्यक्तिगत सार है; 1 या उसी तरह जैसे बर्तन में रखा दूध दही बन जाता है , फिर भी एक साथ कोई घटना नहीं होती।

452/1 यह भेद और ये दो परिभाषाएँ शायद इस काम की विशेषता हैं।

453/1 'सभाव —व्यक्तिगत सार' के लिए देखें पृ. सं. अध्याय 8, संख्या 68, जहाँ इस शब्द पर चर्चा की गई है और विभिन्न टीका संबंधी व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं। एकमात्र पिटक संदर्भ भजन 2, 178 में मिलता है (या तो 'जन्मजात रूप व्यक्तिगत सार से रहित है ' या 'जन्मजात रूप व्यक्तिगत सार से रहित है', यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस अंश में क्रियापद (सभावने) को कैसे लिया गया है, जिसने भजन संहिता को बहुत परेशान किया है)। मिलन सं. 90, 164, 212, 360 भी देखें; साथ ही पे 104 भी। टीकाओं में यह शब्द बहुत बार प्रयोग किया गया है। यहाँ इस शब्द का प्रयोग 'कारण' (हेतु) के पर्यायवाची के रूप में किया गया है, जो टीकाओं में 'प्रकृति' (पकति) या किसी भी विचार (धम्म) के पर्यायवाची के रूप में किए गए प्रयोग से भिन्न है, जो केवल एक नाम या निषेध नहीं है। नेटी ए : "इसका व्यक्तिगत सार ही इसका कारण है": वही (अस्तित्ववान) सार (समान-भाव), बीज, ही कारण है। लेकिन क्या यह तथ्य नहीं है कि बीज अंकुर आदि के समान नहीं है? —ऐसा कहना असंभव है; क्योंकि किसी अन्य प्रकार के बीज से उस प्रकार के (अंकुर) का उद्भव नहीं होता है।" (पृष्ठ 115)। नेटी के तर्क में यहाँ एक छिपी हुई (और स्पष्ट रूप से अनजाने में?) अस्पष्टता है, अर्थात्, बीज-वस्तु (व्यक्तिगत) और बीज-प्रकृति (सिद्धांत) के बीच की अस्पष्टता। विस स्पष्ट रूप से गैर-बौद्ध 'अंतर्निहितता' या 'अंतर्निहितता' (समवया) के सिद्धांत का खंडन करता है, जिसके अनुसार कारण परिणाम में अंतर्निहित माना जाता है (विस. 513), और विस ए पर्याप्त और पर्याप्त कारण के रूप में स्वभाव के सिद्धांत को अस्वीकार करता है (पीपीएन., अध्याय xvi, टिप्पणी 23); डी. i, 53 में मक्खली गोसला को दिए गए गलत सिद्धांत की भी तुलना करें, जिसमें भाव का प्रयोग किया गया है (कुछ लोग इसे स्वभाव पढ़ते हैं)। स्वभाव शब्द का भारतीय संस्कृत दर्शन में, महायान-बौद्ध और गैर-बौद्ध दोनों में, व्यापक प्रचलन था, और इसने कई रूप धारण किए, कभी-कभी अरस्तू द्वारा 'गुणों' से अलग 'सार' के प्रयोग के करीब पहुँच गया। दोहराने के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि बुद्ध ने इस शब्द का प्रयोग कभी नहीं किया। *

453/2 यह एक ऐसा उदाहरण है जहाँ भवति का अनुवाद 'बन जाता है' के रूप में करना गलत होगा। नेत्तिया एक तात्विकीय कठिनाई को महसूस करते हैं जब वे कहते हैं, "'दही है (दधि भवति)' यह कथन पहचान मार्गदर्शक रेखा (एकत्त-नय - देखें दृष्टि 585) या अभेदीकरण के रूपक (अभेदोपचार - देखें पृष्ठ संख्या अध्याय 8, संख्या 65) के अनुसार है, न कि किसी अन्य तरीके से; क्योंकि दूध दही नहीं है (न होती) , इसीलिए 'और फिर भी दूध और दही का एक साथ होना संभव नहीं है' कहा गया है" (पृष्ठ 115)। 'बन जाता है' के रूप में अनुवाद करने से व्याख्या के लिए कुछ भी नहीं बचता और उस 'प्रथम क्षण' को निर्धारित करने की कठिनाई छिप जाती है जब यह दही होता है ।

[पृष्ठ 111]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

दूध और दही का बनना, दोनों ही स्थितियों में कारण और परिस्थिति का एक साथ होना संभव नहीं है।

454. अब पुनर्जन्मों का यह चक्र कारण और शर्त दोनों के साथ घटित होता है; क्योंकि यह कहा गया है: <अज्ञान को शर्त मानकर, निर्धारण; निर्धारण को शर्त मानकर, चेतना; ... और इसी प्रकार आश्रित उत्पत्ति का पूरा सूत्र (धारा 2, 1 देखें)। परिणामस्वरूप अज्ञान कारण है और अतार्किक ध्यान शर्त है (पे. 104 और धारा 462 देखें)।

455. पूर्व अज्ञान ही परवर्ती अज्ञान का कारण है। यहाँ पूर्व अज्ञान अज्ञान की अंतर्निहित प्रवृत्ति है, जबकि परवर्ती अज्ञान अज्ञान का प्रत्यक्ष जुनून है। पूर्व अंतर्निहित अज्ञान प्रवृत्ति, निकटवर्ती कारणता के आधार पर, परवर्ती अज्ञान के जुनून का कारण है, जैसे बीज और अंकुर बढ़ते हैं, लेकिन जहाँ कहीं भी उस बीज का कोई फल होता है, तो वह बीज उस फल का परवर्ती कारण होता है; क्योंकि कारण दो प्रकार के होते हैं, अर्थात् निकटवर्ती कारण (जैसे बीज का अंकुर के लिए) और परवर्ती कारण (जैसे बीज का फल के लिए)। 2 अतः अज्ञान का कारण भी दो प्रकार का होता है, अर्थात् निकटवर्ती कारण और परवर्ती कारण।
456. या उसी प्रकार जैसे पात्र, बाती और तेल, मानो, प्रकाश की अवस्था हैं, परन्तु उसका कारण-स्वयं-सार नहीं—क्योंकि लौ के बिना पात्र, बाती और तेल, जो प्रकाश की अवस्था हैं, को प्रज्वलित नहीं किया जा सकता—; स्वयं-सार-सार प्रकाश के समान है। अतः स्वयं-सार कारण है, जबकि अन्य-सार अवस्था है; 1 स्वयं में कारण है जबकि उससे बाह्य अवस्था है; जनक कारण है जबकि सहायक 2

455/1 4 परिब्रूहाना —बढ़ रहा है': पी.ई.डी. में नहीं है ।
455/2 देखें वि. 532 (अनंतरपच्चया और समनंतरपच्चया) और 536 (अनंतरूपनिस्सायपच्चया) चर्चा के लिए। यह स्पष्ट नहीं है कि नेट्टी में पट्टाना को ध्यान में रखा गया है या नहीं। समनंतर-हेतु और परंपरा-हेतु इसी कृति और पे (देखें पे 77 और 104-5) तक सीमित प्रतीत होते हैं ।
456/1 सबावा ('व्यक्तिगत सार') और परावा ('अन्य सार') का यह प्रयोग सीधे पे (पृष्ठ 104) से लिया गया है। यह इस तर्क को विशुद्ध रूप से सत्तामीमांसा संबंधी बनाता है। भाव कारणवाचक संज्ञा है जो भू से उत्पन्न हुई है, अर्थात् 'अस्तित्व बनाना', 'अस्तित्व में बनाए रखना', 'सार', 'स्वरूप' या 'स्वरूप', एक पहचानने योग्य विशिष्ट गुण के अर्थ में।
456/2 हेतु ('कारण') की यह परिभाषा, पच्चया ('स्थिति') की तुलना में सामान्यता के निचले स्तर पर, इस कृति के लिए विशिष्ट प्रतीत होती है। सूत्रों में कोई अंतर नहीं देखा जा सकता। अभिधम्म में हेतु छह हेतुओं तक ही सीमित रहता है , अर्थात् लोभ आदि, जबकि पच्चया या तो पूर्ववर्ती (जैसे, कर्म) हो सकता है, या परवर्ती (अर्थात, किसी समकालीन रूप-धम्म के विरुद्ध चेतसिकधम्म जो पहले उत्पन्न हुआ हो लेकिन दीर्घ उपस्थिति (तिथि) के कारण समाप्त हो जाता है)।

[पृष्ठ 112]
पथप्रदर्शक
यह स्थिति है; जो साझा नहीं है वह कारण है जबकि जो साझा है वह स्थिति है।
457. निरंतरता का अर्थ, गैर-बाधा का अर्थ, फल का अर्थ, घटित होने का अर्थ, अस्तित्व के नवीनीकरण का अर्थ, पुनः जोड़ने का अर्थ, जुनून का अर्थ, बाधा का अर्थ, अंतर्निहित प्रवृत्ति का अर्थ, उन्मूलन न होने का अर्थ, अज्ञानता का अर्थ, प्रवेश न होने का अर्थ, निदान न होने का अर्थ, चेतना के बीज का अर्थ है (cf. ए. i, 224)।
458. जहाँ व्यवधान नहीं होता, वहाँ निरंतरता होती है, जहाँ निरंतरता होती है, वहाँ [80] घटना होती है, जहाँ घटना होती है, वहाँ फल होता है, जहाँ फल होता है, वहाँ पुनर्संबंध होता है, 1 जहाँ पुनर्संबंध होता है, वहाँ अस्तित्व का नवीनीकरण होता है, जहाँ अस्तित्व का नवीनीकरण होता है, वहाँ बाधा होती है, जहाँ बाधा होती है, वहाँ जुनून होता है, जहाँ जुनून होता है, वहाँ उन्मूलन नहीं होता, जहाँ उन्मूलन नहीं होता, वहाँ अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है, जहाँ अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है, वहाँ प्रवेश नहीं होता, जहाँ प्रवेश नहीं होता, वहाँ अज्ञान होता है, जहाँ अज्ञान होता है, वहाँ दोषों से प्रभावित अविभाजित चेतना होती है, जहाँ दोषों से प्रभावित अविभाजित चेतना होती है, वहाँ बीज का अर्थ होता है (देखें §3°4)। ... .
459. सद्गुण श्रेणी एकाग्रता श्रेणी की शर्त है, एकाग्रता श्रेणी समझ श्रेणी की शर्त है, समझ श्रेणी मुक्ति श्रेणी की शर्त है, मुक्ति श्रेणी मुक्ति के ज्ञान और दर्शन श्रेणी की शर्त है।

या समरूप (अर्थात, चेतसिका धम्म जो एक साथ उत्पन्न और समाप्त होते हैं, या जो रूप-धम्म के साथ उत्पन्न होते हैं लेकिन पहले समाप्त हो जाते हैं)। हेतुपच्चय भी पत्थाना में सूचीबद्ध पच्चय के 24 प्रकारों में से एक है (देखें दर्शनशास्त्र अध्याय 17)। बौद्ध धर्म प्रथम कारण की अनुमति नहीं देता (§644; दर्शनशास्त्र अध्याय 17, §§35ff./पृष्ठ 525)।
458/1 ' पतिसंधि -पुनर्मिलन' (या 'पुनर्जन्म-संिलन'): पी.ई.डी. का लेख अपर्याप्त है, और 'पुनर्जन्म' शब्द के दुर्भाग्यपूर्ण चयन के कारण भ्रामक भी है (इसके अलावा, एकमात्र सूत्र संदर्भ एम. iii, 230 की अनदेखी की गई है, जिसका एक अलग, गैर-तकनीकी अर्थ

है)। कुछ तकनीकी अभिधम्म और टीका संदर्भ हैं: पीटीएन, 320, आदि, पीएस. ii, 72, आदि, विस. 460। टीका के अनुसार अर्थ: जबकि मरणासन्न व्यक्ति की अंतिम चेतना के लिए चुति-चित्त का प्रयोग किया जाता है, वहीं पुनर्जन्म के बाद की पहली चेतना के लिए पतिसंधि - चित्त का प्रयोग किया जाता है, जो मृत्यु-चेतना के तुरंत बाद आती है और उससे जुड़ जाती है। इस प्रकार, बिना किसी 'वस्तु'—चेतना या किसी अन्य वस्तु—के स्थायित्व के अटूट निरंतरता बनी रहती है। अज्ञान और लालसा के कारण, मरते हुए मन से पुनः जुड़ने वाले मन तक केवल कर्म की 'गति' ही संप्रेषित या 'स्थानांतरित' होती है।

[पृष्ठ 113]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
460. जल-स्थानों का ज्ञान इस बात के ज्ञान की शर्त है कि क्या [पर्याप्त] पिया गया है, [पर्याप्त] पिया गया है इसका ज्ञान [सही] मात्रा के ज्ञान की शर्त है, [सही] मात्रा का ज्ञान स्वयं के ज्ञान की शर्त है (§167)।
461. या उसी तरह जैसे <आँख चेतना आँख और रूपों पर निर्भर करती है > (एम. i, 111; iii, 285): इसमें, आँख प्रधानता की सशर्तता के माध्यम से एक स्थिति है, जबकि रूप वस्तु की सशर्तता के माध्यम से एक स्थिति हैं, प्रकाश 1 सह-समर्थन के माध्यम से एक स्थिति है, और ध्यान, व्यक्तिगत-सार के रूप में, कारण है (cf. §454)।
462. जब चेतना की स्थिति निर्धारण है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब नाम-रूप की स्थिति चेतना है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब छह प्रकार के आधार की स्थिति नाम-रूप है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब संपर्क की स्थिति छह प्रकार के आधार है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब अनुभूति की स्थिति संपर्क है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब लालसा की स्थिति अनुभूति है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब धारणा की स्थिति लालसा है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब अस्तित्व की स्थिति धारणा है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब जन्म की स्थिति अस्तित्व है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब वृद्धावस्था और मृत्यु की स्थिति जन्म है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब दुःख की स्थिति वृद्धावस्था और मृत्यु है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब विलाप की स्थिति दुःख है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। जब पीड़ा की स्थिति विलाप है, तब उसका व्यक्तिगत सार ही उसका कारण है। दुःख की अवस्था पीड़ा है, जबकि उसका मूल तत्व उसका कारण है। वहीं निराशा की अवस्था दुःख है, जबकि उसका मूल तत्व उसका कारण है।

461/1 नेत्र-चेतना के उद्भव की शर्तों में से एक के रूप में 'प्रकाश' (आलोक) का समावेश त्रिपिटक से बाद में हुआ है, जिसमें इसका उल्लेख उस रूप में नहीं है। तुलना करें: विस . 488-9 (पूर्व शिक्षकों का उद्धरण)। यह किसी भी मौजूदा पाली कृति में सबसे पहला उल्लेख होना चाहिए, हालांकि एनडी2 (234) में दिए गए अंश की तुलना करें: ' चक्खुनपुरिसो आलोकेति रूपगतनि\ तुलना करें 1). iii, 223 —' आलोकसन्ना\ 462/1 इससे पहले (§§452 और 456) इसका अर्थ निरंतरता में पूर्व चेतना होना चाहिए, और यही बात बाकी सब पर भी लागू होती है। नेत्तिया कहते हैं, 'पुण्य (अपराध और अविचलितता) के निर्णायक कर्म पुनर्जन्म में चेतना के पुनः जुड़ने की शर्त हैं। इसमें, जो व्यक्तिगत सार है, वही कारण है। और यहाँ "निर्धारण" से तात्पर्य किसी भी प्रकार की चेतना के उद्भव से है, चाहे वह लाभकारी हो या नलाभकारी, जो संसार से संबंधित हो (पृष्ठ 116)। आश्रित उत्पत्ति के लिए पिटक संदर्भ इस प्रकार हैं: डी. सूत्र 15; एम. सूत्र 9 और 38; एस. निदान संयुत्त; ए. i, 177; वी.बी. पच्चयकरविभंग; पीएस. i, 50-2।

[पृष्ठ 114]
पथप्रदर्शक
463. इस प्रकार सभी प्रकार के सामान्य समर्थन एक आवश्यकता है (cf. §168)।
464. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'ऐसे विचार जो प्रत्येक विचार को जन्म देते हैं'
उचित संबंध में शर्तें भी हैं;
और इसके द्वारा कारण का पता लगाकर

यह मोड आवश्यक को व्यक्त करता है' (§19)।
आवश्यकताओं को संप्रेषित करने का माध्यम समाप्त हो गया है।
*

---

16. समन्वय को संप्रेषित करने के तरीके में नौ गुना धागा
465. [81] इसमें समन्वय संप्रेषित करने का तरीका क्या है?
[यह यह है:]
'जिन लोगों से ये विचार जुड़े हैं, उनके साथ अपने विचार साझा करें।'
और जिन्हें ऋषि ने दिखाया है
एक अर्थ यह है कि, समन्वय होना चाहिए:
यह मोड समन्वय को दर्शाता है' (§20)।
466. प्रवेश मार्ग उपलब्ध कराने वाले सभी फुटिंग को किसी एक फुटिंग [उल्लेखित] के साथ समन्वित किया जाना चाहिए, उसी तरह जैसे रूपांतरण के हस्तांतरण के तरीके में, प्रवेश मार्ग उपलब्ध कराने के लिए कई फुटिंग बनाए जाते हैं।
467. इसमें समन्वय चार प्रकार का है, अर्थात् (i) आधार, (ii) पर्यायवाची, (iii) अस्तित्व में रखना, और (iv) त्यागना (cf. §§107ff.)।
[(i) नींव]
468. इसमें, फुटिंग का समन्वय क्या है?
किसी भी प्रकार का बुरा काम न करें ।
लाभदायक कौशल को परिपूर्ण बनाना
और अपने हृदय को शुद्ध करना:
यह बुद्धों का विधान है > (§238)।
469. इसका आधार क्या है? अच्छे आचरण के तीन प्रकार, अर्थात् शारीरिक अच्छा आचरण, मौखिक अच्छा आचरण और मानसिक अच्छा आचरण। ये आधार हैं ।

469/I शब्दों की व्याख्या के लिए Tini sucaritani . . . idam padatthanam देखें n. 64/1. NettiA : 'यह (idam) त्रिगुण अच्छा आचरण (sucaritam) एक आधार (- padatthanam) है क्योंकि यह प्रबुद्धों के प्रवचन, उनकी सलाह के लिए क्षेत्र और नींव है' (पृष्ठ 117)।

[पृष्ठ 115]
संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।
470. इसमें, शारीरिक और मौखिक रूप से अच्छे आचरण को सद्गुण श्रेणी में रखा गया है। मानसिक अच्छे आचरण के मामले में, लोभ रहित होना और द्वेष रहित होना एकाग्रता श्रेणी में आता है, और सही दृष्टिकोण समझ श्रेणी में आता है (देखें §238)। ये आधार हैं।
471. इसमें, सद्गुण श्रेणी और एकाग्रता श्रेणी शांत हैं, और समझ श्रेणी अंतर्दृष्टि है। ये एक आधार हैं।
472. इसमें, शांति का फल कामवासना के लुप्त होने से प्राप्त हृदय की मुक्ति है, और अंतर्दृष्टि का फल अज्ञान के लुप्त होने से प्राप्त समझ की मुक्ति है। ये आधार हैं।
*
473 <लकड़ी> x <लकड़ीपन> का आधार है (ध. 283)। 'लकड़ी' क्या है और 'लकड़ीपन' क्या है? 'लकड़ी' से तात्पर्य पांच प्रकार की कामुक इच्छाओं से है, जबकि 'लकड़ीपन' का अर्थ लालसा है। यह एक आधार है।
474. [82] 'लकड़ी' का अर्थ है संकेतों (एम. आई, 180) द्वारा 'स्त्री' या 'पुरुष' को समझना, जबकि 'लकड़ीपन' का अर्थ है ऐसे और ऐसे अंगों को समझना जैसे विशेषताएं 'ओह एक आँख! ओह एक कान! ओह एक नाक! ओह एक जीभ! ओह एक शरीर!'। यह एक आधार है।

475. 'लकड़ी' का अर्थ है स्वयं में और उससे बाहर के अज्ञात आधार, और 'लकड़ीपन' का अर्थ है इन पर निर्भर कोई भी बंधन (cf. डी. ii, 302)। यह एक आधार है।
476. 'लकड़ी' अंतर्निहित प्रवृत्ति है और 'लकड़ीपन' प्रकट जुनून है। यही आधार है।
477. इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:
< लकड़ी और वनक्षेत्र को काटकर > (ध. 283).
यह नींव का समन्वय है।
*

473/1 यहाँ संपूर्ण ध श्लोक पहले आना चाहिए था, लेकिन वह अनुपस्थित है। एमए. i, 11 (= KhpA. Ill) में 'वन' शब्द की व्याख्या इस प्रकार दी गई है: 'यह वह है जो कोई चाहे (वनयते), अतः यह एक वन (वन) है; यह अपनी श्रेष्ठता के कारण प्राणियों में स्नेह उत्पन्न करता है; इसका अर्थ है कि यह उनमें अपने प्रति स्नेह जगाता है। या वैकल्पिक रूप से, यह चाहे (वनुत), अतः यह एक वन (वन) है; इसका अर्थ है कि कोयल की आवाज़ों के साथ... यह मानो सभी प्राणियों से "आओ और मेरा आनंद लो" कहकर विनती कर रहा है।' वना और वना पर शब्द-क्रीड़ा विस. 293 में भी मिलती है। वनाथ का अर्थ 'वनता' है, अर्थात् 'अतिवृद्धि' या 'वनों से आच्छादित', न कि पीईडी का 'अंडरवुड'; प्रत्यय -था (= -नेस) के लिए समा-था देखें।

[पृष्ठ 116]
पथप्रदर्शक
[(ii) पर्यायवाची]
478. यहाँ पर्यायवाची शब्दों का समन्वय क्या है? कामवासना के क्षीण होने से प्राप्त हृदय-मुक्ति दीक्षित का फल है, और अज्ञान के क्षीण होने से प्राप्त समझ-मुक्ति सिद्ध पुरुष का फल है। ये पर्यायवाची शब्द हैं।
479. कामवासना के क्षीण होने से प्राप्त हृदय की मुक्ति, अनावर्ती का फल है, और अज्ञान के क्षीण होने से प्राप्त समझ की मुक्ति, अरहंतत्व है, जो सर्वोच्च फल है। ये पर्यायवाची हैं।
480. कामवासना के लुप्त होने से प्राप्त हृदय की मुक्ति, इंद्रिय-संबंधी इच्छा के तत्व पर विजय प्राप्त करती है, और अज्ञान के लुप्त होने से प्राप्त समझ की मुक्ति, इंद्रिय-संबंधी इच्छा, रूप और निराकार अस्तित्व के त्रिगुणों पर विजय प्राप्त करती है। ये पर्यायवाची हैं।
481. समझ क्षमता, समझ शक्ति, उच्च समझ में प्रशिक्षण, समझ श्रेणी, विचारों की जांच प्रबुद्धता कारक, समता प्रबुद्धता कारक, ज्ञान, सही दृष्टिकोण, निर्णय, न्याय, विवेक, अंतर्दृष्टि, सच्चे विचार का ज्ञान (cf. §294): ये सभी पर्यायवाची हैं।
यह पर्यायवाची शब्दों का समन्वय है।
♦
[(iii) यथावत रखते हुए]
482. इसमें, अस्तित्व बनाए रखने का समन्वय क्या है? यह भगवान बुद्ध के अनुसार है: < इसलिए , भिक्षुओं , शरीर को शरीर के रूप में ध्यान करते हुए , उत्साही , जागरूक और सचेत होकर, संसार के प्रति लोभ और दु:ख को दूर करते हुए, बने रहो > (§174)।
[83] अब 'उत्साही' का अर्थ ऊर्जा संकाय, 'जागरूक' का अर्थ समझ संकाय, 'सचेत' का अर्थ सचेतनता संकाय, और 'संसार के बारे में लोभ और दु:ख को दूर करना' का अर्थ एकाग्रता संकाय है (§174)।
अतः जब कोई शरीर को शरीर के रूप में ध्यान में रखता है, तो चेतना के चारों आधार अस्तित्व में बने रहने के माध्यम से पूर्ण हो जाते हैं। इसका कारण क्या है? क्योंकि चारों इंद्रियों की एकल विशेषता की स्थिति होती है (§174)।
483. जब ध्यान के चार आधारों को बनाए रखा जाता है, तो चारों सही प्रयास उनके बने रहने से पूर्ण हो जाते हैं। जब चारों सही प्रयास बने रहते हैं, तो सफलता के चार आधार (शक्ति के मार्ग) उनके बने रहने से पूर्ण हो जाते हैं। जब सफलता के चार आधार बने रहते हैं, तो पाँचों इंद्रियाँ उनके बने रहने से पूर्ण हो जाती हैं... और इसी प्रकार सब कुछ। इसका कारण क्या है? क्योंकि वे सभी विचार जो

[पृष्ठ 117]

संदेश पहुंचाने के 16 तरीके, अलग-अलग विवेचन में।

ज्ञानोदय की ओर ले जाने वाले, ज्ञानोदय में भाग लेने वाले, एक ही विशेषता रखते हैं, वह है मुक्ति का गुण। वे इस गुण की एकरूपता के कारण अस्तित्व में बने रहने से पूर्णता प्राप्त करते हैं (धारा 175 देखें) ।

यह अस्तित्व को बनाए रखने का समन्वय है।

*

[(iv) त्यागना]

484. इसमें, परित्याग का समन्वय क्या है?

जो शरीर को शरीर के रूप में निहारता है, वह कुरूपता में सुंदरता की धारणा को त्याग देता है; शारीरिक पोषण उसके निदान के अंतर्गत आता है; वह कामुक इच्छाओं के संबंध में अनुमान नहीं लगाता; वह कामुक इच्छाओं के बंधन से मुक्त होता है; वह लोभ के शारीरिक बंधन से विरक्त होता है; वह कामुक इच्छाओं के कलंक से मुक्त होता है; वह कामुक इच्छाओं की बाढ़ को पार कर चुका होता है; वह कामवासना के कांटों से मुक्त होता है; 1 रूप चेतना के आगे बढ़ने के लिए एक स्थिर बिंदु के रूप में उसके निदान के अंतर्गत आता है; 2 रूप तत्व के प्रति उसकी वासना का त्याग हो जाता है; और वह इच्छाशक्ति के माध्यम से गलत रास्ते पर नहीं जाता।

485. जो व्यक्ति भावनाओं को भावनाओं के रूप में चिंतन करता है , वह इस विकृति को त्याग देता है कि पीड़ा में आनंद है, पोषण के रूप में संपर्क उसके निदान के अंतर्गत आता है, वह अस्तित्व-धारणा के संबंध में बिना किसी धारणा के है, वह अस्तित्व के बंधन के संबंध में मुक्त है, वह दुर्भावना के शारीरिक बंधन के संबंध में वियोगित है, वह अस्तित्व के कलंक के संबंध में बेदाग है, उसने [84] अस्तित्व की बाढ़ को पार कर लिया है, वह घृणा के कांटे के संबंध में कांटे रहित है, चेतना के आगे बढ़ने के लिए एक स्थिर बिंदु के रूप में भावना उसके निदान के अंतर्गत आती है, भावना तत्व 2 के लिए उसकी वासना त्याग दी जाती है, और वह घृणा के माध्यम से बुरे रास्ते पर नहीं जाता है।

486. जो चेतना को चेतना के रूप में चिंतन करते हुए स्थिर रहता है, वह इस विकृति का त्याग कर देता है कि क्षणभंगुर में स्थायित्व है, चेतना को पोषण के रूप में देखना उसके निदान के दायरे में आता है, वह है

484/1 यहाँ चार 'कंठ' (सल्ला) कामवासना, घृणा, अहंकार और भ्रम हैं, जैसा कि §§674ff में है। लेकिन पे (पृष्ठ 245) में वे कामवासना, घृणा, भ्रम और विचार हैं। §753 में 3 प्रकार दिखाई देते हैं। ये गणनाएँ स्पष्ट रूप से सूत्रों में नहीं मिलती हैं। 484/2 देखें n. 176/1.

485/1 भावुपदना ('अस्तित्व ग्रहण करने वाला') त्रिपिटक में नहीं पाया जाता है। 228/1 देखें।

485/2 वेदना-धातु ('भावना-तत्व'), सन्ना-धातु ('धारणा-तत्व': §486), और संखरा-धातु ('संकल्प-तत्व') शब्दों के लिए : §§323, 487), देखें, उदा.*, एस. iii, 10.

[पृष्ठ 118]

पथप्रदर्शक

गलत धारणाओं के संबंध में कोई अनुमान लगाए बिना, वह विचारों के बंधन से मुक्त है, वह सद्गुण और कर्तव्य की गलतफहमी के शारीरिक बंधन से अलग है, वह विचारों के कलंक से बेदाग है, उसने विचारों के सैलाब को पार कर लिया है, वह अहंकार के कांटों से रहित है, चेतना के आगे बढ़ने के लिए एक स्थिर बिंदु के रूप में धारणा उसके निदान के अंतर्गत आती है, धारणा-तत्व के लिए उसकी वासना का त्याग हो जाता है, और वह भय के कारण गलत रास्ते पर नहीं जाता है।

487. जो व्यक्ति विचारों को विचारों के रूप में चिंतन करता है, वह इस विकृति का त्याग कर देता है कि अनात्म में भी आत्म है, मन-चयन को पोषण के रूप में देखना उसके निदान के अंतर्गत आता है, वह आत्म-सिद्धांत के संबंध में अनुमान लगाने से रहित होता है, वह अज्ञान के बंधन से मुक्त होता है, वह इस ज़िद के शारीरिक बंधन से विरक्त होता है कि 'केवल यही सत्य है ' , वह अज्ञान के कलंक से निष्कलंक होता है, वह अज्ञान की बाढ़ को पार कर चुका होता है, वह भ्रम के कांटों से रहित होता है, चेतना के आगे बढ़ने के लिए निर्धारण को एक स्थिर बिंदु के रूप में देखना उसके निदान के अंतर्गत आता है, निर्धारण-तत्व के लिए उसकी वासना का त्याग हो जाता है, और वह भ्रम के माध्यम से बुरे रास्ते पर नहीं जाता है।

यह परित्याग का समन्वय है।

488. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'जिन लोगों से ये विचार जुड़े हैं, उनके साथ अपने विचार साझा करें।'
और जिन्हें ऋषि ने दिखाया है
एक अर्थ यह है कि, समन्वय होना चाहिए:
यह मोड समन्वय 5 (§16) को दर्शाता है।
समन्वय संप्रेषित करने का माध्यम समाप्त हो गया है।
*
अलग-अलग विवेचन में उल्लिखित संचार के 16 तरीके समाप्त हो गए हैं।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> नेत्तिपकरण >> च-ii-16 संयुक्त उपचार
नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित

पिछला <<<<-----||-6-||----->>>> अगला

भाग IV अध्याय-II. संयुक्त उपचार में परिवहन के 16 तरीके (पैरा 489 - 643)

[पृष्ठ 119]

अंतर्वस्तु

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
मोड 1
489. [85] यह इस प्रकार कहा गया था:
'सोलह परिवहन पहले, सर्वेक्षण
फिर दिशाओं की रूपरेखा तैयार करने के साथ,
और हुक से इकट्ठा करने के बाद,

तीन दिशानिर्देश एक सूत्र को प्रदर्शित करते हैं' (§26)।

490. अब इसका प्रमाण कहाँ मिलेगा? संयुक्त उपचार में संचार के तरीकों में। 1

*

[1]

491. इसमें, संयुक्त उपचार में शिक्षा देने का तरीका क्या है? [उदाहरण के लिए, यह इस प्रकार है]

एक अनभिज्ञ चेतना के साथ,

गलत दृष्टिकोण से बोझिल, उत्पीड़ित

सुस्ती और नींद आने से,

मारा की शक्ति में आगे बढ़ते रहो >

(तुलना करें उद. 38; समकक्ष श्लोक §595 पर)।

492. 'लापरवाही से सचेत रहना' क्या सिखाता है? लापरवाही। यही मृत्यु की अवस्था है।

493 'गलत दृष्टि से ग्रस्त 5 : किसी व्यक्ति को 'गलत दृष्टि से ग्रस्त 5' कहा जाता है जब वह क्षणभंगुर में स्थायित्व देखता है। यह एक विकृति है। अब विकृति की विशेषता क्या है? विकृति में विकृत बोध की विशेषता होती है। यह किसे विकृत करती है? तीन विचारों को, अर्थात् बोध, संज्ञान और दृष्टि (देखें ए. ii, 52)। यह किसमें विकृति उत्पन्न करती है? आत्म-पहचान के चार आधारों में। 1 [यह ऐसा करती है] इस प्रकार <वह रूप को आत्मा के रूप में, या आत्मा को रूप से युक्त, या रूप को आत्मा में, या आत्मा को रूप में देखता है>

490/1 यहाँ 16 मोड को उद से एकल उद्धरण पर दो भागों में, क्रमशः §§491 और 595 में लागू किया गया है।

493/1 पृष्ठ 121 देखें , जो अतत्भव-वत्थु शब्द का सबसे पुराना उदाहरण प्रतीत होता है और एकमात्र अन्य पुस्तक है जहाँ इसका प्रयोग किया गया है। वहाँ 4 हैं

[पृष्ठ 120]

पथप्रदर्शक

(एम. आई, 299एफ.; iii, 17). इसी प्रकार भावना, धारणा, निर्धारण और चेतना के साथ।

494. इसमें, रूप विकृति का पहला आधार है, अर्थात् कुरूप में सुंदरता; भावना विकृति का दूसरा आधार है, अर्थात् पीड़ा में आनंद; बोध और निर्धारण विकृति का तीसरा आधार हैं, अर्थात् अनात्म में आत्मा; और चेतना विकृति का चौथा आधार है, अर्थात् क्षणभंगुर में स्थायित्व (तुलना करें पे 20-1)।

495. [86] दो विचार चेतना को विकृत करते हैं: वे हैं लालसा और अज्ञान। लालसा से अवरुद्ध चेतना दो विकृतियों से प्रभावित होती है: कुरूपता में सुंदरता और पीड़ा में सुख। अज्ञान से अवरुद्ध चेतना दो विकृतियों से प्रभावित होती है: अनित्य में स्थायित्व और अनात्म में आत्मा।

496. इसमें, दृष्टिकोण का कोई भी विकृति अतीत के रूप को स्वयं के रूप में देखता है, अतीत की भावना को देखता है... अतीत की धारणा को देखता है... अतीत के निर्धारण को देखता है... अतीत की चेतना को स्वयं के रूप में देखता है।

497. इसमें, लालसा का कोई भी विकृति भविष्य के रूप का, भविष्य की भावना का, भविष्य की धारणा का, भविष्य के निर्धारण का, भविष्य की चेतना का, प्रत्याशापूर्वक आनंद लेता है।

498. दो विचार चेतना की अपूर्णताएँ हैं, वे हैं लालसा और अज्ञान। इनसे शुद्ध होने पर ही चेतना शुद्ध होती है।

499. जिन लोगों के लिए अज्ञान ही बाधा है और लालसा ही बंधन, उनका कोई आरंभ स्पष्ट नहीं है (देखें §644), क्योंकि वे लगातार दौड़ते रहते हैं और गोल-गोल घूमते रहते हैं (तुलना करें एस. 2, 178ff.), कभी नरक में, कभी पशुओं के बीच, कभी प्रेतलोक में, कभी असुर राक्षसों के शरीर में, कभी देवताओं के बीच, कभी मनुष्यों के बीच।

500. 'सुस्ती और उनींदापन से पीड़ित': सुस्ती किसी भी अस्वस्थता, बेढंगेपन, चेतना की कमी है; उनींदापन शरीर की कोई भी सुस्ती है (तुलना करें पे 137)।

501. 'एक व्यक्ति मारा की शक्ति में यात्रा करता है': वह मारा (मृत्यु-विक्रेता) की शक्ति में अपवित्रता और मारा के रूप में प्राणी के रूप में यात्रा करता है; क्योंकि वह [जन्मों के] चक्र का सामना करता है।

502. अब भगवान बुद्ध ने इन दो सत्यों का उपदेश दिया है: दुख और उसका कारण। भगवान बुद्ध इनके निदान और त्याग के लिए सही विचार सिखाते हैं: दुख के निदान के लिए

यहां दिए गए तरीके के बजाय, माइंडफुलनेस के 4 आधारों के अंतर्गत 5 श्रेणियों को समाहित करके व्युत्पन्न किया गया है। केवल 'शरीर' (भौतिक और मानसिक) के रूप में अतभाव के लिए , उदाहरण के लिए, ए. आई, 279 देखें।

[पृष्ठ 121]
संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
और इसके उद्‌गम का त्याग करना। जिस मार्ग से निदान किया जाता है और जिस मार्ग से त्याग किया जाता है, वही मार्ग है। भोग और अज्ञान का त्याग करना ही मुक्ति है। ये चार सत्य हैं।
503. इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'असुरक्षित चेतना के साथ...' (§491)।
504. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'संतुष्टि, निराशा,
मुक्ति, फल, साधन, भगवान बुद्ध का भक्तों को उपदेश: यह मार्ग
क्या यह शिक्षा का संप्रेषण है? (§5)।
शिक्षा को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 2
505. [87] इसमें, संयुक्त उपचार में जांच को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह, उदाहरण के लिए, इस प्रकार है।]
506. यहाँ, लालसा दो प्रकार की है: लाभदायक और अलाभदायक (cf. Pe 97)। जबकि अलाभदायक प्रकार घुमावदार मार्ग से जुड़ा है, लाभदायक प्रकार त्याग की लालसा है, जो फैलाव से जुड़ा है (cf. D . iii, 216)।
507. अभिमान भी दो प्रकार का होता है: लाभदायक और अलाभदायक। कोई भी अभिमान जिसके समर्थन में व्यक्ति अभिमान का त्याग करता है, लाभदायक होता है; परन्तु कोई भी अभिमान जो पीड़ा उत्पन्न करता है, अलाभदायक अभिमान होता है (तुलना करें पे 160-1)।
508. यहाँ, [उदाहरण के तौर पर] उस शोक के मामले में जिसका आधार त्याग है [इस प्रकार वर्णित] <'मैं कब सत्यापन द्वारा उस नीच अवस्था में प्रवेश करूँ और उसमें स्थिर रहूँ , जिस शांतिप्रिय अवस्था में श्रेष्ठ पुरुष सत्यापन द्वारा प्रवेश कर सकते हैं और उसमें स्थिर रह सकते हैं, और उनमें लालसा उत्पन्न होती है, और लालसा के साथ शोक उत्पन्न होता है'> (तुलना करें एम. iii, 218 और पे 161): ऐसी लालसा लाभदायक है; क्योंकि कामवासना के लुप्त होने के कारण हृदय की मुक्ति होती है, [ऐसी लालसा] उसे अपना लक्ष्य बनाकर लाभदायक होती है।
509. [अब यहाँ] अज्ञान के लुप्त होने के कारण ज्ञान-मुक्ति भी है । 1. उसकी जाँच का आधार क्या है?

509/1 पढ़ें . . . रागविरागा सेतोविमुत्ती तदारम्मना कुसल । (नया पैरा।) अविज्जाविरागा पन्नविमुत्ती, तस्सा को पविकायो? . . .

[पृष्ठ 122]
पथप्रदर्शक
[आठ कारकों वाले मार्ग की जांच]
510. [इसका आधार] आठ पथ कारक हैं: 1 सही दृष्टिकोण, सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

511. इसकी [जांच का उदाहरण] कहाँ पाया जा सकता है? [सबसे उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में] चौथे ध्यान की पूर्णता में (देखें पे 153)। क्योंकि चौथे ध्यान में चेतना आठ गुणों से युक्त रहती है: यह पूर्णतः शुद्ध, पूर्णतः उज्ज्वल, दोषरहित, अपूर्णता रहित, लचीली, सुगम, स्थिर और अविचलित होती है (देखें एम. i, 22)। जो व्यक्ति चौथे ध्यान की इस पूर्णता को प्राप्त कर लेता है, वह तब आठ प्रकार की अवस्था में पहुँच जाता है, अर्थात् [अलौकिक शक्ति से] छह प्रकार की परिचितता (देखें एम. सूत्र 6) और दो भेद, [अर्थात, मन-निर्मित शरीर और अंतर्दृष्टि-ज्ञान (देखें एम. ii, 27)]।

512. जब वह चेतना पूर्णतः शुद्ध हो जाती है, तो वह पूर्णतः उज्ज्वल होती है; पूर्णतः उज्ज्वल होने पर, वह दोषरहित होती है; दोषरहित होने पर, वह अपूर्णताओं से मुक्त होती है; अपूर्णताओं से मुक्त होने पर, वह लचीली होती है; लचीली होने पर, वह सुगम होती है; सुगम होने पर, वह स्थिर होती है; स्थिर होने पर, वह अविचलितता की अवस्था प्राप्त कर लेती है।

513. [88] इसमें दोष और अपूर्णता दोनों लालसा की ओर से संबंधित हैं, और चेतना की कोई भी गड़बड़ी और अस्थिरता विचारों की ओर से संबंधित है।

514. चौथी ध्यान अवस्था में चार इंद्रियाँ—अर्थात् [शारीरिक] पीड़ा इंद्री, [मानसिक] दुःख इंद्री, [शारीरिक] सुख इंद्री और [मानसिक] आनंद इंद्री—समाप्त हो जाती हैं। 1 इसमें केवल समभाव इंद्री शेष रह जाती है। यह [ध्यानकर्ता] अगली उच्चतर उपलब्धि को अधिक शांतिपूर्ण मानकर उस पर ध्यान केंद्रित करता है। जब वह अगली उच्चतर उपलब्धि को अधिक शांतिपूर्ण मानकर उस पर ध्यान केंद्रित करता है, तो उसकी स्थूलता की धारणा चौथी ध्यान अवस्था के अनुरूप ढल जाती है और उसकी प्रतिरोध की धारणा ऊपर की ओर (किसी बेहतर चीज़ की ओर) बढ़ जाती है।

510/1 यहाँ 8 पथ-कारकों का अचानक परिचय असंगत लग सकता है। लेकिन यह विधि जांच के संदर्भ में सूत्र प्रस्तुत करती है । अब जिस प्रकार की जांच या खोज हृदय-मुक्ति की ओर ले जाती है, उसका वर्णन §508 में किया गया है। इसके बाद (§§510-13) हृदय-मुक्ति के चरणों में केवल शांति की प्रत्येक प्राप्ति से असंतोष के लिए आधार तैयार किया जाता है, और इसलिए किसी उच्चतर की खोज (जांच) (§§514-17), और परिणामस्वरूप प्रश्न (§§518-19), अंतर्दृष्टि के साथ-साथ शांति के विकास की ओर ले जाते हैं जब तक कि मुक्ति के 3 द्वारों द्वारा निकास मार्ग समझ-मुक्ति (§§528ff.) के रूप में नहीं पाया जाता है; और यही वह सही दृष्टिकोण है जो 8-कारक पथ की पहली प्राप्ति के साथ उभरता है (cf. एम. सुत्त 111)। 514/1 Cf. चौथे ध्यान का निरूपण (जैसे, एम.आई. , 22 पर)।

[पृष्ठ 123]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

515. रूप की धारणाओं पर पूर्ण विजय के साथ, प्रतिरोध की धारणाओं के लुप्त होने के साथ, और अंतर की धारणाओं पर ध्यान न देते हुए, [यह जानते हुए कि] 'अंतरिक्ष अनंत है', वह अहसास द्वारा प्रवेश करता है और अंतरिक्ष की अनंतता से युक्त आधार की प्राप्ति में रहता है (cf. एम. i, 41)।

516. अलौकिक शक्ति से परिचित होने के प्रकारों में [ज्ञान का] निर्देशात्मक प्रबंधन रूप की धारणा है; विविधता का गठन अंतर की धारणा है। 1 वह [इन पर] विजय प्राप्त करता है और प्रतिरोध की उसकी धारणा गायब हो जाती है।

517. एकाग्रता ऐसी ही होती है। जब वह एकाग्र होता है, तो उसका प्रकाश गायब हो जाता है और साथ ही रूपों को देखना भी (cf. एम. iii, 158)।

518. उस [प्रकार की] एकाग्रता की समीक्षा छह कारकों के रूप में की जा सकती है: '(1) समस्त संसार के प्रति मेरी धारणा लोभहीनता से युक्त है; (2) समस्त प्राणियों के प्रति मेरा ज्ञान द्वेष से अप्रभावित है, (3) मेरी ऊर्जा प्रेरित और प्रयोग की जाती है, (4) मेरा शरीर शांत और अविचलित है, (5) मेरा ज्ञान एकाग्र और अविचलित है, (6) मेरी जागरूकता स्थापित और अविचलित है' (cf. एम. i, 21)।

519. इसमें, समस्त संसार के प्रति लोभ रहित कोई भी धारणा, द्वेष से अप्रभावित समस्त प्राणियों का कोई भी ज्ञान, प्रेरित और प्रयुक्त कोई भी ऊर्जा, तथा एकाग्र और स्थिर ज्ञान: ये सभी शांत अवस्थाएँ हैं। [परन्तु] शांत और अविचलित शरीर एकाग्रता के लिए आवश्यक है (देखें एम. iii, 71), और विस्मृति के साथ स्थापित सचेतनता ही अंतर्दृष्टि है।

520. उस प्रकार की एकाग्रता को निम्नलिखित पाँच तरीकों से समझा जा सकता है: (1) 'इस एकाग्रता में वर्तमान में उत्पन्न सुख है': इस प्रकार उसका ज्ञान और दृष्टि स्वयं में प्रकट होती है। और 'इस एकाग्रता में भविष्य में सुखद परिपक्वता है': इस प्रकार उसका ज्ञान और दृष्टि स्वयं में प्रकट होती है। (2) 'यह एकाग्रता श्रेष्ठ और भौतिकताहीन है': इस प्रकार [89] उसका ज्ञान और दृष्टि स्वयं में प्रकट होती

है। (3) 'यह एकाग्रता तुच्छ लोगों द्वारा विकसित नहीं की जाती है': इस प्रकार उसका ज्ञान और दृष्टि स्वयं में प्रकट होती है। (4) 'यह एकाग्रता सबसे शांतिपूर्ण और श्रेष्ठ [लक्ष्य] है, और इसने शांति प्राप्त कर ली है और एकाग्रता तक पहुँच गई है और इसे प्रेरित करने वाले संकल्पों के निवारण से [अपवित्रता से] बचाने की आवश्यकता नहीं है': 1

516/1 पढ़ें अभिनाभिनिहरो रूपसन्ना; वोकारो नानाट्टसन्ना. समतिक्कमति , पतिघसन्ना चअस्सा अब्बत्थम गच्छति।
520/1 नेट्टिया के साथ वैरिटावेटो पढ़ना (पृ. 127)।

[पृष्ठ 124]
पथप्रदर्शक
इस प्रकार उसका ज्ञान और दृष्टि स्वयं में प्रकट होती है। (5) 'अब मैं इस एकाग्रता को सचेत रूप से प्राप्त करता हूँ और इससे सचेत रूप से निकलता हूँ': इस प्रकार उसका ज्ञान और दृष्टि स्वयं में प्रकट होती है (तुलना करें डी. iii, 278-9; ए. iii, 24)।
521. इसमें, वर्तमान में उत्पन्न होने वाले सुख और भविष्य में सुखद परिपक्वता प्राप्त करने वाली कोई भी एकाग्रता शांत है। और कोई भी एकाग्रता जो श्रेष्ठ और भौतिकता से रहित हो, और कोई भी एकाग्रता जो तुच्छ लोगों द्वारा विकसित न की गई हो, और कोई भी एकाग्रता जो सबसे शांतिपूर्ण और श्रेष्ठ लक्ष्य हो, जिसने शांति प्राप्त कर ली हो, एकाग्रता की अवस्था में पहुँच गई हो, और जिसे उत्तेजक संकल्पों के निवारण द्वारा दूषित होने से बचाने की आवश्यकता न हो, और कोई भी एकाग्रता जिसके बारे में व्यक्ति जागरूक हो, 'अब मैं इस एकाग्रता की प्राप्ति में सचेत हूँ, और मैं इससे सचेत होकर बाहर निकलता हूँ', अंतर्दृष्टि है।
522. उस एकाग्रता को [फिर से] पाँच तरीकों से समझा जा सकता है [इस प्रकार]: खुशी का विस्तार, आनंद का विस्तार, चेतना का विस्तार, प्रकाश का विस्तार, और एकाग्रता का संकेत (cf. डी. iii, 278-9; ए . iii, 27)।
523. इसमें, खुशी का कोई भी विस्तार, आनंद का कोई भी विस्तार, चेतना का कोई भी विस्तार शांत है, जबकि प्रकाश का कोई भी विस्तार और समीक्षा का कोई भी विस्तार अंतर्दृष्टि है।
524. समग्रता के दस आधार हैं: पृथ्वी की समग्रता (ठोसता), जल की समग्रता (सामंजस्य), अग्नि की समग्रता (तापमान), वायु की समग्रता (बल); नीले-काले की समग्रता, पीले की समग्रता, लाल की समग्रता, सफेद की समग्रता; अंतरिक्ष की समग्रता, और चेतना की समग्रता (cf. एम. ii, 14-15)।
525. इसमें, पृथ्वी की समग्रता... से लेकर... श्वेत की समग्रता तक: ये आठ समग्रताएँ शांत हैं, जबकि अंतरिक्ष की समग्रता और चेतना की समग्रता अंतर्दृष्टि हैं। 1
526. इस प्रकार संपूर्ण नोबल पथ, चाहे इसे किसी भी रूप में कहा जाए, को शांति और अंतर्दृष्टि के रूप में समझा जा सकता है (देखें §510)।

521/1 पथ-प्राप्ति द्वारा 'महान' और भौतिक चीजों के प्रति अनासक्ति के कारण 'अमूर्तवादी' (देखें एन. 443/2)।
524/1 ' कासिनायतन —समग्रता का आधार': कसिना (विशेषण के रूप में 'संपूर्ण, संपूर्ण') के गैर-तकनीकी उपयोग के लिए एम. i, 328 और इस कृति §899 देखें (ये संदर्भ पीईडी में नहीं हैं)। यहाँ दिए गए 10 शब्द त्रिपिटक में दिए गए हैं (जैसे, एम. ii, 14; ए. v, 46) न कि टीकाओं में, जहाँ अंतिम दो शब्दों को, अस्पष्ट कारणों से, क्रमशः 'प्रकाश' (देखें n. 461/l) और 'सीमित स्थान' से प्रतिस्थापित किया गया है (अध्याय iii और xxxv देखें)।
525/I 10 का यह विभाजन उल्लेखनीय है; देखें अंतिम टिप्पणी।

[पृष्ठ 125]
संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
527. [90] ये [विचार] तीन विचारों से मिलकर बने हैं: अनित्यता, पीड़ा और अनात्म।

528. [इसलिए,] जब वह शांत और अंतर्दृष्टि में स्थिर रहता है, तो वह मुक्ति के तीन द्वारों में स्थिर रहता है (भजन संहिता 2, 48; और अगला अनुच्छेद)। जब वह मुक्ति के तीन द्वारों में स्थिर रहता है, तो वह [सद्‌गुण, एकाग्रता और समझ] की तीन श्रेणियों में स्थिर रहता है। जब वह इन तीन श्रेणियों में स्थिर रहता है, तो वह आर्य अष्टांगिक मार्ग में स्थिर रहता है।

529. कामवासना से ग्रस्त व्यक्ति को मुक्ति के निराकार द्वार से मुक्ति मिलती है, उच्च चेतना के प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त होता है, लाभहीनता के मूल के रूप में लोभ का त्याग होता है, सुखद अनुभव के लिए संपर्क नहीं किया जाता है, सुखद भावना का निदान किया जाता है, कामवासना के दाग को धोया जाता है, कामवासना की धूल को झाड़ा जाता है, कामवासना के विष को उगल दिया जाता है, कामवासना की आग को बुझा दिया जाता है, कामवासना के कांटे को निकाला जाता है और कामवासना के जाल को सुलझाया जाता है (cf. §44)।

530. घृणा स्वभाव वाला व्यक्ति मुक्ति के लिए विस्थापनहीन द्वार से रास्ता पाता है, उच्च सद्‌गुणों के प्रशिक्षण से प्रशिक्षण प्राप्त करता है, घृणा को हानि का मूल मानकर त्याग देता है, किसी भी संपर्क को पीड़ादायक नहीं मानता, पीड़ादायक भावना का निदान करता है, घृणा के दाग को धो डालता है, घृणा की गंदगी को झाड़ देता है, घृणा के विष को उगल देता है, घृणा की आग को बुझा देता है, घृणा के कांटे को निकाल देता है और घृणा के जाल को सुलझा देता है।

531. भ्रमित स्वभाव वाला व्यक्ति शून्य के द्वार से मुक्ति पाता है, उच्चतर समझ के प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षित होता है, हानि के मूल कारण के रूप में भ्रम का त्याग करता है, न-दर्दनाक-न-सुखद के रूप में अनुभव किए जाने वाले संपर्क के पास नहीं जाता है, न-दर्दनाक-न-सुखद भावना का निदान करता है, भ्रम के दाग को धोता है, भ्रम की गंदगी को झाड़ता है, भ्रम के जहर को उगल देता है, भ्रम की आग को बुझाता है, भ्रम के कांटे को निकालता है, और भ्रम के जाल को सुलझाता है।

532. इसमें, मुक्ति का शून्य द्वार बोध श्रेणी है, मुक्ति का चिह्नरहित द्वार एकाग्रता श्रेणी है, और मुक्ति का चिह्नरहित द्वार सद्‌गुण श्रेणी है। 1 जब वह मुक्ति के तीनों द्वारों को धारण करता है, तो वह तीनों श्रेणियों को धारण करता है, और जब वह धारण करता है

532/1 इस त्रिविध संबंध की तुलना भजन संहिता 2, 58 (दृष्टिकोण 658 में उद्धृत) से करें, जहाँ शून्यता को 'ज्ञान' (वेद) से, स्वभावहीनता को 'शांति' (पासद्धि) से और चिह्नहीनता को 'विश्वास' (अधिमोक्ख-सद्धा) से जोड़ा गया है, जिसके द्वारा सर्वप्रथम विश्वास (आस्था) सद्‌गुण का पालन किया जाता है (दृष्टिकोण 511)। यह अंश, समझ के विषय में भजन संहिता से सहमत है , लेकिन सद्‌गुण और एकाग्रता के विषय में असहमत है।

[पृष्ठ 126]

पथप्रदर्शक

जिन तीन श्रेणियों में वह रहता है, वे अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करती हैं।

533. [91] इसमें, सही वाणी, सही कर्म और सही आजीविका, सद्‌गुण श्रेणी हैं; सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता, एकाग्रता श्रेणी हैं; सही दृष्टिकोण और सही इरादा, समझ श्रेणी हैं (cf. एम. आई, 301)।

534. इसमें, सद्‌गुण श्रेणी और एकाग्रता श्रेणी शांत हैं, जबकि समझ श्रेणी अंतर्दृष्टि है।

535. जब कोई शांत और अंतर्दृष्टि में स्थिर रहता है, तो उसमें दो तत्व स्थिर रहते हैं, अर्थात् शरीर और चेतना (देखें एम. i, 209); और अस्तित्व के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग दो मूलभूत अवस्थाएँ हैं, अर्थात् सद्‌गुण और एकाग्रता। इस भिक्षु ने शरीर को स्थिर रखा है, सद्‌गुण को स्थिर रखा है, [एकाग्र] चेतना को स्थिर रखा है और समझ को स्थिर रखा है (देखें ए . i, 249; एस. iv, 111; पे 191)।

536. जब तक शरीर विद्यमान रहता है, तब तक दो विचार भी विद्यमान रहते हैं, अर्थात् सही कर्म और सही प्रयास। जब तक सद्‌गुण विद्यमान रहता है, तब तक दो विचार भी विद्यमान रहते हैं, अर्थात् सही वाणी और सही जीविका। जब तक एकाग्रचित्त चेतना विद्यमान रहती है, तब तक दो विचार भी विद्यमान रहते हैं, अर्थात् सही सजगता और सही एकाग्रता। जब तक समझ विद्यमान रहती है, तब तक दो विचार भी विद्यमान रहते हैं, अर्थात् सही दृष्टि और सही अभिशय।

537. इसमें उचित क्रिया और उचित प्रयास शारीरिक और मानसिक दोनों हो सकते हैं।

538. इसमें, शरीर के भीतर जो कुछ भी समाहित है, वह शरीर के अस्तित्व में रहने पर भी अस्तित्व में रहता है, और मन के भीतर जो कुछ भी समाहित है, वह [एकाग्र] चेतना के अस्तित्व में रहने पर भी अस्तित्व में रहता है।

539. जब वह शांत और अंतर्दृष्टि में बना रहता है, तो वह पांच प्रकार की प्राप्ति करता है: 1 शीघ्रता की प्राप्ति, मुक्ति की प्राप्ति, महानता की प्राप्ति, प्रचुरता की प्राप्ति और शेषहीनता की प्राप्ति।
540. इसमें, शीघ्रता, महानता और प्रचुरता की प्राप्ति शांति के माध्यम से होती है, जबकि मुक्ति और पूर्णता की प्राप्ति अंतर्दृष्टि के माध्यम से होती है।

539/1 4 अधिगम —आगमन: तुलना करें एम.ए. i, 6 और ख्वा. 103 में समानांतर प्रयोग (ख्वा.ए. अनुवाद में आगमधिगम का अनुवाद 'शास्त्र और लेखन' के रूप में किया गया है, जिसमें ' परियत्ति और भुत्तरा-धम्म ' की स्वीकृत व्याख्या है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'आगमन (= शिक्षा) और आगमन (= अभ्यास और बोध)')। यह संदर्भ इस तकनीकी अर्थ में अधिगम के सबसे पुराने प्रयोग को दर्शाता है ।

[पृष्ठ 127]
संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
[एक परिपूर्ण व्यक्ति की दस शक्तियों का अन्वेषण]
541. इसमें, जो शिक्षा देता है वह दस शक्तियों से युक्त गुरु है (देखें एम. i, 71f.), और वह अपने श्रोताओं को अपनी सलाह से गुमराह नहीं करता। वह तीन तरीकों से सलाह देता है: [92] यह करो; इसे इस तरीके से करो; जब वह हो जाएगा तो यह तुम्हारे कल्याण और प्रसन्नता के लिए होगा (तुलना करें §§37-40)।
[i. उदाहरण और उदाहरण का ज्ञान नहीं (cf. Pe 32-4)]
542. ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि इस प्रकार सलाह और निर्देश प्राप्त करने पर, और इस प्रकार मार्ग का अनुसरण और अभ्यास करने पर भी वह उस स्तर तक न पहुँचे। ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि इस प्रकार सलाह और निर्देश प्राप्त करने पर भी वह सद्‌गुणों की श्रेणी में पूर्ण हुए बिना उस स्तर तक पहुँच जाए। ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि इस प्रकार सलाह और निर्देश प्राप्त करने पर वह सद्‌गुणों की श्रेणी में पूर्ण होने पर उस स्तर तक पहुँच जाए। ऐसा उदाहरण मिलता है।
543. यह [कोई भी पूर्ण पुरुष पर सत्य आरोप लगाएगा]: 'यद्यपि आप पूर्णतः प्रबुद्ध (पूरी तरह से खोजे हुए) हैं, फिर भी ये विचार आपके द्वारा नहीं खोजे गए हैं': ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह [कोई भी पूर्ण पुरुष पर सत्य आरोप लगाएगा]: 'यद्यपि आपने सभी दोषों को पूर्णतः समाप्त कर दिया है, फिर भी ये दोष आप में शेष हैं': ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह [कोई भी पूर्ण पुरुष पर सत्य आरोप लगाएगा]: 'जब आप किसी को सत्य विचार सिखाते हैं, तो जब वह उस पर अमल करता है, तो क्या वह उसे दुखों के पूर्ण निवारण का मार्ग नहीं देता': ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह [कोई भी पूर्ण पुरुष पर सत्य आरोप लगाएगा]: 'जब कोई श्रोता सत्य विचार के अनुसार विचारों के मार्ग का अभ्यास करता है, मार्ग का उचित अभ्यास करता है, सत्य विचार के अनुसार आचरण करता है, तो क्या वह उत्तरोत्तर उच्चतर भेदों की प्राप्ति को सत्यापित नहीं करेगा': ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह [कि कोई भी किसी पूर्ण व्यक्ति पर सत्य का आरोप लगाएगा]: 'जिन विचारों को आप बाधा कहते हैं, वे उनका अनुसरण करने वाले को पर्याप्त रूप से बाधित नहीं करते हैं': ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता है।
544. यह कहना कि जो विचार पीड़ा से मुक्ति नहीं देते, उनका अभ्यास करने पर व्यक्ति को पीड़ा की पूर्ण समाप्ति प्राप्त हो जाती है, इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह कहना कि जो विचार पीड़ा से मुक्ति देते हैं, उनका अभ्यास करने पर व्यक्ति को पीड़ा की पूर्ण समाप्ति प्राप्त हो जाती है, इसका एक उदाहरण मिलता है।
545. यह [कि कोई भी सत्य के साथ पूर्ण पर आरोप लगाएगा]: 'आपके श्रोता, अभी भी कुछ अंश शेष रखते हुए, बिना किसी अंश के विलुप्त होने वाले तत्व तक पहुँचेंगे': ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता।
546. वह व्यक्ति जो उसकी दृष्टि में [स्ट्रीम एंटरर या उससे उच्चतर के रूप में] परिपूर्ण हो चुका हो।

[पृष्ठ 128]
पथप्रदर्शक

किसी साधारण व्यक्ति द्वारा अपनी माता का वध करना या हाथ-पैर से उसकी हत्या करना : ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। किसी साधारण व्यक्ति द्वारा [जिसने मार्ग प्राप्त नहीं किया है] अपनी माता का वध करना या हाथ-पैर से उसकी हत्या करना: ऐसा उदाहरण मिलता है... इसी प्रकार पिता और अरहंत भिक्षु के मामले में भी ... किसी सिद्ध पुरुष द्वारा समुदाय में फूट डालना या कलह उत्पन्न करना: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। किसी साधारण व्यक्ति द्वारा [93] समुदाय में फूट डालना या कलह उत्पन्न करना: ऐसा उदाहरण मिलता है। किसी सिद्ध पुरुष द्वारा घृणा की भावना से किसी सिद्ध पुरुष का रक्त बहाना, या घृणा की भावना से किसी सिद्ध पुरुष के स्मारक को नष्ट करना : ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह उदाहरण मिलता है कि कोई साधारण व्यक्ति घृणा बोध रखते हुए किसी पूर्ण पुरुष का रक्त बहाए, या घृणा बोध रखते हुए किसी पूर्ण पुरुष के निर्वाण को प्राप्त स्मारक को नष्ट करे। यह उदाहरण भी मिलता है कि जो व्यक्ति स्वयं को पूर्ण मानता है, वह जीविका चलाने के लिए किसी दूसरे गुरु को स्वीकार करे। यह उदाहरण भी मिलता है कि कोई साधारण व्यक्ति किसी दूसरे गुरु को स्वीकार करे।

547. ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि कोई सिद्ध पुरुष बाहरी व्यक्ति को भेंट चढ़ाने की कोशिश करे। ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि कोई साधारण व्यक्ति बाहरी व्यक्ति को भेंट चढ़ाने की कोशिश करे। ऐसा उदाहरण मिलता है। ऐसा कोई सिद्ध पुरुष नहीं मिलता कि वह वाद-विवाद से भरे शुभ संकेत से शुद्धिकरण की अपेक्षा करे। ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि कोई साधारण व्यक्ति वाद-विवाद से भरे शुभ संकेत से शुद्धिकरण की उम्मीद करे। ऐसा उदाहरण मिलता है।

548. कि चक्र घुमाने वाली सम्राट 1 महिला हो सकती है: ऐसा कोई नहीं है

546/1 ' सुहतम् करेय्या —हत्या करनी चाहिए': पीईडी में नहीं है ; नेत्तिया द्वारा अतिवादिता के साथ व्याख्या की गई है, जो पीईडी या सीपीडी में भी नहीं है ; संभवतः इसका अर्थ 'पीट-पीट कर मार डालना' है। यह वाक्यांश पिटक संस्करण के अतिरिक्त है।

546/2 बा और बीबी के अनुसार, अरहन्तम भिक्खुम शब्दों को सी और पीटीएस की तरह दो खंडों के बजाय एक ही अभिव्यक्ति (जो सही है) के रूप में लिया गया है । यहाँ सूत्र ग्रंथों में किए गए परिवर्धन और परिवर्तन उल्लेखनीय हैं। पे. इस मामले में सूत्रों से और भी अधिक भिन्न है।

546/3 पाठों में इस परिवर्धन के लिए पी.टी.एस. नेट्टी पृष्ठ सीसीवी देखें (पी.ई. में नहीं)।

547/1 ' कुतुहाला-मंगला - एक प्रकार का शुभ संकेत जिस पर वाद-विवाद का कोलाहल होता है': इसका विस्तृत वर्णन Nd2 ad Sn. 789 और KhpA. 118/. में मिलता है, जहाँ बताया गया है कि कैसे उन लोगों के बीच बहसें होती थीं जो अलग-अलग अंधविश्वासों को मानते थे कि शुभ संकेत वास्तव में देखने में है या सुनने में, आदि। यह संदेहजनक है कि PED का अर्थ 'उत्सव, समारोह' कितना न्यायसंगत है।

548/1 चक्र-घुमाने वाले सम्राट (चक्कवत्ती) के लिए एम. सुत्त 129 देखें ।

[पृष्ठ 129]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

उदाहरण मिलता है कि चक्र-घुमाने वाला सम्राट पुरुष हो सकता है: ऐसा उदाहरण मिलता है। कि देवताओं के शासक सक्का स्त्री हो सकते हैं: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। कि देवताओं के शासक सक्का पुरुष हो सकते हैं: ऐसा उदाहरण मिलता है। कि दुष्ट मारा स्त्री हो सकती है: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। कि दुष्ट मारा पुरुष हो सकते हैं: ऐसा उदाहरण मिलता है। कि सर्वोच्च देवत्व स्त्री हो सकते हैं: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। कि सर्वोच्च देवत्व पुरुष हो सकते हैं: ऐसा उदाहरण मिलता है। 2 कि पूर्णतः प्रबुद्ध और सिद्ध पुरुष स्त्री हो सकते हैं: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। कि पूर्णतः प्रबुद्ध और सिद्ध पुरुष पुरुष हो सकते हैं: ऐसा उदाहरण मिलता है। कि एक ही विश्व-तत्व में दो पूर्णतः प्रबुद्ध और सिद्ध पुरुष एक साथ उत्पन्न होकर सत्य विचार का उपदेश दे सकते हैं: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। कि एक ही विश्व-तत्व में एक पूर्णतः प्रबुद्ध और सिद्ध पुरुष उत्पन्न होकर सत्य विचार का उपदेश दे सकते हैं: ऐसा उदाहरण मिलता है।

549. यह कहना गलत है कि तीनों प्रकार के दुराचार (शरीर, वाणी और मन से) का परिपक्व होना वांछनीय, वांछित, पसंद करने योग्य और सुखद होगा: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। तीनों प्रकार के दुराचार का परिपक्व होना अवांछित, नापसंद, अप्रिय और अप्रिय होगा: ऐसा एक उदाहरण मिलता है। तीनों प्रकार के अच्छे आचरण का परिपक्व होना अवांछित, नापसंद, अप्रिय और अप्रिय होगा: ऐसा

कोई उदाहरण नहीं मिलता। तीनों प्रकार के अच्छे आचरण का परिपक्व होना वांछनीय, वांछित, पसंद करने योग्य और सुखद होगा: ऐसा एक उदाहरण मिलता है।

550. ऐसा कोई भिक्षु या साधु जो षड्यंत्रकारी, वाक्पटु और संकेत देने वाला हो, जो षड्यंत्र , वाक्पटुता और संकेत देने को प्राथमिकता देता हो, पाँच बाधाओं, हृदय के उन दोषों का त्याग किए बिना जो समझ को कमजोर करते हैं, सात ज्ञानोदय कारकों को धारण किए बिना, और ध्यान के चार आधारों में स्थापित न होकर, अद्वितीय पूर्ण ज्ञानोदय प्राप्त करेगा: ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। ऐसा कोई भिक्षु या साधु जो सभी दोषों से मुक्त हो, त्याग कर...

548/2 टीकाओं में दिए गए इस कथन के विरुद्ध कि रूप-ब्रह्मलोक में लिंग प्रकट नहीं होता (विज़. 552), नेत्तिया ने इस कथन को निम्नलिखित व्याख्या से उचित ठहराया है: कि जहाँ एक वर्तमान पुरुष सर्वोच्च देवत्व (ब्रह्मा) के रूप में पुनर्जन्म ले सकता है, वहीं एक वर्तमान स्त्री केवल सर्वोच्च देवत्व के अनुचर के रूप में ही पुनर्जन्म ले सकती है (देखें एम.ए. iv, 122)। चाहे जो भी हो, लिंग परिवर्तन संभव माना जाता है और यह एक ही जीवन या एक ही पुनर्जन्म में हो सकता है।

550/1 ' नेमित्तिका - एक संकेतकर्ता': यानी, जो अपनी इच्छा के लिए संकेतों द्वारा संकेत देता है (देखें एम. iii, 75: विस. 23), पी.ई.डी. में नहीं।

[पृष्ठ 130]

पथप्रदर्शक

पांच बाधाएं, हृदय की अशुद्धियाँ जो समझ को कमजोर करती हैं, और सात ज्ञानोदय कारकों को ध्यान में रखते हुए, ध्यान के चार आधारों में स्थापित ध्यान के साथ बने रहने से, अतुलनीय पूर्ण ज्ञानोदय प्राप्त होगा: 2 ऐसा उदाहरण पाया जाता है।

551. इस असीमता के बारे में कारण और उदाहरण के संबंध में ज्ञान (तुलना करें पतरस 36) को पूर्ण सत्ता की प्रथम शक्ति कहा जाता है, जिसमें उदाहरण और गैर-उदाहरण का ज्ञान शामिल है (तुलना करें पतरस 32-4)। 1

[ii. कहीं भी ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान]

552. उपरोक्त वर्णित उदाहरण और गैर-उदाहरण के अंतर्गत आने वाले सभी लोग क्षीणता, पतन, लुप्त होने और समाप्ति के विचार से अविभाज्य हैं; कुछ स्वर्ग की ओर जाते हैं, कुछ बेचैनी की अवस्थाओं में जाते हैं, कुछ अंतःस्रावी हो जाते हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा:

सभी प्राणी निश्चित रूप से मरेंगे
क्योंकि जीवन का अंत मृत्यु है।
उनके कार्यों के अनुसार वे जाते हैं
पुण्य और पाप दोनों के फल भोगना:
बुरे कर्म करने वाले नरक में जाते हैं;
पुण्य कर्म करने वाले स्वर्ग में प्रवेश करते हैं > (पे 9; एस. i, 97);
अन्य लोग अस्तित्व में मार्ग बनाए रखते हैं
और दोषों से मुक्त विलुप्ति पाओ > (cf. Dh. 126).

553. 'सभी प्राणी' श्रेष्ठ और नीच; वे जो देहधारी हैं (भजन संहिता 2, 131 देखें) और वे जो देहहीन हैं। 1 'दो प्रकार की मृत्यु से मरेंगे', अर्थात् सुस्त मृत्यु और असुस्त मृत्यु। असुस्त मृत्यु देहधारी प्राणियों की है और सुस्त मृत्यु देहहीन प्राणियों की है। 2 'क्योंकि जीवन का अंत मृत्यु है': जीवन का पूर्ण अंत, मृत्यु द्वारा पूर्ण अंत, जीवनकाल की समाप्ति के साथ, इंद्रियों के निष्क्रिय होने के साथ आता है (म. 1, 295 देखें)। 'अपने कर्मों के अनुसार वे जाते हैं' का अर्थ है कर्म का स्वामित्व। 3 'पुण्य और पाप के फल भोगना' का अर्थ है कर्मों और अपराओं के फल देखने की अवस्था।

550/2 देखा गया। 296/1।

551/1 दस शक्तियों का क्रम सूत्रों (जैसे, एम. i, 69-70) में दिए गए क्रम के समान नहीं है और पे 32-8 से भी भिन्न है ; सर्वज्ञता (देखें एन. 326/2) को 10वें में जोड़ा गया है।

553/1 'देहाति से परे' कौन हैं? नेटिया और टिक्का दोनों इसे अनदेखा करते हैं। 'देहाति' की सीमा के लिए एम. ii, 265 देखें।
553/2 यह किस प्रकार की मृत्यु है? नेटिया और टिक्का, दोनों अनदेखा करते हैं।
553/3 नेट्टिया का अनुसरण करते हुए, पीटीएस की तरह कम्मा-स्सकटा पढ़ें , न कि कम्म्स्सा काटा ।

[पृष्ठ 131]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

उनसे वियोग। जिन्होंने दोष का निर्धारण किया है, वे 'दुराचारी' होने के कारण सहायता करने के लिए आगे बढ़ते हैं, जबकि 'पुण्य करने वाले' स्वर्ग की ओर जाते हैं: [95] जिन्होंने पुण्य का निर्धारण किया है, वे अच्छे गंतव्य की ओर जाएंगे। 'अन्य लोग जीवन में मार्ग का अनुसरण करते हैं और दोषरहित निर्वाण प्राप्त करते हैं' का अर्थ है सभी संकल्पों पर विजय प्राप्त करना। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा, 'सभी प्राणी... दोषरहित निर्वाण प्राप्त करते हैं।'

554. 'सभी प्राणी निश्चित रूप से मरेंगे क्योंकि जीवन का अंत मृत्यु है। वे अपने कर्मों के अनुसार पुण्य और पाप का फल भोगते हैं: पापी नरक में जाते हैं' - यह विलासिता और तपस्या के दो चरम मार्ग हैं। 'अन्य लोग जीवन के मार्ग पर चलते हैं और दोषरहित होकर मृत्यु प्राप्त करते हैं' - यह मध्य मार्ग है।

555. 'सभी प्राणी निश्चित रूप से मरेंगे क्योंकि जीवन का अंत मृत्यु है। वे अपने कर्मों के अनुसार पुण्य और पाप का फल भोगते हैं: पापी नरक में जाते हैं': यही भ्रष्टाचार है। इसी प्रकार चक्र चलता है।

556. 'सभी प्राणी [निश्चित रूप से] मरेंगे... दुष्ट नरक में जाएंगे': ये तीन चक्र हैं: दुख का चक्र, कर्म का चक्र और अपवित्रता का चक्र। 'अन्य लोग जीवन में मार्ग का अनुसरण करते हैं और दोषरहित होकर मृत्यु पाते हैं' इन तीनों चक्रों का रुकना (अपूर्ण होना) है।

557. 'सभी प्राणी [निश्चित रूप से] मरेंगे... दुष्ट नरक में जाते हैं' निराशा है। 'पुण्य करने वाले स्वर्ग में जाते हैं' संतोष है। 'अन्य लोग जीवन में मार्ग का अनुसरण करते हैं और दोषरहित होकर मृत्यु पाते हैं' मुक्ति है (देखें §32)।

558. 'सभी प्राणी [निश्चित रूप से] मरेंगे... दुष्ट नरक में जाएंगे' कारण और फल दोनों है। पाँच श्रेणियाँ फल हैं और लालसा कारण। 'अन्य लोग जीवन में मार्ग का अनुसरण करते हैं और दोषरहित होकर निर्वाण पाते हैं' मार्ग और उसका फल दोनों है।

559. 'सभी प्राणी [निश्चित रूप से] मरेंगे... दुष्ट लोग नरक में जाते हैं' यह भ्रष्टाचार है। यह भ्रष्टाचार तीन प्रकार का होता है: लालसा से उत्पन्न भ्रष्टाचार, विचारों से उत्पन्न भ्रष्टाचार और दुराचार से उत्पन्न भ्रष्टाचार (देखें §760)। इसमें, लालसा से उत्पन्न भ्रष्टाचार को तीन प्रकार की लालसाओं द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् इंद्रिय सुख की लालसा, अस्तित्व की लालसा और गैर-अस्तित्व की लालसा (§425); या फिर इसे किसी भी चीज़ से चिपके रहने से प्रदर्शित किया जा सकता है। विस्तार से यह लालसा के जाल के व्यवहार के छत्तीस तरीके हैं (ए. ii, 211ff.)। इसमें भी, विचारों से उत्पन्न भ्रष्टाचार को विनाशवाद और शाश्वतवाद द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है; या फिर इसे किसी भी ऐसी चीज़ से प्रदर्शित किया जा सकता है जिस पर कोई व्यक्ति [गलत] दृष्टिकोण से जोर देता है जैसे [96] 'केवल यही सत्य है; बाकी सब गलत है' (एम . ii, 233)। इसका विवरण बासठ प्रकार हैं

[पृष्ठ 132]

पथप्रदर्शक

विचारों के संदर्भ में (देखें डी. सुत्त 1; एम. सुत्त 102)। और इसमें, दुराचार द्वारा भ्रष्टाचार को कर्म के रूप में, चुनाव के रूप में और संज्ञान के सहवर्ती के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है (§§239-41), [अर्थात] तीन प्रकार के दुराचारों द्वारा, अर्थात् शारीरिक दुराचार और मौखिक दुराचार [पूर्व के रूप में], और मानसिक दुराचार [बाद वाले के रूप में]। इसका विवरण दस निष्फल कर्मों में निहित है। 'अन्य लोग अस्तित्व में मार्ग का पालन करते हैं और दोषरहित होकर निर्वाह पाते हैं' शुद्धि है (cf. §760)। अब यह शुद्धि भी तीन प्रकार की है, अर्थात्: लालसा द्वारा भ्रष्टाचार शांति द्वारा शुद्ध होता है, और वह शांति एकाग्रता श्रेणी है; विचारों द्वारा भ्रष्टाचार अंतर्दृष्टि द्वारा शुद्ध होता है, और वह अंतर्दृष्टि समझ श्रेणी है; और दुराचार द्वारा भ्रष्टाचार अच्छे आचरण द्वारा शुद्ध होता है, और वह अच्छा आचरण सद्गुण श्रेणी है।

560. 'सभी प्राणी निश्चित रूप से मरेंगे क्योंकि जीवन का अंत मृत्यु है। वे अपने कर्मों के अनुसार पुण्य और पाप का फल भोगते हैं: पापी नरक में जाते हैं' - यह पाप का मार्ग है। 'पुण्य करने वाले स्वर्ग में जाते हैं' - यह पुण्य का मार्ग है। 'अन्य लोग जीवन में मार्ग का अनुसरण करते हैं और दोषरहित होकर मृत्यु पाते हैं' - यह पुण्य और पाप से ऊपर उठने का मार्ग है।
561. यहाँ, 'पुण्य के मार्ग' और 'अपराध के मार्ग' के संबंध में, ये एक मार्ग हैं जो कहीं भी ले जाते हैं, एक बेचैनी की अवस्थाओं में और दूसरा देवताओं में। और 'पुण्य और अपराध से परे' मार्ग, यह मार्ग या तो यहाँ ले जाता है या वहाँ (देखें §562)।
562. अब तीन वर्ग हैं, अर्थात्, गलत होने के प्रति निश्चितता रखने वालों का वर्ग, सही होने के प्रति निश्चितता रखने वालों का वर्ग, और इस प्रकार निश्चितता न रखने वालों का वर्ग (तुलना करें पीई 32; डी. iii, 217)। जबकि गलत होने की निश्चितता रखने वाले वर्ग और सही होने की निश्चितता रखने वाले वर्ग एक ही मार्ग हैं, अर्थात् वह मार्ग जो या तो यहाँ या वहाँ ले जाता है (§561), यहाँ इस निश्चितता के बिना लोगों का वर्ग वह मार्ग है जो कहीं भी ले जाता है। इसका क्या कारण है? यदि इस वर्ग में किसी को आवश्यक शर्त मिल जाती है, तो वह नरक में पुनः प्रकट होगा; यदि उसे आवश्यक शर्त मिल जाती है, तो वह पशुओं के बीच पुनः प्रकट होगा; यदि उसे आवश्यक शर्त मिल जाती है, [97] तो वह प्रेतलोक में पुनः प्रकट होगा; यदि उसे आवश्यक शर्त मिल जाती है, तो वह असुर राक्षसों के बीच पुनः प्रकट होगा; यदि उसे आवश्यक शर्त मिल जाती है, तो वह देवताओं के बीच पुनः प्रकट होगा; यदि उसे आवश्यक शर्त मिल जाती है, तो वह मनुष्यों के बीच पुनः प्रकट होगा; यदि उसे आवश्यक शर्त मिल जाती है, तो वह निर्गमन प्राप्त करेगा। इसीलिए यही वह मार्ग है जो कहीं भी ले जाता है।
563. इस असीम के बारे में कारण और उदाहरण के बारे में ज्ञान को पूर्ण सत्ता की दूसरी शक्ति कहा जाता है, जिसमें कहीं भी ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान शामिल है (तुलना करें पे 34-5)।

[पृष्ठ 133]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

[iii. विश्व का ज्ञान, जिसमें इसके अनेक और विविध तत्व शामिल हैं]

564. जो रास्ता कहीं भी जाता है वह अनेक तत्वों का संसार है; जो रास्ता यहाँ या वहाँ जाता है वह विभिन्न तत्वों का संसार है।
565. इसमें, अनेक तत्वों का संसार क्या है? यह नेत्र तत्व, रूप तत्व, नेत्र-चेतना तत्व, कान तत्व, ध्वनि तत्व, कान-चेतना तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, नाक-चेतना तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, जीभ-चेतना तत्व, शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व, शरीर-चेतना तत्व, मन तत्व, विचार तत्व, मन-चेतना तत्व; पृथ्वी तत्व, जल तत्व, अग्नि तत्व, वायु तत्व, आकाश तत्व, चेतना तत्व; इंद्रिय-इच्छा तत्व, द्वेष तत्व, क्रूरता तत्व, त्याग तत्व, अदम्यता तत्व, अक्रूरता तत्व; पीड़ा तत्व, शोक तत्व, अज्ञान तत्व, सुख तत्व, आनंद तत्व, समता तत्व; रूप तत्व, निराकार तत्व, समाप्ति तत्व; निर्धारण तत्व, समाप्ति तत्व (देखें एम. iii, 62-3)। यही अनेक तत्वों का संसार है।
566. इसमें विभिन्न तत्वों की दुनिया क्या है? आँख तत्व एक है, रूप तत्व दूसरा है, आँख-चेतना तत्व तीसरा है, ...और इसी तरह बाकी सभी तत्व भी हैं...विलुप्ति तत्व चौथा है।
567. इस असीम के बारे में कारण और उदाहरण के बारे में ज्ञान को पूर्ण सत्ता की तीसरी शक्ति कहा जाता है, जिसमें अनेक और विभिन्न तत्वों का ज्ञान शामिल है (तुलना करें पे 35)।

[iv. विश्वास में अंतर का ज्ञान]

568. किस संसार के अनेक तत्व और विभिन्न तत्व? वे जिस भी तत्व में विश्वास करते हैं, उसे व्यक्त करते हैं और उस पर ज़ोर देते हैं। कुछ रूपों में विश्वास करते हैं, कुछ ध्वनियों में, कुछ गंधों में, कुछ स्वादों में, कुछ स्पर्शनीय वस्तुओं में, कुछ विचारों में, कुछ स्त्रीत्व में, कुछ पुरुषत्व में, कुछ उदारता में, कुछ हीनता में, [98] कुछ श्रेष्ठता में, कुछ देवताओं में, कुछ मनुष्यों में, कुछ विलुप्ति में विश्वास करते हैं। 1

568/1 इन सभी 'मान्यताओं' को निम्नलिखित 'वादों' के रूप में व्यक्त किया जा सकता है: भौतिकवाद या यथार्थवाद (5 प्रकार, इस आधार पर कि कौन सी 'इंद्रियों' से 'सच्चा' डेटा प्राप्त होता है), आदर्शवाद, पुरुषवाद, नारीवाद, उदारवाद, विकासवाद (उत्पत्ति से), अवनतिवाद (लक्ष्य की ओर), आस्तिकतावाद, मानवतावाद और विलुप्तिवाद (अंतिम के लिए दिट्ठधम्मनिब्बाना देखें)।

[पृष्ठ 134]

पथप्रदर्शक

569. इस असीमित ज्ञान के बारे में कारण और उदाहरण के बारे में 'यह मार्गदर्शन योग्य है, यह मार्गदर्शन योग्य नहीं है, यह स्वर्ग जा रहा है, यह बुरे गंतव्य की ओर जा रहा है" को पूर्ण सत्ता की चौथी शक्ति कहा जाता है जिसमें प्राणियों के विश्वासों में भिन्नता का ज्ञान शामिल है (तुलना करें पे 35)।

[क्रिया की परिपक्वता का ज्ञान]

570. जैसा ये प्राणी मानते हैं, वैसा ही इनका अस्तित्व होता है। 1 [क्योंकि] वे इस या उस प्रकार का कर्म करते हैं। वे छह प्रकार से कर्म करते हैं: कुछ लोभ से, कुछ घृणा से, कुछ भ्रम से, कुछ विश्वास से, कुछ ऊर्जा से और कुछ समझ से।

571. उस [क्रिया को] दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, एक वह जो घुमाव के साथ चलती है और दूसरी वह जो विलुप्ति की ओर जाती है।

572. इसमें, लोभ, घृणा और भ्रम के कारण किया गया कोई भी कार्य काला कर्म है और उसका फल भी काला ही होता है (देखें §844)। इसमें, विश्वास और ऊर्जा के कारण किया गया कोई भी कार्य सफेद कर्म है और उसका फल भी सफेद ही होता है। इसमें, लोभ, घृणा, भ्रम और विश्वास के कारण किया गया कोई भी कार्य काला-सफेद कर्म है और उसका फल भी काला-सफेद ही होता है। इसमें, ऊर्जा और समझ के कारण किया गया कोई भी कार्य न तो काला है और न ही सफेद, और उसका फल भी न काला है और न ही सफेद। यही सर्वोच्च कर्म है, सर्वश्रेष्ठ कर्म है, और यह कर्मों की समाप्ति की ओर ले जाता है (तुलना करें एम . i, 389f.)।

573. कर्म करने के चार तरीके हैं: एक तरीका है कर्म करने का जिससे वर्तमान में सुख उत्पन्न होता है और भविष्य में पीड़ा के रूप में परिपक्व होता है। एक तरीका है कर्म करने का जिससे वर्तमान में पीड़ा उत्पन्न होती है और भविष्य में सुख के रूप में परिपक्व होती है। एक तरीका है कर्म करने का जिससे वर्तमान में पीड़ा उत्पन्न होती है और भविष्य में पीड़ा के रूप में परिपक्व होती है। एक तरीका है कर्म करने का जिससे वर्तमान में सुख उत्पन्न होता है और भविष्य में सुख के रूप में परिपक्व होता है (cf. M. i, 305): ^इस प्रकार का कोई भी कर्म करना।

574. भगवान बुद्ध, [जब वे देखते हैं कि] 'एक उपक्रम

डी.आई. , 36 और एम.आई. , 509 पर गलत दृष्टिकोण और एम.आई. , 4 पर निब्बानम मन्नति । §291 भी देखें।

570/1 भवन्ति के बाद प्रश्नवाचक वाक्य नहीं, पूर्ण विराम होना चाहिए । यह आश्रित उत्पत्ति सूत्र के संबंध का संकेत है: उपदानप्पच्चया भावो (कुछ उदाहरणों में उपदान के स्थान पर अधिमोक्खा के विशेष प्रतिस्थापन के लिए - जो सद्धा का प्रतीक है - देखें Vbh. 165)।

[पृष्ठ 135]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

इस व्यक्ति द्वारा अनुत्पादक कर्म संचित किया गया है, जो [यद्यपि अभी तक] अपरिपक्व है, लेकिन पकने ही वाला है, और [इसलिए] वह फूटने में असमर्थ है' (देखें §326; साथ ही एम. i, 104), [99] उसे सलाह नहीं देता, जैसा कि देवदत्त (एफ.एम. ii, 197ff.), कोकालिका (एस.एन. पृ. 123f.), लिच्छवी के पुत्र सुनक्खत्त (डी. सुत्त 24; एम. i, 68), और किसी अन्य प्राणी के मामले में, जो निश्चित रूप से गलत हैं।

575. भगवान बुद्ध, जब देखते हैं कि 'इन व्यक्तियों ने कुछ निष्फल कर्म संचित किए हैं, परन्तु उनका क्रियान्वयन अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है; यह अभी पूर्ण होने से पहले, फल देने से पहले, मार्ग में बाधा उत्पन्न करने से पहले, मार्गदर्शन की सीमा से बाहर निकलने से पहले की अवस्था में है', तो वे उन्हें तब तक सलाह देते हैं जब तक उनका कर्म पूर्णतः संपन्न नहीं हो जाता, जैसा कि बैल-कर्म तपस्वी पुन्ना और नग्न कुत्ते-कर्म तपस्वी के मामले में है (देखें एम. सूत्र 57)।

576. भगवान बुद्ध, [जब वे देखते हैं कि] 'इस व्यक्ति द्वारा किए गए निष्फल कर्म के पूर्ण होने पर यह मार्ग में बाधा उत्पन्न करेगा, [परन्तु] यह [अभी] पूर्ण होने से पहले, फल देने से पहले, मार्ग में बाधा उत्पन्न करने से पहले, मार्गदर्शन की सीमा से आगे बढ़ने से पहले है', तो वे उसे तब सलाह देते हैं जब [उसका कर्म] [पूरी तरह से] शुरू नहीं हुआ होता है, जैसा कि पूज्य अंगुलिमाला के मामले में हुआ था (एम. सूत्र 86)।

577. सभी मामलों में प्रकाश, 1 माध्यम और उत्कृष्ट अवस्था होती है। इसमें, अविचलित निर्धारक क्रियाएँ प्रकाश हैं, शेष लाभकारी निर्धारण माध्यम हैं, और अनुपयोगी निर्धारण उत्कृष्ट हैं।

578. कारण और उदाहरण के बारे में असीमित ज्ञान, इस प्रकार 'इस प्रकार की क्रिया का अनुभव यहीं और अभी (इस जीवन में) होना है, इस प्रकार की क्रिया का अनुभव पुनर्जन्म में होना है, इस प्रकार की क्रिया का अनुभव किसी बाद के काल में होना है; इसका अनुभव नरक में होना है, इसका अनुभव पशु के रूप में होना है, इसका अनुभव प्रेतलोक में होना है, इसका अनुभव असुर राक्षस के रूप में होना है, इसका अनुभव देवता के रूप में होना है, इसका अनुभव मनुष्य के रूप में होना है', इसे पूर्ण पुरुष की पाँचवीं शक्ति कहा जाता है, जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान में उत्पन्न कर्मों के कारण और उदाहरण के बारे में असीमित ज्ञान होता है, जो परिपक्वता में विविधता का ज्ञान है (देखें पे 35-6)।

577/1 मुदु (यहाँ 'प्रकाश' के रूप में अनुवादित) के स्पष्ट रूप से दो अलग-अलग, यद्यपि परस्पर संबंधित नहीं, अर्थ हैं: (1) जैसा कि §512 में है, जहाँ इसका अर्थ 'नरम', 'लचीला' है, और (2) जैसा कि §§577, 586, 670 और 747 (मुदुका) में है, जहाँ इसका अर्थ 'कुंद' या 'प्रकाश' है। यहाँ नेट्टिया ने अविसादा ('अस्पष्ट') के साथ व्याख्या की है , और इस अनुच्छेद में मुदु का अनुवाद 'कुंद' के रूप में किया गया है; लेकिन §§511-12 में इसकी व्याख्या लाहुका ('प्रकाश') के साथ की गई है ; वहाँ मुदु एक प्रशंसा शब्द है, लेकिन यहाँ नहीं है।

[पृष्ठ 136]

पथप्रदर्शक

[vi. ध्यान , मुक्ति , एकाग्रता और उपलब्धियों के मामलों में अपवित्रता , शुद्धि और उद्भव का ज्ञान]

579. इस प्रकार किए गए कार्यों और इस प्रकार किए गए ध्यान, मुक्ति, एकाग्रता और उपलब्धियों का अबाधित ज्ञान है, [यह जानते हुए] कि 'यह भ्रष्टाचार है, यह शुद्धि है, यह उद्भव है, यह इस प्रकार भ्रष्ट होता है, यह इस प्रकार शुद्ध होता है, यह इस प्रकार उद्भव होता है'।

580. इसमें कितने ध्यान हैं? [100] चार ध्यान।

कितनी मुक्तियाँ? ग्यारह, आठ, सात और तीन

और दो। 1

कितने एकाग्रता स्तर? तीन एकाग्रता स्तर: चिंतन और अन्वेषण के साथ एकाग्रता; चिंतन के बिना और केवल अन्वेषण के साथ एकाग्रता; चिंतन के बिना और अन्वेषण के बिना एकाग्रता (धारा 443 देखें)।

कितनी उपलब्धियाँ? पाँच उपलब्धियाँ: प्रत्यक्ष प्राप्ति, अप्रत्यक्ष प्राप्ति, न प्रत्यक्ष न अप्रत्यक्ष प्राप्ति, शून्यता की प्रत्यक्ष प्राप्ति, समाप्ति की प्राप्ति (§441)।

581. इसमें भ्रष्टाचार क्या है? कामुक इच्छाओं और द्वेष की लालसा प्रथम ध्यान का भ्रष्टाचार है, और पहले दो ध्यान शर्मीले ध्यानी के लिए हैं, 1 या किसी भी निम्न अवस्था से संबंधित एकाग्रता के लिए। यही भ्रष्टाचार है।

582. इसमें शुद्धि क्या है? प्रथम ध्यान को बाधाओं से मुक्त करना और अंतिम ध्यान की प्राप्ति।

580/1 नेत्तिया '11' को 8 मुक्ति (विमोक्खा : देखें एम. ii, 12-13) के साथ-साथ 3, अर्थात् शून्यता, संकेतहीनता और स्वभावहीनता (भजन ii, 35) के रूप में देता है; '8' को पहले से उल्लिखित 8 के रूप में; '7' को समाप्ति-प्राप्ति के बिना 8 के रूप में; '3' को पहले से उल्लिखित के रूप में, जो सूत्रों द्वारा अनुमत हैं; और '2' को शून्यता और स्वभावहीनता के रूप में, जो अभिधम्म द्वारा अनुमत हैं, जबकि वहां संकेतहीनता को अस्वीकार किया गया है (देखें विजन अध्याय xxi, §72/ पृष्ठ 658)।

580/2 विभूतसन्नसमापत्ति को §441 पर पढ़ें।

581/1 'कुक्कुतज्जयी - एक शर्मीला ध्यानी': पीईडी में नहीं; नेत्तिया: ' अज्ञान के प्रति अरुचि के अभाव (अजन्नजिगुच्चनमुखेना) के अंतर्गत उस अधिकतम (तप्परामता) अवस्था को "शर्मीला" (कुक्कु-तम) कहा जाता है। " कुक्कुतज्जयी" ध्यान को व्यक्तियों के संदर्भ में व्यक्त करता है; यहाँ प्रथम और द्वितीय ध्यान का तात्पर्य है। जब कोई व्यक्ति प्रथम या द्वितीय ध्यान करता है और फिर रुक जाता है, तो उसके मामले में चारों ध्यान में से कोई भी "शर्मीला ध्यान" कहलाता है। जो व्यक्ति इन अवस्थाओं को धारण करता है, उसे "शर्मीला

ध्यानी" कहा जाता है' (पृष्ठ 142)। यहाँ कुक्कुत संभवतः कर (?) का एक रूप है ; तुलना करें कु-कटा (फि«9. 470); सेरेब्रल टी के लिए कटट्टा देखें (सार. संज्ञा. से. काटा , कर का पीपी.)।

[पृष्ठ 137]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

शर्मीले ध्यान करने वाले व्यक्ति या भेद से संबंधित किसी भी एकाग्रता के लिए ये दो ध्यान विधियां शुद्धिकरण का काम करती हैं।

583. इसमें उद्भव क्या है? किसी उपलब्धि से उभरने का कौशल (तुलना करें भजन 1, 48)।

584. इस असीम ज्ञान के बारे में कारण और उदाहरण के संबंध में पूर्ण व्यक्ति की छठी शक्ति कहलाती है, जिसमें सभी ध्यान, मुक्ति, एकाग्रता और उपलब्धियों के मामलों में भ्रष्टाचार, शुद्धि और उद्भव का ज्ञान शामिल है।

[vii. प्राणियों की क्षमताओं के स्वभाव का ज्ञान]

585. उसी एकाग्रता के उपकरण के लिए तीन विचार हैं, अर्थात् क्षमताएँ, शक्तियाँ और ऊर्जा। वही क्षमताएँ ऊर्जा के कारण शक्तियाँ बन जाती हैं: वे प्रभुत्व के अर्थ में क्षमताएँ हैं, जबकि वे अविचलता के अर्थ में शक्तियाँ हैं (देखें भजन संहिता 1, 21)।

586. उनमें कुंद, मध्यम और उत्कृष्ट अवस्थाएँ इस प्रकार हैं: इसमें कुंद शक्तियाँ हैं, इसमें मध्यम शक्तियाँ हैं, इसमें उत्कृष्ट शक्तियाँ हैं।

587. इसमें, भगवान बुद्ध तीक्ष्ण बुद्धि वाले व्यक्ति को संक्षिप्त सलाह देते हैं; भगवान बुद्ध मध्यम बुद्धि वाले व्यक्ति को संक्षिप्त और विस्तृत सलाह देते हैं; भगवान बुद्ध कुंद बुद्धि वाले व्यक्ति को विस्तृत सलाह देते हैं।

इसमें, भगवान बुद्ध तीव्र बुद्धि वाले व्यक्ति को सच्चे विचार की एक कुंद (हल्की) शिक्षा प्रकट करते हैं; भगवान बुद्ध मध्यम बुद्धि वाले व्यक्ति को सच्चे विचार की कुंद से तीव्र शिक्षा प्रकट करते हैं [101]; भगवान बुद्ध कुंद बुद्धि वाले व्यक्ति को सच्चे विचार की एक तीव्र शिक्षा प्रकट करते हैं।

यहां, भगवान बुद्ध तीक्ष्ण बुद्धि वाले व्यक्ति को शांति का ज्ञान देते हैं; भगवान बुद्ध मध्यम बुद्धि वाले व्यक्ति को शांति और अंतर्दृष्टि का ज्ञान देते हैं; भगवान बुद्ध कुंद बुद्धि वाले व्यक्ति को अंतर्दृष्टि का ज्ञान देते हैं।

इसमें, भगवान बुद्ध तीक्ष्ण बुद्धि वाले व्यक्ति की ओर पलायन का मार्ग बताते हैं; भगवान बुद्ध निराशा और मध्यम बुद्धि वाले व्यक्ति की ओर पलायन का मार्ग बताते हैं; भगवान बुद्ध संतुष्टि और निराशा और कुंद बुद्धि वाले व्यक्ति की ओर पलायन का मार्ग बताते हैं।

यहां, भगवान बुद्ध तीक्ष्ण बुद्धि वाले व्यक्ति को उच्चतर ज्ञान के प्रशिक्षण के माध्यम से समझाते हैं; भगवान बुद्ध मध्यम बुद्धि वाले व्यक्ति को उच्चतर चेतना के प्रशिक्षण के माध्यम से समझाते हैं; भगवान बुद्ध कुंद बुद्धि वाले व्यक्ति को उच्चतर सद्गुण के प्रशिक्षण के माध्यम से समझाते हैं।

[पृष्ठ 138]

पथप्रदर्शक

588. इस विषय में कारण और उदाहरण के बारे में असीमित ज्ञान, जैसे कि 'यह इस तल पर गया है और इस काल में, इस प्रकार की शिक्षा के साथ अस्तित्व में है; और इसमें अमुक-अमुक तत्व हैं [निम्न से शुरू करते हुए], और ऐसा पूर्वाग्रह था [उसके दृष्टिकोण में], और ऐसी अंतर्निहित प्रवृत्ति थी', इसे पूर्ण पुरुष की सातवीं शक्ति कहा जाता है, जिसमें अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की विभिन्न क्षमताओं में विविधता का ज्ञान शामिल है।

[viii. पूर्व जीवन का ज्ञान]

589. इसमें वह अपने अनेक पूर्व जन्मों को याद करते हैं, अर्थात् एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म, चार जन्म, पाँच जन्म, दस जन्म, बीस जन्म, तीस जन्म, चालीस जन्म, पचास जन्म, सौ जन्म, एक हजार जन्म, एक लाख जन्म, कई सौ जन्म, कई हजार जन्म, कई लाख जन्म, कई युगों का [विश्व] संकुचन, कई युगों का [विश्व] विस्तार, कई युगों का [विश्व] संकुचन और विस्तार: 'वहाँ मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसी जाति का था, मेरा ऐसा रूप था, मेरा ऐसा पोषण था, मुझे सुख-दुख का ऐसा अनुभव होता था, मेरी ऐसी जीवन अवधि थी; और वहाँ से निकलकर मैं कहीं और प्रकट हुआ; और वहाँ भी मेरा ऐसा ही नाम था, मैं ऐसी जाति का था, मेरा ऐसा रूप था, मेरा ऐसा पोषण था, मुझे सुख-दुख का ऐसा अनुभव होता था, मेरी ऐसी जीवन अवधि थी; [102] और वहाँ से गुज़रकर, मैं यहाँ फिर से प्रकट हुआ', इस प्रकार अपने मनोदशाओं और चरणों के साथ वह अपने विविध अतीत के जीवन को याद करता है (एम. आई, 22; 70)।

590. इसमें, स्वर्ग की ओर अग्रसर होने वाले प्राणियों, मनुष्य जाति की ओर अग्रसर होने वाले प्राणियों और बेचैनी की अवस्थाओं की ओर अग्रसर होने वाले प्राणियों के बीच, भगवान बुद्ध बिना किसी संकोच के, अमुक प्राणियों का स्मरण करते हुए, इस प्रकार जानते हैं: 'इस व्यक्ति में लोभ आदि प्रमुख है और लोभ आदि का अभाव है; इस व्यक्ति में लोभ आदि प्रमुख है और लोभ आदि का अभाव है; या जो भी प्रमुख हो और जो भी अभाव हो; इस व्यक्ति में ये क्षमताएँ संचित हैं, इस व्यक्ति में ये क्षमताएँ संचित नहीं हैं, उस दस लाख युगों, एक लाख युगों, हज़ार युगों, सौ युगों, युग, युग-अंतराल, अर्धयुग, वर्ष, अर्धवर्ष, माह, अर्धचंद्र, दिन या घंटे में, इस लापरवाही के कारण या इस विश्वास के कारण।'

[ix. स्वर्गीय दृष्टि]

591. इसमें, दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है, वह प्राणियों को मरते और पुनर्जन्म लेते हुए, निम्न और उच्चतर, सुंदर और बदसूरत, अच्छे और बुरे व्यवहार वाले देखता है।

[पृष्ठ 139]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

यह समझता है कि प्राणी अपने कर्मों के अनुसार कैसे आगे बढ़ते हैं, इस प्रकार 'ये योग्य प्राणी, शरीर, वाणी और मन से दुराचारी, श्रेष्ठों की निंदा करने वाले, अपने विचारों में गलत, गलत दृष्टिकोण के कारण कर्म करने वाले, शरीर के विघटन पर, मृत्यु के बाद, बेचैनी की स्थिति में, बुरे गंतव्य में, विनाश में, नरक में, फिर से प्रकट हुए हैं; लेकिन ये योग्य प्राणी, शरीर, वाणी और मन से अच्छे आचरण वाले, श्रेष्ठों की निंदा न करने वाले, अपने विचारों में सही, सही दृष्टिकोण के कारण कर्म करने वाले, शरीर के विघटन पर, मृत्यु के बाद, अच्छे गंतव्य में, स्वर्ग लोक में फिर से प्रकट हुए हैं 5 (cf. एम. i, 22-3; 70-1)।

592. इसमें, स्वर्ग की ओर जाने वाले प्राणियों, मनुष्य जाति की ओर जाने वाले प्राणियों और बेचैनी की अवस्थाओं की ओर जाने वाले प्राणियों के बीच, [भगवान बुद्ध निःसंकोच जानते हैं] 'इस व्यक्ति द्वारा ऐसा कर्म उन लाखों युगों में संचित हुआ, [103] . . . दिन, या घंटे, इस लापरवाही के कारण, या इस विश्वास के कारण 5 .

593. भगवान बुद्ध के ये दो प्रकार के ज्ञान, पूर्व जन्म की याद का ज्ञान और दिव्य दृष्टि, सिद्ध पुरुष की आठवीं और नौवीं शक्तियाँ हैं (देखें पे 38)।

[x. दोषों की समाप्ति के ज्ञान में सर्वज्ञता]

594. इसमें, जब सर्वज्ञता प्राप्त हुई, जब सभी विचार पाए गए, जब निर्मल, निष्कलंक सर्वज्ञ ज्ञान उत्पन्न हुआ, जब ज्ञान के वृक्ष के चरणों में मारा को पराजित किया गया: यही पूर्ण स्वरूप की दसवीं शक्ति है, जो समस्त दोषों के पूर्ण निवारण के ज्ञान से युक्त है। क्योंकि प्रबुद्ध जन, भगवान बुद्ध, दस शक्तियों से संपन्न हैं।

किसी जांच को संप्रेषित करने का तरीका

संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।

*

मोड 3

595. इसमें, संयुक्त उपचार में व्याख्या करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

अतः उसकी चेतना को सतर्क रखा जाए।

चरागाह के लिए सही इरादा रखते हुए,

सही दृष्टिकोण को सर्वोपरि महत्व देना, ज्ञान के माध्यम से।

[पृष्ठ 140]

पथप्रदर्शक

उठना और गिरना, उनींदापन से परे जाना

और एक भिक्षु में आलस्य हो सकता है।

सभी हानिकारक गंतव्यों को त्याग दें।
(§252; §491 में उद्धरण का निरंतरता)।
'अतः, अपने विवेक को सतर्क रखें, सही इरादे को चरागाह के रूप में रखें': इसका अर्थ इस प्रकार लगाया जा सकता है: सतर्क विवेक वाला व्यक्ति सही इरादे को चरागाह के रूप में रखता है। इसका अर्थ इस प्रकार भी लगाया जा सकता है: सही इरादे को चरागाह के रूप में रखने वाला व्यक्ति सही दृष्टि वाला होता है। इसका अर्थ इस प्रकार भी लगाया जा सकता है: जब वह सही दृष्टि को सर्वोपरि रखता है, तो वह उतार-चढ़ाव को भलीभांति समझ लेगा। इसका अर्थ इस प्रकार भी लगाया जा सकता है: जब वह उतार-चढ़ाव को भलीभांति समझ लेता है, तो वह सभी बुरी मंजिलों को त्याग देगा। इसका अर्थ इस प्रकार भी लगाया जा सकता है: जब वह सभी बुरी मंजिलों को त्याग देता है, तो वह बुरी मंजिलों के सभी भय और बेचैनी की अवस्थाओं पर विजय प्राप्त कर लेगा।
व्याख्या को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 4
596. [104] इसमें, संयुक्त उपचार में नींव ले जाने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
597. 'इसलिए उसकी जागरूकता का ध्यान रखा जाए': यही तीन प्रकार के अच्छे आचरण का आधार है।
'चरागाह के लिए सही इरादा रखना 5 : यही शांति का आधार है। 'सही दृष्टिकोण को प्रथम स्थान देना 5 : यही अंतर्दृष्टि का आधार है।
'उतार-चढ़ाव को जानने के माध्यम से': यही दृष्टि के तल का आधार है [धारा प्रवेश के मार्ग के रूप में]।
'उदासी और सुस्ती से ऊपर उठकर एक भिक्षु 5 मई : यही ऊर्जा का आधार है।
'सभी बुरी मंजिलों का त्याग करो': यही तीन उच्चतर मार्गों की प्राप्ति के रूप में अस्तित्व में बने रहने का आधार है।
नींव को ले जाने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

[पृष्ठ 141]
संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
मोड 5
598. इसमें, संयुक्त उपचार में विशेषताओं को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
599. 'इसलिए उसकी चेतना को सुरक्षित रखा जाए, सही इरादे को चरागाह बनाकर 5 : यही सचेतनता की शक्ति है। जब सचेतनता की शक्ति को स्वीकार कर लिया जाता है तो पाँचों शक्तियाँ [विश्वास, ऊर्जा, सचेतनता, एकाग्रता और समझ] भी स्वीकार कर ली जाती हैं।
600. 'सही दृष्टिकोण को सर्वोपरि स्थान देना': जब सही दृष्टिकोण को स्वीकार किया जाता है, तो आठ गुना श्रेष्ठ मार्ग को स्वीकार किया जाता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि सही दृष्टिकोण से ही सही इरादे का जन्म होता है, सही इरादे से ही सही वाणी का जन्म होता है, सही वाणी से ही सही कर्म का जन्म होता है, सही कर्म से ही सही आजीविका का जन्म होता है, सही आजीविका से ही सही प्रयास का जन्म होता है, सही प्रयास से ही सही जागरूकता का जन्म होता है, सही जागरूकता से ही सही एकाग्रता का जन्म होता है, सही एकाग्रता से ही सही मुक्ति का जन्म होता है, और सही मुक्ति से ही मुक्ति का सही ज्ञान और दर्शन प्राप्त होता है (देखें एम. iii, 76)।
विशेषताओं को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 6

601. [105] इसमें, संयुक्त उपचार में चार गुना सरणी को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
602. [शब्द 'सुरक्षित' के मामले में] (i) भाषा [निम्नलिखित शब्दों की कोई स्थापना है:] वह इसे सुरक्षित रखता है, इस प्रकार यह सुरक्षित है, [और इसी तरह अन्य शब्दों के साथ।]
603. (ii) भगवान बुद्ध का यहाँ क्या तात्पर्य है ? भगवान बुद्ध का तात्पर्य यह है: जो लोग बुरे गंतव्यों से मुक्ति पाने की इच्छा रखेंगे, वे ही सच्चे विचार के मार्ग पर चलेंगे।
604. (iii) [स्रोत के संबंध में :] क्योंकि कोकालिका ने अपने विवेक को भ्रष्ट कर दिया था

[पृष्ठ 142]
पथप्रदर्शक
सारिपुत्त और मोग्गलाना नामक बुजुर्गों के प्रति घृणा के साथ वह महान पद्मा नरक में पुनः प्रकट हुआ (देखें एसएन. पृष्ठ 123flf)। 1
605. (iv) और [क्रमिक क्रम के संबंध में :] भगवान बुद्ध के पास ऐसी चेतना है जिसने सचेतनता को संरक्षित रखा है; क्योंकि सूरह में कहा गया है कि <चेतना को सचेतनता द्वारा संरक्षित किया जा सकता है> (
), [जो यहां क्रमिक अनुक्रम प्रदान करता है।]
चार गुना सरणी को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 7
606. संयुक्त उपचार में रूपांतरण को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
607. 'इसलिए उसकी जागरूकता को सुरक्षित रखा जाए, चरागाह के लिए सही इरादा रखते हुए': यह शांत है।
'सही दृष्टिकोण को सर्वोपरि रखना': यही अंतर्दृष्टि है।
'उदय और पतन को जानने के माध्यम से' दुख का निदान होता है। 'सुस्ती और आलस्य से ऊपर उठकर भिक्षु बनना' दुख के मूल कारण का त्याग करना है।
'सभी बुरे गंतव्यों को त्याग देना' का अर्थ है समाप्ति।
ये चार सत्य हैं।
धर्म परिवर्तन को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 8
608. इसमें विश्लेषण को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
609. इस आयत में वर्णित लाभप्रद पक्ष को सिद्ध किया जा सकता है।

604/1 यह वह स्रोत नहीं है, जैसा कि यहाँ उम्मीद की जा सकती थी, जो उदाना श्लोकों का स्रोत है और इस अध्याय का विषय है। आश्चर्यजनक रूप से, इस अध्याय में उनके स्रोत का उल्लेख बिल्कुल नहीं है। नरक के लिए n. 786/2 देखें।

[पृष्ठ 143]

संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके

लाभदायक पक्ष के विवरण 1 द्वारा , जबकि अनुपयोगी पक्ष (इस आयत में बताए गए के विपरीत (§491)) अनुपयोगी पक्ष के विवरण 1 द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

विश्लेषण को संप्रेषित करने का तरीका

संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।

*

मोड 9

610. [106] इसमें, संयुक्त उपचार में उलटफेर को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...

611. जब शांति और अंतर्दृष्टि बनी रहती है, तब उनका फल निवारण होता है, दुख का निदान हो जाता है, उसके मूल का त्याग हो जाता है, और विपरीतताओं के माध्यम से मार्ग बना रहता है। 1

किसी परिवर्तन को व्यक्त करने का तरीका

संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।

*

मोड 10

612. इसमें, संयुक्त उपचार में समानार्थी शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...

613. 'इसलिए उसकी चेतना को सुरक्षित रखा जाए': चेतना, मन, चेतना, मन-क्षमता, मन-आधार, सचेत होने की क्रिया, संज्ञान, ये सभी पर्यायवाची हैं।

614. 'सही इरादे से चरागाह करना': त्याग का इरादा, दुर्भावना न रखने का इरादा, क्रूरता न करने का इरादा, ये समानार्थी हैं।

615. 'सही दृष्टिकोण को सर्वोपरि स्थान देना': सही दृष्टिकोण को समझ का हथियार, समझ की तलवार, समझ का रत्न कहा जाता है।

609/1 यहां विश्लेषण में 'प्रदर्शित' किए जाने वाले विवरण शामिल हैं।

611/1 'विपरीत के माध्यम से, "एक लापरवाह संज्ञान के साथ" (§491: विपरीत के लिए §595 देखें) से शुरू होने वाला श्लोक अभिप्रेत है। या फिर विश्लेषण को संप्रेषित करने के तरीके में लाभहीन पक्ष के माध्यम से' (नेटीए पृ. 150)।

[पृष्ठ 144]

पथप्रदर्शक

समझ का प्रकाश, समझ की प्रेरणा, समझ का [प्रसिद्ध] महल, ये सभी पर्यायवाची हैं।

पर्यायवाची शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका

संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।

*

मोड 11

616. इसमें, संयुक्त उपचार में विवरण संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]

अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...

617. 'इसलिए उसकी चेतना को सुरक्षित रखा जाए' यह वर्णन सचेतनता पर लागू आधार के संदर्भ में है।

618. 'चारागाह के लिए सही इरादा रखना' शांत रहने के संदर्भ में एक वर्णन है।

619. 'उदय और पतन को जानकर सही दृष्टिकोण को प्रथम स्थान देना' देखने के तल पर लागू प्रस्तुति के संदर्भ में एक वर्णन है।

620. 'नींद और आलस्य से ऊपर उठकर, एक भिक्षु' उत्पत्ति पर लागू त्याग के संदर्भ में एक वर्णन है।
621. 'सभी बुरे गंतव्यों को त्याग दें' यह मार्ग पर लागू होने वाले अस्तित्व को बनाए रखने के संदर्भ में एक वर्णन है।
विवरणों को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 12
622. [107] इसमें प्रवेश के मार्गों को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
623. 'अतः उसकी चेतना को सतर्क रखा जाए, सही इरादे को आधार बनाकर, सही दृष्टि को सर्वोपरि रखा जाए': जब सही दृष्टि को स्वीकार कर लिया जाता है, तो पाँचों इंद्रियाँ भी स्वीकार कर ली जाती हैं [सही दृष्टि, समझ की इंद्रिय का पर्यायवाची है]। इंद्रियों के प्रवेश का यही मार्ग है।
624. वही क्षमताएँ विज्ञान हैं। विज्ञान के उदय के साथ ही अज्ञान का अंत होता है; अज्ञान के अंत के साथ ही,

---

[पृष्ठ 145]
संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
निर्धारणों की समाप्ति; . . . और इस प्रकार संपूर्ण आश्रित उत्पत्ति . . . यह आश्रित उत्पत्ति द्वारा प्रवेश का मार्ग है।
625. वही क्षमताएँ श्रेणियों, सद्‌गुण श्रेणी, एकाग्रता श्रेणी और समझ श्रेणी में समाहित हैं। श्रेणियों के माध्यम से प्रवेश का यही तरीका है।
626. वही श्रेणियाँ निर्धारणों में शामिल हैं। ये निर्धारण—[इस मामले में] दोषों से मुक्त और अस्तित्व के कारक नहीं—विचार तत्व के अंतर्गत आते हैं। तत्वों द्वारा प्रवेश का यही तरीका है।
627. वह विचार तत्व विचार आधार में समाहित है, जो आधार [इस मामले में] दोषों से मुक्त है और अस्तित्व का कारक नहीं है। यह आधारों द्वारा प्रवेश का तरीका है।
प्रवेश के मार्गों को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 13
628. इसमें, संयुक्त उपचार में सफाई पहुंचाने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
629. जहाँ उकसावे का स्पष्टीकरण हो जाता है, प्रश्न का उत्तर मिल जाता है; परन्तु जहाँ उकसावे का स्पष्टीकरण नहीं होता, उस प्रश्न का उत्तर अभी तक नहीं मिलता (§420)।
किसी बात को स्पष्ट करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

मोड 14
630. इसमें, संयुक्त उपचार में अभिव्यक्ति के शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
631. 'तो उसकी जानकारी सुरक्षित रखी जाए' एक एकता है।
संज्ञान, मन, चेतना: यही विविधता है।

632. 'चारागाह के लिए सही इरादा रखना' एक एकता है।
त्याग का इरादा, दुर्भावना न रखने का इरादा, [108] क्रूरता न करने का इरादा: यह एक विविधता है।

[पृष्ठ 146]
पथप्रदर्शक
633. 'सही दृष्टिकोण को प्रथम स्थान देना' एक एकता है।
सही दृष्टिकोण को दुख के बारे में ज्ञान, दुख के कारण के बारे में ज्ञान, दुख के निवारण के बारे में ज्ञान, दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग के बारे में ज्ञान (देखें §440); मार्ग के बारे में ज्ञान, पथ के बारे में ज्ञान (देखें §428-9); कारण के बारे में ज्ञान, कारण से उत्पन्न विचारों के बारे में ज्ञान, स्थिति के बारे में ज्ञान, सशर्त रूप से उत्पन्न विचारों के बारे में ज्ञान (देखें Vbh. 104); विभिन्न स्थितियों में चीजों को कैसे जानना और देखना, किसी भी प्रकार का वास्तविककरण, पूर्ण अंतर्दृष्टि, सत्य तक पहुँचना: यह विविधता है।
634. 'उदय और पतन को जानने के माध्यम से' एक एकता है।
'उदय' के माध्यम से: अज्ञान को स्थिति मानकर, निर्धारणों को; निर्धारणों को स्थिति मानकर, चेतना को; ...और इसी प्रकार बाकी सब... इसी तरह इस संपूर्ण प्रकार के दुख का उद्‌गम होता है। 'पतन' के माध्यम से, अज्ञान का अंत; अज्ञान के अंत के साथ, निर्धारणों का अंत; ...और इसी प्रकार बाकी सब... इसी तरह इस संपूर्ण प्रकार के दुख का अंत होता है। यह विविधता है।
635. 'सुस्ती और आलस्य से परे, एक भिक्षु' एक एकता है। 'आलस्य' चेतना की असंयम का नाम है, 'सुस्ती' का।
यह शरीर के किसी भी आलसीपन का नाम है। यह एक विविधता है (cf. §500)।
636. 'सभी बुरे गंतव्यों को त्याग दें' एक एकता है।
देवताओं और मनुष्यों की तुलना में बेचैनी की अवस्थाएँ बुरी मंजिलें हैं; लेकिन विलुप्ति की तुलना में सभी प्रकार के रूप बुरे मंजिलें हैं (§250)। यह एक विविधता है।
संयुक्त उपचार में अभिव्यक्ति के शब्दों को संप्रेषित करने का तरीका समाप्त हो गया है।
*

मोड 15
637. इसमें, संयुक्त उपचार में आवश्यकताओं को संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी जानकारी को सुरक्षित रखा जाए ...
638. यही शांति और अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है।
आवश्यकताओं को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*

[पृष्ठ 147]
संयुक्त उपचार में संचार के 16 तरीके
मोड 16
639. इसमें, संयुक्त उपचार में समन्वय संप्रेषित करने का तरीका क्या है? [यह इस प्रकार है:]
अतः उसकी चेतना को सतर्क रखा जाए।
चरागाह के लिए सही इरादा रखते हुए,
सही दृष्टिकोण को सर्वोपरि महत्व देना, ज्ञान के माध्यम से।
उठना और गिरना, उनींदापन से परे जाना
और एक भिक्षु में आलस्य हो सकता है।
सभी बुरे गंतव्यों को त्याग दें > (§595).

640. [109] (i) 'इसलिए उसकी चेतना की रक्षा की जाए' तीन प्रकार के अच्छे आचरण का आधार है, (ii) जब चेतना की रक्षा की जाती है, तो शारीरिक क्रिया, मौखिक क्रिया और मानसिक क्रिया की रक्षा की जाती है।
641. (iii) 'सही इरादे को चरागाह के रूप में रखना': जब सही दृष्टि बनी रहती है, तो श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग बना रहता है। इसका कारण क्या है? क्योंकि सही दृष्टि से ही सही इरादे को जन्म मिलता है, सही इरादे से... [धारा 600 के अनुसार पूरा]... सही मुक्ति से ही मुक्ति का सही ज्ञान और दर्शन प्राप्त होता है।
642. (iv) यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसका कोई निशान नहीं बचा है और विलुप्तिकरण तत्व जिसका कोई निशान नहीं बचा है।
समन्वय को संप्रेषित करने का तरीका
संयुक्त उपचार समाप्त हो गया है।
*
643. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'सोलह परिवहन प्रथम, सर्वेक्षण
फिर दिशाओं की रूपरेखा तैयार करने के साथ,
और हुक से इकट्ठा करने के बाद,
तीन दिशानिर्देश एक सूत्र को प्रदर्शित करते हैं' (§26)।
संयुक्त उपचार में संचार के तरीके समाप्त हो गए हैं।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> नेत्तिपकरण >> अध्याय III.मोल्डिंग दिशानिर्देश
नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित

पिछला <<<<-----||-7-||----->>>> अगला

भाग V. अध्याय iii. दिशा-निर्देशों का निर्माण (पैरा 644 - 758)

[पृष्ठ 148]

अंतर्वस्तु

भाग V

अध्याय iii: दिशा-निर्देशों का निर्माण

644. इसमें दिशा-निर्देशों का स्वरूपण क्या है? [यह इस प्रकार है।]

परिचयात्मक

अज्ञान (अ.व. , 113) और अस्तित्व की लालसा (अ.व. , 116) का कोई भूतकाल प्रमाण नहीं है । यहाँ अज्ञान बाधा है और लालसा बंधन (तुलना करें पे. 243) ।

645. जिन प्राणियों को अज्ञान बाधा बनाता है और जो भोग-विलास से बंधे होते हैं, वे अज्ञान की ओर खोज करते हैं। इन्हें 'दृष्टि-प्रधान' कहा जाता है। जिन प्राणियों को भोग-विलास बंधन बनाता है और जो भोग-विलास से बंधे होते हैं, वे भोग-विलास की ओर खोज करते हैं। इन्हें 'भोग-प्रधान' कहा जाता है।

आनंद लेने संबंधी दिशा-निर्देशों का रूपांतरण

ए. भ्रष्टाचार

646. [110] दृष्टि-प्रवण वाले जो इस [व्यवस्था] से बाहर [बेघर] हो गए हैं, वे आत्म-यातना में लिप्त रहते हैं। भोग-प्रवण वाले जो इस [व्यवस्था] से बाहर [बेघर] हो गए हैं, वे इंद्रिय सुखों में लिप्त रहते हैं (तुलना करें पे 243-4)।

647. इसमें क्या कारण है कि इस युग से बाहर जाने वाले दृष्टि-प्रधान लोग आत्म-यातना में लिप्त रहते हैं, इस युग से बाहर जाने वाले तृष्णा-प्रधान लोग इंद्रिय सुखों में लिप्त रहते हैं? इस युग से बाहर सत्य की कोई परिभाषा नहीं है, तो फिर चार सत्यों की व्याख्या, शांति और अंतर्दृष्टि का कौशल, या शांति का सुख प्राप्त करने की क्षमता कहाँ से आती है ?

648. शांति के सुख से अपरिचित होने के कारण विकृत चेतना के साथ, उन्होंने ऐसे कथन दिए हैं: < सुख से सुख प्राप्त नहीं होता: सुख तो शांति के अनुभव से ही प्राप्त होता है।

644/1 शब्दों को इस प्रकार अलग करें: tattha avijja nivaranam, tanha samyo- janam. इस अनुच्छेद और अगले अनुच्छेद को 'परिचयात्मक' मानते हुए n. 673/1 देखें।

647/1 समथविपस्सनकोसलम को एक यौगिक के रूप में पढ़ें।

[पृष्ठ 149]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

पीड़ा (कष्ट) के माध्यम से प्राप्त किया जाता है (एम. आई, 93), और जो इंद्रिय सुखों का पोषण करता है वह संसार को समृद्ध करता है; जो संसार को समृद्ध करता है वह बहुत पुण्य त्याग देता है । इस प्रकार , ऐसा समझते हुए और ऐसे दृष्टिकोणों के साथ, पीड़ा के माध्यम से सुख की आकांक्षा रखते हुए, या इंद्रिय सुखों में पुण्य देखते हुए, वे आत्म-यातना की खोज में और इंद्रिय सुखों में लिप्त रहने में लगे रहते हैं। इस प्रकार के उनके संबंध से, वे केवल रोग को ही समृद्ध करते हैं, वे केवल फोड़े को ही समृद्ध करते हैं, वे केवल कांटे को ही समृद्ध करते हैं। रोग से अभिभूत, फोड़े से पीड़ित, कांटे से घायल, नरक, पशु गर्भ, भूत-प्रेतों और राक्षसों में गोता लगाते हुए, अपने अस्तित्व को उत्साह और अवसाद के साथ सह-आवश्यक बनाते हुए, उन्हें रोग, फोड़े, कांटे के लिए कोई दवा नहीं मिलती।

649. (i) यहाँ, आत्म-यातना और इंद्रिय सुखों में लिप्त होना भ्रष्टाचार है; शांति और अंतर्दृष्टि शुद्धि हैं। आत्म-यातना और इंद्रिय सुखों में लिप्त होना रोग है; शांति और अंतर्दृष्टि रोग की प्रतिकारक औषधि हैं। आत्म-यातना और इंद्रिय सुखों में लिप्त होना फोड़ा है; शांति और अंतर्दृष्टि फोड़े की प्रतिकारक औषधि हैं। आत्म -यातना और इंद्रिय सुखों में लिप्त होना कांटा है; शांति और अंतर्दृष्टि कांटा निकालने वाली औषधि हैं।

650. इसमें भ्रष्टाचार ही दुख है; भोग, जो उससे आसक्ति है, उसका मूल कारण है; भोग का निवारण ही दुख का निवारण है; शांति और अंतर्दृष्टि दुख के निवारण का मार्ग हैं।

651. [अस्पष्ट] ये चार सत्य हैं। दुख का निदान करना होगा, उत्पत्ति का त्याग करना होगा, मार्ग को बनाए रखना होगा और समाप्ति की पुष्टि करनी होगी।

652. (iii) [पुनः] इसमें, दृष्टि-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति रूप को आत्मा के रूप में देखता है, भावना... बोध... निर्धारण... चेतना को आत्मा के रूप में देखता है। लालसा-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति स्वयं को रूप धारण करने वाले, या रूप को आत्मा में, या आत्मा को रूप में देखता है; या वह

648/1 * उग्घता - 'उत्साह' और 'निग्घता - अवसाद' दोनों पी.ई.डी. में नहीं हैं । देखें विज़. 370. उपसर्ग नि(र) +घाटा।

649/1 i नि(ग)घटक —प्रतिकारक: अंतिम अनुच्छेद में वर्णित निघता से भिन्न शब्द है और इसे केवल एक 'ग' के साथ लिखा जाना चाहिए; निघता (§943) और अभिनिघता (§315) देखें । उपसर्ग नि (निर् नहीं) + घट। पीई 65, 98 और 123 पर प्रयोग देखें । (टी या टी के बारे में भी अनिश्चितता है।)

[पृष्ठ 150]

पथप्रदर्शक

स्वयं को भावना, बोध, संकल्प, चेतना, या स्वयं में चेतना, या चेतना में स्वयं के रूप में देखता है। इसे ही बीस-आधारित देहधारण दृष्टिकोण कहा जाता है (देखें एम. आई, 300; पे 242)।

653. इसके विपरीत, संसार से विरक्त सही दृष्टिकोण है, और इसके साथ ही सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता भी आती है। यही आठ गुणों वाला श्रेष्ठ मार्ग है।

654. ये तीन श्रेणियाँ हैं: सद्गुण श्रेणी, एकाग्रता श्रेणी और समझ श्रेणी। सद्गुण श्रेणी और एकाग्रता श्रेणी शांत हैं, और समझ श्रेणी अंतर्दृष्टि है।

655. इसमें, शरीर का अस्तित्व ही दुख है, शरीर का उद्भव ही दुख का उद्भव है, शरीर का अंत ही दुख का अंत है, और श्रेष्ठ अष्टम मार्ग ही दुख के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

656. ये चार सत्य हैं। दुख का निदान करना होगा, उत्पत्ति का त्याग करना होगा, मार्ग को बनाए रखना होगा और समाप्ति की पुष्टि करनी होगी।

657. (iii) इसमें, जो लोग रूप को आत्मा के रूप में देखते हैं, जो भावना... बोध... निर्धारण... चेतना को आत्मा के रूप में देखते हैं, उन्हें विनाशवादी कहा जाता है। जो लोग आत्मा को रूप धारण करने वाली, या रूप को आत्मा में, या आत्मा को रूप में, जो आत्मा को भावना धारण करने वाली... बोध धारण करने वाली... निर्धारण धारण करने वाली... चेतना धारण करने वाली, या चेतना को आत्मा में, या आत्मा को चेतना में मानते हैं, उन्हें शाश्वतवादी कहा जाता है (cf. Pe 242)।

658. इसमें, विनाशवाद और शाश्वतवाद दो चरम सीमाएँ हैं। वे [दोनों ही] इस चक्र के घटित होने का कारण बनते हैं।

659. [112] इसके विपरीत मध्य मार्ग है, श्रेष्ठ आठ-कारक पथ। यह गोल चक्कर का न होना है।

660. इसमें, घटना दुख है; भोग, उससे आसक्ति के रूप में, मूल है; भोग का निवारण दुख का निवारण है; श्रेष्ठ अष्टम मार्ग दुख के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

661. ये चार सत्य हैं। दुख का निदान करना होगा, उत्पत्ति का त्याग करना होगा, मार्ग को बनाए रखना होगा और समाप्ति की पुष्टि करनी होगी।

662. (iv) इसमें, संयुक्त रूप से विनाशवाद और शाश्वतवाद बीस-आधारित देहधारण दृष्टिकोण हैं (देखें एम. i, 300; iii, 17), जबकि विस्तार से वे बासठ प्रकार के दृष्टिकोण हैं (देखें 2)। सुत्त 1; एम. सुत्त 102; एस. iii, 262ff.; पीएस . i, 135ff.)।

[पृष्ठ 151]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

663. इनके विपरीत वे तैंतालीस विचार हैं जो ज्ञानोदय का पक्ष लेते हैं, आठ मुक्ति, पूर्णता के दस आधार।

664. बासठ प्रकार के विचार भ्रम का जाल हैं, जिसका कोई आरंभ नहीं है और जो निरंतर घटित होता रहता है। 1 तैंतालीस विचार जो ज्ञान का हिस्सा हैं, ज्ञान का वह हीरा हैं जो भ्रम के जाल को भेद देते हैं।

665. इसमें भ्रम अज्ञान है, और जाल अस्तित्व की लालसा है ।

इसीलिए ऊपर कहा गया है कि 'कोई भी भूतकाल अज्ञान और अस्तित्व की लालसा का प्रमाण नहीं है' (§644)।

बी. सफाई

666. इसमें, जब दृष्टि-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति इस युग में [बेघरपन में] चला जाता है, तो वह निरंतर मिटने के साथ जीवन व्यतीत करता है , मिटने के प्रति गहरी श्रद्धा रखता है, जबकि जब लालसा-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति इस युग में चला जाता है, तो वह संरक्षित प्रशिक्षण के साथ जीवन व्यतीत करता है, प्रशिक्षण के प्रति गहरी श्रद्धा रखता है (तुलना करें पे 243)।

667. जब दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सही होने की निश्चितता में आधार पाता है (देखें एस. iii, 225), तो वह विचारों द्वारा अनुयायी होता है, जबकि जब लालसा-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सही होने की निश्चितता में आधार पाता है, तो वह विश्वास द्वारा अनुयायी होता है (तुलना करें पे 243)।
668. दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सुस्त परिचय और तीव्र परिचय के साथ सुखद मार्ग पर निकास पाता है, और लालसा-प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सुस्त परिचय और तीव्र परिचय के साथ कष्टदायक मार्ग पर निकास पाता है (cf. §42)।
669. इसमें, कारण क्या है (cf. §647) कि लालसा-प्रधान स्वभाव वाला व्यक्ति सुस्त और तीव्र परिचय के माध्यम से कष्टदायी मार्ग पर ही अपनी इच्छाओं का समाधान पाता है? क्योंकि उसने अपनी कामुक इच्छाओं का त्याग नहीं किया है। [113] जब

663/1 ' 43' '37' हैं (अर्थात, विश्वास से शुरू होने वाली 5 क्षमताएँ, 5 शक्तियाँ, ध्यान के 4 आधार, सफलता के 4 आधार, 4 सही प्रयास, 7 ज्ञानोदय कारक, और 8-कारक मार्ग; उदाहरण के लिए देखें, एम. ii, 245; तुलना करें पे 114) साथ ही अनित्यता, पीड़ा, अनात्म, त्याग, लुप्त होना और समाप्ति के 6 चिंतन (तुलना करें डी. iii, 251)।
664/1 ' अनिधाना -निरंतर': न तो पीईडी में और न ही सीपीडी में । एफ.एम. नकारात्मक. अ +नि- +धा.
665/1 पढ़ें मोहो अविज्जा , जलं भवतंहा।
666/1 ' अनुसंतता —निरंतर': पी.ई.डी. में नहीं , सी.पी.डी. देखें ; यह पैराग्राफ इस बात का अच्छा उदाहरण है कि पी.ई. का उपयोग कैसे किया गया है लेकिन इस कार्य में इसे बदल दिया गया है।

[पृष्ठ 152]
पथप्रदर्शक
जब वह स्वयं को इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से अलग करता है, तो वह बड़ी पीड़ा से उनका त्याग करता है और बड़ी धीमी गति से सच्चे विचार का ज्ञान प्राप्त करता है। अब, जहाँ तक दृष्टिकोण-प्रवण व्यक्ति की बात है, वह प्रारंभ से ही इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं का साधक नहीं होता। इसलिए, जब वह स्वयं को उनसे अलग करता है, तो वह शीघ्र ही उनका त्याग करता है और शीघ्र ही सच्चे विचार का ज्ञान प्राप्त करता है (देखें पे 243)।
670. कष्टदायी मार्ग दो प्रकार का होता है: सुस्त परिचय और शीघ्र परिचय। और सुखदायी मार्ग भी दो प्रकार का होता है: सुस्त परिचय और शीघ्र परिचय। और प्राणी दो प्रकार के होते हैं: कुंद बुद्धि वाले और तीक्ष्ण बुद्धि वाले। 1 कुंद बुद्धि वाले लोग धीरे-धीरे त्याग करते हैं और धीरे-धीरे सत्य विचार का ज्ञान प्राप्त करते हैं। तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग शीघ्रता से त्याग करते हैं और शीघ्रता से सत्य विचार का ज्ञान प्राप्त करते हैं (तुलना करें पतरस 243)।
671. ये चार तरीके हैं। इन्हीं चार तरीकों से किसी ने भी कभी न कभी रास्ता पाया है, या रास्ता पाता है, या रास्ता पाएगा (तुलना करें पे 244)।
672. इस प्रकार श्रेष्ठ जन अज्ञानी लोगों के लिए, मूर्खों के लिए इच्छा करने के लिए, और कामुक लोगों के लिए अपनी वासना पर काबू पाने के लिए एक चतुर्भुज मार्ग (पे 244) का वर्णन करते हैं , जिसका उद्देश्य आनंद लेने, और अस्तित्व की लालसा को परिवर्तित करना है।
इसे आनंद के रूपांतरण का तल कहा जाता है। इसीलिए ऐसा कहा गया था।
'[मार्गदर्शक रेखा] लालसा और अज्ञानता [मार्गदर्शन]
शांति और अंतर्दृष्टि द्वारा, [और चार सत्यों की उचित व्याख्या करना आनंद का रूपांतरण है] (§21)।
*

669/1 Patinissarati यहाँ patinissajjati के लिए काम करता है, जिसके लिए यह संभवतः एक पाठ है।
669/2 अजनाति के दो मुख्य अर्थ हैं: (1) जानना, अर्थात् कही गई बात का अर्थ समझना, और (2) अरहंत के अंतिम ज्ञान तक पहुँचना, संज्ञा अन्न ('अंतिम ज्ञान')।
670/1 लेकिन तुलना करें 3 kds. धारा 586 पर।
672/1 ' अबुधा - नासमझ': पी.ई.डी. या सी.पी.डी. में नहीं है ।

[पृष्ठ 153]
दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना
दिशा-निर्देशों को निर्धारित करने के लिए दिशानिर्देश
परिचयात्मक
673. 'मानसिक रूप से विचारों की रूपरेखा क्या तैयार करता है?'
लाभ और हानि का उल्लेख किया गया है।
या फिर प्रदर्शनियों में इधर-उधर
[वे इसे दिशाओं का निर्धारण कहते हैं]' (§24). 1
[अब] इन [विचारों] की दो तरह से जांच की जा सकती है, अर्थात् क्या वे संसार के चक्र का अनुसरण करते हैं या संसार के ठहराव का, जिसे 'चक्र' कहा जाता है वह पुनर्जन्म का चक्र है और जिसे 'ठहराव' कहा जाता है वह अंत:विनाश है, जिसमें कर्म और दोष 2 चक्र के कारण हैं (cf. Pe 246)। इसमें, कर्म को चुनाव और संज्ञान के सहवर्ती के रूप में सिद्ध किया जा सकता है (cf. §239)। 3 इसे कैसे माना जाए? 3 संचय के माध्यम से।
ए. अलाभकारी
674. अब सभी अशुद्धियाँ चार विकृतियों के माध्यम से सिद्ध की जा सकती हैं। वे कहाँ पाई जाती हैं? अशुद्धता के समूह में, उसके दस आधारों के साथ। [114] वे दस आधार क्या हैं?
1. चार पोषक तत्व [शारीरिक पोषण, संपर्क, विकल्प और चेतना (डी. iii, 228)]। 1
2. चार विकृतियाँ [सौंदर्य, सुख, स्थायित्व और स्वयं को देखना, जहाँ कुछ भी नहीं है (ए. ii, 52)]।
3. चार मान्यताएँ [इंद्रिय-इच्छा, विचार, सद्गुण-और-कर्तव्य, और आत्म-सिद्धांत (डी. iii, 230; लेकिन §§257 और 484-7 देखें)]।
4. चार बंधन [इंद्रिय-इच्छा, अस्तित्व, विचार और अज्ञान (डी. iii, 230)]।
5. चार बंधन [लालच, दुर्भावना, सद्गुण और कर्तव्य की गलतफहमी, और इस बात पर जोर देना कि 'केवल यही सत्य है' (डी. iii, 230)]।
6. चार दोष [इंद्रिय-इच्छा, अस्तित्व, विचार और अज्ञान (ए. ii, 211)]।
7. चार बाढ़ें [इंद्रिय-इच्छा, अस्तित्व, विचार और अज्ञान (. डी . iii, 230)]
8. चार कांटे [वासना, घृणा, अहंकार और भ्रम (तुलना करें पीटर 245)]।

673/1 अंतिम शीर्षकों के कारण अक्सर आरंभिक बिंदुओं को खोजना कठिन हो जाता है। इस अध्याय की सामान्य संरचना पर विचार करने और पे . अध्याय 8 से तुलना करने के बाद, पहला दिशानिर्देश §646 से शुरू होना चाहिए और यह श्लोक एक नए खंड की शुरुआत करेगा।
673/2 Bb: kammakilesa.
673/3 Bb: उपचयेना। पीटीएस पाठ उपचय के अनुसार , कत्था , कथम की तुलना में अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है ।
674/1 देखें. पे 244. इस पैराग्राफ में वर्ग कोष्ठक में दिए गए विवरण निम्नलिखित से लिए गए हैं।

[पृष्ठ 154]
पथप्रदर्शक
9. चेतना के लिए चार स्थिर बिंदु [रूप, भावना, धारणा और निर्धारण (डी. iii, 228)]।
10. चार बुरे रास्ते पर चलना [इच्छा, घृणा, भय और भ्रम के माध्यम से (डी . iii, 228)] (तुलना करें पे 244)।
675. 1-2. पहले पोषण में पहला विकृति है; दूसरे पोषण में, दूसरी विकृति; तीसरे पोषण में, तीसरी विकृति; चौथे पोषण में, चौथी विकृति (तुलना करें पे 244)।
2-3. पहले विकृति में पहली धारणा है; दूसरी विकृति में दूसरी धारणा; तीसरी विकृति में तीसरी धारणा; चौथी विकृति में चौथी धारणा।

3-4. पहली मान्यता में पहला बंध है; दूसरी मान्यता में दूसरा बंध है; तीसरी मान्यता में तीसरा बंध है; चौथी मान्यता में चौथा बंध है।
4-5. पहले बंधन में पहला बंधन है; दूसरे बंधन में दूसरा बंधन; तीसरे बंधन में तीसरा बंधन; चौथे बंधन में चौथा बंधन।
5-6. पहले टाई में पहला दोष है; दूसरे टाई में दूसरा दोष; तीसरे टाई में तीसरा दोष; चौथे टाई में चौथा दोष।
6-7. पहले दोष में पहली बाढ़ है; दूसरे दोष में,
दूसरी बाढ़; तीसरे दोष में, तीसरी बाढ़; चौथे दोष में,
चौथी बाढ़।
7-8. पहली बाढ़ में पहला कांटा है; दूसरी बाढ़ में दूसरा कांटा; तीसरी बाढ़ में तीसरा कांटा; चौथी बाढ़ में चौथा कांटा।
8-9. पहले कांटे में चेतना के लिए पहला स्थिर बिंदु है; दूसरे कांटे में, चेतना के लिए दूसरा स्थिर बिंदु; तीसरे कांटे में, चेतना के लिए तीसरा स्थिर बिंदु; चौथे कांटे में, चेतना के लिए चौथा स्थिर बिंदु।
9-10. चेतना के पहले स्थिर बिंदु में पहली बार गलत रास्ते पर चलना शुरू होता है; चेतना के दूसरे स्थिर बिंदु में दूसरी बार गलत रास्ते पर चलना शुरू होता है; चेतना के तीसरे स्थिर बिंदु में तीसरी बार गलत रास्ते पर चलना शुरू होता है; चेतना के चौथे स्थिर बिंदु में चौथी बार गलत रास्ते पर चलना शुरू होता है (तुलना करें पे 244)।
676.1. इसमें, शारीरिक पोषण और संपर्क के रूप में पोषण, लालसा-प्रवण व्यक्ति में अपूर्णताएं हैं, जबकि पोषण

[पृष्ठ 155]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

मन-चुनाव और पोषण जैसे चेतना, दृष्टिकोण-स्वभाव वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं (cf. पे 244)।
677. 2. इसमें कुरूपता में सुंदरता देखना और पीड़ा में आनंद देखना, ये दोनों ही लालसा-प्रधान व्यक्ति की अपूर्णताएँ हैं, जबकि अनित्य में स्थायित्व देखना और अ-स्व में आत्म देखना, ये दोनों ही दृष्टि-प्रधान व्यक्ति की अपूर्णताएँ हैं।
678. [115] 3. इसमें, कामुक-इच्छा-धारणा और अस्तित्व-धारणा, लालसा-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं, जबकि दृष्टिकोण-धारणा और आत्म-सिद्धांत-धारणा, दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं।
679. 4. इसमें, कामुक इच्छा का बंधन और अस्तित्व का बंधन, कृप-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं, जबकि दृष्टिकोण का बंधन और अज्ञान का बंधन, दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं।
680. 5. लोभ का देह-बंधन और द्वेष का देह-बंधन लालसा-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में दोष हैं, जबकि सद्गुण और कर्तव्य की गलतफहमी का देह-बंधन और केवल यही सत्य है इस बात पर जोर देने का देह-बंधन दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में दोष हैं।
681. 6. इसमें, कामुक इच्छा का दोष और अस्तित्व का दोष, कृप-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं, जबकि दृष्टिकोण का दोष और अज्ञान का दोष, दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं।
682. 7. इसमें, कामुक इच्छाओं की बाढ़ और अस्तित्व की बाढ़, भोग-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं, जबकि विचारों की बाढ़ और अज्ञान की बाढ़, विचार-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं।
683. 8. इसमें, कामवासना का कांटा और घृणा का कांटा, भोग-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में दोष हैं, जबकि अहंकार का कांटा और भ्रम का कांटा, दृष्टि-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में दोष हैं।
684. 9. इसमें, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में रूप और चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में भावना, लालसा-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं, जबकि चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में धारणा और चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में संकल्प, दृष्टिकोण-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अपूर्णताएँ हैं।
685. 10. इसमें, इच्छाशक्ति के माध्यम से गलत रास्ते पर चलना और आगे बढ़ना शामिल है।

677/1 पढ़ें असुभे सुभान ति विपल्लसो , यो च दुक्खे सुखं ति विपल्लसो।

[पृष्ठ 156]

पथप्रदर्शक

घृणा के कारण बुरे रास्ते पर चलना लालसा-प्रकृति वाले व्यक्ति की अपूर्णताएँ हैं, जबकि भय के कारण बुरे रास्ते पर चलना और भ्रम के कारण बुरे रास्ते पर चलना दृष्टिकोण-प्रकृति वाले व्यक्ति की अपूर्णताएँ हैं (cf. Pe 244)।

686. 1-2. इसमें, कुरूपता में सुंदरता का विकृति शारीरिक पोषण के संबंध में घटित होती है; पीड़ा में आनंद का विकृति पोषण के संबंध में संपर्क के रूप में घटित होती है; क्षणभंगुर में स्थायित्व का विकृति पोषण के संबंध में चेतना के रूप में घटित होती है; अनात्म में स्वयं का विकृति पोषण के संबंध में मन-चुनाव के रूप में घटित होती है (तुलना करें पे 244-5)।

687. 2-3. प्रथम विकृति में स्थिर व्यक्ति कामुक इच्छाओं को अपनाता है: इसे कामुक-इच्छा-धारणा कहा जाता है। दूसरी विकृति [116] में स्थिर व्यक्ति भविष्य के अस्तित्व को अपनाता है: इसे अस्तित्व-धारणा कहा जाता है। तीसरी विकृति में स्थिर व्यक्ति घुमावदार मार्ग के लिए प्रत्याशात्मक आनंद वाला दृष्टिकोण अपनाता है: इसे दृष्टिकोण-धारणा कहा जाता है। चौथी विकृति में स्थिर व्यक्ति, स्वयं को मानकर, तदनुसार अपनाता है: इसे आत्म-सिद्धांत-धारणा कहा जाता है (cf. §304)।

688. 3-4. वह कामुक इच्छाओं के कारण कामुक इच्छाओं से जकड़ा हुआ है: इसे कामुक इच्छाओं का बंधन कहते हैं। वह विभिन्न प्रकार के अस्तित्वों के कारण अस्तित्व के बंधन से जकड़ा हुआ है: इसे अस्तित्व का बंधन कहते हैं। वह बुरी दृष्टियों के कारण बुरी दृष्टियों से जकड़ा हुआ है: इसे दृष्टियों का बंधन कहते हैं। वह अज्ञानता के कारण स्वयं-सिद्धांतों के बंधन से जकड़ा हुआ है: इसे अज्ञानता का बंधन कहते हैं।

689. 4-5. प्रथम बंधन में स्थिर रहने वाला व्यक्ति शरीर को लोभ से बांधता है : इसे लोभ का देह-बंधन कहते हैं। द्वितीय बंधन में स्थिर रहने वाला व्यक्ति शरीर को द्वेष के बंधन से बांधता है: इसे द्वेष का देह-बंधन कहते हैं। तृतीय बंधन में स्थिर रहने वाला व्यक्ति शरीर को [सद्‌गुण और कर्तव्य के] भ्रम से बांधता है: इसे भ्रम का देह-बंधन कहते हैं। चतुर्थ बंधन में स्थिर रहने वाला व्यक्ति शरीर को इस ज़िद से बांधता है कि केवल यही सत्य है: इसे इस ज़िद का देह-बंधन कहते हैं कि केवल यही सत्य है।

690. 5-6. इस प्रकार उसके दोष, उसे दूषित करते हैं। और किस रूप में वे उसे दूषित करते हैं? अंतर्निहित प्रवृत्ति के रूप में, या खुले जुनून के रूप में (cf. §455)? इसमें कामुक इच्छा का दोष निहित है।

689/I 'शरीर' को यहाँ नाम-शरीर और रूप-शरीर दोनों के रूप में लिया जाना चाहिए। पाली में (अंग्रेजी की तरह) ' काया ' ('शरीर') शब्द का अर्थ 'समूह' या 'समूहन' होता है।

[पृष्ठ 157]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

लोभ के देह बंधन के माध्यम से, द्वेष के देह बंधन के माध्यम से अस्तित्व का कलंक, [सद्‌गुण और कर्तव्य के] गलत आशय के देह बंधन के माध्यम से विचारों का कलंक, और इस ज़िद के देह बंधन के माध्यम से अज्ञानता का कलंक कि केवल यही सत्य है।

691. 6-7. जब ये चारों दोष बहुतायत में होते हैं, तो बाढ़ आती है, इसलिए दोषों की बहुतायत से बाढ़ आती है। इसमें, कामुक इच्छाओं के दोष से कामुक इच्छाओं की बाढ़, अस्तित्व के दोष से अस्तित्व की बाढ़, विचारों के दोष से विचारों की बाढ़ और अज्ञान के दोष से अज्ञान की बाढ़ आती है।

692. 7-8. ये चारों प्रकार की भावनाएँ, अंतर्निहित प्रवृत्तियों के साथ, व्यक्ति के झुकावों में तब तक प्रवेश करती हैं जब तक कि वे हृदय पर प्रहार करके वहीं स्थिर न हो जाएँ: इसीलिए इन्हें 'काँटे' कहा जाता है। इनमें कामवासना की भावना के साथ कामवासना का काँटा, अस्तित्व की भावना के साथ घृणा का काँटा, विचारों की भावना के साथ अहंकार का काँटा और अज्ञान की भावना के साथ भ्रम का काँटा शामिल है।

693. 8-9. जब किसी की चेतना इन चार कांटों से जकड़ी होती है तो वह स्वयं को निम्नलिखित चार विचारों के अनुरूप ढाल लेती है, अर्थात् रूप, भावना, बोध और निर्धारण (cf. §304)।

694. यहाँ, रूप [117] चेतना के लिए स्थिर बिंदु है जब चेतना में कामवासना के काँटे से आनंद का संक्रमण होता है ; भावना चेतना के लिए स्थिर बिंदु है जब चेतना में घृणा के काँटे से आनंद का संक्रमण होता है; बोध चेतना के लिए स्थिर बिंदु है जब चेतना में अहंकार के काँटे से आनंद का संक्रमण होता है; निर्धारण चेतना के लिए स्थिर बिंदु है जब चेतना में भ्रम के काँटे से आनंद का संक्रमण होता है (cf. Pe 218)।

695. 9-10. जब किसी की चेतना चेतना के इन चार स्थिर बिंदुओं द्वारा कठोर हो जाती है, तो वह निम्नलिखित चार विचारों के कारण गलत रास्ते पर चला जाता है, अर्थात् इच्छा, घृणा, भय और भ्रम के कारण।
696. इसमें, कामवासना के कारण ही व्यक्ति इच्छाशक्ति से बुरे रास्ते पर जाता है, घृणा के कारण ही व्यक्ति घृणा से बुरे रास्ते पर जाता है, भय के कारण ही व्यक्ति भय से बुरे रास्ते पर जाता है, और भ्रम के कारण ही व्यक्ति भ्रम से बुरे रास्ते पर जाता है (तुलना करें पे 245-6)।
इस प्रकार वह क्रिया और वे अपवित्रताएँ चक्र का कारण बनती हैं। इस प्रकार सभी अपवित्रताओं को चार विकृतियों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है (देखें §674)।

694/1 एस. iv, 78 पर 'cutam vyasincati ' की तुलना यहाँ 'nandupasecana' से करें।

[पृष्ठ 158]

पथप्रदर्शक

चार दिशाएँ: लाभहीनता और लाभ

697. इसमें, ये चार निर्देश दिए गए हैं (धारा 723 देखें): (i) शारीरिक पोषण, कुरूपता में सुंदरता का भ्रम, कामुक इच्छा का आशय, कामुक इच्छा का बंधन, लोभ का देह बंधन, कामुक इच्छा का कलंक, कामुक इच्छा की बाढ़, कामवासना का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में रूप, इच्छा के माध्यम से गलत रास्ते पर जाना, पहला निर्देश है, (ii) संपर्क के रूप में पोषण, पीड़ा में आनंद का भ्रम, अस्तित्व का आशय, अस्तित्व का बंधन, दुर्भावना का देह बंधन, अस्तित्व का कलंक, अस्तित्व की बाढ़, घृणा का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में भावना, घृणा के माध्यम से गलत रास्ते पर जाना, दूसरा निर्देश है, (iii) चेतना के रूप में पोषण, क्षणभंगुर में स्थायित्व का भ्रम, दृष्टिकोण का आशय, दृष्टिकोण का बंधन, शरीर का बंधन। गलत धारणा, विचारों का दोष, विचारों की बाढ़, अहंकार का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में धारणा, भय के कारण गलत रास्ते पर जाना, तीसरी दिशा है, (iv) मन की पसंद के रूप में पोषण, यह विकृति कि स्वयं में स्वयं है, स्वयं-सिद्धांत-धारणा, अज्ञान का बंधन, इस बात पर जोर देने का शारीरिक बंधन कि केवल यही सत्य है, अज्ञान का दोष, अज्ञान की बाढ़, भ्रम का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में निर्धारण, भ्रम के कारण गलत रास्ते पर जाना, चौथी दिशा है (cf. Pe 246)।
698. (i) इसमें (धारा 724 देखें), निम्नलिखित दस सूत्र-पदों के संबंध में: शारीरिक पोषण, कुरूपता में सुंदरता की विकृति, कामुक इच्छा की धारणा, कामुक इच्छा का बंधन, लोभ का देह बंधन, कामुक इच्छा का कलंक, कामुक इच्छा की बाढ़, कामवासना का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में रूप, और इच्छाशक्ति के माध्यम से गलत रास्ते पर जाना: इनका अर्थ एक ही है, केवल शब्दों का प्रयोग भिन्न है। ये कामुक स्वभाव वाले व्यक्ति की अपूर्णताएं हैं।
699. (ii) [118] इसमें, निम्नलिखित दस सूत्र-पदों के संबंध में, पोषण को संपर्क के रूप में, पीड़ा में आनंद की विकृति, अस्तित्व-धारणा, अस्तित्व का बंधन, दुर्भावना का देह-बंधन, अस्तित्व का कलंक, अस्तित्व की बाढ़, घृणा का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में भावना, और घृणा के माध्यम से गलत रास्ते पर जाना: इनका अर्थ एक ही है, केवल शब्दांकन भिन्न है। ये घृणाशील स्वभाव वाले व्यक्ति की अपूर्णताएं हैं।
700. (iii) इसमें, निम्नलिखित दस सूत्र-[पदों] के संबंध में, पोषण हमें चेतना, विकृति जो स्थायित्व में निहित है

[पृष्ठ 159]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

क्षणभंगुरता, दृष्टिकोण-धारणा, दृष्टिकोणों का बंधन, गलतफहमी का शारीरिक बंधन, दृष्टिकोणों का कलंक, दृष्टिकोणों की बाढ़, अहंकार का चुभन, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में बोध, और भय के कारण गलत रास्ते पर जाना; इन सबका अर्थ एक ही है, केवल शब्दों का प्रयोग भिन्न है। ये सभी मंद दृष्टिकोण-प्रवृत्ति में निहित अपूर्णताएं हैं।
701. (iv) इसमें, निम्नलिखित दस सूत्र-पदों के संबंध में, पोषण को मन की पसंद के रूप में, यह विकृति कि अनात्म में भी आत्म है, अज्ञान का बंधन, आत्म-सिद्धांत की धारणा, इस ज़िद का शारीरिक बंधन कि केवल यही सत्य है, अज्ञान का कलंक, अज्ञान की बाढ़,

भ्रम का कांटा, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में निर्धारण, और भ्रम के माध्यम से गलत रास्ते पर जाना: इनका अर्थ एक ही है, केवल शब्दों का प्रयोग भिन्न है। ये बुद्धिमान दृष्टिकोण-स्वभाव में अपूर्णताएं हैं (तुलना करें पे 246-7)।

702. 1. इसमें, शारीरिक पोषण और संपर्क के रूप में पोषण, मुक्ति के लिए स्वभावहीन द्वार के माध्यम से निदान तक पहुँचते हैं, चेतना के रूप में पोषण शून्य [मुक्ति के द्वार] के माध्यम से, और मन-चुनाव के रूप में पोषण संकेतहीन [मुक्ति के द्वार] के माध्यम से निदान तक पहुँचते हैं।

703. 2. इसमें, कुरूपता में सुंदरता और पीड़ा में आनंद की विकृति, मुक्ति के स्वभावहीन द्वार से लुप्त हो जाती है, अनित्य में स्थायित्व की विकृति शून्य के माध्यम से लुप्त हो जाती है, और अनात्म में आत्मा की विकृति चिह्नहीन के माध्यम से लुप्त हो जाती है।

704. 3. इसमें, कामुक-इच्छा-धारणा और अस्तित्व-धारणा, निस्वार्थता के द्वार से मुक्ति की ओर परित्याग की ओर, दृष्टि-धारणा शून्य की ओर, और आत्म-सिद्धांत-धारणा चिह्नहीनता की ओर जाती है।

705. 4. इसमें, कामुक इच्छा का बंधन और अस्तित्व का बंधन, निर्भावित मुक्ति द्वार के माध्यम से त्याग दिया जाता है, दृष्टियों का बंधन शून्य के माध्यम से, और अज्ञान का बंधन संकेतहीन के माध्यम से त्याग दिया जाता है।

706. 5. इसमें, लोभ का देह-बंधन और द्वेष का देह-बंधन मुक्ति के स्वभावहीन द्वार के माध्यम से त्याग दिया जाता है, [119] शून्य के माध्यम से गलतफहमी का देह-बंधन, और संकेतहीन के माध्यम से इस बात पर जोर देने का देह-बंधन कि केवल यही सत्य है।

707.6. इसमें, कामुक इच्छा का कलंक और निर्दयता के द्वार से परित्याग की स्थिति का कलंक शामिल है।

[पृष्ठ 160]

पथप्रदर्शक

मुक्ति, शून्य के माध्यम से विचारों का कलंक, और चिह्नहीनता के माध्यम से अज्ञान का कलंक।

708. 7. इसमें, कामुक इच्छा की बाढ़ और अस्तित्व की बाढ़, स्वभावहीन द्वार से मुक्ति के लिए त्याग की ओर आती है, दृष्टियों की बाढ़ शून्य के माध्यम से और अज्ञान की बाढ़ संकेतहीन के माध्यम से आती है।

709. 8. इसमें, कामवासना का कांटा और घृणा का कांटा, निर्दयता के द्वार से मुक्ति की ओर, अहंकार का कांटा शून्य से, और भ्रम का कांटा चिह्नहीन से होकर त्याग दिया जाता है।

710. 9. इसमें, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में रूप और चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में भावना, मुक्ति के लिए स्वभावहीन द्वार के माध्यम से निदान तक पहुँचती है, चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में धारणा शून्य के माध्यम से ऐसा करती है, और चेतना के आगे बढ़ने के लिए स्थिर बिंदु के रूप में निर्धारण संकेतहीन के माध्यम से ऐसा करते हैं।

711. 10. इसमें, इच्छा के माध्यम से बुरा मार्ग अपनाना और घृणा के माध्यम से बुरा मार्ग अपनाना, स्वभावहीन द्वार से मुक्ति के लिए परित्याग की ओर ले जाता है, भय के माध्यम से बुरा मार्ग अपनाना शून्य के माध्यम से होता है, और भ्रम के माध्यम से बुरा मार्ग अपनाना संकेतहीन के माध्यम से होता है।

712. इसलिए दुनिया के चक्र का अनुसरण करने वाले सभी विचार (धारा 673 देखें) तीन मुक्ति द्वारों के माध्यम से त्रिविध दुनिया से बाहर निकलते हैं।

बी. लाभ

713. यहाँ आउटलेट है (धारा 674 में समकक्ष देखें):

1. चार तरीके (§42; डी. iii, 228)।
2. सचेतनता के चार आधार [शरीर, भावनाएँ, बोध, विचार (डी. iii, 221; लेकिन cf. §4 और §730)]।
3. चार ध्यान [प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ (डी . iii, 222)]।
4. चार निवास स्थान [स्वर्गीय, दिव्य, महान, अविचलित (डी. iii, 220)]।
5. चार सही प्रयास [अपरिहार्य अलाभकारीता को उत्पन्न होने से रोकने का प्रयास, उत्पन्न अलाभकारीता से छुटकारा पाने का प्रयास, अपरिहार्य लाभ को उत्पन्न करने का प्रयास, और उत्पन्न लाभ को बढ़ाने का प्रयास (डी . iii, 221)]।
6. चार अद्‌भुत चमत्कारी विचार [अभिमान का त्याग, निर्भरता का उन्मूलन, अज्ञान का त्याग, अस्तित्व की शांति (पे 247)]।
7. चार अभिव्यक्तियाँ [सत्य, उदारता, समझ, शांति (डी. iii, 229)]।

———————————————————————

[पृष्ठ 161]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

8. एकाग्रता को बनाए रखने के चार तरीके [इच्छाशक्ति, ऊर्जा, बोध, पूछताछ = सफलता के 4 आधार (डी . iii, 222)] ।

9. आनंद से संबंधित चार विचार [संयम, उत्साह, खोज, अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग (पे)]

247)].

10. चार असीम अवस्थाएँ [प्रेम, करुणा, प्रसन्नता, समभाव (डी. iii, 223; पे 247)] । 1

714. 1-2. पहला मार्ग [संदर्भित है] ध्यान की पहली नींव से; दूसरा मार्ग ध्यान की दूसरी नींव से; तीसरा मार्ग ध्यान की तीसरी नींव से; चौथा मार्ग ध्यान की चौथी नींव से।

2-3. ध्यान का पहला आधार पहले ध्यान के अनुरूप है; ध्यान का दूसरा आधार दूसरे ध्यान के अनुरूप है; ध्यान का तीसरा आधार तीसरे ध्यान के अनुरूप है; ध्यान का चौथा आधार चौथे ध्यान के अनुरूप है।

3-4. पहला ध्यान पहले निवास के अनुरूप है; दूसरा ध्यान दूसरे निवास के अनुरूप है; तीसरा ध्यान तीसरे निवास के अनुरूप है; चौथा ध्यान चौथे निवास के अनुरूप है।

4-5. पहला पालन पहले सही प्रयास के अनुरूप है; दूसरा पालन दूसरे सही प्रयास के अनुरूप है; तीसरा पालन तीसरे सही प्रयास के अनुरूप है ; चौथा पालन [120] चौथे सही प्रयास के अनुरूप है।

5-6. पहला सही प्रयास पहले अद्भुत अद्भुत विचार के अनुरूप है; दूसरा सही प्रयास दूसरे अद्भुत अद्भुत विचार के अनुरूप है; तीसरा सही प्रयास तीसरे अद्भुत अद्भुत विचार के अनुरूप है; चौथा सही प्रयास चौथे अद्भुत अद्भुत विचार के अनुरूप है।

6-7. पहला अद्भुत, शानदार विचार [के अनुरूप है] पहला

अभिव्यक्ति; दूसरी अभिव्यक्ति के लिए दूसरा अद्भुत विचार; तीसरी अभिव्यक्ति के लिए तीसरा अद्भुत विचार; चौथी अभिव्यक्ति के लिए चौथा अद्भुत विचार।

7-8. पहली अभिव्यक्ति एकाग्रता को बनाए रखने की पहली अवस्था से मेल खाती है; दूसरी अभिव्यक्ति एकाग्रता को बनाए रखने की दूसरी अवस्था से; तीसरी अभिव्यक्ति एकाग्रता को बनाए रखने की तीसरी अवस्था से; चौथी अभिव्यक्ति एकाग्रता को बनाए रखने की चौथी अवस्था से।

——————————————————————————————

718/1 वर्ग कोष्ठकों में दिए गए विवरण निम्नलिखित अनुच्छेदों से लिए गए हैं।

———————————————————————

———————————————————————

[पृष्ठ 162]

पथप्रदर्शक

8-9. एकाग्रता को पहली बार बनाए रखना आनंद से संबंधित पहले विचार के अनुरूप है; एकाग्रता को दूसरी बार बनाए रखना आनंद से संबंधित दूसरे विचार के अनुरूप है; एकाग्रता को तीसरी बार बनाए रखना आनंद से संबंधित तीसरे विचार के अनुरूप है; एकाग्रता को चौथी बार बनाए रखना आनंद से संबंधित चौथे विचार के अनुरूप है।

9-10. आनंद से संबंधित पहला विचार पहली असीम अवस्था से मेल खाता है; आनंद से संबंधित दूसरा विचार दूसरी असीम अवस्था से मेल खाता है; आनंद से संबंधित तीसरा विचार तीसरी असीम अवस्था से मेल खाता है; आनंद से संबंधित चौथा विचार चौथी असीम अवस्था से मेल खाता है।

715. 1-2. जब पहले मार्ग को कायम रखा जाता है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह ध्यान की पहली नींव को पूरा करता है; जब दूसरे मार्ग को कायम रखा जाता है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह ध्यान की दूसरी नींव को पूरा करता है; जब तीसरे मार्ग को कायम रखा जाता है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह ध्यान की तीसरी नींव को पूरा करता है; जब चौथे मार्ग को कायम रखा जाता है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह ध्यान की चौथी नींव को पूरा करता है (पे 247)।

716. 2-3. जब ध्यान की पहली नींव को बनाए रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह पहले ध्यान को पूरा करता है; जब ध्यान की दूसरी नींव को बनाए रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह दूसरे ध्यान को पूरा करता है; जब ध्यान की तीसरी

नींव को बनाए रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह तीसरे ध्यान को पूरा करता है; जब ध्यान की चौथी नींव को बनाए रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह चौथे ध्यान को पूरा करता है।

717. 3-4. जब प्रथम ध्यान को निरंतर रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो वह प्रथम अवस्था को पूर्ण करता है; जब द्वितीय ध्यान को निरंतर रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो वह द्वितीय अवस्था को पूर्ण करता है; जब तृतीय ध्यान को निरंतर रखा जाता है, उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो वह तृतीय अवस्था को पूर्ण करता है; जब चतुर्थ ध्यान को निरंतर रखा जाता है, [121] उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो वह चतुर्थ अवस्था को पूर्ण करता है।

718. 4-5. जब प्रथम अवस्था को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह अजन्मे बुरे और निष्फल विचारों के उत्पन्न न होने की पूर्ति करती है। जब द्वितीय अवस्था को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह उत्पन्न हुए बुरे और निष्फल विचारों के त्याग की पूर्ति करती है। जब तृतीय अवस्था को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह अजन्मे लाभकारी विचारों के उत्पन्न होने की पूर्ति करती है; जब चतुर्थ अवस्था को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व बढ़ाया जाता है, तो यह उत्पन्न हुए लाभकारी विचारों की स्थिरता, अटूटता और प्रचुरता की पूर्ति करती है।

719. 5-6. जब पहला सही प्रयास जारी रखा जाता है, तो

[पृष्ठ 163]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

जब दूसरे सही प्रयास को निरंतर और महत्वपूर्ण बनाया जाता है, तो यह अहंकार के त्याग को पूर्ण करता है। जब दूसरे सही प्रयास को निरंतर और महत्वपूर्ण बनाया जाता है, तो यह निर्भरता के उन्मूलन को पूर्ण करता है।1 जब तीसरे सही प्रयास को निरंतर और महत्वपूर्ण बनाया जाता है, तो यह अज्ञान के त्याग को पूर्ण करता है। जब चौथे सही प्रयास को निरंतर और महत्वपूर्ण बनाया जाता है, तो यह अस्तित्व की शांति को पूर्ण करता है।2

720. 6-7. जब अहंकार का त्याग निरंतर बना रहता है और उसे महत्व दिया जाता है, तो वह सत्य की अभिव्यक्ति को पूर्ण करता है। जब निर्भरता का उन्मूलन निरंतर बना रहता है और उसे महत्व दिया जाता है, तो वह उदारता की अभिव्यक्ति को पूर्ण करता है। जब अज्ञान का त्याग निरंतर बना रहता है और उसे महत्व दिया जाता है, तो वह समझ की अभिव्यक्ति को पूर्ण करता है। जब मन की शांति को निरंतर बनाए रखा जाता है और उसे महत्व दिया जाता है, तो वह शांति की अभिव्यक्ति को पूर्ण करता है।

721. 7-8. जब सत्य की अभिव्यक्ति निरंतर बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह इच्छा की एकाग्रता को पूर्ण करती है। जब उदारता की अभिव्यक्ति निरंतर बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह ऊर्जा की एकाग्रता को पूर्ण करती है। जब समझ की अभिव्यक्ति निरंतर बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह चेतना की शुद्धता की एकाग्रता को पूर्ण करती है। जब शांति की अभिव्यक्ति निरंतर बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह जिज्ञासा की एकाग्रता को पूर्ण करती है।

722. 8-9. जब इच्छाशक्ति की एकाग्रता बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह विवेक-संयम को पूर्ण करती है। जब ऊर्जा की एकाग्रता बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह उत्साह को पूर्ण करती है। जब चेतना की (शुद्धता की) एकाग्रता बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह खोज को पूर्ण करती है। जब जिज्ञासा की एकाग्रता बनी रहती है, उसे महत्व दिया जाता है, तो वह अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों के त्याग को पूर्ण करती है।

723. 9-10. जब विवेक-संयम को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व समझा जाता है, तो वह प्रेमपूर्ण करुणा को पूर्ण करता है। जब उत्साह को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व समझा जाता है, तो वह करुणा को पूर्ण करता है। जब खोज को बनाए रखा जाता है और उसका महत्व समझा जाता है, तो वह [दूसरों की सफलता पर] प्रसन्नता को पूर्ण करता है। जब अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग बनाए रखा जाता है और उसका महत्व समझा जाता है, तो वह प्रत्यक्षदर्शी समभाव को पूर्ण करता है (तुलना करें पे 247)।

चार दिशाएँ: लाभ (आउटलेट)

724. इसमें, चार दिशाएँ ये हैं (cf. §697): (i) पहला मार्ग, सचेतनता का पहला आधार, पहला ध्यान, पहला निवास,

---

719/1 पीटीएस नेट्टी इंडेक्स में ' आलय ' के विपरीत 'दिखावा' शब्द का प्रयोग किया गया है , लेकिन यहाँ यह बिल्कुल गलत है। यहाँ 'भरोसा' का तात्पर्य है, चाहे वह भरोसे की क्रिया हो या जिस वस्तु पर भरोसा किया जाता है, यहाँ संकेत 18 प्रमुख अंतर्दृष्टियों में से 16वीं अंतर्दृष्टि (महा-विपस्सना : भजन 1, 45, दर्शन पृष्ठ 50 पर उद्धृत) की ओर है।

719/2 ' उपसमा - शांति' को यहाँ 'समाप्ति' के अर्थ में लिया जाना चाहिए (अर्थात, केवल निषेध नहीं, बल्कि शेष के बिना समाप्ति)।

———————————————————————

———————————————————————

[पृष्ठ 164]
पथप्रदर्शक
प्रथम सही प्रयास, प्रथम अद्‌भुत चमत्कारी विचार, सत्य की अभिव्यक्ति, इच्छाशक्ति की एकाग्रता, विवेक-संयम और प्रेमपूर्ण करुणा, [122] प्रथम दिशा हैं, (ii) द्वितीय मार्ग, सचेतनता का द्वितीय आधार, द्वितीय ध्यान, द्वितीय स्थिरता, द्वितीय सही प्रयास, द्वितीय अद्‌भुत चमत्कारी विचार, उदारता की अभिव्यक्ति, ऊर्जा की एकाग्रता, उत्साह और करुणा, द्वितीय दिशा हैं, (iii) तृतीय मार्ग, सचेतनता का तृतीय आधार, तृतीय ध्यान, तृतीय स्थिरता, तृतीय सही प्रयास, तृतीय अद्‌भुत चमत्कारी विचार, समझ की अभिव्यक्ति, चेतना की एकाग्रता, खोज और प्रसन्नता, तृतीय दिशा हैं, (iv) चतुर्थ मार्ग, सचेतनता का चतुर्थ आधार, चतुर्थ ध्यान, चतुर्थ स्थिरता, चतुर्थ सही प्रयास, चतुर्थ अद्‌भुत चमत्कारी विचार, शांति की अभिव्यक्ति, जिज्ञासा की एकाग्रता, अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग और प्रत्यक्ष-समभाव, चतुर्थ दिशा हैं (cf. Pe 247-8).
725. (i) इसमें (धारा 698 देखें), निम्नलिखित दस सूत्र-पदों के संबंध में, प्रथम मार्ग, सचेतनता का प्रथम आधार, प्रथम ध्यान, प्रथम स्थिरता, प्रथम सही प्रयास, प्रथम अद्‌भुत चमत्कारी विचार, सत्य की अभिव्यक्ति, इच्छाशक्ति की एकाग्रता, कर्म-संयम और प्रेम: इनका अर्थ एक ही है, केवल शब्दों का प्रयोग भिन्न है। ये कामुक स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए औषधि हैं।
726. (ii) इसमें, निम्नलिखित दस सूत्र-शब्दों के संबंध में, द्वितीय मार्ग, सचेतनता का द्वितीय आधार, द्वितीय ध्यान, द्वितीय स्थिरता, द्वितीय उचित प्रयास, द्वितीय अद्‌भुत चमत्कारी विचार, उदारता की अभिव्यक्ति, ऊर्जा का संकेंद्रण, उत्साह और करुणा: इनका अर्थ एक ही है, केवल शब्दों का चयन भिन्न है। ये घृणा स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए औषधि हैं।
727. (iii) इसमें, निम्नलिखित दस सूत्र-पदों के संबंध में, तीसरा मार्ग, चेतना का तीसरा आधार, तीसरा ध्यान, तीसरा स्थिर रहना, तीसरा सही प्रयास, तीसरा अद्‌भुत चमत्कारी विचार, समझ की अभिव्यक्ति, चेतना की एकाग्रता, खोज और प्रसन्नता: इनका अर्थ एक ही है, केवल शब्दों का चयन भिन्न है। ये मंद बुद्धि वाले व्यक्ति के लिए औषधि हैं।
728. (iv) इसमें, निम्नलिखित दस सूत्र-[शब्दों] के संबंध में, चौथा मार्ग, जागरूकता का चौथा आधार, चौथा ध्यान, चौथा ठहराव, चौथा सही प्रयास, चौथा अद्‌भुत चमत्कारी विचार, शांति की अभिव्यक्ति, जिज्ञासा की एकाग्रता, अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग, और प्रत्यक्ष-समभाव;

———————————————————————

———————————————————————

[पृष्ठ 165]
दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना
अर्थ एक ही है, केवल वाक्यांश भिन्न है। [123] ये बुद्धिमान दृष्टिकोण-स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए दवा हैं।
729. 1. इसमें (cf. §702), सुस्त परिचय के साथ कष्टदायक मार्ग और तीव्र परिचय के साथ कष्टदायक मार्ग मुक्ति का स्वभावहीन द्वार है; सुस्त परिचय के साथ सुखद मार्ग मुक्ति का शून्य द्वार है: और तीव्र परिचय के साथ सुखद मार्ग मुक्ति का संकेतहीन द्वार है।
730. 2. इसमें, शरीर को शरीर के रूप में ध्यान करने वाले की अवस्था के रूप में ध्यान की नींव और भावनाओं को भावनाओं के रूप में ध्यान करने वाले की अवस्था के रूप में ध्यान की नींव, मुक्ति का स्वभावहीन द्वार है; चेतना को चेतना के रूप में ध्यान करने वाले की अवस्था के रूप में ध्यान की नींव, मुक्ति का शून्य द्वार है; और विचारों को विचारों के रूप में ध्यान करने वाले की अवस्था के रूप में ध्यान की नींव, मुक्ति का संकेतहीन द्वार है।
731. 3. इसमें, पहला ध्यान और दूसरा ध्यान, स्वभावहीन मुक्ति का द्वार हैं; तीसरा ध्यान, शून्य मुक्ति का द्वार है; और चौथा ध्यान, संकेतहीन मुक्ति का द्वार है।
732. 4. इसमें, प्रथम स्थिर और द्वितीय स्थिर, स्वभावहीन मुक्ति का द्वार हैं; तृतीय स्थिर, शून्य मुक्ति का द्वार है; और चतुर्थ स्थिर, संकेतहीन मुक्ति का द्वार है।
733. 5. इसमें, प्रथम सही प्रयास और द्वितीय सही प्रयास मुक्ति के लिए स्वभावहीन द्वार हैं; तृतीय सही प्रयास मुक्ति के लिए शून्य द्वार है; और चतुर्थ सही प्रयास मुक्ति के लिए चतुर्थ द्वार है।

734. 6. इसमें, अहंकार का त्याग और निर्भरता का उन्मूलन मुक्ति का स्वभावहीन द्वार है; अज्ञान का त्याग मुक्ति का शून्य द्वार है; और अस्तित्व का शांत होना मुक्ति का संकेतहीन द्वार है।
735. 7. इसमें सत्य की अभिव्यक्ति और उदारता की अभिव्यक्ति, मुक्ति का निर्गुण द्वार है; समझ की अभिव्यक्ति, मुक्ति का शून्य द्वार है; और शांति की अभिव्यक्ति, मुक्ति का निराकार द्वार है।
736. 8. इसमें, इच्छा की एकाग्रता और ऊर्जा की एकाग्रता मुक्ति का स्वभावहीन द्वार है; चेतना की एकाग्रता मुक्ति का शून्य द्वार है; और पूछताछ की एकाग्रता मुक्ति का संकेतहीन द्वार है।

[पृष्ठ 166]

पथप्रदर्शक

737. 9. इसमें, फैकल्टी-संयम 1 और उत्साह, मुक्ति का स्वभावहीन द्वार है; खोज, मुक्ति का शून्य द्वार है; अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग, मुक्ति का संकेतहीन द्वार है।
738. 10. [124] इसमें, प्रेम और करुणा, स्वभावहीनता से मुक्ति का द्वार है; प्रसन्नता, शून्यता से मुक्ति का द्वार है; और समभाव, संकेतहीनता से मुक्ति का द्वार है।

शेरों का खेल

739. इनका खेल [इस प्रकार है]: .

चार पोषक तत्व हैं: उनके विपरीत चार मार्ग हैं। चार विकृतियाँ हैं: उनके विपरीत ध्यान के चार आधार हैं। चार धारणाएँ हैं: उनके विपरीत चार ध्यान हैं। चार बंधन हैं: उनके विपरीत चार स्थिरताएँ हैं। चार संबंध हैं: उनके विपरीत चार सही प्रयास हैं। चार दोष हैं: उनके विपरीत चार अद्भुत और चमत्कारी विचार हैं। चार बाढ़ हैं: उनके विपरीत चार अभिव्यक्तियाँ हैं। चार कांटे हैं: उनके विपरीत एकाग्रता बनाए रखने के चार तरीके हैं। चेतना के लिए चार स्थिर बिंदु हैं: उनके विपरीत आनंद से संबंधित चार विचार हैं। चार बुरे रास्ते पर चलना हैं: उनके विपरीत चार असीम अवस्थाएँ हैं (देखें पतरस 248-9)।

740. सिंह वे प्रबुद्ध हैं, वे संन्यासी प्रबुद्ध हैं, और वे श्रोता हैं जिन्होंने कामवासना, घृणा और भ्रम को नष्ट कर दिया है।

उनका खेल अस्तित्व में बने रहने, सत्यापन करने और समाप्ति में निहित है।

नाटक , विश्वास से शुरू होने वाली (धारा 670 देखें) क्षमताओं की अभिव्यक्ति है, और नाटक विकृतियों की अअभिव्यक्ति है: ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता और समझ की चार क्षमताएँ विश्वास की सच्ची वस्तु के लिए चारागाह हैं, विकृतियाँ अपवित्रता के लिए चारागाह हैं। इसे शेरों के खेल का मार्गदर्शक और दिशा-निर्देशों की योजना का मार्गदर्शक कहा जाता है। इसीलिए कहा गया है:

737/1 इन्द्रियसंवरो (एक यौगिक) या इन्द्रियं संवरो के लिए इन्द्रियाणं संवरो पढ़ें ।

740/मैं ' विपरियसा —विकृतता' : पीईडी में नहीं ; विपल्लसा की भिन्न वर्तनी । विन देखें. चतुर्थ, 79 = एम । द्वितीय, 248.

[पृष्ठ 167]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

'मार्गदर्शन में बुद्धिमानों ने इसे कहा है
लायंस प्ले, जिसे संकायों द्वारा
क्या आस्था के सच्चे उद्देश्य मार्गदर्शन करते हैं, और क्या
विकृतियों और अपवित्रताओं के द्वारा (§23),
और भी
'मानसिक रूप से विचारों की रूपरेखा क्या तैयार करता है?'
लाभ और हानि का उल्लेख किया गया है।
या फिर प्रदर्शनियों में इधर-उधर
वे इसे दिशाओं का कथानक कहते हैं (§§24, 673)।

*

तिपत्ती और हुक

741. इसमें, वे दो प्रकार के व्यक्ति हैं जो धीमी गति से जान-पहचान बनाकर कष्टदायक मार्ग से मुक्ति पाते हैं और वे दो प्रकार के व्यक्ति हैं जो धीमी गति से जान-पहचान बनाकर सुखदायक मार्ग से मुक्ति पाते हैं और वे दो प्रकार के व्यक्ति हैं जो धीमी गति से जान-पहचान बनाकर सुखदायक मार्ग से मुक्ति पाते हैं (पे 249)।

742. उन चार प्रकार के व्यक्तियों के लिए भ्रष्टाचार इस प्रकार है: चार पोषक तत्व, चार विकृतियाँ, चार धारणाएँ, चार बंधन, चार संबंध, चार कलंक, चार बाढ़, चार कांटे, चेतना के लिए चार स्थिर बिंदु, और चार बुरे रास्ते पर चलना (देखें §674)।

743. [125] इन चार प्रकार के व्यक्तियों के लिए शुद्धि इस प्रकार है: चार मार्ग, ध्यान के चार आधार, चार ध्यान, चार निवास, चार सही प्रयास, चार अद्भुत चमत्कारी विचार, चार अभिव्यक्तियाँ, एकाग्रता बनाए रखने के चार तरीके, आनंद से संबंधित चार विचार, और चार असीम अवस्थाएँ (देखें §713)।

744. इसमें, वे लोग जो सुस्त परिचय के साथ कष्टदायक मार्ग से और तीव्र परिचय के साथ मार्ग से मुक्ति पाते हैं, दो प्रकार के व्यक्ति हैं, और वे लोग जो सुस्त परिचय के साथ सुखद मार्ग से और तीव्र परिचय के साथ मार्ग से मुक्ति पाते हैं, दो प्रकार के व्यक्ति हैं (देखें §668; पे 249)।

745. इसमें, जो व्यक्ति शीघ्र परिचय के साथ सुखद मार्ग से मुक्ति पाता है, वह संक्षेपित ज्ञान प्राप्त करता है। जो व्यक्ति ऐसा शीघ्र और कष्टदायक मार्ग से करता है, वह भी ऐसा ही करता है।

[पृष्ठ 168]

पथप्रदर्शक

परिचय और सुस्त परिचय के सुखद तरीके में समानता (देखें पतरस 30) यह है कि जो व्यक्ति विस्तारित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है। जो व्यक्ति सुस्त परिचय के कष्टदायक तरीके से मुक्ति पाता है, वह मार्गदर्शन योग्य होता है (देखें पतरस 249J. 1) ।

746. इसमें, भगवान बुद्ध उस व्यक्ति को शांति प्रकट करते हैं जो संक्षेपित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है, उस व्यक्ति को अंतर्दृष्टि जो मार्गदर्शनीय है, और उस व्यक्ति को शांति और अंतर्दृष्टि जो विस्तारित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है।

747. इसमें, भगवान बुद्ध सच्चे विचार की एक स्पष्ट शिक्षा उस व्यक्ति को प्रकट करते हैं जो संक्षेपित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है, एक तीक्ष्ण शिक्षा उस व्यक्ति को जो मार्गदर्शनीय है, और एक कुंद से तीक्ष्ण शिक्षा उस व्यक्ति को जो विस्तारित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है (cf. §587)।

748. इसमें भगवान बुद्ध सच्चे विचार को संक्षेप में उस व्यक्ति को सिखाते हैं जो संक्षेपित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है, संक्षेप में और विस्तार से उस व्यक्ति को जो विस्तारित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है, और विस्तार से उस व्यक्ति को जो मार्गदर्शन योग्य है (cf. §587)।

749. इसमें भगवान बुद्ध ने संक्षेपित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को मुक्ति, विस्तारित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को निराशा और मुक्ति, और मार्गदर्शन योग्य व्यक्ति को संतुष्टि, निराशा और मुक्ति का खुलासा किया है (cf. §§41ff.; §587)।

750. इसमें भगवान बुद्ध ने उच्च समझ में प्रशिक्षण का वर्णन किया है, जो संक्षेपित ज्ञान से प्राप्त होता है, उच्च चेतना में प्रशिक्षण का वर्णन किया है, जो विस्तारित ज्ञान से प्राप्त होता है, और उच्च सद्गुण में प्रशिक्षण का वर्णन किया है, जो मार्गदर्शन योग्य है (cf. §587)।

751. इसमें, [दोहराते हुए,] वे लोग दो प्रकार के व्यक्ति हैं जो सुस्त परिचय के साथ कष्टदायक मार्ग से और तीव्र परिचय के साथ कष्टदायक मार्ग से मुक्ति पाते हैं। और वे लोग दो प्रकार के व्यक्ति हैं जो सुस्त परिचय के साथ सुखदायक मार्ग से और तीव्र परिचय के साथ सुखदायक मार्ग से मुक्ति पाते हैं (§744)।

752. [लेकिन यद्यपि] इस तरह से चार हैं, फिर भी वे तीन हैं, अर्थात् एक जो संक्षेपित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है, एक जो विस्तारित ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है, और एक जो मार्गदर्शन योग्य है (cf. §745)।

753. इन तीन प्रकार के व्यक्तियों का भ्रष्टाचार इस प्रकार है:

1. अलाभकारीता की तीन जड़ें: अलाभकारीता की जड़ के रूप में लालच, अलाभकारीता की जड़ के रूप में घृणा, अलाभकारीता की जड़ के रूप में भ्रम [126] (डी . iii, 214)।

745/1 तुलना करें। Pe 31 पर काफी समान उपचार।

[पृष्ठ 169]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

2. तीन प्रकार के दुराचार: शारीरिक दुराचार, मौखिक दुराचार, मानसिक दुराचार (डी. iii, 214)।

3. तीन निष्फल प्रकार की सोच: कामुक इच्छाओं की सोच, द्वेष की सोच, क्रूरता की सोच (डी. iii, 215)।

4. धारणा के तीन लाभहीन प्रकार: कामुक इच्छाओं की धारणा, दुर्भावना की धारणा, क्रूरता की धारणा (डी . iii, 215)।

5. धारणा के तीन विकृत प्रकार: स्थायित्व की धारणा, सुख की धारणा, स्वयं की धारणा ( )।

6. तीन प्रकार की भावनाएँ: सुखद भावना, पीड़ादायक भावना, न पीड़ादायक न सुखद भावना (डी. iii, 216)।

7. तीन प्रकार की पीड़ा: दर्द में पीड़ा, परिवर्तन में पीड़ा, निर्धारण में पीड़ा (डी . iii, 216)।

8. तीन अग्नियाँ: कामवासना की अग्नि, घृणा की अग्नि, भ्रम की अग्नि (डी . iii, 217)।

9. तीन कांटे: कामवासना का कांटा, घृणा का कांटा, भ्रम का कांटा ( )।

10. तीन उलझनें: कामवासना की उलझन, घृणा की उलझन, भ्रम की उलझन ( )।

11. तीन निष्फल जाँच: निष्फल शारीरिक क्रिया, निष्फल मौखिक क्रिया, निष्फल मानसिक क्रिया (cf. एम. आई, 415)।

12. तीन विफलताएँ: सद्गुण में विफलता, विचारों में विफलता, आचरण में विफलता (तुलना करें ए. i, 268, 270; वी.बी. 246-7; पे 250)।

754. इन तीन प्रकार के व्यक्तियों का शुद्धिकरण इस प्रकार है:

1. लाभ के तीन मूल: लाभ के मूल के रूप में लोभ नहीं, लाभ के मूल के रूप में घृणा नहीं, लाभ के मूल के रूप में भ्रम नहीं (डी . iii, 214)।

2. तीन प्रकार के अच्छे आचरण: शारीरिक अच्छा आचरण, मौखिक अच्छा आचरण, मानसिक अच्छा आचरण (डी . iii, 215)।

3. तीन लाभदायक प्रकार की सोच: त्याग की सोच, द्वेषहीनता की सोच, निर्दयता की सोच (डी. iii, 215)।

4. एकाग्रता के तीन प्रकार: सोच और अन्वेषण के साथ एकाग्रता, बिना सोचे और केवल अन्वेषण के साथ एकाग्रता, बिना सोचे और बिना अन्वेषण के एकाग्रता (डी . iii, 219)।

5. धारणा के तीन लाभदायक प्रकार: त्याग की धारणा, दुर्भावना रहित धारणा, क्रूरता रहित धारणा (डी . iii, 215)।

6. धारणा के तीन अविकृत प्रकार: अनित्यता की धारणा, दुख की धारणा, अनात्म की धारणा ( )।

7. तीन लाभदायक जांच: लाभदायक शारीरिक क्रिया, लाभदायक मौखिक क्रिया, लाभदायक मानसिक क्रिया (cf. एम. आई, 415ff.)।

[पृष्ठ 170]

पथप्रदर्शक

8. तीन प्रकार की शुद्धताएँ: शारीरिक शुद्धता, मौखिक शुद्धता, मानसिक शुद्धता (डी. iii, 219)।

9. तीन सफलताएँ: सद्गुण में सफलता, एकाग्रता में सफलता, समझ में सफलता ( )।

10. तीन प्रशिक्षण: उच्च सद्गुण में प्रशिक्षण, उच्च एकाग्रता में प्रशिक्षण, उच्च समझ में प्रशिक्षण (डी. iii, 219)।

11. तीन श्रेणियाँ: सद्गुण श्रेणी, एकाग्रता श्रेणी, समझ श्रेणी (देखें एम. आई, 301)।

12. मुक्ति के तीन द्वार: शून्य, चिन्हहीन, स्वभावहीन (भजन संहिता 2, 48, 69 देखें) (तुलना करें पतरस 252)।

755. [अब यद्यपि] इस प्रकार चार हैं [फिर भी] वे तीन हैं, तीन होते हुए भी [फिर भी] वे दो हैं, 1 अर्थात् एक लालसा-स्वभाव वाला और एक दृष्टि-स्वभाव वाला (§645; तुलना करें पे 253-4)।

756. इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों का भ्रष्टाचार इस प्रकार है:

1. लालसा और अज्ञान (धारा 2, 178)

2. विवेकहीनता और निर्लज्जता (ए.आई. , 95)

3. असावधानी और अनभिज्ञता (ए. आई, 95), [127]

4. [अतार्किक और] अतार्किक ध्यान, 1
5. आलस्य और कठिन चेतावनी देने की क्षमता,
6. मैं-निर्माण और मेरा-निर्माण (ए. आई, 132),
7. विश्वासघात और लापरवाही,
8. आस्था के सच्चे उद्देश्य को न सुनना और संयम न बरतना,
9. लोभ और द्वेष,
10. बाधाएँ और बंधन (एस. ii, 178; तुलना करें भजन i, 143),
11. क्रोध और द्वेष (ए.आई. , 95)
12. अवमानना और दबंगई (ए. आई, 95),
13. ईर्ष्या और लोभ (ए. आई, 95),

755/1 यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि Pe अपने सहायक द्वैतों के दो सेटों को अन्य दो अर्थ-मार्गदर्शिकाओं की तरह ही मूल द्वैतों के युग्म के अंतर्गत रूपांतरण-स्वाद के लिए आवंटित करता है; साथ ही यह भी कि यह इस मार्गदर्शक रेखा को पहले नहीं, बल्कि अंत में रखता है। हालाँकि, यहाँ इसे मूल द्वैतों के युग्म के साथ पहले स्थान पर रखा गया है, परन्तु समामेलन की पूरी प्रक्रिया को इससे हटा दिया गया है, सहायक द्वैतों के दो सेटों को ट्रेफ़ॉयल के अंतर्गत उसके मूल त्रैतों के सहायक के रूप में रखा गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मूल युग्म के अंतर्गत युग्मों के सेटों के 'समामेलन' की प्रक्रिया मात्र एक विवरण है, न कि किसी विशेष मार्गदर्शक रेखा की अनिवार्य विशेषता।

756/1 ayoni ca ayonisomanasikaro ca पढ़ें (देखें §218 जहाँ इनमें से 10 द्वैत आते हैं। तुलना करें Pe पृष्ठ 254 भी, जहाँ वे काफी भिन्न हैं)।

[पृष्ठ 171]

दिशा-निर्देशों का सांचा बनाना

14. छल और धोखाधड़ी (ए.आई. , 95)
15. शाश्वतवादी दृष्टिकोण और विनाशवादी दृष्टिकोण (तुलना करें एस. iv, 400-1; तुलना करें पे 254)।

757. इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों का शुद्धिकरण इस प्रकार है:

1. शांति और अंतर्दृष्टि (ए.आई. , 61),
2. अंतरात्मा और शर्म (ए. आई, 95),
3. सचेतनता और जागरूकता (ए.आई. , 95)
4. [कारण और] तर्कसंगत ध्यान, 1
5. ऊर्जा का उद्दीपन और आसानी से निंदनीयता,
6. सही विचार का ज्ञान और निष्कर्षों का ज्ञान,
7. समाप्ति का ज्ञान और उत्पत्ति न होने का ज्ञान,
8. विश्वास और परिश्रम,
9. विश्वास के सच्चे उद्देश्य और संयम को सुनना,
10. लोभहीनता और द्वेषहीनता,
11. कामवासना और समझ के लुप्त होने से हृदय की मुक्ति-
अज्ञान के मिटने के कारण मुक्ति (ए.आई. , 61)
12. इच्छाओं की कमी और संतोष,
13. क्रोध और द्वेषहीनता (ए. आई, 96),
14. अवमानना और प्रभुत्वहीनता (ए. आई, 95)
15. ईर्ष्या और लोभ का त्याग (तुलना करें ए. i, 95)

16. विज्ञान और मुक्ति (ए.आई. , 83),
17. उस प्रकार की मुक्ति जिसका उद्देश्य निर्धारित है और उस प्रकार की मुक्ति जिसका उद्देश्य निर्धारित है
वह मुक्ति जिसका उद्देश्य अनिश्चित है, 2
18. विलुप्तिकरण तत्व जिसके अवशेष बचे हैं और विलुप्तिकरण तत्व
बिना कोई निशान छोड़े (इति . 38).
758. इसे ट्रेफ़ोइल गाइड-लाइन और हुक गाइड-लाइन का तल कहा जाता है।
इसीलिए ऐसा कहा गया था:
'लाभ और [के विचारों] का मार्गदर्शन करना
उनकी [तिहरी] जड़ों से लाभहीन
वे वास्तव में, अवास्तविक नहीं हैं,
उस दिशा-निर्देश को वे तिपतिया घास कहते हैं (§22),

757/1 देखें n. 756/1. पढ़ें yoni ca yonisomanasikaro ca (देखें §218).
757/2 ' संखतरम्मन —जिसका उद्देश्य निर्धारित है': अर्थात्, चार ध्यान और चार निराकार अवस्थाओं से युक्त 'अस्थायी' मुक्ति (देखें पुग. 11)। 'असंखतरम्मन —जिसका उद्देश्य अनिर्धारित है': अर्थात्, 'गैर-अस्थायी' मुक्ति 'जिसका उद्देश्य निर्वाण है', और जिसमें चार मार्ग, मार्गों के चार फल और निश्चिंतन प्राप्ति शामिल है।

[पृष्ठ 172]
पथप्रदर्शक
[और भी]
'इस प्रकार प्लॉटिंग के साथ साजिश रचने के बाद
निर्देशों के बारे में, फिर क्या सामने आता है
सभी लाभ [विचार] और हानि
और उन्हें अंदर ले जाने को हुक कहा जाता है (§25)।
*
दिशा-निर्देशों को आकार देने का कार्य समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> नेत्तिपकरण >> Ch.iv.पैटर्न ऑफ डिस्पेंसेशन
नेतिप्पाकरण: भिक्कू नानामोली द्वारा अनुवादित

पिछला <<<<-----||-8-||अंत

भाग VI. अध्याय IV. व्यवस्था का स्वरूप (पैरा 759 - 965)

[पृष्ठ 173]

अंतर्वस्तु

1.1.1.22. नैतिकता
1.1.1.33. प्रवेश
1.1.1.44. कुशल
1.1.1.55. भ्रष्टाचार और नैतिकता
1.1.1.66. भ्रष्टाचार और घुसपैठ
1.1.1.77. भ्रष्टाचार और निपुण
1.1.1.88. भ्रष्टाचार, घुसपैठ और निपुण
1.1.1.99. भ्रष्टाचार, नैतिकता और घुसपैठ
1.1.1.1010. नैतिकता और प्रवेश
1.1.1.1111. भ्रष्टाचार और लालसा
1.1.1.1212. भ्रष्टाचार का दृश्य
1.1.1.1313. कदाचार द्वारा भ्रष्टाचार
1.1.1.1414-16. लालसा, दृष्टिकोण और दुराचार से शुद्धि
1.1.1.15बहस
1.1.2दूसरा समूह
1.1.2.1अनुसूची
1.1.2.2उदाहरण उद्धरण
भाग VI
अध्याय iv: व्यवस्था का स्वरूप
पहला समूह
759. इसमें अठारह मूल शब्द हैं: वे कहाँ देखे जा सकते हैं? व्यवस्था के प्रतिरूप में (cf. §964)। 1
760. इसमें व्यवस्था का स्वरूप क्या है? [यह सूत्र है, जिसे सबसे पहले निम्न प्रकार से समूहीकृत किया गया है:]
[पहला समूह — अनुसूची]
[128] [ए] 1. भ्रष्टाचार से संबंधित थ्रेड का प्रकार,
[बी] 2. नैतिकता से संबंधित विषयवस्तु का प्रकार,
[सी] 3. प्रवेश से निपटने वाले धागे का प्रकार,
[डी] 4. सिद्ध पुरुष से संबंधित धागे का प्रकार; 1
[AB] 5. भ्रष्टाचार और नैतिकता से संबंधित विषय का प्रकार,
[एसी] 6. भ्रष्टाचार और घुसपैठ से संबंधित थ्रेड का प्रकार,
[AD] 7. भ्रष्टाचार और सिद्ध पुरुष से संबंधित धागे का प्रकार, [ACD] 8. भ्रष्टाचार, घुसपैठ से संबंधित धागे का प्रकार, और सिद्ध पुरुष,

---

759/1 नेटिया इस संक्षिप्त वाक्य की व्याख्या इस प्रकार करते हैं: 'मार्गदर्शन के स्वरूप का सर्वथा विश्लेषण करने के बाद, अब व्यवस्था के स्वरूप का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा, "अठारह मूल-पद कहाँ देखे जा सकते हैं? व्यवस्था के स्वरूप में", और चूंकि स्वरूप को व्यापक खंड (§1) में केवल मूल-पदों द्वारा ही समाहित किया गया है, न कि अपने मूल रूप में, यह दिखाने के लिए कहा गया है कि जिस प्रकार स्वरूप को मूल-पदों से व्युत्पन्न किया जा सकता है, उसी प्रकार मूल-पदों को भी स्वरूप से व्युत्पन्न किया जा सकता है' (पृष्ठ 184)। पुनः '(दो अभिव्यक्तियों के संबंध में) "अठारह मूल-पद" और "व्यवस्था का प्रतिरूप" प्रत्येक दूसरे को समाहित करता है, ठीक उसी प्रकार जैसे (उदाहरण के लिए, तीनों में से प्रत्येक) अर्थ से संबंधित मार्गदर्शक रेखाएँ (अन्य दो को समाहित करती हैं, या जैसे दोनों में से प्रत्येक) निर्धारण के त्रय (अर्थात् निर्धारक - गुण, दोष और अविचलितता के कार्य, और शारीरिक, शाब्दिक और मानसिक का त्रय दूसरे त्रय को समाहित करता है)' (पृष्ठ 2; टीका , पृष्ठ 16-17)। n. 764/2. 760/1 भी देखें। ये 4 मूल प्रकार अपने संयोजनों के साथ Pe 23ff. और Pe 153 से उस अध्याय के अंत तक धागों के वर्गीकरण में भी दिखाई देते हैं (उदाहरण के लिए, Pe 163, पंक्ति 1 देखें)। नेटिया कहती हैं, 'लालसा आदि को अपवित्रता मानकर उससे संबंधित विषय को 'अपवित्रता से संबंधित विषय' कहा जाता है; दान आदि

तथा पुण्य कमाने के आधारों से संबंधित विषय को 'नैतिकता से संबंधित विषय' कहा जाता है; दीक्षितों में सद्गुणों आदि से संबंधित विषय को 'प्रवेश से संबंधित विषय' कहा जाता है; और सिद्ध पुरुषों में सद्गुणों आदि से संबंधित विषय को 'सिद्ध पुरुष से संबंधित विषय' कहा जाता है' (पृष्ठ 185)। प्रस्तावना (अनुभाग 7ख) देखें।

[पृष्ठ 174]

पथप्रदर्शक

[एबीसी] 9. भ्रष्टाचार, नैतिकता और घुसपैठ से संबंधित विषयवस्तु का प्रकार,

[ईसा पूर्व] 10. नैतिकता और प्रवेश से संबंधित धागे का प्रकार; 2

[अल] 11. लालसा द्वारा भ्रष्टाचार से निपटने वाले धागे का प्रकार,

[A2] 12. दृश्य द्वारा भ्रष्टाचार से निपटने वाले थ्रेड का प्रकार,

[A3] 13. कदाचार द्वारा भ्रष्टाचार से निपटने वाले थ्रेड का प्रकार;

[बी-डीएल] 14. लालसा से शुद्धि से संबंधित धागे का प्रकार।

[बी-डी2] 15. दृष्टि से शुद्धिकरण से संबंधित धागे का प्रकार,

[बी-डी3] 16. दुराचार से शुद्धि से संबंधित धागे का प्रकार

(तुलना करें पे 22ff.). 3

1. भ्रष्टाचार

761. इसमें भ्रष्टाचार तीन प्रकार का है: लालसा द्वारा भ्रष्टाचार, दृष्टि द्वारा भ्रष्टाचार और दुराचार द्वारा भ्रष्टाचार।

762. इसमें, लालसा से उत्पन्न भ्रष्टाचार शांति से शुद्ध होता है, और वह शांति एकाग्रता की श्रेणी में आती है। दृष्टि से उत्पन्न भ्रष्टाचार अंतर्दृष्टि से शुद्ध होता है, और वह अंतर्दृष्टि समझ की श्रेणी में आती है। दुराचार से उत्पन्न भ्रष्टाचार अच्छे आचरण से शुद्ध होता है, और वह अच्छा आचरण सद्गुण की श्रेणी में आता है।

763. जब कोई व्यक्ति सद्गुण में स्थापित हो जाता है, यदि उसमें विभिन्न प्रकार के अस्तित्व को पकड़ने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, तो उसकी कोई भी शांति और अंतर्दृष्टि, अस्तित्व में बने रहने में निहित पुण्य का आधार बन जाती है, क्योंकि इससे किसी न किसी प्रकार के [अस्तित्व] में पुन: प्रकट होना संभव हो जाता है।

764. ये चार मूल प्रकार के धागे, जब एक साथ मिलाए जाते हैं, तो आठ होते हैं; और उन्हीं आठों को एक साथ मिलाने पर सोलह होते हैं। 1 संपूर्ण नौ गुना धागे को इन सोलह प्रकारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। 2

760/2 नेटिआ टिप्पणी करते हैं कि मूल 4 के संयोजन के रूप में संभावित 6 द्वैत, 4 त्रैत और 1 चतुष्क (देखें एन. 764/1) में से केवल 4 द्वैत और 2 त्रैत चुने गए हैं, हालांकि 'अन्य को छोड़ने का कोई कारण नहीं है' और इसलिए 'पाठ को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत माना जाना चाहिए' (पृष्ठ 185)। तुलना करें पे अध्याय ii।

760/3 अंतिम 6 क्रमशः पहले और अन्य 3 के उपविभाजन मात्र हैं, और नेटिया ने बताया है कि वे कुछ पांडुलिपियों में अनुपस्थित थे। देखें पे 29।

764/1 नेटिए निम्नलिखित अंकगणित देता है: '8' में चार सरल संख्याएँ A, B, C, D (संख्या 1-4) और चार संयुक्त संख्याएँ AB, AC, AD, BC (संख्या 5, 6, 7 और 10) शामिल हैं, जिनका योग 8 है। दूसरी '8' निम्नलिखित संयोजनों से बनी है: BD, CD, ABC (संख्या 9), ABD, ACD (संख्या 8), BCD, ABCD, और ऋणात्मक चतुर्भुज not-A-not-B-not-C-not-D। इस प्रकार कुल योग 16 है। तुलना करें पृष्ठ 29 ।

764/2 इसका अर्थ यह है कि जिसे ' सूत्र ' कहा जाता है—बुद्ध के कथन के अर्थ में 'सूत्र'—उसे नौ वर्गों में (देखें n. 1/9) इन 16 विभाजनों के अंतर्गत रखा गया है। इसलिए यह अध्याय इन सभी को समाहित करने का दावा करता है।

[पृष्ठ 175]

व्यवस्था का प्रतिरूप

765. श्लोक का मूल्यांकन श्लोक के अनुसार किया जाना चाहिए, गद्य-व्याख्या का मूल्यांकन गद्य-व्याख्या के अनुसार किया जाना चाहिए (तुलना करें पतरस 10, 11, 19), विषयवस्तु का मूल्यांकन विषयवस्तु के अनुसार किया जाना चाहिए। 1

[पहला समूह—उदाहरण सहित उद्धरण]

[1]

766. इसमें भ्रष्टाचार से निपटने वाले विषय का प्रकार क्या है?
कामुक अंधकार के जाल में फंसा हुआ,
और लालसा के बंधन से अवरुद्ध ,
[129] उपेक्षा की बाड़ से घिरा हुआ
जैसे मछली किसी फनल-ट्रैप में फंसी हो,
ये बुढ़ापे और मृत्यु के बाद घटित होते हैं।
जैसे दूध पीने वाला बछड़ा अपनी माँ से दूध पीता है > (§198; पे 24)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

767. <' भिक्षुओं, ये चार प्रकार के बुरे मार्ग हैं। वे कौन से चार हैं? एक इच्छा से बुरे मार्ग पर चलता है, दूसरा घृणा से , तीसरा भय से, और चौथा भ्रम से ।' भगवान बुद्ध ने ऐसा कहा। यह कहकर, गुरु ने आगे कहा:
जब मनुष्य सच्चे विचार से भटक जाता है
इच्छाशक्ति, घृणा , भय या भ्रम के माध्यम से,
उसे पता चलता है कि उसकी प्रसिद्धि धीरे-धीरे फीकी पड़ रही है।
जैसे इसके अंधेरे आधे हिस्से में चंद्रमा (तुलना करें पे 48, 64; ए. ii, 18)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

768. < विचार मन द्वारा घोषित किए जाते हैं 1 ,
उनका मस्तिष्क उन्हें नियंत्रित करता है , और वे मस्तिष्क द्वारा निर्मित होते हैं।
यदि कोई व्यक्ति भ्रष्ट मानसिकता वाला हो
बोलने या कार्य करने की आदत है , फिर दर्द होता है

बुद्ध के संपूर्ण कथन को वर्गीकृत उद्धरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, इसे एक 'पैटर्न' के रूप में स्थापित किया गया है, जिससे '18 मूल-शब्दों' (देखें §§4, 759 और 964) के अंतर्गत इसे समाहित करके, दिशा-निर्देशों को 'ढाला' जा सकता है (देखें n. 759/1)।

765/1 पृष्ठ 10, पंक्ति 3 देखें।

768/1 पुब्बंगमा विशेषण के रूप में 'से पहले' का अर्थ है। पाली में दिया गया उदाहरण एक राजा का है जो अपनी सेना के आगे चल रहा है। 'हेराल्ड' संक्षिप्त रूप है।

[पृष्ठ 176]

पथप्रदर्शक
श्योर उसके पीछे-पीछे चलता है, जैसा कि वह भी करता है।
पहिया जोतित [बैल का] खुर > (Dh. 1; cf. §787).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

769. < अत्यधिक भोजन के कारण सुस्त और मंदबुद्धि व्यक्ति,
नींद में डूबा हुआ, जो लेटे-लेटे कराह रहा है
जैसे किसी बड़े सूअर को चर्बीदार भोजन से भर दिया गया हो,
बार-बार गर्भ में लौटता है > (§190).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

770. लोहे पर लगने वाले जंग के धब्बे की तरह
यह उस लोहे को खा जाता है जिससे इसका विकास होता है।
इसी प्रकार, आदतन अपराध करने वालों का नेतृत्व भी किया जाता है।
अपने ही कर्मों से बुरे गंतव्यों की ओर > (पे 8, 49; ध. 240)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
771. [130] < ठीक वैसे ही जैसे घर में सेंधमारी करते हुए पकड़ा गया एक लुटेरा
वह अपने कृत्य से ग्रस्त है और इसके लिए जिम्मेदार भी है।
इसी प्रकार, भविष्य में जब मनुष्य की मृत्यु हो जाएगी,
वह अपने कृत्य से ग्रस्त है और उसके लिए जिम्मेदार है > (§188)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
772. < छड़ी से क्रूरतापूर्वक दुर्व्यवहार करने वाला
वे प्राणी जो केवल सुख की इच्छा रखते हैं,
जब वह भी अपनी ही खुशी की तलाश करता है
यहाँ से प्रस्थान करने पर, उसे यह नहीं मिलता> (उद. 12; ध. 131; तुलना करें §789)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
773. जब मवेशी नदी पार करते हैं
और बैल का नेता भटक जाता है
फिर बाकी सब लोग भटक जाते हैं
क्योंकि मार्गदर्शक भटक गया है।
मानवजाति में भी ऐसा ही है:
यदि नियुक्त शासक कार्य करता है
सच्चे विचार के विपरीत,
बाकी सभी लोगों की हालत तो और भी ज्यादा होगी;
जब राजा का प्रकोप होता है तो पूरा राज्य पीड़ित होता है।
सच्चे विचार के विपरीत कार्य > (ए. ii, 75ff.; cf. §790).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

[पृष्ठ 177]
व्यवस्था का प्रतिरूप
774. < बुरे काम करने वाले पुरुषों का काम वाकई बहुत अच्छा होता है।
जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के प्रति लालसा के माध्यम से
फिर उस निरंतर नरक में भीड़ उमड़ पड़ती है
वहाँ सबसे भयानक पीड़ाओं को सहना !> ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
775. फल लगने से केले का पेड़ मर जाता है
और यह बांस और सरकंडे को नष्ट कर देता है।
और सम्मान अयोग्य पुरुषों का वध कर देता है।
जैसे मादा खच्चर बच्चे को जन्म देती है > (एस.आई, 154)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
776. < एक भिक्षु जो बहुत क्रोधशील होता है
और लाभ और सम्मान के माध्यम से तिरस्कार

सच्चे विचार में अब और वृद्धि नहीं होती
अच्छी मिट्टी में सड़ा हुआ बीज > ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
777. <' हे भिक्षुओं, मैं प्रबुद्ध व्यक्ति की दृष्टि से किसी व्यक्ति की चेतना में प्रवेश करता हूँ और इस प्रकार समझता हूँ: इस व्यक्ति के आचरण, उसके अभ्यास और उसके मार्ग के अनुसार, [131] यदि वह इस अवसर पर मर जाए, तो मानो उसे वहाँ ले जाया जाए, तो उसे नरक में रखा जाएगा। 1 ऐसा क्यों है? उसका हृदय भ्रष्ट है। उसके हृदय की भ्रष्टता के कारण ही शरीर के विघटन के बाद, मृत्यु के बाद, व्यक्ति बेचैनी की अवस्था में , बुरे गंतव्य में, विनाश में, नरक में पुनः प्रकट होता है।' भगवान बुद्ध ने यही अर्थ बताया है। इसमें आगे कहा गया है:
यहां किसी व्यक्ति को पहचानकर
जिसका हृदय भ्रष्टाचार से भरा हुआ था,
गुरु ने अर्थ की व्याख्या की।
भिक्षुओं की उपस्थिति में इस प्रकार:
'अब अगर ऐसा हो जाए कि यह व्यक्ति
ऐसे क्षण में मरने आया था
फिर वह नरक में पुनः प्रकट होगा
उसके हृदय की भ्रष्टता के कारण;

777/1 यह कठिन और मुहावरेदार वाक्यांश, जो कई सूत्रों में दोहराया गया है, संभवतः यहाँ इस श्लोक-व्याख्या द्वारा सबसे अच्छी तरह से प्रमाणित है। एक टीकात्मक व्याख्या उदाहरण के लिए, एम.ए. ii, 32 पर दी गई है।

[पृष्ठ 178]
पथप्रदर्शक
हृदय से भ्रष्ट प्राणियों के लिए
एक भयावह गंतव्य की ओर।
मानो उसे अगवा कर लिया गया हो
और वहाँ रख दिया , ताकि ऐसा मूर्ख व्यक्ति ...
शरीर के विघटन के बाद,
नरक में पुनः प्रकट होता है।
भगवान बुद्ध ने यही अर्थ बताया था, जैसा कि मैंने सुना है (तुलना करें इति. 12f.;तुलना करें §795)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
778. < अब अगर आपको दर्द से डर लगता है
और अगर आपको दर्द अप्रिय लगता है
फिर सार्वजनिक रूप से या गुप्त रूप से किसी भी प्रकार का बुरा काम न करें।
यदि आप ऐसा करते हैं या यदि आप ऐसा करेंगे
एक बुरा काम, चाहे कुछ भी हो जाए।
आपको दर्द से कोई सुरक्षा नहीं मिलेगी।
भविष्य की अवस्थाओं में उड़ान भरकर भी > (पे 43, 44; एस. आई, 209)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
779. < उन्हें जो भी वृद्धि मिले
गैरकानूनी रूप से, और वह भी झूठ के बल पर,
मूर्ख लोग दोनों को ही अपना समझते हैं ;

अब इसका परिणाम क्या होगा?
परेशानियां तो होंगी ही, और इसके अलावा,
जो कुछ भी एकत्रित किया गया है, वह लुप्त हो जाता है;
मरने के बाद उनके लिए कोई स्वर्ग नहीं है:
क्या अब वे इससे बर्बाद नहीं हो जाते ?
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
780. <' एक आदमी खुद का उपभोग कैसे करता है ?
वह अपने दोस्तों को कैसे खो देता है?
वह सच्चे विचार से कैसे विमुख हो जाता है ?
वह स्वर्ग जाने में कैसे असफल हो सकता है?
लालच के कारण मनुष्य अपना ही विनाश कर लेता है।
लालच के कारण वह अपने दोस्तों को खो देता है ।

780/1 'खानाती - उपभोग करना': इस अर्थ में पी.ई.डी. में नहीं; तुलना करें विस. 145 और 527; नेटीए अनदेखा करता है।
780/2 ' विवत्तते —से मुड़ता है': नेटिआ ने निवत्तति के साथ व्याख्या की है , न कि वत्तति के साथ जैसा कि पीटीएस नेट्टी इंडेक्स (पृष्ठ 280, नोट 1) में कहा गया है ।

[पृष्ठ 179]
व्यवस्था का प्रतिरूप
लालच के कारण वह सच्चे विचार से विमुख हो जाता है।
लालच के कारण वह स्वर्ग जाने में असफल रहता है ।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
781. जब मूर्ख अपनी मूर्खता दिखाते हैं
वे स्वयं अपने ही शत्रु हैं;
क्योंकि वे बुरे काम करते हैं, जो
इसका बुरा परिणाम होगा।
[132] यह कार्य ठीक से नहीं किया गया है, जिसके लिए
जब काम हो जाता है तो पछतावा जरूर होता है।
जिसका परिपक्वन होता है
आँसू भरे चेहरे से शोक मनाना > (ध. 66; एस. i, 57).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
782. < भिक्षु की अवस्था में अयोग्य व्यक्ति को पाया जाता है
इन्हें पाना भी कठिन है और सहना भी कठिन है;
वहाँ बहुत सी परेशानियाँ हैं
जिसमें मूर्ख को दुःख हो सकता है > (एस. i, 7).
क्योंकि यदि कोई मूर्ख अपने मन को भ्रष्ट कर ले तो
जबकि एक परिपूर्ण व्यक्ति व्याख्या करता है
कोई अन्य अर्थ या विचार,
इस प्रकार उसका जीवन निष्फल हो जाता है > ( )।
< 'मैं इस पीड़ा का वास्तव में हकदार हूँ, और इससे भी बदतर, हे आदरणीय महोदय; क्योंकि मैं कामवासना से मुक्त नहीं हूँ, मैंने असीम परिपूर्णों के लिए हृदय में घृणा पाली है '> ( ). 1

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
783. < फिर ऐसा कौन है जो जानता है कि वह सोचेगा
असीम को मापना?
मैं उसे मूर्ख, बेवकूफ समझता हूँ, जो कोशिश करता है
अमापनीय को मापना > (एस.आई. , 149).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
784. < एक बार जब कोई व्यक्ति जन्म ले लेता है
उसके मुंह के अंदर एक कुल्हाड़ी पैदा होती है।
जिससे मूर्ख स्वयं को चोट पहुँचाएगा
अपशब्द बोलकर > (एस. आई, 149).

782/1 शायद यह उद्धरण पद्य होना चाहिए, जैसा कि Bb में मुद्रित है।

[पृष्ठ 180]
पथप्रदर्शक
तेज धार वाली तलवार कभी अच्छी नहीं होती ।
या कालाहला का जहर
तो निश्चित रूप से एक आदमी को बर्बाद कर दो
जैसे कि अपशब्द > (जेडी. iii, 103)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
785. < जो निंदनीय की प्रशंसा करता है
या प्रशंसनीय निंदा करता है
उसने अपने मुंह से एक गेंद फेंकी , जो अशुभ साबित हुई।
एक ऐसा प्रयास जिसके माध्यम से उसे कोई आनंद नहीं मिलता।
पासे पर दुर्भाग्यपूर्ण चाल को तुच्छ समझना
इससे सबकी संपत्ति दांव पर लग जाती है।
खुद को भी शामिल करें; यह तो वाकई कहीं ज्यादा बुरा है।
क्या यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण थ्रो है?
इससे परम पूज्यों के प्रति हृदय कठोर हो जाता है।
एक लाख छत्तीस
निरब्बुदास और पाँच अब्बुदास
कई वर्षों तक दुष्ट नरकीय अवस्थाओं में
[133] उन पुरुषों को काट डालो जिनकी महान आत्माएँ निंदा करती हैं
अपने हृदय और वाणी को इस प्रकार व्यवस्थित करने के लिए > (स्न. 658-60)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
786. जब कोई व्यक्ति लोभ की सेवा में समर्पित हो
वह दूसरों की निंदा करने वालों को ही अपनी ओर आकर्षित करता है।
वह अविश्वासी, नीच है, और वाणी का न्याय नहीं कर सकता ।
लालची और द्वेषपूर्ण भी।
हे अपशब्द बोलने वाले, हे धोखेबाज, हे नीच व्यक्ति,
विनाशक और बागी, बुराई करने वाला,

हे दुष्ट, पापी और गटर के पुत्र,
अभी यहाँ ज्यादा कुछ मत बोलो, तुम नरक के ही हो। 2
तुमने दूसरों के दुर्भाग्य के लिए प्रदूषण फैलाया है ।

785/1 ' विसिनाटी -कास्ट्स': शाब्दिक रूप से (दुर्भाग्य को 'अशुभ थ्रो' के रूप में) संचित करना:
हालांकि यह पत्र v के अंतर्गत PED में शामिल नहीं है , लेकिन काली (qv) के अंतर्गत इसमें शामिल है।
786/1 यहां अनारियो, लेकिन एसएन पर। 663 कादारियो; यहाँ अवजातकपुत्त भी है ,
जहां एस.एन. 664 में अवजाता है। मार्ग यो लोभगुने । . . को । . . पेसुनियाम
anuyutto श्लोक में होना चाहिए जैसा कि Sn. 663 में है।
786/2 'नरक' का प्रयोग यहाँ निरय को व्यक्त करने के लिए किया गया है (टिप्पणी संबंधी व्याख्या के लिए, एमए देखें)।
(ii, 37)। लेकिन बुद्ध की शिक्षाओं में, नरक, स्वर्ग और बाकी सब चीजों की तरह ही है।
जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह क्षणभंगुर है, और वहाँ कोई भी अस्तित्व शाश्वत नहीं है (देखें एम. सुत्त) ।
130). इसके अलावा, एक प्राणी नरक में भी स्वर्ग की तरह अपना अस्तित्व स्वयं बनाता है, ऐसा करते हुए
अपने कार्यों से, जिनके भावी परिणाम वह अपने अभिनय में स्वयं बनाता है, और वह
किसी और द्वारा वहाँ नहीं भेजा जा सकता। यहाँ 'पापी' (काली के लिए) का अर्थ भी केवल यही है।

[पृष्ठ 181]
व्यवस्था का प्रतिरूप
आपने सत्य की निंदा की है और घृणित कार्य किए हैं;
आपके द्वारा किए गए सभी कुकर्मों के माध्यम से,
आप गड्ढे में लंबे समय तक रहने वाले हैं > (Sn. 663-5)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
2. नैतिकता
787. इसमें, नैतिकता से संबंधित विषय किस प्रकार का है?
विचार मन द्वारा उत्पन्न होते हैं ।
उनका नियंत्रण दिमाग के हाथों में होता है, और वे दिमाग से ही निर्मित होते हैं।
यदि कोई शांत मन वाला व्यक्ति
बोलने या कार्य करने की आदत होने पर, आनंद मिलता है
श्योर उसके पीछे-पीछे चलता है, जैसा कि वह भी करता है।
उसकी परछाई उसका साथ देती है > (पे 24, 163; ध. 2; cf. §768).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
788. शाक्य महानामा ने भगवान बुद्ध से कहा: 'आदरणीय महोदय, यह कपिलवस्तु नगर सफल, समृद्ध, घनी आबादी वाला और लोगों से भरा हुआ है, इसकी गलियाँ भीड़भाड़ वाली हैं। अब, आदरणीय महोदय, ऐसा होता है कि जब मैं भगवान बुद्ध या पूज्य भिक्षुओं को प्रणाम करता हूँ, तो शाम को कपिलवस्तु जाता हूँ, और वहाँ मुझे शायद एक अनियंत्रित हाथी, या एक अनियंत्रित घोड़ा, या एक अनियंत्रित रथ, या एक अनियंत्रित बैलगाड़ी, या एक अनियंत्रित व्यक्ति मिलता है । उस समय , आदरणीय महोदय, भगवान बुद्ध द्वारा प्रेरित ध्यान भूल जाता है, सत्य विचार द्वारा प्रेरित ध्यान भूल जाता है, समुदाय द्वारा प्रेरित ध्यान भूल जाता है। आदरणीय महोदय, मैं सोचता हूँ: यदि मैं उस शाम को चल बसूँ, तो मेरा गंतव्य क्या होगा, मेरा भविष्य क्या होगा?' -[134] 4 डरो मत, महानामा, डरो मत। तुम्हारी मृत्यु बुराई से मुक्त होगी , तुम्हारा चलना बुराई से मुक्त होगा। जब किसी श्रेष्ठ श्रोता के मन में चार विचार होते हैं, तो वह विनाश की ओर अग्रसर होता है, विनाश की ओर झुकता है। वे चार विचार क्या हैं? यहाँ एक श्रेष्ठ श्रोता, अपने अनुभव के आधार पर, प्रबुद्ध व्यक्ति में इस प्रकार विश्वास रखता है: 'भगवान बुद्ध ऐसे हैं क्योंकि वे सिद्ध हैं , ... [जैसा कि अनुच्छेद 296 में है] ... देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक, सच्चे विचार में प्रबुद्ध धन्य ...

इस श्लोक का तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो इतना 'दुर्भाग्यशाली' है कि वह अपने ही कल्याण के विरुद्ध इतना बड़ा कार्य करता है। अतः यह श्लोक किसी भी प्रकार से अभिशाप या निंदा नहीं है—नर्क में भेजना, जो कि असंभव है—बल्कि यह मात्र एक वर्णन और एक चेतावनी है कि दूसरे लोग लालच, घृणा और भ्रम के कारण वही दुखद गलती न दोहराएँ।
787/1 4 "कार्य के नियम और उसके परिपक्व होने में विश्वास के माध्यम से शांत" (नेटी ए. 192)।

[पृष्ठ 182]
पथप्रदर्शक
[जैसा कि §297 में है] ... समुदाय में ... [जैसा कि §298 में है] ... और तब वह श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा वांछित गुणों से परिपूर्ण होता है, अक्षुण्ण ... [जैसा कि §299 में है] ... और एकाग्रता के लिए सहायक। मान लीजिए कि एक वृक्ष पूर्व की ओर झुका हुआ है, पूर्व की ओर मुड़ा हुआ है, पूर्व की ओर झुका हुआ है, तो जड़ से काटे जाने पर वह किस ओर गिरेगा? - ' आदरणीय महोदय, वह वहीं गिरेगा जहाँ वह झुका हुआ है, वहीं गिरेगा जहाँ वह मुड़ा हुआ है।' - 6 इसी प्रकार, महानामा, जब एक श्रेष्ठ श्रोता के मन में चार विचार होते हैं, तो वह विनाश की ओर प्रवृत्त होता है, वह विनाश की ओर प्रवृत्त होता है, वह विनाश की ओर झुका हुआ होता है। डरो मत, महानामा , डरो मत। तुम्हारी मृत्यु बुराई से मुक्त होगी, तुम्हारा अंत बुराई से मुक्त होगा (तुलना करें पतरस 24, 170; शमूएल 5, 371)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
789. <छड़ी से क्रूरतापूर्वक दुर्व्यवहार न करें
वे प्राणी जो केवल सुख की इच्छा रखते हैं,
जब वह भी अपनी ही खुशी की तलाश करता है
यहाँ से प्रस्थान करते हुए वह इससे मिलता है> (उद. 12; ध. 132; cf. §772).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
790. जब मवेशी नदी पार करते हैं
और बैल का नेता दाईं ओर जाता है
फिर बाकी सब ठीक हो जाते हैं
क्योंकि गाइड सही दिशा में जा रहा है।
मानव जाति में भी यही स्थिति है;
यदि नियुक्त शासक कार्य करता है
सच्चे विचार के अनुसार,
बाकी सभी लोगों की हालत तो और भी ज्यादा होगी;
जब राजा राजा होता है तो पूरा राज्य समृद्ध होता है।
सच्चे विचार का अनुसरण करने वाले कार्य > (ए. ii, 7जी; cf. §773)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
791. भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन के अनाथपिंडिका उद्यान में निवास कर रहे थे। उस समय कई भिक्षु भगवान बुद्ध के लिए वस्त्र बनाने में लगे हुए थे , [135] [यह सोचकर] 'वस्त्र तैयार होने पर भगवान बुद्ध भ्रमण पर जाएंगे। ' उसी समय अधिकारी, इसिदत्त और पुराण, किसी कार्य के लिए साकेत में ठहरे हुए थे। उन्होंने सुना: 'ऐसा प्रतीत होता है कि कई भिक्षु भगवान बुद्ध के लिए वस्त्र बनाने में लगे हुए हैं [यह सोचकर] "वस्त्र तैयार होने पर भगवान बुद्ध भ्रमण पर जाएंगे ।"' तब उन्होंने मार्ग पर एक व्यक्ति को नियुक्त किया, [उसे यह कहते हुए] 6 हे सज्जन, जब तुम भगवान बुद्ध को पूर्ण और सिद्ध अवस्था में आते हुए देखो

[पृष्ठ 183]
व्यवस्था का प्रतिरूप

' प्रबुद्ध हो जाओ , फिर हमें बताओ।' जब उस व्यक्ति ने दो-तीन दिन प्रतीक्षा की, तो उसने दूर से भगवान बुद्ध को आते देखा। उन्हें देखकर वह इसिदत्त और पुराण के पास गया और उनसे कहा, 'महोदय , भगवान बुद्ध सिद्ध और पूर्ण रूप से प्रबुद्ध होकर आ रहे हैं। अब आप अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।' तब अधिकारी, इसिदत्त और पुराण, भगवान बुद्ध के पास गए और प्रणाम करने के बाद उनके पीछे-पीछे चलने लगे। तब भगवान बुद्ध सड़क से हटकर एक पेड़ की जड़ में बने आसन पर बैठ गए। अधिकारी, इसिदत्त और पुराण ने प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। ऐसा करने के बाद उन्होंने कहा, 'आदरणीय महोदय, जब हमने सुना कि भगवान बुद्ध श्रावस्ती से कोसल पर्वतमाला में विचरण करने जा रहे हैं, तो हम इस अवसर पर असंतुष्ट हैं और हमें इस बात का दुख है कि भगवान बुद्ध हमसे दूर रहेंगे।' और जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध श्रावस्ती से कोसलों के बीच भ्रमण करने गए हैं, तो हम उस अवसर पर असंतुष्ट होते हैं और शोक करते हैं कि भगवान बुद्ध हमसे दूर हैं। जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध काशी और मगध के लोगों के बीच भ्रमण करने जा रहे हैं, तो हम उस अवसर पर असंतुष्ट होते हैं और शोक करते हैं कि भगवान बुद्ध [136] हमसे दूर रहेंगे। और जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध काशी और मगध के लोगों के बीच भ्रमण करने गए हैं, तो हम उस अवसर पर काफी असंतुष्ट होते हैं और शोक करते हैं कि भगवान बुद्ध हमसे दूर हैं। जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध मगध और काशी के लोगों के बीच भ्रमण करने जा रहे हैं, तो हम उस अवसर पर असंतुष्ट होते हैं और शोक करते हैं कि भगवान बुद्ध हमसे दूर रहेंगे। और जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध मगध और काशी के लोगों के बीच भ्रमण करने गए हैं, तो हम उस अवसर पर असंतुष्ट होते हैं और शोक करते हैं कि भगवान बुद्ध हमसे दूर हैं। लेकिन जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध कोसलों में विचरण करते हुए सावत्थी लौट रहे हैं, तो हम उस अवसर पर संतुष्ट होते हैं और प्रसन्न होते हैं कि भगवान बुद्ध हमारे निकट होंगे। और जब हम सुनते हैं कि भगवान बुद्ध सावत्थी में जेतवन, अनाथपिंडिका उद्यान में निवास कर रहे हैं, तो हम अत्यंत संतुष्ट होते हैं और प्रसन्न होते हैं कि भगवान बुद्ध हमारे निकट हैं।' — 'यह, अधिकारियों, इसलिए है क्योंकि गृहस्थ जीवन एक सीमित और मैला स्थान है; परन्तु परलोक का जीवन खुला है: इसलिए आपके लिए सजग रहना पर्याप्त है' — 'आदरणीय महोदय, हमारे पास इससे भी अधिक बाध्यकारी और बाध्यकारी मानी जाने वाली एक बाध्यता है।' — 'आपकी वह कौन सी बाध्यता है जो इससे भी अधिक बाध्यकारी और बाध्यकारी मानी जाती है?' — 'हे पूज्यवर, जब कोसल के राजा पसेनादि जुलूस मैदान में जाते थे, तो हमें यह सुनिश्चित करना होता था कि कोसल के राजा पसेनादि के हाथी उनके सवार होने के लिए तैयार हों , और फिर हमें राजा की प्रिय पत्नियों को उनके सामने एक-एक करके बिठाना होता था।'

[पृष्ठ 184]
पथप्रदर्शक

पीछे ... आदरणीय महोदय, उन महिलाओं की सुगंध किसी अभी-अभी खोले गए इत्र के डिब्बे जैसी है, जैसा कि राजाओं के लिए उपयुक्त सुगंधों से सजी महिलाओं से अपेक्षित है। और आदरणीय महोदय, उन महिलाओं का शारीरिक स्पर्श तुला-कपास या कपास-कपास जैसा है , जैसा कि सुख-सुविधाओं में पली-बढ़ी राजाओं की पुत्रियों से अपेक्षित है। आदरणीय महोदय, उस अवसर पर हाथी की रक्षा करनी होगी, महिलाओं की रक्षा करनी होगी और हमें भी अपनी रक्षा करनी होगी। फिर भी हमने कभी उन महिलाओं के प्रति बुरे विचार उत्पन्न होते नहीं देखे हैं। आदरणीय महोदय, हमारे पास इससे भी अधिक बाध्यकारी और बाध्यकारी यह बाध्यता है - ' अधिकारियों, ऐसा इसलिए है क्योंकि गृहस्थी जीवन एक सीमित और गंदा स्थान है; परन्तु बाहर का जीवन खुला है: इसलिए आपके लिए सतर्क रहना पर्याप्त है।' जब एक श्रेष्ठ श्रोता चार विचारों को ग्रहण कर लेता है, तो वह ज्ञान की धारा में प्रवेश कर जाता है; वह विनाश के विचार से विभाज्य नहीं रह जाता; वह सत्य के प्रति आश्वस्त हो जाता है और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर होता है। वे चार विचार क्या हैं? यहाँ एक सुशिक्षित श्रेष्ठ श्रोता, अपने अनुभव से, भगवान बुद्ध में इस प्रकार विश्वास रखता है: 'भगवान बुद्ध ऐसे हैं क्योंकि ... [जैसा कि अनुच्छेद 296 में है] ... धन्य हैं ... सत्य विचार में ... [जैसा कि अनुच्छेद 297 में है] ... समुदाय में ... [जैसा कि अनुच्छेद 298 में है] ... 'संसार के लिए पुण्य का क्षेत्र'। और फिर वह अपने हृदय को दोष और लोभ से मुक्त रखते हुए, उदार , खुले हाथों से, त्याग में प्रसन्नता का अनुभव करते हुए, दान की अपेक्षा रखते हुए और देने एवं साझा करने में आनंदित होते हुए गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है । इन चार विचारों को ग्रहण करने वाला श्रेष्ठ श्रोता ज्ञान की धारा में प्रवेश कर चुका होता है; वह विनाश के विचार से विभाज्य नहीं रह जाता; वह सत्य के प्रति आश्वस्त हो जाता है और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर होता है। अब, अधिकारियों, आप अपने अनुभव से प्रबुद्ध व्यक्ति में इस प्रकार विश्वास रखते हैं: ... सच्चे विचार में इस प्रकार: ... समुदाय में इस प्रकार: ... और कुल में जो कुछ भी देने योग्य है, वह सद्गुणी लोगों से नहीं रोका जाता जो अच्छाई के विचार से अविभाज्य हैं। आप इसे कैसे समझते हैं: कोसलन में

कितने लोग आपके समान देने और साझा करने में हैं? V—'हमारे लिए, आदरणीय महोदय, यह लाभ है, हमारे लिए यह बहुत बड़ा लाभ है कि भगवान बुद्ध हमारे बारे में यह जानते हैं' > (एस.वी , 348f.)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
792. [138] < मैंने केवल एक फूल दिया;
उसके बाद अस्सी असंख्य युग बीतेंगे।
मैं देवताओं और मनुष्यों के बीच रहता था।
विलुप्ति तक पहुँचने के लिए, शेष निशान छोड़ते हुए > (तुलना करें थैग. 96)। 1
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।

792/1 KhpA. 222 पर इसी तरह का अप्रमाणित उद्धरण देखें।

[पृष्ठ 185]
व्यवस्था का प्रतिरूप
793. < एक ज्ञान वृक्ष के नीचे
चौड़ी, पेड़ों से भरी और हरी-भरी चमकती हुई।
जब मैं ध्यान में बैठा था
मुझे ऐसा संकेत मिला मानो कोई प्रबुद्ध व्यक्ति संकेत दे रहा हो।
आज ये तीस युग...
मैं पास हो चुका हूँ , और तब से मैं कभी नहीं गया हूँ।
एक बुरे गंतव्य की ओर ,
और ट्रिपल साइंस की पुष्टि हो चुकी है ।
उस चिन्ह का नैतिक > (तुलना करें थाग. 217-18).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
794. भिक्षा मांगने के लिए सबसे आगे रहने वाले पुरुष
कोसला की राजधानी
भोजन से पहले , दयालु ,
शांत रहने वाला , सभी प्रकार की लालसाओं का उपचार करने वाला।
एक आदमी के हाथ में एक माला थी
हर प्रकार के फूलों से सुशोभित;
उन्होंने पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति को देखा।
भिक्षुओं के समुदाय के साथ
राजा के राजमार्ग पर प्रवेश करते हुए ,
देवताओं और मनुष्यों द्वारा सम्मानित।
प्रसन्न , हृदय में आत्मविश्वास के साथ ,
वह भगवान बुद्ध के पास गया।
फूलों की सुगंध से भरी माला
कई आकर्षक रंगों के साथ समलैंगिक
उन्होंने आस्था के साथ अपने हाथों से दान दिया।
पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति को अनुग्रह प्रदान करने के लिए ।
फिर बुद्ध के मुख से यह बात निकली
धधकती लपटों के समान रंग के साथ

एक हजार किरणों की एक किरण ,
जैसे उसके मुंह से बिजली चमक रही हो।
उसे दाईं ओर से घेरने के बाद
यह सिर के ऊपर तीन बार घूमा
सूर्य के रिश्तेदार के बारे में , और उस पर
उसके माथे से ओझल हो गया।
इस अद्भुत दृश्य को देखकर ,
यह अद्भुत और रोंगटे खड़े कर देने वाली बात है ,
आनंद ने भगवान बुद्ध से पूछा ,
अपना वस्त्र एक कंधे पर रखते हुए:
हे सर्वशक्तिमान, शांत प्रभु , कारण बताइए
इसलिए आपके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है।

[पृष्ठ 186]
पथप्रदर्शक
यह सच्चे आदर्श 1 को रोशन करेगा
यदि आप हमारी शंकाओं को दूर कर दें।'
फिर वह जो हमेशा तैयार रहता है
हर चीज के बारे में ज्ञान
[139] क्या बड़े आनंद ने उत्तर दिया था?
[जो वहाँ खड़ा था] संदेह में आश्चर्यचकित था
'यह आदमी, आनंद, क्योंकि उसने
उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा था।
कोई बुरा गंतव्य नहीं होगा
चौरासी हजार युगों तक।
और स्वर्गिक लोकों पर शासन करने के बाद
देवताओं में से दिव्य प्राणियों में से,
वह मनुष्यों में शासक होगा।
वह एक पूरे राज्य का राजा होगा ।
और अंत में वह आगे बढ़ेगा
सच्चे विचार के स्वयं के नियम को खोजना
और एकांतवासी प्रबुद्ध व्यक्ति बनो
वातंसक, जो सभी कामवासनाओं से मुक्त है।
यह कोई मामूली भेंट नहीं है
दृढ़ संकल्प के साथ बनाया गया
किसी आदर्श व्यक्ति पर भरोसा करना
पूर्णतः प्रबुद्ध, या उसका श्रोता।
ज्ञानी पुरुष असीम होते हैं।
असीमता ही उनका वास्तविक विचार है ।
उन लोगों के लिए असीमित फल जो रखते हैं
असीम में उनका विश्वास > ( ).

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
795. <' हे भिक्षुओं, मैं प्रबुद्ध व्यक्ति की दृष्टि से किसी व्यक्ति के मन में प्रवेश करता हूँ और समझता हूँ कि: इस व्यक्ति के आचरण, अभ्यास और मार्ग के अनुसार, यदि इस समय उसकी मृत्यु हो जाए, तो मानो उसे स्वर्ग में ले जाया जाएगा। ऐसा क्यों है? क्योंकि उसका हृदय आश्वस्त है। उसके हृदय के इसी विश्वास के कारण शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, व्यक्ति स्वर्ग में एक शुभ स्थान पर पुनः प्रकट होता है।' भगवान बुद्ध ने यही अर्थ बताया है। इसमें आगे कहा गया है:
यहां किसी व्यक्ति को पहचानकर
जिसका हृदय आत्मविश्वास से भरा हुआ था,

794/1 धम्मलोको को एक यौगिक के रूप में पढ़ें और धम्मस्सा अलोको के रूप में संकल्प करें।

[पृष्ठ 187]
व्यवस्था का प्रतिरूप
गुरु ने अर्थ स्पष्ट कर दिया था।
भिक्षुओं की उपस्थिति में इस प्रकार:
अब अगर ऐसा हो जाए कि वह व्यक्ति
ऐसे क्षण में मरने आया था
फिर वह स्वर्ग में पुनः प्रकट होगा।
अपने हृदय की बात प्रकट करके;
आत्मविश्वास से भरे प्राणियों के लिए
एक सुखद मंजिल की ओर।
मानो उसे अगवा कर लिया गया हो
और वहाँ रखा गया, ताकि इस तरह का एक बुद्धिमान व्यक्ति
शरीर के विघटन के बाद
स्वर्ग में प्रकट होता है
मैंने सुना है कि भगवान बुद्ध ने यही अर्थ बताया था (तुलना करें इति. 13f.; तुलना करें §777)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
796. [140] < नाव पर सवार एक महिला थी
सोने की छतरी फैली हुई है ।
उसने अपना हाथ पूल में डुबो दिया।
और इसके साथ एक कमल का फूल तोड़ा> (Vv. p. 4).
आपमें जो सुंदरता है, वह कहाँ से आती है?
आपके व्यक्तित्व की चमक कहाँ से आती है?
ऐसा लगता है मानो सारी दौलत तुम्हारी ओर ही आ रही हो।
आपके मन में जो भी इच्छा हो;
हे देवता, जब मुझसे पूछा जाए तो मुझे बताइए,
इस फल को प्राप्त करने वाली क्रिया क्या है?
देवता अत्यंत प्रसन्न हैं,
इस प्रकार देवताओं के राजा ने उनसे प्रश्न किया।
उत्तर देते हुए उन्होंने इस प्रकार जवाब दिया।
सक्का के प्रश्न के उत्तर में, जैसा कि मैंने सुना:
'जब मैं यात्रा पर था'

मैंने एक बेहद खूबसूरत मंदिर देखा।
जिसमें मेरे हृदय को विश्वास था
कासापा में, जो बहुत प्रसिद्ध है ।
मैंने वहां कमल के फूल अर्पित किए।
अपने हाथों से पूरे भरोसे के साथ।
यही उस कर्म का फल है, यही उस कर्म का फल है।
जो लोग पुण्य कमाते हैं, उन्हें प्राप्त होता है > ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।

[पृष्ठ 188]
पथप्रदर्शक
797. < दान पर बात , सद्गुण पर बात , स्वर्ग पर बात> (एम. आई, 379), <योग्यता पर बात , योग्यता के परिपक्व होने पर बात > ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
798. इसके अलावा, जिन पुरुषों ने निर्माण में मदद की है
पृथ्वी-स्मारक समर्पित किए गए
उन लोगों के लिए जो दस शक्तियों का उपयोग करते हैं
स्वर्ग के आनंद में बने रहो > ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
799. < सभी का शारीरिक रूप ईश्वर के पुत्र जैसा है
और सुंदर सुडौलपन के आशीर्वाद से ,
मिट्टी को पानी से अच्छी तरह गीला करके तैयार कर लें।
और कासापा के लिए एक स्मारक का निर्माण करें।
सुंदर अंगों वाली महिलाओं , यह एक ऋषि के लिए बनाया गया मंदिर है।
दस शक्तियों से परिपूर्ण, सत्य के मार्ग पर चलने वाला:
ये देवता और वे मनुष्य हैं जो आत्मविश्वास के साथ काम करते हैं
इसके बाद बुढ़ापे और मृत्यु से मुक्ति मिलेगी > ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
800. < यह वास्तव में एक बहुत बड़ी बात थी
कि मैं स्मारक पर
महानतम ऋषि को समर्पित
[141] चार लिली और एक माला रखी ।
आज ये तीस युग बीत चुके हैं।
और तब से मैं कभी नहीं रहा।
एक बुरे गंतव्य की ओर;
मैंने गुरु के स्मारक का सम्मान किया > ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
801. < मैंने एक बार उस व्यक्ति के स्मारक का सम्मान किया जिसने पहना था
एक महान व्यक्ति के बत्तीस लक्षण होते हैं,
विश्व का सहायक, युद्ध में विजयी,
जिसके लिए मैं एक लाख युगों से आनंदित हूँ ।
इस प्रकार मैंने पुण्य संचित किया।

और इस पुण्य के फलस्वरूप ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त हुआ।
मुझे उस पूरे समय राजाओं का काम करना था।
बिना कभी विनाश की ओर जाए । [अब]
मेरा हृदय ऐसा है कि मैंने पूर्ण रूप से प्राप्त कर लिया।

799/1 < 7 , Ba और Bb वद्धेथा पढ़ते हैं .

[पृष्ठ 189]
व्यवस्था का प्रतिरूप
उस व्यवस्था में [समझ की] वह आँख
उस महान व्यक्ति के बारे में जिसने जंगली जानवरों को वश में किया;
मेरा दिल मुक्त हो गया है , और अब लता भी छंट गई है ।
( )•
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
802. < यह चावल की केवल एक समाका माप थी 1
जो मैंने एक ज्ञानी संन्यासी को दिया था ,
जिसका हृदय पाँचों निर्जन क्षेत्रों से मुक्त हो गया था , 2
जो निष्कलंक , बिना किसी संघर्ष के पालन करते रहे ,
और उसके दिल में कोई आसक्ति नहीं थी। मुझे ऐसा लगा।
उनमें अद्वितीय सच्चे आदर्श का वास है।
और मैंने अपना मन उसी सच्चे विचार की ओर लगाया:
मुझे उन लोगों से मिलने दो जो इस प्रकार रहते हैं >
किसी भी प्रकार के प्राणी के प्रति बिल्कुल उदासीन।
फिर उस क्रिया के परिपक्व होने के कारण
क्या मैंने कुरु वंश में हजार जन्म लिए थे?
वे दीर्घायु प्राणी जो किसी भी चीज़ को 'मेरा' नहीं कहते,*
जो ऐसी उपलब्धियां हासिल करते हैं जिन्हें वे कभी नहीं खोते।
और उस क्रिया के परिपक्व होने के कारण
तीस में से मेरे एक हजार बच्चे हुए थे , 5
जिन लोगों के शरीर विशिष्ट हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:
कई पुष्पमालाओं से सजे होने के लिए प्रसिद्ध।
और उस क्रिया के परिपक्व होने के कारण
मेरा हृदय पाँचों निर्जन क्षेत्रों से मुक्त हो गया है ।
निर्मल , मैं उन लोगों से मिला जो अपने अंतिम शरीर को धारण किए हुए थे ।
[142] और जो दुख और सुख दोनों से परे जा चुके हैं; 6
मुझे समझ आ गया कि उस परिपूर्ण व्यक्ति ने क्या कहा था:
' सद्गुणी पुरुषों की जो इच्छा होती है, वह उन्हें मिल ही जाती है। '
जैसा मेरे दिमाग ने सोचा था
ऐसा ही हुआ। यही मेरा आखिरी अस्तित्व है > ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।

802/1 नेट्टिया (पृ. 196) में समकपट्टोडरियामट्टम पढ़ा जाता है और इसका विस्तार समक-तिंडनम नालिक-ओदाना-मट्टम तक होता है।
802/2 'हृदय के जंगल' (चेतो-खिला) के लिए एम. सुत्त 16 देखें ।
802/3 1 कुरुसु - कुरुओं में से यहाँ उत्तरा-कुरु का तात्पर्य उत्तरा-कुरु से है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे उत्तरा-कुरु के 'उत्तरी महाद्वीप' में निवास करते हैं।
802/4 ' अममा —जो किसी को भी "मेरा" नहीं कहते': = अप्पारिगहा (नेत्तिया)। 802/5 तिदास: तवतिमसा का एक वैकल्पिक नाम , छह इंद्रिय-मंडल स्वर्गों में से दूसरा, देवताओं के शासक सक्का द्वारा शासित। देखें खंड 679।
802/6 नेट्टिया पैराफ्रेसेस हितहितासिहि कुसलकुसले विटीवेटेही (पृष्ठ 196) द्वारा ।

[पृष्ठ 190]
पथप्रदर्शक
803. < धन्य विजेता के इकत्तीस युग पहले
सिख धर्म असीम दृष्टि से अविचलित होकर जीवन व्यतीत करता था।
उनके भाई का नाम शिखंडी था।
बुद्ध और सच्चे विचार पर भरोसा रखना।
जब उस विश्वमार्गदर्शक का पूर्ण रूप से विलुप्त होना
राजा ने एक भव्य स्मारक का निर्माण करवाया।
लगभग एक चौथाई मील की दूरी पर, उस महान ऋषि के पास,
वह देवताओं का देवता, वह सर्वोपरि मनुष्य।
एक दिन एक आदमी वहाँ भेंट लेकर आया।
और जब उसने जंगली चमेली की एक टहनी भेंट की, 1
उसका एक फूल हवा के झोंके से गिर गया।
मैंने उसे उठाया और उसे वापस दे दिया।
तब उसने पूरे विश्वास के साथ कहा:
'यह फूल मैं आपको उपहार के रूप में देता हूँ।'
मैंने उसे वहीं पर ले लिया और उसे पेश कर दिया।
बार-बार प्रबुद्ध व्यक्ति का ध्यान करते हुए।
आज ये तीस युग बीत चुके हैं।
और तब से मैं कभी नहीं रहा।
एक बुरे गंतव्य की ओर , के माध्यम से
उस स्मारक पर रखा गया वह फूल > ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
804. < कपिला नाम का एक कस्बा है
ब्रह्मदत्त राजा से संबंधित
व्यस्त, आबादी वाला और भीड़भाड़ वाला इलाका
सफल, समृद्ध भी।
अब जब मैं वहां रोटी बेच रहा था 1
पौकालस के आखिरी घर में
[143] ने [सन्यासी] प्रबुद्ध व्यक्ति को देखा
पवित्र प्रसिद्धि के उपरित्थ।
प्रसन्न और आत्मविश्वास से भरे हृदय से
मैंने उस सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को आमंत्रित किया था।

अरित्था , नियमित भोजन के लिए
मेरे घर में उपलब्ध कराया जाए।

803/1 सी और बीबी में (सही) जातिसुमनम एक शब्द के रूप में है (बी ज्यादातर अपने शब्दों को विभाजित नहीं करता है); पी.ई.डी. में नहीं , जहाँ सुमन देखें।

803 /2 पति तस्सा को दो शब्दों के रूप में पढ़ें (यहाँ पति, पटति का अओरिएंट है); पतितस्सा को पटति के जेनेटिव पीपी. के रूप में पढ़ना यहाँ समझ में नहीं आता।

804/I कुम्मासा को यहाँ 'रोटी' के रूप में अनुवादित किया गया है क्योंकि विन . टीकाओं में इसे गेहूँ (यवा) से बना बताया गया है , इसलिए यह पी.ई.डी. में 'जंकेट' नहीं हो सकता ; शायद ' चपाती ' (या 'पास्ता') हो।

[पृष्ठ 191]
व्यवस्था का प्रतिरूप
और जब चाँद पूर्णिमा पर था
बाद में , कत्तिका महीने 2 में
मैंने कपड़ों का एक नया सेट निकाला
और उसने इसे अरित्था को भेंट किया।
मेरे दिल में बसे भरोसे को जानते हुए ,
सर्वश्रेष्ठ पुरुषों ने इसे स्वीकार किया ।
वह शांत व्यक्ति , जो सभी लालसाओं से मुक्त हो चुका है ,
दया और करुणा से प्रेरित होकर।
अब मेरे ऐसे अच्छे कर्म करने से
जैसा कि प्रबुद्धों ने प्रशंसा की है
मैंने देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच अपना जीवन व्यतीत किया।
जब तक मैं उस संपत्ति से गिर नहीं गया
एक धनी परिवार में पुनः प्रकट होना
बनारस शहर में निवास करने वाले;
मैं एक बैंकर का इकलौता बेटा था।
किसी भी जीवित प्राणी से अधिक प्रिय।
लेकिन जब मुझे विवेकाधिकार प्राप्त हुआ
तब एक ईश्वर के पुत्र ने मुझे उपदेश दिया:
मैंने अपने महल का [ऊपरी कक्ष] छोड़ दिया।
और वे ज्ञानी पुरुष के पास गए।
वह , गौतम , दयालु ,
उन्होंने ही मुझे सच्चा विचार सिखाया:
दुःख और उसका कारण
और वह क्या है जो सभी दुखों से परे है ?
और आर्य अष्टांगिक मार्ग
इससे दुख का अंत हो जाता है।
ये चार सत्य जो श्रेष्ठजनों द्वारा बताए गए हैं ,
उन्होंने सिखाया कि यही शांत व्यक्ति का सच्चा आदर्श है।
जब मैंने उसकी बात सुनी

मैं उस युग में प्रसन्नतापूर्वक निवास करता था;
मैंने क्वाइट में प्रवेश किया , इसके अलावा ,
दिन-रात लगातार;
और मुझमें मौजूद सभी कलंक

804/2 कट्टिका वर्षा ऋतु का चौथा महीना है; इसे 'वस्त्र ग्रहण करने का महीना' (सिवरा-मास) भी कहा जाता है। पीईडी वर्षा ऋतु को (कट्टिका के अंतर्गत) पाँच महीनों का बताता है, लेकिन क्या यह सच है? भारत में तीनों ऋतुओं में चार चंद्र महीने होते हैं, और जब कुछ वर्षों में एक 'अतिरिक्त महीना' (अधिक-मास) जोड़ा जाता है ताकि ऋतुओं को सौर वर्ष के अनुरूप लाया जा सके, तो इसे ग्रीष्म ऋतु (गिम्हा) के अंत में, आषाढ़ (उस ऋतु का चौथा महीना) के बाद , पाँचवें महीने के रूप में जोड़ा जाता है। जिस दिन पूर्णिमा होती है (दिन की शुरुआत भोर से मानी जाती है) वह महीने का अंतिम दिन होता है।

[पृष्ठ 192]
पथप्रदर्शक
मेरे भीतर, मेरे बाहर की वस्तुएँ
अंततः अलगाव हो गया
और वे फिर कभी नहीं उठे।
अब सभी कष्ट समाप्त हो गए हैं;
यह मेरा अंतिम शरीर भी है;
आगे कोई भविष्य नहीं है,
या जन्म और मृत्यु का चक्कर > ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
3. प्रवेश
805. इसमें प्रवेश से निपटने वाले धागे का प्रकार क्या है?
ऊपर , नीचे, हर तरह से मुक्त,
और यह बिल्कुल भी नहीं देखते हुए कि मैं यह हूँ
इस प्रकार मुक्त होकर उसने बाढ़ पार कर ली है।
पहले पार नहीं किया गया, अस्तित्व के नवीनीकरण न होने के कारण >
(§352; पे 24, 176)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
806. [144] आनंद, किसी भी गुणी व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि “मैं पश्चाताप कैसे न करूँ?” क्योंकि गुणी व्यक्ति का मूल विचार ही पश्चातापहीन होना है। पश्चाताप रहित व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि “मैं प्रसन्न कैसे रहूँ ?” क्योंकि पश्चाताप रहित व्यक्ति का मूल विचार प्रसन्न रहना है। प्रसन्न व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि “मैं प्रसन्न कैसे रहूँ?” क्योंकि प्रसन्न व्यक्ति का मूल विचार प्रसन्न रहना है। प्रसन्न व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि “मेरा शरीर शांत कैसे हो?” क्योंकि प्रसन्न व्यक्ति का मूल विचार शांत शरीर का होना है। शरीर से शांत व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि “मैं शारीरिक सुख कैसे महसूस करूँ?” क्योंकि शरीर से शांत व्यक्ति का मूल विचार शारीरिक सुख महसूस करना है। शारीरिक सुख महसूस करने वाले व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि “मैं एकाग्र कैसे होऊँ?” क्योंकि शारीरिक सुख महसूस करने वाले व्यक्ति का मूल विचार एकाग्र होना है । जो एकाग्रचित्त है, उसे यह चुनने की आवश्यकता नहीं है कि “मैं कैसे समझूँ कि चीजें कैसी हैं”, क्योंकि एकाग्रचित्त व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह समझे कि चीजें कैसी हैं। जो व्यक्ति समझ चुका है कि चीजें कैसी हैं, उसे यह चुनने की आवश्यकता नहीं है कि “मैं वैराग्य कैसे प्राप्त करूँ”, क्योंकि जो व्यक्ति समझ चुका है, उसके लिए यह आवश्यक है कि वह वैराग्य प्राप्त करे। वैराग्य प्राप्त करने वाले व्यक्ति को यह चुनने की आवश्यकता नहीं है कि (6) मुझमें कामवासना कैसे दूर होगी, क्योंकि वैराग्य प्राप्त करने वाले व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि उसमें कामवासना दूर हो जाए । जिस व्यक्ति में कामवासना दूर हो गई है, उसे यह नहीं चुनना है कि (6)

[पृष्ठ 193]

व्यवस्था का प्रतिरूप

मुझे यह चुनना नहीं पड़ता कि मैं कैसे मुक्त होऊँगा, क्योंकि जिस व्यक्ति में कामवासना समाप्त हो गई है, उसके लिए मुक्त होना आवश्यक है । किसी भी मुक्त व्यक्ति को यह नहीं चुनना पड़ता कि "मैं मुक्ति का ज्ञान और दर्शन कैसे प्राप्त करूँ?" क्योंकि मुक्त व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि उसे मुक्ति का ज्ञान और दर्शन हो (तुलना करें ए. वी, 2एफ.; तुलना करें पीई 44, 182)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।

807. [145] < जब सच्चे विचार जीवित व्यक्ति के समक्ष प्रकट होते हैं
जैसे गहन ध्यान से व्यक्ति दिव्य बन जाता है;
तब उसके सारे संदेह दूर हो जाते हैं क्योंकि वह समझ जाता है।
प्रत्येक विचार [उत्पन्न होने] का कारण कैसे होता है > (उद. 2; विन. i, 2)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।

808. < जब सच्चे विचार जीवित प्राणी के समक्ष प्रकट होते हैं
जैसे गहन ध्यान से व्यक्ति दिव्य बन जाता है;
तब उसके सारे संदेह दूर हो जाते हैं क्योंकि वह समझ जाता है।
उत्पन्न होने की शर्तों की समाप्ति > (उद. 2; विन. i, 2)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।

809. < तुम क्रोधित क्यों हो? कभी क्रोधित मत हो।
हे तिस्सा , क्रोध न करना ही तुम्हारा नियम होना चाहिए ।
दिव्य जीवन का जिया उद्देश्य मार्गदर्शन करना है।
क्रोध, अहंकार और तिरस्कार > (एस. ii, 282)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।

810. < मैं नंदा, जो वनवासी है , को कब देख पाऊंगा?
चिथड़े - चिथड़ों से बने वस्त्र पहनने वाला
बिना पहचाने अपनी जीविका जुटाते हुए
और कामुक इच्छाओं के प्रति उदासीन ?> (एस. ii, 281)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।

811. <' जो जलकर राख हो गया है, उसके साथ आनंद में लेटा रहता हूँ 1
जो चीज जलकर राख हो गई, उस पर शोक क्यों करते हैं?
एक विचार का विनाश
क्या आप घोषणा करते हैं , हे गौतम?
क्रोध पूरी तरह से शांत हो जाने पर व्यक्ति परमानंद की स्थिति में रहता है।
क्रोध शांत होने पर शोक नहीं होता।

811/1 अनेक वीडियो में से झटवा पढ़ना ।

[पृष्ठ 194]

पथप्रदर्शक

महान जन विनाश की प्रशंसा करते हैं
क्रोध, विष की जड़ के रूप में

मीठे स्वाद वाले अंकुर के साथ; उसके साथ
जला हुआ, दिव्य, कोई शोक नहीं करता' > (एस. i, 161; cf. एस. i, 41).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
812. <' एक बार उग जाने पर क्या मार डाला जाना चाहिए?
जन्म के समय किसे बाहर ले जाना चाहिए ?
दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को क्या त्यागना चाहिए?
और जब यह साकार हो जाता है, तो क्या होता है?
[146] 'गुस्से को जब उत्पन्न हो तो उसे मार देना चाहिए।
जब कामवासना उत्पन्न हो तो उसे नियंत्रित कर लेना चाहिए।
दृढ़ निश्चयी लोग अज्ञानता को अस्वीकार करते हैं।
और सत्य को साकार करना आनंद है ' > ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
813. <' जैसे नीचे गिरते हुए भाले से छेदा गया हो,
मानो उसका सिर आग से जल रहा हो,
एक सचेत भिक्षु आगे बढ़ता है
इंद्रिय सुखों के लिए वासना का त्याग करना।
' जैसे किसी गिरते हुए भाले से छेद दिया गया हो,'
मानो उसका सिर आग से जल रहा हो,
एक सचेत भिक्षु आगे बढ़ता है
देह-दृष्टिकोण का त्याग करना' > (एस. आई, 13, 53; पे 48). 1
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
814. < 'सभी भंडारों का अंत समाप्ति है,
निर्मित संरचना अंततः गिर जाती है।
ऐसा कोई नहीं है जिसे मृत्यु का सामना न करना पड़े।
और किसी को भी शाश्वत जीवन प्राप्त नहीं है।
तो फिर, मृत्यु के इस भय को याद रखते हुए,
पुण्य कर्म करो क्योंकि पुण्य कर्म से ही आनंद मिलता है ।

812/1 उपपतितम का पाठ C, Ba , Bb और NettiA के साथ किया गया है , उपपतितम के स्थान पर । 813/1 SA (NettiA द्वारा पुनरुत्पादित) बताते हैं कि प्रथम कथन कहने वाले देवता की त्रुटि यह है कि वे यह सोचते हैं कि इंद्रिय-इच्छाओं को पूरी तरह से त्यागने के बजाय (ध्यान द्वारा या उच्चतर स्वर्ग में पुनर्जन्म द्वारा) केवल दमन द्वारा त्याग देना ही पर्याप्त है। इसलिए बुद्ध अपने उत्तर में बताते हैं कि गलत दृष्टिकोण का त्याग करना आवश्यक है। अगला प्रश्न और उत्तर (§814) भी इसी प्रकार के हैं।

[पृष्ठ 195]
व्यवस्था का प्रतिरूप
सभी भंडारों का अंत उनकी कमी से होता है ।
निर्मित संरचना अंततः गिर जाती है ।
वहां कोई नहीं है, मार तो पड़नी ही है।
और किसी को भी अनन्त जीवन प्राप्त नहीं है ।
तो फिर , मृत्यु के इस भय को याद रखते हुए,
सांसारिक मामलों को छोड़ो, शांति की ओर देखो ' > ( ).

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
815. < शांत लोग ही आनंद में लीन रहते हैं,
वे कभी दुखी नहीं होते, माविधा।
जिनके मन ध्यान में आनंदित होते हैं > ( ).
जो बुद्धिमान है, एकाग्रचित्त है,
ऊर्जावान और आत्म-नियंत्रित,
बाढ़ को पार करना बहुत मुश्किल है।
इंद्रिय-इच्छाओं की धारणाओं का त्याग करते हुए,
हर तरह के बंधन से परे,
बड़े चाव से और साथ ही थकावट महसूस करते हुए,
वह कभी गहरे पानी में नहीं डूबता > (cf. एस. i, 53)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
816. जब उसे सच्चे विचार पर विश्वास होता है
जिसके द्वारा सिद्ध पुरुष विलुप्त हो जाते हैं।
सुनने की इच्छा से समझ प्राप्त होती है।
वह मेहनती और विवेकशील है।
सही काम करता है, वफादार है, सतर्क है।
वह इसकी समृद्धि का अनुभव करेगा।
और सच्चाई उसे प्रसिद्धि दिलाएगी।
और दान देने से उसे दोस्त मिल जाते हैं।
और जब इस दुनिया से अगली दुनिया में
वह जाता है, वह शोक नहीं जानता > (एस.आई , 214एफ.).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
817. <' तुम्हारे लिए, जिन्होंने यह सब अस्वीकार कर दिया है
एक पूर्णतः मुक्त भिक्षु के रूप में,

814/1 सी.एफ. उदानवर्ग I. 22 (चक्रवर्ती संस्करण, पृष्ठ 4):
सर्वि क्षयन्त निश्चयः पतनन्तः समुच्चरायः
समयोग विप्रयोगान्त मरणन्तं च जीवितम्
(लैमोटे, हिस्ट, डु बौद्धिज़्म इंडियन , पृष्ठ 548, एन. 21 उद्धृत), और महा-वास्तु III, पृष्ठ देखें। 152, 183; दिव्यावदान , पृ. 27, 100, 486. सी.एफ. भी डीएचपी. 148: मरणन्तं हि जीवितम्।
18

[पृष्ठ 196]
पथप्रदर्शक
यह अनुचित है कि आप
दूसरों को निर्देश देना ।
'सक्का, चाहे कुछ भी हो जाए
सहभागिता संभव हो सकती है,
उसके मन को इससे प्रभावित होने देना
यह किसी समझदार व्यक्ति को शोभा नहीं देता।

लेकिन यदि, स्पष्ट और आत्मविश्वासी मन से,
उसे किसी और को निर्देश देना चाहिए।
वह इससे किसी भी तरह से बंधा हुआ नहीं है ।
किसी भी भावना के उभार के साथ > (एस.आई , 206).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
818. वासना और घृणा का स्रोत क्या है?
आनंद, ऊब, भय: ये सब किससे उत्पन्न होते हैं?
और मन में आने वाले विचारों का सांचा कहाँ है?
क्या आपको वे लड़के पसंद हैं जो एक कौवे को [रस्सी से] लटकाते हैं?
वासना और घृणा का स्रोत यही एक है ।
आनंद, ऊब, भय: इन्हीं से वे खलिहान बनते हैं।
और यही मन में आने वाले विचारों का आधार है।
जैसे लड़के कौवे को रस्सी से लटकाते थे।
वे जन्म लेते हैं और [भावुक] स्नेह से अस्तित्व प्राप्त करते हैं।
जैसे बरगद के पेड़ के ठूंठ से अंकुर निकलते हैं;
और कामुक इच्छाओं के बीच दूर-दूर तक फैली हुई हैं
जैसे लकड़ी का एक तंबू मालुवा लता से ढका हो।
जब पुरुष इसे और इसके स्रोत को समझ जाते हैं
उन्होंने इसे रख दिया। और अब सुनो, हे आत्मा:
वे ही कठिन बाढ़ को पार करते हैं।
अस्तित्व के नवीनीकरण न होने के कारण पहले पार नहीं किया गया > (एसएन. 270-3)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
819. [148] <' हे भगवान बुद्ध, यह करना कठिन है; हे भगवान बुद्ध, यह बहुत
करने में मुश्किल !'
फिर भी, जो काम दीक्षा प्राप्त करने वालों के लिए कठिन होता है , वह वे कर लेते हैं।
भगवान बुद्ध ने कहा, 'कामदा'
'सद्गुणों में एकाग्रता के माध्यम से, स्वयं में स्थिर,

817/1 सी.एम. iii, 221 पर '3 सतिपथाना' देखें, विद्यार्थियों के प्रति इस समता के लिए।
818/1 'यह' का अर्थ है 'यह व्यक्तित्व' (नेटिआ 200)।
819/1 प्रत्येक मामले में 'वापी' पढ़ें और ईवा आपी में परिवर्तित करें। ' कामदा ' नाम का अर्थ है 'इंद्रिय-इच्छा में लिप्त'।

[पृष्ठ 197]
व्यवस्था का प्रतिरूप
सामग्री बेघर व्यक्ति को आनंद प्रदान करती है।
'हे भगवान बुद्ध , संतोष प्राप्त करना कठिन है!'
फिर भी जो चीजें मुश्किल से मिलती हैं, उन्हें भी वे पा लेते हैं ।
कामदा' भगवान बुद्ध ने कहा ,
'जिनका शांतिपूर्ण संज्ञान प्रसन्न करता है , जिनके मन
इसे दिन-रात कायम रखना आनंददायक है।
'हे भगवान बुद्ध , उनका ध्यान केंद्रित करना कठिन है! '

वे उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिन पर ध्यान केंद्रित करना कठिन होता है ।
कामदा' भगवान बुद्ध ने कहा ,
' जिनकी इंद्रियां शांत हों, उन्हें प्रसन्नता होती है ,'
मृत्यु ने जो जाल बनाया है उसे किसने काटा?
और इस प्रकार महान बनकर जाओ , कामादा।'
'हे भगवान बुद्ध , यह ऊबड़-खाबड़ रास्ता बहुत कठिन है!'
फिर भी, कामाडा , प्रतिष्ठित लोग वहीं जाते हैं जहाँ उन्हें जाना होता है।
यह कठिन , असमान है। जबकि नीच लोग
ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर सिर के बल गिर पड़ना,
उन लोगों के लिए जिन्हें उच्च पद प्राप्त है, वही मार्ग और भी सुगम है ।
चूँकि वे विषमता में भी सम हैं > (एस.आई, 48)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
820. < हे उपचारक जेतवन, जहाँ अक्सर लोग आते हैं
द्रष्टाओं के समुदाय द्वारा ,
जहां सच्चे विचार का अपना राजा रहता है ,
मेरी सारी खुशियों का स्रोत।
कर्मों द्वारा , विज्ञान द्वारा, सच्चे विचार द्वारा ,
सद्गुणवश , परम उत्कृष्ट जीवन ,
इन्हीं के द्वारा मनुष्य शुद्ध होते हैं।
और यह वंश या धन-दौलत के आधार पर नहीं है।
इसलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति , जब वह देखता है
अपने भले के लिए उसे जांच करनी चाहिए
तर्कसंगत तरीके से सच्चा विचार ,
ताकि वहां उसका शुद्धिकरण हो सके।
सारिपुत्त सबसे पहले
सद्गुण , समझ और शांति में:
अधिक से अधिक एक भिक्षु जो चला गया है
अक्रॉस केवल उसके बराबर हो सकता है > (एम. iii, 262; $. i, 33).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।
821. < किसी व्यक्ति को अतीत का पता नहीं लगाना चाहिए
या फिर भविष्य को लेकर चिंता करें:
अतीत तो बीत चुका है... लेकिन जो पीछे छूट गए हैं,

[पृष्ठ 198]
पथप्रदर्शक
भविष्य... लेकिन अभी तक अछूता।
[149] बल्कि, उसे अंतर्दृष्टि से देखने दो
वर्तमान में उत्पन्न प्रत्येक विचार:
यह जानना और इस बात का यकीन होना,
अजेय, अविचल।
आज ही प्रयास करना होगा:

कल मृत्यु आ सकती है, कौन जाने?
मृत्यु के साथ कोई समझौता नहीं
इससे उसे और उसके गिरोह को दूर रखा जा सकता है।
लेकिन जो इस प्रकार उत्साहपूर्वक प्रतीक्षा करता है,
दिन-रात, निरंतर,
शांत साधु ने कहा है, 'यह वही है।'
वह 'एक सौभाग्यशाली लगाव रखता है ' > (एम. iii, 187).

[पृष्ठ 199]

व्यवस्था का प्रतिरूप

822. भिक्षुओं, ये चार प्रमाणित हैं। वे चार क्या हैं? (1) कुछ विचार दृष्टि और समझ द्वारा प्रमाणित होते हैं । (2) कुछ विचार ध्यान और समझ द्वारा प्रमाणित होते हैं। (3) कुछ विचार शरीर और समझ द्वारा प्रमाणित होते हैं। (4) कुछ विचार समझ के द्वारा अनुभव किए जा सकते हैं और समझ द्वारा प्रमाणित भी होते हैं। (7) कौन से विचार दृष्टि और समझ द्वारा प्रमाणित होते हैं? दिव्य दृष्टि , जो शुद्ध और मनुष्य से परे है , दृष्टि और समझ द्वारा प्रमाणित होती है। (2) कौन से विचार ध्यान और समझ द्वारा प्रमाणित होते हैं? पूर्व जन्म का स्मरण ध्यान और समझ द्वारा प्रमाणित होता है। (3) कौन से विचार शरीर और समझ द्वारा प्रमाणित होते हैं? असाधारण सफलता और निर्वाण की शक्ति शरीर और समझ द्वारा प्रमाणित होती है। (4) कौन से विचार समझ के द्वारा अनुभव किए जा सकते हैं और समझ द्वारा प्रमाणित भी होते हैं? दोषों की समाप्ति का ज्ञान समझ के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है और समझ के माध्यम से सत्यापित किया जा सकता है > (cf. ए. ii, 182f.)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो प्रवेश से संबंधित है।

4. कुशल

823. इसमें, सिद्ध पुरुष से संबंधित धागे का प्रकार क्या है?
जिसकी चेतना चट्टान की तरह स्थिर है
और इसे कभी भी भयभीत नहीं किया जा सकता ।
कामवासना और कामवासना को उत्तेजित करने वाली चीजों से मुक्त है
किसी भी परेशानी से अविचलित;
जिसकी चेतना इस प्रकार अस्तित्व में बनी रहती है ,
तो फिर उसे कष्ट कैसे सहना पड़ेगा?
(उद. 41; पे 24-5, 190).

[150] यह उस प्रकार का धागा है जो कुशल व्यक्ति से संबंधित है।

824. पूज्य सारिपुत्त की दसवीं (?) गद्य व्याख्या भी उद्धृत की जा सकती है [एक भिक्षु के इस आरोप के उत्तर में कि उनका अपमान करने के बाद वे बिना क्षमा मांगे भटकने जा रहे थे] (ए. iv, 373-8; पे 25, 195)। 1

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।

[पृष्ठ 200]

पथप्रदर्शक

825. जब कोई धर्मगुरु बुराई के विचारों को अस्वीकार करता है,
'हा-हम' से परहेज करता है, 1 बेदाग, आत्म-नियंत्रित है,
और, विज्ञान में परिपूर्ण होकर , दिव्य जीवन व्यतीत करता है।
तब शायद वह अधिकार के तौर पर ' दिव्य' शब्द का प्रयोग कर सकता है ।
दुनिया में किसी का पक्षपात न करने वाले व्यक्ति के रूप में >

(उद. 3; विन. i, 3).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
826. < हे प्रबुद्ध जन, बंधनों से मुक्त,
बुराई के सभी विचारों को छोड़कर
हमेशा सचेत होकर चलना:
वे संसार में दिव्य हैं > (उद. 4).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
827. < जहाँ न तो पानी है और न ही धरती
न आग को, न हवा को कोई सहारा मिलता है।
वहाँ सफेद तारे कभी नहीं चमकते।
वहां सूर्य का गोला प्रदर्शित नहीं होता है।
वहां कभी पूर्णिमा की रोशनी नहीं पड़ती।
वहां अंधेरा नहीं पाया जा सकता।
जब उसे स्वयं इस बात का पता चल जाएगा,
शांति से दिव्य निर्मित वह स्थिर आत्मा,
तब वह निराकार और निराकार होता है।
और दर्द और सुख से भी मुक्त > (उद. 9).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
828. < जब कोई दिव्य आत्मा दूसरे छोर पर पहुँच जाती है
अपने सभी विचारों के संबंध में,
तब [यह निश्चित है कि] उसने उसे पीछे छोड़ दिया है।
यह जिन्न 'पक्कुला!' चिल्लाता है > (उद. 5).
यह उस प्रकार का 'थ्रेड' है जो 'एडेप्ट' से संबंधित है।
829. < उसे उसके आने में कोई खुशी नहीं थी,
और उसके जाने पर मुझे कोई दुख नहीं हुआ।
संगमजी आसक्ति (संग) से मुक्त हो गए हैं।
एक होकर , मैं कहता हूँ, दिव्य बनो > (उद. 6).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।

825/1 'हुहुंकाजातिको ब्रह्मनो? पर टिप्पणी की गई है 'जो गर्व से "हम, हम" कहता है', और ' निहुहुनको ' का अर्थ है उसके बिना।

[पृष्ठ 201]
व्यवस्था का प्रतिरूप
830. [151] < शुद्धता जल से नहीं आती;
बहुत से लोग उसमें नहाते हैं।
जिनमें सत्य और सच्चा विचार निहित हैं,
वह पवित्र है, वह दिव्य है > (यू डी. 6)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
831. < जब सच्चे विचार जीवित प्राणी के समक्ष प्रकट होते हैं
जैसे कोई गहन ध्यान से दिव्य बन जाता है,
फिर जहाँ वह खड़ा होता है, वहीं से मारा की [संलग्न] सेनाओं को तितर-बितर कर देता है।

जैसे सूर्य का गोला आकाश को प्रकाशित करता है > (उद. 2; विन. i, 2)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
832. < देखो वह कैसे अपनी सभी क्षमताओं को शांत करके आगे बढ़ता है।
उसके पास त्रिविध विज्ञान है, कुछ भी शेष नहीं है।
उसके परित्याग करने के कारण, सभी बंधन टूट गए।
वह बिना किसी संपत्ति के जाता है, चिथड़े-चिट्टे कपड़े पहनता है।
और अनेक शक्तिशाली देवता निकट आते हैं
उस [महान] शुद्ध नस्ल के लिए, जिसे दिव्य रूप से बनाया गया था, 1
किसने वंशानुगत सत्ता को अस्वीकार किया, और उन्होंने
यहां उन्हें पूरे विश्वास के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करें :
हे श्रेष्ठ पुरुष, मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ, आपको सम्मान मिले ।
हम किसके ध्यान क्षेत्र को नहीं जानते > ( ).
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
833. < वास्तव में, भिक्षुओं, ये [दो] साथी [यहाँ]
बहुत लंबे समय से साथ-साथ मिलते रहे हैं, 1
और उनकी आस्था का सच्चा लक्ष्य पूरा हो जाता है
उस आदर्श में जिसे प्रबुद्ध व्यक्ति ने घोषित किया था।
कप्पिना ने उन्हें अच्छी तरह से रास्ता दिखाया।
महानजनों द्वारा घोषित आदर्श में,

832/1 ' ब्रह्म-विमानम् ' में ' विमान ' शब्द सामान्य अर्थों में से किसी में भी प्रयुक्त नहीं प्रतीत होता है। नेत्तिया इसे अनदेखा करता है।
832/2 ' एन-इधा ' संभवतः नाम इधा के लिए है। जी निधम पढ़ता है ।
832/3 G और Bb के साथ पढ़ना yassa te ndbhijanama y अभिव्यक्ति yassa te एक दोहरा सर्वनाम है, cf. so' ham , tassa me , आदि।
833/1 ' समेटिका (विशेषण)—मिलना (एक साथ जाना)': पीडी केवल एक संदर्भ देता है, अर्थात् 'एसएन. 285' एस. ii, 285 (= यह संदर्भ) के लिए त्रुटि में , और कोई कारण बताए बिना समाहिता को प्रतिस्थापित करता है ; लेकिन सभी ग्रंथ और नेट्टिया समेटिका की पुष्टि करते हैं , जो संदर्भ के अनुकूल है और अगली पंक्ति में समेटी ('मिलता है') के साथ शब्द-क्रीड़ा को अर्थपूर्ण बनाता है ।

[पृष्ठ 202]
पथप्रदर्शक
और अब आखिरी बार वे एक शव को ले जा रहे हैं,
अपने घोड़े के साथ मारा पर विजय प्राप्त करने के बाद > (एस. ii, 285)।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
834. विलुप्ति सभी बंधनों से मुक्ति दिलाती है,
किसी भी हालत में उस तक नहीं पहुंचा जा सकता।
या तो कमजोरी के कारण
या फिर अपर्याप्त धैर्य के कारण।
[152] और इस युवा भिक्षु ने [यहाँ अब प्राप्ति कर ली है]
वह अवस्था जो मानव जाति में सर्वोपरि है
चूंकि अब वह अंतिम बार किसी शरीर को धारण कर रहा है,
अपने घोड़े के साथ मारा पर विजय प्राप्त करने के बाद > (एस. ii, 278)।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
835. < बदसूरत मोगराजा,
मोटे वस्त्र पहने हुए, कलश का ध्यान रखते हुए,
कलंक मिट गए, बंधन मुक्त हो गए,
कार्य पूर्ण हुआ, कलंक मुक्त।
ट्रिपल साइंस, जादुई शक्तियों के साथ,
लोगों के दिलों में पैठ बनाने की कुशलता;
और अब आखिरी बार वह एक शव को अपने कंधों पर उठाएगा,
अपने वाहन से मारा पर विजय प्राप्त करने के बाद > ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
836. <' भिक्षुओं, पूर्णतः सिद्ध, पूर्ण रूप से प्रबुद्ध, जो वैराग्य, कामवासना के नाश, निरासना और अजन्मा होने के कारण रूप के मामले में मुक्त हो जाता है, उसे "पूर्णतः प्रबुद्ध " कहा जाता है, [और] जो भिक्षु समझ के माध्यम से मुक्त हो जाता है, 1 जो वैराग्य, कामवासना के नाश, निरासना और अजन्मा होने के कारण रूप के मामले में मुक्त हो जाता है, उसे "समझ के माध्यम से मुक्त " कहा जाता है... [इसी प्रकार के अनुच्छेद] भावना... बोध ... संकल्प ... चेतना ... इसमें, पूर्णतः सिद्ध और पूर्ण रूप से प्रबुद्ध भिक्षु और समझ के माध्यम से मुक्त भिक्षु के बीच क्या अंतर है, क्या भिन्नता है, क्या भिन्नता है? V—'आदरणीय महोदय, हमारे विचार भगवान बुद्ध में निहित हैं , [भगवान बुद्ध उनके मार्गदर्शक और उनका घर हैं। यह अच्छी बात है कि इन शब्दों का अर्थ भगवान बुद्ध को समझ में आया । भगवान बुद्ध से सुनकर भिक्षु इसे याद रखेंगे। - 'तो सुनो, भिक्षुओं, और ध्यान दो।'

836/1 देखा गया। 946/2।

[पृष्ठ 203]
व्यवस्था का प्रतिरूप
मेरी कही हुई बातों को ध्यानपूर्वक सुनें।'—'पुनः आदरणीय महोदय, ' उन्होंने उत्तर दिया। भगवान बुद्ध ने यह कहा:— ' भिक्षुओं, पूर्णतः सिद्ध, पूर्ण ज्ञान प्राप्त भिक्षु अजन्मे मार्ग का प्रवर्तक, अजन्मे मार्ग का उद्घोषक, मार्ग - ज्ञाता, मार्ग-द्रष्टा और मार्ग में निपुण होता है । परन्तु जब उसके श्रोता मार्ग का अनुसरण करते हुए मार्ग से ओतप्रोत हो जाते हैं, तो वे उसका अनुसरण करते हैं। यही पूर्णतः सिद्ध, पूर्ण ज्ञान प्राप्त भिक्षु और बोध द्वारा मुक्त भिक्षु के बीच भेद, अंतर और भिन्नता है। (श्लोक 3, 65f.)
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है।
5. भ्रष्टाचार और नैतिकता
837. इसमें, भ्रष्टाचार और नैतिकता से संबंधित विषय किस प्रकार का है?
[153] < बारिश से ढकी हुई चीज़ें भीग जाती हैं,
लेकिन जो खुला होता है, वह उसे गीला नहीं करता।
तो जो ढका हुआ है उसे खोल दो,
वह बारिश तुम्हें कभी भीगने न दे > (उद. 56; पे 25, 202)।
'बारिश से ढका हुआ भीग जाता है' भ्रष्टाचार है। 'लेकिन जो खुला है, बारिश उसे नहीं भिगोती' नैतिकता है। 'इसलिए ढके हुए को खोल दो ताकि बारिश तुम्हें कभी न भिगोए' भ्रष्टाचार और नैतिकता दोनों का प्रतीक है। यह चर्चा भ्रष्टाचार और नैतिकता दोनों से संबंधित है।
838. < हे महाराज, संसार में चार प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं। वे कौन से चार हैं? गहरे सर्वोच्च मूल्य वाले अंधकारमय, उज्ज्वल सर्वोच्च मूल्य वाले अंधकारमय, गहरे सर्वोच्च मूल्य वाले उज्ज्वल, उज्ज्वल सर्वोच्च मूल्य वाले उज्ज्वल > (ए. 2, 85; एस. 1, 93; पे 25, 207)।
यहां दो प्रकार के व्यक्ति हैं: एक 'अंधकारमय सर्वोच्च मूल्यों वाला उज्ज्वल व्यक्ति' और दूसरा 'अंधकारमय सर्वोच्च मूल्यों वाला अंधकारमय व्यक्ति', जो भ्रष्टाचार से निपटते हैं, जबकि दो प्रकार के व्यक्ति हैं: एक 'अंधकारमय सर्वोच्च मूल्यों वाला उज्ज्वल व्यक्ति'

और दूसरा 'अंधकारमय सर्वोच्च मूल्यों वाला उज्ज्वल व्यक्ति', जो नैतिकता से निपटते हैं। यह भ्रष्टाचार और नैतिकता से संबंधित विषयवस्तु का प्रकार है।

[पृष्ठ 204]
पथप्रदर्शक
6. भ्रष्टाचार और घुसपैठ
839. इसमें, भ्रष्टाचार और घुसपैठ से निपटने वाले थ्रेड का प्रकार क्या है?
दृढ़ निश्चयी व्यक्ति इसे कभी मजबूत बंधन नहीं कहेगा।
लोहे से बना हुआ या लकड़ी या चमड़े की पट्टियों से युक्त।
लेकिन गहनों [और रत्नों] की लालसा से भरा लालच
और पत्नी और बच्चों के लिए भी चिंता ।
(धारा 194-5; पे 25, 214)
भ्रष्टाचार है, जबकि
दृढ़ निश्चयी लोग इन्हीं को मजबूत बंधन कहते हैं ।
जो मनुष्य को उदास कर देता है , सूक्ष्म होता है, जिससे छुटकारा पाना कठिन होता है;
लेकिन वे इसे भी तोड़ देते हैं और [स्वतंत्रता में] भटकते हैं।
और सभी कामुक इच्छाओं का त्याग कर दिया गया >
(धारा 194-5; पे 25, 214)
प्रवेश है।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार और घुसपैठ से संबंधित मुद्दों से निपटता है।
840. < जो कुछ भी चुना जाता है, जो कुछ भी कहा जाता है, और जो कुछ भी प्रवृत्तियों को आधार बनने दिया जाता है, वही चेतना का स्थिर बिंदु बन जाता है। जब कोई वस्तु होती है, तभी चेतना का आधार होता है। जब स्थिर बिंदु वाली चेतना [154] उस पर विकसित हो जाती है, तब भविष्य में अस्तित्व का नवीनीकरण होता है, तब जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु, दुःख और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा का भविष्य में वास्तविक अस्तित्व होता है। इसी प्रकार दुख की इस पूरी श्रेणी का उद्गम होता है। यदि कोई चुनाव नहीं करता और यदि कोई कहा नहीं जाता, बल्कि प्रवृत्तियों को आधार बनने दिया जाता है, तो वही चेतना का स्थिर बिंदु बन जाता है। जब कोई वस्तु होती है, तभी चेतना का आधार होता है।

840/1 यहाँ 'पकप्पति ' का अर्थ है 'दावा करना' या किसी एक पक्ष का समर्थन करना (द्वंद्वात्मकता के; देखें अनुरुद्ध और पतिविरवद्ध एम. i, 65 पर ; शब्द 'विकप्पना' द्वंद्वात्मकता के या तो/या का प्रतिनिधित्व करता है जो एक पक्ष लेने के लिए आमंत्रित करता है। यहाँ 'चुनता है', 'दावा करता है' और 'प्रवृत्तियों को अंतर्निहित होने देता है' के रूप में प्रस्तुत तीन शब्द ' सेतेति', 'पकप्पति ' और ' अनुसेति ' को (मनोवैज्ञानिक रूप से) इस प्रकार समझा जा सकता है: वह एक प्रारंभिक चुनाव करता है (एक धारणा के आधार पर), वह अपने व्यवहार में उस चुनाव को या तो पुष्टि या खंडन (मान्यता प्राप्त विचार की स्वीकृति या अस्वीकृति) द्वारा प्रमाणित करता है, वह प्रारंभिक चुनाव और उसकी धारणा को जागरूकता की सीमा से नीचे जाने देता है जहाँ से यह उसके व्यवहार को प्रभावित करता रहता है, बिना यह समझे कि क्यों (और उसके बाद के चुनाव, दावे और अंतर्निहित प्रवृत्तियों को प्रभावित करता है)।

[पृष्ठ 205]
व्यवस्था का प्रतिरूप
जब चेतना एक निश्चित बिंदु के साथ विकसित हो जाती है , तो भविष्य में अस्तित्व का नवीनीकरण होता है। जब भविष्य में अस्तित्व का नवीनीकरण होता है , तब जन्म , वृद्धावस्था और मृत्यु , दुःख और विलाप , पीड़ा , शोक और निराशा का भविष्य में वास्तविक अस्तित्व होता है । इसी प्रकार इस संपूर्ण प्रकार के दुःख की उत्पत्ति होती है (श्लोक 2, 65; पतरस 25, 218)। यही क्षय है।

लेकिन जैसे ही कोई चुनाव करना बंद कर देता है, कोई दावा करना बंद कर देता है और कोई प्रवृत्तियों को हावी नहीं होने देता , तब चेतना के लिए कोई स्थिर बिंदु नहीं रह जाता। जब कोई वस्तु नहीं होती, तभी चेतना का कोई आधार नहीं होता। जब चेतना , जिसका कोई आधार नहीं होता , आगे विकसित नहीं होती , तब भविष्य में अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं होता। जब भविष्य में अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं होता , तब जन्म , वृद्धावस्था और मृत्यु , दुःख और विलाप , पीड़ा, शोक और निराशा , भविष्य में समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार दुख की इस पूरी श्रेणी का अंत होता है ।(धारा 2, 65f.; पे 218)

यह प्रवेश है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

और प्रवेश से निपटना।

7. भ्रष्टाचार और निपुण

841. इसमें, भ्रष्टाचार और सिद्ध पुरुष से निपटने वाले धागे का प्रकार क्या है?

<'भिक्षुओं, अशिक्षित साधारण मनुष्य कहता है " समुद्र , समुद्र", फिर भी जल का वह विशाल भंडार , जल का वह विशाल विस्तार श्रेष्ठ भिक्षुओं के मार्गदर्शन (अनुशासन) में समुद्र नहीं है। आँख ही मनुष्य का समुद्र है , जिसकी लहरें रूप हैं ' > (श्लोक 4, 157)।

यह भ्रष्टाचार है।

< ' जो कोई भी रूपों की उस लहर पर विजय प्राप्त करता है , उसके बारे में कहा जाता है: उसने आँख के सागर को पार कर लिया है , उसकी लहरों , उसके भंवरों , उसके राक्षसों [155] और उसके दानवों के साथ; वह पार कर गया है , दूसरे किनारे पर चला गया है , और वह दृढ़ भूमि पर खड़ा है , जैसे कोई दिव्य' > (एस. iv, 157)।

यह सिद्ध पुरुष है।

<' कान मनुष्य का सागर है ... नाक... जीभ... शरीर... मन मनुष्य का सागर है , जिसकी लहरें विचार हैं' > (एस. iv, 157)।

यह भ्रष्टाचार है।

840/2 देखें धारा 304 और 306.

[पृष्ठ 206]

पथप्रदर्शक

<' जो कोई विचारों की उस लहर पर विजय प्राप्त कर लेता है, उसके बारे में कहा जाता है: उसने मन के सागर को , उसकी लहरों, उसके भंवरों , उसके राक्षसों और उसके दानवों के साथ पार कर लिया है; वह दूसरे किनारे पर चला गया है , और वह एक दिव्य व्यक्ति के रूप में दृढ़ भूमि पर खड़ा है' > (एस. iv, 157)।

यह सिद्ध पुरुष है।

भगवान बुद्ध ने यही कहा था। यह कहने के बाद , गुरु ने आगे कहा:

'जिसने अपने सभी राक्षसों , दानवों, लहरों के साथ समुद्र को पार किया ,'

उसके पार जाना बेहद कठिन है, उसके बारे में यही कहा जा सकता है:

उन्होंने विज्ञान का अंत खोज लिया; उन्होंने दिव्य जीवन जिया;

उसने दुनिया का अंत पा लिया है , और वह दूसरे छोर की ओर चला गया है ।

(एस. iv, 157).

यह सिद्ध पुरुष है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

और उस कुशल व्यक्ति से निपटना।

842. भिक्षुओं , संसार में प्राणियों को भटकाने और उन्हें कष्ट पहुँचाने के लिए छह प्रकार के प्रलोभन हैं। वे छह क्या हैं? कुछ रूप ऐसे हैं जो आँखों से दिखाई देते हैं , जिनकी कामना की जाती है , जो आकर्षक और मनभावन होते हैं , जो इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से जुड़े होते हैं और कामवासना उत्पन्न करते हैं। यदि कोई भिक्षु इन रूपों का आनंद लेता है, इनकी पुष्टि करता है और दृढ़ता से इनसे जुड़ा रहता है , तो उसके बारे में कहा जाता है: उसने मार का प्रलोभन निगल लिया है , उसने स्वयं को भटकने दिया है, वह विनाश की ओर बढ़ रहा है , वह

ऐसा व्यक्ति है जिसके साथ राक्षस अपनी इच्छा अनुसार कर सकता है। कुछ ध्वनियाँ हैं जो कानों से सुनाई देती हैं ... कुछ गंध हैं जो नाक से सुनाई देती हैं... कुछ स्वाद हैं जो जीभ से महसूस किए जा सकते हैं... कुछ स्पर्शनीय वस्तुएँ हैं जो शरीर से महसूस की जा सकती हैं... मन के द्वारा बोधगम्य कुछ विचार ऐसे होते हैं जो वांछित, वांछनीय, सुखद और मनभावन होते हैं, इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से जुड़े होते हैं और कामवासना उत्पन्न करते हैं। यदि कोई भिक्षु [156] उनका आनंद लेता है, उन्हें स्वीकार करता है और दृढ़ता से उनसे जुड़ा रहता है, तो उसके बारे में कहा जाता है: उसने मारा का चारा निगल लिया है , उसने स्वयं को गुमराह होने दिया है, वह विनाश की ओर बढ़ रहा है , वह ऐसा व्यक्ति है जिसके साथ शैतान अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी कर सकता है (श्लोक 4, 159)।

यह भ्रष्टाचार है।

फिर , कुछ ऐसे रूप हैं जिन्हें आँखों से देखा जा सकता है, जो वांछित , वांछनीय , सुखद और मनभावन होते हैं , जो इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से जुड़े होते हैं और कामवासना उत्पन्न करते हैं। यदि कोई भिक्षु उनका आनंद नहीं लेता, उनकी पुष्टि नहीं करता या उनसे दृढ़तापूर्वक जुड़ा नहीं रहता , तो उसके बारे में कहा जाता है: उसने उन्हें आत्मसात नहीं किया है।

842/1 बायदबधया यहाँ बेहतर पाठ है।

[पृष्ठ 207]

व्यवस्था का प्रतिरूप

मारा का चारा , उसने चारा नष्ट कर दिया है , उसने चारा पूरी तरह नष्ट कर दिया है , उसने खुद को गुमराह नहीं होने दिया है , वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके साथ शैतान अपनी मनमानी कर सके। फिर , कान से पहचानी जाने वाली ध्वनियाँ हैं ... नाक से पहचानी जाने वाली गंध हैं ... जीभ से पहचाने जाने वाले स्वाद हैं ... शरीर से पहचानी जाने वाली स्पर्शनीय वस्तुएँ हैं... मन से पहचानी जाने वाली ऐसी धारणाएँ हैं जो वांछित , वांछित , सुखद और पसंद करने योग्य हैं , जो इंद्रिय सुख से जुड़ी हैं और वासना उत्पन्न करती हैं। यदि कोई भिक्षु उनका आनंद नहीं लेता, उनकी पुष्टि नहीं करता, या दृढ़ता से उनका पालन नहीं करता, तो उसके बारे में कहा जाता है: उसने मारा का चारा नहीं निगला, उसने चारा नष्ट कर दिया , उसने चारा पूरी तरह नष्ट कर दिया, उसने खुद को गुमराह नहीं होने दिया, वह विनाश की ओर नहीं बढ़ रहा है, वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके साथ दुष्ट अपनी इच्छा अनुसार कर सके (श्लोक 4, 159)।

यह सिद्ध पुरुष है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।

8. भ्रष्टाचार, घुसपैठ और निपुण

843. इसमें, भ्रष्टाचार, घुसपैठ और निपुणता से निपटने वाले धागे का प्रकार क्या है?

यह दुनिया 1 पीड़ा के लिए पैदा हुई है, और [दर्दनाक] संपर्क के अधीन है;
यह एक बीमारी है जिसे यह स्वयं कहता है;
चाहे वह इसे किसी भी रूप में समझे, 3
यह उससे बिल्कुल अलग है।
अपने अस्तित्व को [अपनी कल्पना से अलग] बनाए रखते हुए, 4
दुनिया अपने अस्तित्व से चिपटी रहती है, केवल अस्तित्व में रहने की ही आशा से भरी रहती है।
लेकिन जिस चीज से इसे आनंद मिलता है, उससे भय उत्पन्न होता है।
और यह जिस बात से डरता है वह है दर्द > (उद. 32-3; पतरस 26, 223)।

यह भ्रष्टाचार है।

843/1 यहाँ दिए गए पाठ पीटीएस उदाना पाठ में दिए गए पाठों से बेहतर प्रतीत होते हैं। संपूर्ण अंश दार्शनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका उचित अनुवाद करना अत्यंत कठिन है।

843/2 रोडम (अट्टानो के साथ), यदि सही माना जाए, तो यह पीपीआर. नॉमिन. मैस्क. सिंग होगा, जो लोको ('रोते हुए यह स्वयं बोलता है') से मेल खाता है। दूसरा विकल्प रोगम ('बीमारी') है, जो एक्यूस. मैस्क. सिंग होगा, जो वदति (अट्टाटो के साथ) द्वारा नियंत्रित होता

है, और अनुवाद में यही लिया गया है। पे पाठ (पृष्ठ 224) स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इसके लेखक के पास केवल रोगम पाठ था ; उदा. ए. इससे सहमत है।
843/3 मन्नति ('कल्पना करना (कल्पना)') के अर्थ के लिए एम. सुत्त 1 और एस. iii, 128-32 देखें (मन ('कल्पना') से इसके संबंध के लिए अस्मि-मन ('कल्पना "मैं हूँ"') के रूप में)।
843/4 पे (पृष्ठ 224) कहता है, हालांकि, अन्नथाभावी (इसलिए वहां 'मन्नथा भवर्ती' के लिए पढ़ें) का अर्थ है 'अस्तित्व में रहते हुए, यह भविष्य के अस्तित्व की आकांक्षा रखता है'।

[पृष्ठ 208]
पथप्रदर्शक
अब यह दिव्य जीवन अस्तित्व को त्यागने के लिए जिया जाता है (वही)।
यह प्रवेश है।
[157] < भिक्षुओं और धर्मगुरुओं ने जिस भी प्रकार के अस्तित्व के माध्यम से अस्तित्व से मुक्ति की घोषणा की है, मैं कहता हूँ कि उनमें से कोई भी अस्तित्व से मुक्त नहीं है । और भिक्षुओं या धर्मगुरुओं ने जिस भी प्रकार के अस्तित्वहीनता के माध्यम से अस्तित्व से मुक्ति की घोषणा की है, मैं कहता हूँ कि उनमें से कोई भी अस्तित्व से मुक्ति नहीं पाता। यह पीड़ा अस्तित्व के मूल तत्वों पर निर्भर रहने (उन पर जोर देने) से ही वास्तविक रूप से अस्तित्व में आती है: > (वही)।
यह भ्रष्टाचार है।
सभी प्रकार की धारणाओं के समाप्त होने के साथ, पीड़ा का कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं रह जाता है (वही)।
यह प्रवेश है।
इस विशाल संसार को अज्ञानता के अधीन देखिए ।
जो अस्तित्व में आनंदित होता है, लेकिन कभी भी अस्तित्व से मुक्त नहीं होता:
फिर भी, चाहे किसी भी प्रकार का प्राणी हो, किसी भी तरह से, कहीं भी,
सभी क्षणभंगुर हैं, पीड़ा से ग्रस्त हैं , परिवर्तन के विचार से अविभाज्य हैं (वही)।
यह भ्रष्टाचार है।
इसलिए जब कोई व्यक्ति इस प्रकार देखता है
इसे सही ढंग से समझने के साथ,
उसके अस्तित्व की लालसा का त्याग हो गया है ।
और अब वह अस्तित्वहीनता का आनंद लेने के लिए उत्सुक नहीं रहता।
यह सभी प्रकार की लालसाओं की पूर्ण समाप्ति है।
वह शेषहीन लुप्त होना, समाप्ति, वह विलुप्ति है (वही)।
यह प्रवेश है।
वह भिक्षु जो अनुमान न लगाने के कारण तृप्त हो गया ,
अब उसके अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं होता।
मृत्यु का परिक्रमण हो गया है*, युद्ध जीत लिया गया है।
इस प्रकार का एक अस्तित्व सभी प्रकार के अस्तित्व से परे है (वही)।
यह सिद्ध पुरुष है।

843/5 विभाव (शाब्दिक अर्थ शायद 'अति-अस्तित्व') के दो विपरीत अर्थ हैं: 'उत्कृष्ट अस्तित्व' और 'अस्तित्वहीनता'। उपसर्ग vi- (= 'बाहर') के वर्धक और निषेधात्मक दोनों अर्थ हैं (अंग्रेजी के 'पुट आउट द फ्लैग्स' और 'पुट आउट द लाइट्स' की तुलना करें)। भावभाव शब्द का भी ऐसा ही दोहरा अर्थ है (देखें n. 877/1)।

843/6 अभिभूत शाब्दिक अर्थ 'पार किया गया'; तुलना करें अभिभू ('सर्वोच्च सत्ता', 'पारलौकिक सत्ता') जैसा कि उच्च देवत्व (डी. i, 221) और बुद्ध (§§252, 917; एम. i, 171) के लिए प्रयुक्त होता है, और अभिभयताना ('पारलौकिकता का आधार', अर्थात्, कामुक इच्छा का: एम. ii, 13), आदि।

[पृष्ठ 209]

व्यवस्था का प्रतिरूप

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार, घुसपैठ और निपुणता से संबंधित मुद्दों से निपटता है।

844. < भिक्षुओं, ये चार प्रकार के व्यक्ति हैं । कौन से चार? एक धारा के साथ बहता है , एक धारा के विपरीत बहता है , एक ने स्वयं को स्थिर कर लिया है , और एक पार कर गया है , दूसरे तट पर चला गया है , और एक दिव्य व्यक्ति के रूप में दृढ़ भूमि पर खड़ा है > (अ. 2, 5; पे 28, 228)। 1

यहां, 'धारा के साथ बहने वाला' व्यक्ति भ्रष्टाचार से निपटने वाला [सूत्र का प्रकार] है। यहां दो व्यक्ति, अर्थात् 'धारा के विपरीत बहने वाला' और 'स्वयं को स्थिर करने वाला', प्रवेश से संबंधित हैं। [158] यहां, 'पार कर जाने वाला, दूसरे किनारे पर जाकर एक दिव्य व्यक्ति के रूप में दृढ़ भूमि पर खड़ा होने वाला' व्यक्ति सिद्ध पुरुष से संबंधित है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करता है।

भेदन क्षमता के साथ और विशेषज्ञ से निपटते हुए।

9. भ्रष्टाचार, नैतिकता और घुसपैठ

845. इसमें, भ्रष्टाचार, नैतिकता और घुसपैठ से संबंधित विषय किस प्रकार के हैं?

जन्म देने के छह प्रकार होते हैं । एक प्रकार का जन्म अश्वेत व्यक्ति का होता है जो अश्वेतता से जन्म लेकर एक अश्वेत आदर्श को जन्म देता है। एक प्रकार का जन्म अश्वेत व्यक्ति का होता है जो अश्वेतता से जन्म लेकर एक श्वेत आदर्श को जन्म देता है। एक प्रकार का जन्म अश्वेत व्यक्ति का होता है जो अश्वेतता से जन्म लेकर अनंत लक्ष्य के रूप में विनाश में रुचि रखता है , न अश्वेत , न श्वेत , और न ही अश्वेत या श्वेत के परिपक्व होने की संभावना होती है। एक प्रकार का जन्म श्वेत व्यक्ति का होता है जो श्वेतता से जन्म लेकर एक अश्वेत आदर्श को जन्म देता है। एक प्रकार का जन्म श्वेत व्यक्ति का होता है जो श्वेतता से जन्म लेकर एक श्वेत आदर्श को जन्म देता है। एक प्रकार का जन्म श्वेत व्यक्ति का होता है जो श्वेतता से जन्म लेकर अनंत लक्ष्य के रूप में विनाश में रुचि रखता है, न अश्वेत , न श्वेत , और न ही अश्वेत या श्वेत के परिपक्व होने की संभावना होती है । (तुलना करें ए . iii, 384)

यहां, दो व्यक्ति, अर्थात् 'कालेपन से जन्मा काला व्यक्ति जो काले आदर्श को जन्म देता है' और 'गोरेपन से जन्मा सफेद व्यक्ति जो काले आदर्श को जन्म देता है', भ्रष्टाचार से संबंधित हैं। यहां, दो व्यक्ति, अर्थात् 'कालेपन से जन्मा काला व्यक्ति जो सफेद आदर्श को जन्म देता है' और 'गोरेपन से जन्मा सफेद व्यक्ति जो सफेद आदर्श को जन्म देता है', भ्रष्टाचार से संबंधित हैं।

844/1 नेटीए (पृष्ठ 209) के अनुसार 1 = 'साधारण व्यक्ति', 2 = 'अच्छा साधारण व्यक्ति' (हल्याना-पुथुज्जना) यानी, अभ्यास करने वाला जो प्रथम मार्ग तक नहीं पहुंचा है), 3 = दीक्षित, और 4 = सिद्ध।

[पृष्ठ 210]

पथप्रदर्शक

'श्वेत आदर्श से जन्म' नैतिकता से संबंधित है। इसमें, दो व्यक्ति, अर्थात् 'कालेपन से जन्मा काला व्यक्ति जो अनंत लक्ष्य के रूप में विलुप्ति में रुचि रखता है, न काला, न सफेद' और 'काले या सफेद का कोई परिपक्वन नहीं' और 'श्वेतता से जन्मा श्वेत व्यक्ति जो अनंत लक्ष्य के रूप में विलुप्ति में रुचि रखता है, न काला, न सफेद, काले या सफेद का कोई परिपक्वन नहीं', प्रवेश से संबंधित हैं।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करता है।

नैतिकता और प्रवेश से निपटने के साथ।

846. < भिक्षुओं, ये चार प्रकार की क्रियाएँ हैं। वे चार क्या हैं? [159] काली कर्म क्रिया है जिसका फल काला होता है। सफेद कर्म क्रिया है जिसका फल सफेद होता है। काला-सफेद कर्म क्रिया है जिसका फल काला-सफेद होता है। काला-सफेद कर्म क्रिया है जिसका फल

काला-सफेद होता है। काला-सफेद कर्म क्रिया है जिसका फल काला-सफेद होता है। काला-सफेद कर्म क्रिया है जिसका फल काला-सफेद होता है , जो सर्वोच्च प्रकार की कर्म क्रिया है , जो कर्म की समाप्ति की ओर ले जाती है > (ए. 2, 230)।

यहां, 'काले फल से उत्पन्न होने वाला कोई भी काला कर्म' और 'काले-सफेद फल से उत्पन्न होने वाला कोई भी काला-सफेद कर्म' भ्रष्टाचार है। 'सफेद फल से उत्पन्न होने वाला कोई भी सफेद कर्म' नैतिकता है। 'न काले, न सफेद फल से उत्पन्न होने वाला कोई भी कर्म, जो सर्वोच्च प्रकार का कर्म है, सर्वोत्तम प्रकार का कर्म है, जो कर्म की पूर्णता की ओर ले जाता है', वह भेदन है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करता है।

नैतिकता और प्रवेश से निपटने के साथ।

10. नैतिकता और प्रवेश

847. इसमें, नैतिकता और प्रवेश से संबंधित विषय पर चर्चा किस प्रकार की है?

मानव अवस्था प्राप्त करने के बाद , दो [चीजें]:

कार्य क्या है और कार्य क्या नहीं है?

सही कार्य 'किसी भी प्रकार की योग्यता ' है।

और फिर [सभी] बेड़ियों का त्याग > (;§ 866).

'उचित कार्य किसी भी प्रकार का पुण्य है' यह नैतिकता है। 'सभी बंधनों का त्याग करना' अंतर्दृष्टि है।

वे लोग जिन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया

पुण्य का संचार स्वर्ग से स्वर्ग तक हो।

लेकिन जिन्होंने सभी बंधनों को त्याग दिया है

वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त हैं > (;§ 866).

[पृष्ठ 211]

व्यवस्था का प्रतिरूप

'जो लोग पुण्य कर्मों से पुण्य कमाते हैं, वे स्वर्ग से स्वर्ग तक पहुंचते हैं' यह नैतिकता है। 'परन्तु जिन्होंने सभी बंधनों का त्याग कर दिया है, वे वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त हो जाते हैं' यह अंतर्दृष्टि है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।

और प्रवेश से निपटना।

848. भिक्षुओं , ये दो प्रमुख प्रयास हैं। 1 वे दो क्या हैं? (i) वह जो गृहस्थ जीवन से विमुख होकर गृहस्थ जीवन में चले गए लोगों में वस्त्र , भिक्षा , आवास और बीमारों के उपचार हेतु आवश्यक औषधियाँ वितरित करता है ; और (ii) वह जो अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग , तृप्ति का अंत , क्षीणता, समाप्ति , क्षीणता है , जो गृहस्थ जीवन से विमुख होकर गृहस्थ जीवन में चले गए लोगों में पाई जाती है > (तुलना करें ए . i, 49)।

[160] इसमें, 'जो वस्त्र दान करता है... बीमारों का इलाज करता है... बेघर लोगों में 5 नैतिकता है। 'जो अस्तित्व के सभी आवश्यक तत्वों का त्याग है... विलुप्ति, [जो पाया जाता है] बेघर लोगों में' पैठ है।

यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता और यौन प्रवेश से संबंधित विषयों पर चर्चा करता है।

11. भ्रष्टाचार और लालसा

849. यहाँ, लालसा से उत्पन्न भ्रष्टाचार से निपटने वाले सूत्र के प्रकार को लालसा के पक्ष में मौजूद किसी भी चीज़ द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है: लालसा के तीन प्रकारों द्वारा, अर्थात् <इंद्रिय सुख की लालसा , अस्तित्व की लालसा और गैर-अस्तित्व की लालसा > (§425), या इसे उस वस्तु द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है जिससे चिपका हुआ है। इसका विवरण लालसा के जाल के व्यवहार के छत्तीस तरीके हैं (देखें ए. ii, 211 आगे)।

12. भ्रष्टाचार का दृश्य

850. इसमें, विचारों द्वारा भ्रष्टाचार से संबंधित सूत्र के प्रकार को विचारों के पक्ष में मौजूद किसी भी चीज़ से प्रदर्शित किया जा सकता है: विनाशवाद और शाश्वतवाद (देखें सू. iv, 400), या इसे किसी भी वस्तु से प्रदर्शित किया जा सकता है जिस पर कोई व्यक्ति इस प्रकार

के विचार के माध्यम से जोर देता है <केवल यही सत्य है , बाकी सब गलत है > (एम. ii, 233; डी. ii, 282)। इसका विवरण विचारों के बासठ प्रकारों में है (डी. सूत्र 1; एम. सूत्र 102) ।

848/1 पधना का अर्थ 'सर्वोच्च' ('मुख्य') और 'प्रयास' दोनों है।
850/1 '62 प्रकारों' को 19 द्वारा प्रतिपादित व्यक्तिगत विचारों के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।
[13]

[पृष्ठ 212]
पथप्रदर्शक
13. कदाचार द्वारा भ्रष्टाचार
851. यहाँ, दुराचार द्वारा भ्रष्टाचार से संबंधित विषयवस्तु को [विकल्प के रूप में] और संज्ञान के साथ होने वाली क्रिया के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है (§239): दुराचार के तीन प्रकारों द्वारा, अर्थात् शारीरिक दुराचार, मौखिक दुराचार और मानसिक दुराचार (§913)। इसका विवरण दस निष्फल कार्यविधियों में निहित है (एम. आई, 46-7; तुलना करें §238)।
14-16. लालसा, दृष्टिकोण और दुराचार से शुद्धि
852. इसमें, लालसा से शुद्धि से निपटने वाले धागे के प्रकार को शांति द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।
853. विचारों से शुद्धि से संबंधित धागे के प्रकार को अंतर्दृष्टि द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।
854. दुराचार से शुद्धि से संबंधित धागे के प्रकार को अच्छे आचरण द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।
बहस
855. < अनुपयोगी के तीन मूल ... ऐसा क्यों है? गोल चक्कर के घटित होने के कारण ... जब इस प्रकार गोल चक्कर घटित होता है , तो शरीर का कुकर्म ... शरीर का अच्छा आचरण ... वाणी का कुकर्म ... वाणी का अच्छा आचरण ... मन का कुकर्म ... मन का अच्छा आचरण ... कर्म के इस कुरूप परिपक्वन से ही मूर्ख का यह लक्षण उत्पन्न होता है > ( ).
[161] यह भ्रष्टाचार से निपटने वाला धागा है। <यह क्रिया के इस सुंदर परिपक्वता के द्वारा ही महान व्यक्ति की यह विशेषता प्रकट होती है> ( )।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो नैतिकता से संबंधित है।
856. यहाँ, भ्रष्टाचार से संबंधित सूत्र के प्रकार को अपवित्रता के चार स्तरों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है: अंतर्निहित प्रवृत्तियों का स्तर, आसक्ति का स्तर, बंधनों का स्तर और धारणाओं के प्रकार का स्तर। जिसमें अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है, उसमें आसक्ति जन्म लेती है; जो आसक्त होता है, वह बंधनों में जकड़ा जाता है; जब वह बंधनों में जकड़ा जाता है, तो वह धारणाएँ बनाता है; धारणा को शर्त मानकर, अस्तित्व; अस्तित्व को शर्त मानकर, जन्म; जन्म को शर्त मानकर।

बुद्ध के समकालीन शिक्षकों द्वारा, लेकिन एक व्यापक योजना के रूप में - 'दिव्य जाल' (ब्रह्म-जल) जिसमें सभी संभावित सट्टा विचारों को फंसाया जाना चाहिए।

[पृष्ठ 213]
व्यवस्था का प्रतिरूप
अवस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु का वास्तविक अस्तित्व है, साथ ही दु:ख और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा का भी; इसी प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌गम होता है। सभी दोष इन चार स्तरों में समाहित हैं।
यह उस प्रकार का थ्रेड है जो भ्रष्टाचार से संबंधित है।
857. नैतिकता से संबंधित विषयवस्तु को तीन प्रकार के अच्छे आचरण द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।
858. प्रवेश से संबंधित धागे के प्रकार को चार सत्यों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

859. सिद्ध पुरुष से संबंधित धागे के प्रकार को तीन प्रकार के विचारों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है: प्रबुद्धों के विचारों द्वारा, संन्यासी प्रबुद्धों के विचारों द्वारा, और ध्यानी के क्षेत्र में श्रोता के स्तर द्वारा।

*

दूसरा समूह

860. इसमें अठारह मूल पदों का क्या अर्थ है? 1

अनुसूची

i. (क) संसारों से संबंधित, (ख) संसारों से अलग, (ग) संसारों से संबंधित और संसारों से अलग (पे 23, सं. 1);

ii. (क) प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त, (ख) विचारों के संदर्भ में व्यक्त, (ग) प्राणियों और विचारों के संदर्भ में व्यक्त (पे 23, सं. 8);

iii. (क) ज्ञान, (ख) जानने योग्य, (ग) ज्ञान और जानने योग्य
(पे 23, संख्या 4);

iv. (क) देखना, (ख) अस्तित्व में बनाए रखना, (ग) देखना और अस्तित्व में बनाए रखना
(पे 23, संख्या 5);

v. (क) हमारा स्वयं का कथन, (ख) किसी अन्य का कथन, (ग) हमारा स्वयं का कथन और किसी अन्य का कथन (पे 23, सं. 7);

vi. (क) उत्तर देने योग्य, (ख) उत्तर न देने योग्य, (ग) उत्तर देने योग्य और उत्तर न देने योग्य; 2

vii. (क) क्रिया, (ख) पकना, (ग) क्रिया और पकना (पे 23, सं. 2);

860/1 देखें नेटीए, जिसका उल्लेख एन. 759/1 में किया गया है। यह समूह, यद्यपि पे अध्याय ii से लिया गया है, फिर भी इसे बदला, सरलीकृत और बेहतर बनाया गया है।

860/2 यह त्रयी पे अध्याय ii में नहीं है और पे अध्याय iv के तीसरे खंड से ली गई प्रतीत होती है (पे 78, पंक्ति 23 से पृष्ठ 79, पंक्ति 22)।

[पृष्ठ 214]

पथप्रदर्शक

viii. (क) लाभदायक, (ख) अलाभदायक, (ग) लाभदायक और अलाभदायक; 3

ix. (a) सहमत, (b) अस्वीकृत, (c) सहमत और अस्वीकृत
(पे 23, संख्या 10);

x. स्तुतिगान (तुलना करें पे 23, सं. 9)।

उदाहरण उद्धरण

[i (a)]

860. इसमें, संसारों से संबंधित क्या है?
जब कोई बुरा कर्म किया जाता है,
जैसे ताजा दूध, तुरंत नहीं बदलता; 1
यह एक छिपी हुई चिंगारी की तरह पीछा करता है,
मूर्ख, उसे [बाद में] जला रहा है > (ध. 11; पे 48).

[162] यह दुनिया से संबंधित है।

861. भिक्षुओं , बुरे मार्ग पर चलने के ये चार प्रकार हैं। वे कौन से चार हैं? . . . [सभी अनुच्छेद 767 से नीचे तक] .. .
जैसे इसके अंधेरे आधे भाग में चंद्रमा > (§767)।
यह उन दुनियाओं से जुड़ाव है।

860. < भिक्षुओं, ये आठ सांसारिक विचार हैं। कौन से आठ? लाभ, हानि, यश, यश, निंदा, प्रशंसा , सुख , दुख। ये आठ सांसारिक विचार > (ए. iv, 157).
यह उन दुनियाओं से जुड़ाव है।

[i (b)]
864. इसमें वह क्या है जो संसारों से अलग है?
जिनकी इंद्रियां पूरी तरह से शांत हो चुकी हैं ,
जैसे एक कुशल रथ चालक घोड़ों की देखभाल करता है,
उसने अपने सारे अहंकार को त्याग दिया था, वह निष्कलंक था।
तब वह देवताओं को भी प्रिय होगा > (ध. 94; पे 48)।
यह उन दुनियाओं से अलग है।

860/3 यह त्रयी भी पे अध्याय 2 में नहीं है, और ऐसा प्रतीत होता है कि यह पे अध्याय 4 के पहले खंड से ली गई है (पे पृष्ठ 74, पंक्ति 1 से पृष्ठ 77, पंक्ति 10 तक, शब्द देसीतम)। 861/1 टीका का अनुसरण किया गया है। मुच्चति की व्याख्या वहाँ परिणमति के रूप में की गई है , और यह समझाया गया है कि नया दूध तुरंत क्यों नहीं फटता (धारा 453 में दूध-दही उपमा देखें)। श्लोक के प्रारंभ में नकारात्मक ना उपमा को भी नियंत्रित करता है, जो तब बिल्कुल सटीक बैठता है। दहन्तम (एक शब्द) की व्याख्या विपच्चमनम के रूप में की गई है, जो कि एक नपुंसक एकवचन है और कम्मम को योग्य बनाता है ।

[पृष्ठ 215]
व्यवस्था का प्रतिरूप
865. < भिक्षुओं, ये पाँच इंद्रियाँ हैं जो संसार से विबद्ध हैं। वे पाँच कौन सी हैं? विश्वास इंद्री , ऊर्जा इंद्री , ध्यान इंद्री, एकाग्रता इंद्री, समझ इंद्री। ये पाँच इंद्रियाँ संसार से विबद्ध हैं > (एस. वी, 193)।
यह उन दुनियाओं से अलग है।
[मैं सी)]
866. इसमें वह क्या है जो संसारों से संबंधित है और संसारों से अलग है? दो श्लोक [शुरू]
मानव अवस्था प्राप्त करने के बाद , दो बातें: . . .(§847).
यहां 'उचित कार्य किसी भी प्रकार का पुण्य है' और 'पुण्य कर्मों द्वारा पुण्य का फल पाने वाले स्वर्ग से स्वर्ग तक पहुंचते हैं' ये शब्द संसार से संबंधित हैं। परन्तु 'और फिर सभी बंधनों का त्याग' और 'परन्तु जिन्होंने सभी बंधनों का त्याग कर दिया है वे वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त हो जाते हैं' ये शब्द संसार से असंबंधित हैं।
यह वह है जो संसारों से संबंधित है और संसारों से अलग भी है।
867. [163] < भिक्षुओं, जब चेतना पोषण के रूप में होती है, तब नाम-रूप का आधार मिलता है। जब नाम-रूप का आधार मिलता है, तब अस्तित्व का नवीनीकरण होता है। जब अस्तित्व का नवीनीकरण होता है, तब जन्म होता है। जब जन्म होता है , तब वृद्धावस्था और मृत्यु का वास्तविक अस्तित्व होता है , और साथ ही दुःख और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा का भी; इसी प्रकार इस संपूर्ण श्रेणी के दुःख का उद्गम होता है (cf. §304)। मान लीजिए कि एक विशाल वृक्ष है जिसकी जड़ें, चाहे वे नीचे की ओर जाएं या चारों ओर, सभी पोषण ऊपर लाती हैं, तो उस प्रकार, उस पोषण के साथ, उस आरोहण के साथ, वह विशाल वृक्ष दीर्घ रहेगा, 1 उसी प्रकार , जब चेतना पोषण के रूप में होती है, तब नाम-रूप का आधार मिलता है... इसी प्रकार इस संपूर्ण श्रेणी के दुःख का उद्गम होता है > ( )•
यह दुनिया से संबंधित है।
भिक्षुओं , जब चेतना पोषण के रूप में न हो, तब नाम-रूप का कोई आधार न मिले। जब नाम-रूप का कोई आधार न मिले, तब अस्तित्व का नवीनीकरण न हो। जब अस्तित्व का नवीनीकरण न हो, तब वृद्धावस्था और मृत्यु का अंत हो जाता है , और साथ ही दुःख, विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा का भी; इसी प्रकार अस्तित्व बना रहता है।

867/1 वृक्ष की उपमा के लिए एस. ii, 87-8 देखें।

[पृष्ठ 216]

पथप्रदर्शक

इस संपूर्ण प्रकार के दुख का अंत। मान लीजिए एक विशाल वृक्ष था, और फिर एक व्यक्ति फावड़ा और टोकरी लेकर आया, और उसने वृक्ष को काट डाला, फिर उसने उसके चारों ओर खुदाई की, और फिर उसने उसकी जड़ों को रेशों तक उखाड़ दिया? और फिर उसने उसे तने और शाखा सहित काट डाला, फिर उसने उसे फाड़ दिया, फिर उसने उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दिया, फिर उसने उसे धूप में सुखाया, फिर उसने उसे आग में जला दिया , और फिर उसने उसे राख में बदल दिया, 3 और फिर उसने उसे तेज हवा में उड़ा दिया, और फिर उसने उसे एक तेज बहती नदी में बहा दिया; इस तरह विशाल वृक्ष जड़ से कट जाएगा, ताड़ के ठूंठ की तरह हो जाएगा, नष्ट हो जाएगा, और भविष्य में उत्पन्न होने के विचार से अविभाज्य हो जाएगा;—ठीक उसी प्रकार, जब चेतना पोषण के रूप में नहीं होती [164] तो नाम-और-रूप के लिए कोई आधार नहीं मिलता ... इस प्रकार इस संपूर्ण प्रकार के दुख का अंत होता है > ( )•

यह अन्य दुनियाओं से अलग है।

यह वह है जो संसारों से संबंधित है और संसारों से अलग भी है।

[ii (a)]

868. इसमें, प्राणियों के संदर्भ में क्या व्यक्त किया गया है?

मैंने मन से सभी दिशाओं का भ्रमण किया।
और मुझे खुद से ज्यादा प्रिय कोई नहीं मिला;
इसी प्रकार, स्वयं भी एक दूसरे के प्रति प्रिय होता है।
जो स्वयं से प्रेम करता है वह कभी दूसरे को हानि नहीं पहुँचाएगा > (उद. 47).

इसे प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है।

869. < सभी प्राणी जो मौजूद हैं, और जो अस्तित्व में आएंगे,
वे अपने शरीर को त्यागकर आगे यात्रा करेंगे;
जन्म-प्रबंधन में कुशल, यह सब जानने वाला व्यक्ति,
सबसे उत्साहपूर्वक दिव्य जीवन व्यतीत करेगा > (उद. 48; तुलना करें पे 55)।

इसे प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है।

870. भिक्षुओं , जब एक अच्छे मित्र में सात गुण हों, तो जीवन भर उसे कभी अस्वीकार नहीं करना चाहिए, चाहे उसे निकाल दिया जाए या बर्खास्त कर दिया जाए, चाहे उसे भगा दिया जाए। 1 वे सात गुण क्या हैं? वह प्रिय, आदरणीय और अनुकरणीय है, 2 वह बात करने को तैयार रहता है और

867/2 ' उसिरा —रेशे': पी.ई.डी. में अर्थ यहाँ उपयुक्त नहीं है। यिन. iv, 130 देखें। 867/3 मस्सिम के स्थान पर मसिम पढ़ें ।

870/1 Read panujjamanena ? For someone who should not be abandoned, see M. i, 108: na pakkamitabbam api panujjamanena pi.

870/2 भवानीया , व्यक्तियों के लिए एक प्रशंसा शब्द है, जिसका अनुवाद शिथिल रूप से ही किया जा सकता है; शाब्दिक अर्थ है 'जिसे बनाया जाना चाहिए'। नेत्तिया कहते हैं ' उत्तरिमनुस्सा-धम्मवसेन सम्भवेतब्बतया' जिसका अर्थ है 'सम्मानित किया जाना चाहिए'।

[पृष्ठ 217]

व्यवस्था का प्रतिरूप

वह अपने साथ बात करने के लिए तत्पर रहता है, और वह कभी भी निराधार उपदेश नहीं देता [सच्चे विचार और मार्गदर्शक अनुशासन के अनुरूप न होने वाले तरीके से]। जब एक अच्छे मित्र में ये सात गुण होते हैं ... तो चाहे उसे दूर भगा दिया जाए। भगवान बुद्ध ने यही कहा था । जब परम पुरुष ने यह कहा, तो गुरु ने आगे कहा:

प्रिय, आदरणीय, अनुकरणीय
जो किसी से बात करता है और जिससे बात भी की जा सकती है,
गहन बातों को समझाने के लिए तैयार है।
और वह कभी भी निराधार उपदेश नहीं देता:

ऐसा मित्र जीवन भर काम आ सकता है।
जो मित्र की इच्छा रखता है > (तुलना करें ए. iv, 32)।
इसे प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है।
[ii (बी)]
871. [165] इसमें, विचारों के संदर्भ में क्या व्यक्त किया गया है?
इंद्रियों को जो भी आनंद की इच्छा हो
या फिर संसार में स्वर्ग का आनंद,
सभी का सोलहवें भाग के बराबर भी मूल्य नहीं है।
उस आनंद का जो लालसा की थकावट के साथ आता है > (उद. 11; पे 55)।
इसे विचारों के रूप में व्यक्त किया जाता है।
872. विलुप्ति वास्तव में सच्चा आनंद है
जैसा कि प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाया गया है:
दुःख रहित, सुरक्षित, निष्कलंक,
जहां पीड़ा का अंत होता है > ( ).
इसे विचारों के रूप में व्यक्त किया जाता है।
[ii (सी)]
873. इसमें प्राणियों और विचारों के संदर्भ में क्या व्यक्त किया गया है?
माता-पिता की हत्या करने के बाद ,
और फिर दो योद्धा-राजाओं ने वध कर दिया
एक राज्य अपने शासक सहित, > 1
इसे विचारों के रूप में व्यक्त किया जाता है।

873/1 ' सानुकारा - इसके राज्यपाल के साथ': अनुकारा पी.ई.डी. में नहीं है , सी.पी.डी. देखें ; व्याख्या में टिप्पणी का अनुसरण किया गया है।

[पृष्ठ 218]
पथप्रदर्शक
< एक व्यक्ति दिव्य सुरक्षा में विचरण करता है > (ध. 294)2
इसे प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है।
इसे प्राणियों के संदर्भ में और इसमें व्यक्त किया जाता है
विचारों के संदर्भ में।

873/2 कुछ अनुवादक इस श्लोक और इसके बाद आने वाले श्लोक (ध. 294 और 295) को लेकर नैतिक रूप से विवादों में घिर गए हैं। इसलिए, इसका सावधानीपूर्वक अध्ययन करना उचित है। इसमें तीन समस्याएं हैं: (1) व्याकरण, (2) प्रत्यक्ष अर्थ और (3) व्याख्या। पाली पाठ है: mataram pitaram hantva rajano dve ca khattiye rattham sanucaram hantva anigho yati brahmano. अब (1) व्याकरण (वाक्य रचना) असामान्य रूप से सरल है, क्योंकि इसमें क्रियावाचक संज्ञा (हन्त्व) के बाद परिमित क्रिया (यति) आती है, जो पाली में एक बहुत ही सामान्य रचना है जो समय या कारण अनुक्रम को दर्शाती है ('वध करके... जाता है' या 'वध करके... जाता है')। जैसा कि कुछ लोगों ने किया है, 'हालाँकि' ('वध किए जाने के बावजूद ... जाता है') डालने का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि पाली में कोई संबंधित शब्द नहीं है और वाक्यविन्यास को इसकी आवश्यकता नहीं है। गेरुंड और क्रिया के लिए दो संभावित विषय हैं: या तो (ए) ब्राह्मणो ('एक दिव्य') संज्ञा के रूप में, एनीघो ('प्रतिरक्षा') के साथ क्वालीफाइंग विशेषण के रूप में, या (बी) 'एक' (एकाको या ऐसा) समझा जाता है, जिनमें से एनीघो और ब्राह्मणो दोनों क्वालीफाइंग विशेषण हैं। (यह निर्माण पाली में बहुत आम है, सीएफ। एसएन। 35 '

सब्बेसु भुतेसु निधया (गेर।) दंडम। ... एको (एडज।) केयर (क्रिया) खग्गविसनकप्पो (एडज।)', दोनों adj. एक समझे गए 'एक' को क्रिया-विषय के रूप में योग्य बनाते हैं)। (2) प्रत्यक्ष अर्थ के संबंध में : प्रथम (क), यदि ब्राह्मण को क्रिया के कर्ता के रूप में लिया जाए ('एक ब्राह्मण (जो पहले से ही ऐसा है) माता का वध करके (या वध के द्वारा) . . . पापमुक्त हो जाता है'), तो इसका तात्पर्य 'नैतिकता के प्रयोजनिक निलंबन' जैसे किसी सिद्धांत से होना चाहिए (उदाहरण के लिए, 'शुद्ध हृदय वाला संत बिना पाप किए कोई भी अपराध कर सकता है', आदि)। परन्तु संपूर्ण त्रिपिटक में कहीं भी ऐसा कोई सिद्धांत नहीं सिखाया गया है, जो असंख्य प्रवचनों का निरर्थक अर्थ निकाल दे, और विशेष रूप से 'उदाहरण और गैर-उदाहरण' (§546), '10 प्रकार के कर्म' और अष्टांगिक मार्ग को निरर्थक बना दे। यदि कोई विकल्प है, तो उस पर विचार किया जाना चाहिए। एक विकल्प है। वास्तव में, (ख) ब्राह्मण को उसके स्वाभाविक विशेषण अर्थ में क्रिया के कर्ता के रूप में समझे जाने वाले 'एक' को योग्य बनाने के लिए लिया जा सकता है (जैसा कि ऊपर संदर्भित खंड 35 में है : cf. §829, आदि)। तब समझे गए कर्ता के दो योग्य विशेषण होते हैं। अनिघा और ब्राह्मणोऔर स्वाभाविक प्रत्यक्ष अनुवाद तब यह है: 'एक माँ का वध करके... दो राजा... [एक] निर्धन, दिव्य रूप से विचरण करता है।' यह निश्चित रूप से बेहतर है क्योंकि यह व्याकरणिक और शाब्दिक है और जब तक लाक्षणिक अर्थ संभव है, तब तक अन्य ग्रंथों के साथ कोई आवश्यक विरोधाभास नहीं है। (3) व्याख्या शाब्दिक या लाक्षणिक हो सकती है। यदि शाब्दिक अर्थ लिया जाए (अर्थात, ' माँ की वध करने के बाद... दो राजाओं की... कि कोई निर्धन, दिव्य रूप से विचरण करता है'), तो ऊपर उल्लिखित विरोधाभास (2क) के अलावा, पूरा कथन ही बेतुका है क्योंकि ' दो ' राजाओं (दोनों श्लोकों में 'दो') की व्याख्या बिल्कुल नहीं की जा सकती। वास्तव में, यह शाब्दिक व्याख्या को खारिज करता है। इसलिए, अपने आंतरिक प्रमाणों के आधार पर यह श्लोक स्पष्ट रूप से एक 'आघातक रूपक' है (धारा 812 में एक और, कम स्पष्ट रूपक है, और नीचे देखें), और इसे पाली में जैसा है वैसा ही, इसकी पूरी 'आघातक' सरलता के साथ, बिना किसी अस्पष्टता के शब्दों को जोड़े बिना, ठीक वैसे ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए। रूपक अर्थ को नेट्टी ने 'विचारों के संदर्भ में व्यक्त' शब्द के प्रयोग द्वारा अपने तरीके से रेखांकित किया है। यह किसके लिए एक रूपक है, यह नेट्टी ने बताया है।

[पृष्ठ 219]

व्यवस्था का प्रतिरूप

874. < भिक्षुओं, सफलता के ये चार आधार हैं। वे चार कौन से हैं? सफलता का वह आधार जिसमें इच्छाशक्ति की एकाग्रता , प्रयास और दृढ़ संकल्प शामिल हैं... सफलता का वह आधार जिसमें ऊर्जा की एकाग्रता शामिल है... सफलता का वह आधार जिसमें चेतना की एकाग्रता शामिल है... सफलता का वह आधार जिसमें जिज्ञासा की एकाग्रता, प्रयास और दृढ़ संकल्प शामिल हैं > (देखें एस.वी., 254).

. . . .

इसे विचारों के रूप में व्यक्त किया जाता है।

वह शरीर पर चेतना धारण करता है, और चेतना पर शरीर को धारण करता है, और सहज बोध और शीघ्र बोध में आधार पाकर, वह उसमें प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है (तुलना करें भजन 2, 210)।

इसे प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है।

इसे प्राणियों और विचारों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है।

[iii (a)]

875. इसमें ज्ञान क्या है?

वह ज्ञान जो संसारों में व्याप्त है, 1
इसलिए उन्हें सर्वज्ञ कहा जाता है।
जो कभी कमजोर नहीं होता, और जो
सभी समयों तक पहुंच रखता है > ( ). 2
यह ज्ञान है।

(तुलना करें DhA) इस प्रकार है: 'माता तृष्णा है, जो अस्तित्व के तीन स्तरों में प्राणियों को जन्म देती है; पिता 'मैं हूँ' का अहंकार है, जो व्यक्तिवाद को अहमियत देता है; दो राजा शाश्वतवादी और विनाशवादी विचार हैं, जो (विचारों के) संसार को आपस में बाँटते हैं; क्षेत्र

आँख-सह-रूपों से शुरू होने वाले आधारों के छह जोड़े हैं; शासक इच्छा और उनके प्रति वासना है' (पृष्ठ 212-13)। (ध्यान दें: DhA के सभी श्लोक अपने संदर्भ से बाहर हैं)।

एक और, कम गंभीर, 'आघातक रूपक' श्लोक 4, 136 में व्याख्या सहित दिया गया है ('यह दिव्य जीवन बिना शिष्यों और बिना गुरु के जिया जाता है')। 875/I ' लोकउत्तरा - संसारों में व्याप्त': यह सामान्य प्रयोग नहीं है, जिसका अर्थ है 'संसारों से विरक्त', उनके अंत (निर्वाण) से जुड़ा हुआ। नेत्तिया बताते हैं कि सर्वज्ञ ज्ञान (सब्बन्नुता) तकनीकी रूप से 'संसारों से संबंधित' (लोकिया) है , न कि सामान्य अर्थ में 'संसारों से विरक्त' (लोकउत्तरा) (देखें n. 326/2)। इसलिए यहाँ इस शब्द को शाब्दिक रूप से 'जो सभी संसारों को पार करके (उत्तराति) उन्हें जान चुका है' के रूप में लिया जाना चाहिए, न कि सामान्य अर्थ 'जो निर्वाण को जानने के लिए सभी संसारों को पार कर चुका है ' के रूप में।

875/2 नेत्तिआ: "'जिसकी पहुंच सभी कालों तक है'' यह इसलिए कहा गया है क्योंकि इसका अस्तित्व इसके ध्यान देने पर निर्भर करता है। यह निरंतर और सतत रूप से घटित नहीं होता; क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता कि भगवान बुद्ध में एक साथ सर्वज्ञ ज्ञान प्रकट होता है' (पृष्ठ 213)। तुलना करें एम. ii, 127, साथ ही पीपीएन., अध्याय 7, टिप्पणी 7।

[पृष्ठ 220]

पथप्रदर्शक

876. [160] < दुनिया में सबसे अच्छी चीज समझ है —
वह प्रकार जो विलुप्ति की ओर ले जाता है —
जिससे व्यक्ति पूरी तरह समझ जाता है
जन्म और मृत्यु दोनों की थकावट > (इति. 36; तुलना करें पे 51)।
यह ज्ञान है।

[iii (बी)]

877. इसमें, जानने योग्य क्या है?
तब मैं तुम्हें बताऊंगा कि शांति क्या है।
भगवान बुद्ध ने धोतका से कहा
'शांति यहीं और अभी, सुनी-सुनाई बातों पर आधारित नहीं।'
जिसे जानकर, सचेत होकर आगे बढ़ा जा सकता है,
यह संसार से लगाव को दूर करता है।'
हे महान द्रष्टा , मैं आशा से देखता हूँ।
उस स्थिति में, सर्वोच्च शांति की अवस्था प्राप्त होती है।
जिसे जानकर, सचेत होकर आगे बढ़ा जा सकता है,
यह संसार से लगाव को दूर करता है।'
जो कुछ भी है, उसे समझो।
भगवान बुद्ध ने कहा, 'धोताका'
'या ऊपर या नीचे, चारों ओर, बीच में,
यह जान लो कि यह इच्छाएँ हैं , और उनसे आसक्ति मत रखो।
बेहतर या बदतर होने के लिए दुनिया में 1 होना 9 > (Sn. 1066-8).
यह जानने योग्य है।

878. < ' भिक्षुओं, चार आर्य सत्यों की खोज न होने, उनका गहन अध्ययन न हो पाने के कारण ही मुझे और आपको इस लंबी यात्रा में बार-बार चक्कर लगाना पड़ा है। जब दुख के इस आर्य सत्य की खोज और गहन अध्ययन हो जाए, जब दुख के कारण के इस आर्य सत्य की खोज और गहन अध्ययन हो जाए, जब दुख के निवारण के इस आर्य सत्य की खोज और गहन अध्ययन हो जाए, जब दुख के निवारण के इस आर्य सत्य की खोज और गहन अध्ययन हो जाए, तब अस्तित्व की आवश्यकता समाप्त हो जाती है , वह मार्गदर्शक

समाप्त हो जाता है, अब अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं होता। 9 भगवान बुद्ध ने यही कहा था , जब परम पुरुष ने यह कहा, तो गुरु ने आगे कहा:
'चार आर्य सत्यों को न देख पाने के कारण'
[समझ के साथ] कि वे कैसे हैं

[पृष्ठ 221]
व्यवस्था का प्रतिरूप
यात्रा लंबी थी
विभिन्न जन्मों का चक्रव्यूह।
वह मार्गदर्शक जो पुरुषों को अस्तित्व की ओर ले जाता है
इन्हें देखते ही मार डाला जाता है;
दर्द की जड़ों को नष्ट कर दिया गया
अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं है > (एस.वी , 43इफ.).
[167] यह जानने योग्य है.
[iii (सी)]
879. इसमें, ज्ञान और जानने योग्य क्या है?
< रूप क्षणभंगुर है , भावना क्षणभंगुर है, बोध क्षणभंगुर है , निर्धारण क्षणभंगुर हैं , चेतना क्षणभंगुर है > (एस. iii, 21)।
यह जानने योग्य है।
< इस प्रकार जानने और देखने पर , श्रेष्ठ श्रोता रूप को क्षणभंगुर देखता है , भावना को क्षणभंगुर देखता है , धारणा को क्षणभंगुर देखता है , निर्धारणों को क्षणभंगुर देखता है , चेतना को क्षणभंगुर देखता है > ( )।
यह ज्ञान है।
< वह रूप से मुक्त है, 1 भावना से मुक्त है , धारणा से मुक्त है , निर्धारण से मुक्त है , चेतना से मुक्त है; वह दुख से मुक्त है , मैं कहता हूँ > ( )।
यह ज्ञान है और जानने योग्य है।
880. < सभी निर्धारण अस्थाई हैं > (§38).
यह जानने योग्य है।
और इसलिए जब वह इस प्रकार समझदारी से देखता है (वही)।
यह ज्ञान है।
तब वह दुख में भी वैराग्य पाता है;
यही वह मार्ग है जो शुद्धि की ओर ले जाता है (वही)।
यह ज्ञान है और जानने योग्य है ।
881. <[और] ' सभी निर्धारण भी कष्टदायक होते हैं > (वही)।
यह जानने योग्य है।

879/1 रूपेना , रूपम्हा की गलत व्याख्या होनी चाहिए , उद्धरण के अंतिम खंड में विन्ननाम्हा देखें ।

[पृष्ठ 222]
पथप्रदर्शक
और इसलिए जब वह इस प्रकार समझ के साथ देखता है > (वही)।
यह ज्ञान है।

तब वह दुख में भी वैराग्य पाता है ;
यही वह मार्ग है जो शुद्धि की ओर ले जाता है। (वही)।
यह ज्ञान है और जानने योग्य है।
882. <[और फिर इसके अलावा] अनात्म सभी विचार हैं > (वही)।
यह जानने योग्य है।
और इसलिए जब वह इस प्रकार समझदारी से देखता है (वही)।
यह ज्ञान है।
तब वह दुख में भी वैराग्य पाता है ;
यही मार्ग शुद्धिकरण की ओर ले जाता है > (वही; पे 5 2)।
यह ज्ञान है और जानने योग्य है।
883. [168] < सोना , जब कोई भिक्षु या धर्मगुरु, रूप को कारण मानकर , जो कि रूप क्षणभंगुर, पीड़ा के योग्य और परिवर्तन के विचार से अविभाज्य है, 'मैं बेहतर हूँ', 'मैं वैसा ही हूँ ' या 'मैं बदतर हूँ ' देखता है, तो यह वास्तविकता को न देखने के अलावा और क्या है? जब , भावना ... बोध ... निर्धारण ... चेतना को कारण मानकर , जो कि चेतना क्षणभंगुर, पीड़ा के योग्य और परिवर्तन के विचार से अविभाज्य है, 'मैं बेहतर हूँ', 'मैं वैसा ही हूँ ' या 'मैं बदतर हूँ' देखता है, तो यह वास्तविकता को न देखने के अलावा और क्या है?> (एस. iii, 48).
यह जानने योग्य है।
सोना , जब कोई भिक्षु या धर्मगुरु रूप को आधार मानकर, जो कि रूप क्षणभंगुर, पीड़ादायी और परिवर्तन के विचार से अविभाज्य है, यह नहीं देखता कि 'मैं बेहतर हूँ', 'मैं समान हूँ' या 'मैं बदतर हूँ', तो वह यथास्थिति को देखने के अतिरिक्त और क्या है? जब वह भावना , बोध , संकल्प और चेतना को आधार मानकर , जो कि चेतना क्षणभंगुर, पीड़ादायी और परिवर्तन के विचार से अविभाज्य है, यह नहीं देखता कि 'मैं बेहतर हूँ ', 'मैं समान हूँ' या 'मैं बदतर हूँ', तो वह यथास्थिति को देखने के अतिरिक्त और क्या है? (श्लोक 3, 48f.)
यह ज्ञान है।
यह ज्ञान है और जानने योग्य है।

[पृष्ठ 223]
व्यवस्था का प्रतिरूप
[iv- (a)]
884. इसमें, देखना क्या है ? 1
जो स्पष्ट रूप से आर्य सत्यों को प्रकट करते हैं
उन्होंने गहन ज्ञान से भरपूर होकर अच्छी शिक्षा प्रदान की।
हालांकि वे बेहद लापरवाह हो सकते हैं,
फिर भी वे कभी आठवां अस्तित्व नहीं ले सकते > (स्न. 230)।
यह देखना है।
885. < पृथ्वी में गहराई से गड़ा हुआ ताला-खल्ला
चारों दिशाओं से आने वाली हवाओं के झोंकों से अविचलित रहेगा।
[169] मैं कहता हूँ, सच्चा मनुष्य भी ऐसा ही है, जो देखता है
आर्य सत्यों का अनुभव करके > (खंड 229)।
यह देखना है।
886. < भिक्षुओं, जब एक श्रेष्ठ श्रोता में धारा-प्रवेश के चार कारक होते हैं, तो वह चाहे तो स्वयं से इस प्रकार कह सकता है: 'मैंने [नरक, पशु गर्भ, प्रेतलोक, बेचैनी की अवस्थाओं, बुरे गंतव्यों और विनाशों में पुनर्जन्म के जोखिम] को समाप्त कर दिया है; मैं एक धारा-प्रवेशक हूँ, अब विनाश के विचार से अविभाज्य नहीं, [धर्म के प्रति] निश्चित, और ज्ञानोदय के लिए बाध्य (ए. वी, 182; पे 52) < देवताओं और मनुष्यों के बीच अधिक से अधिक सात बार चक्कर लगाने के बाद , मैं दुख का अंत करूँगा > (तुलना करें ए. आई,

233)। <चार क्या? यहाँ, भिक्षुओं, (i) एक श्रेष्ठ श्रोता का पूर्ण पुरुष में विश्वास पूर्णतः स्थापित है, जिसकी जड़ें पूर्णतः विकसित हैं, जो भिक्षु, दिव्य, ईश्वर, मार, उच्च देवत्व या संसार में किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी भी तरह से अजेय है जो [सत्य के] विचार के अनुरूप है, (ii) वह सच्चे विचार में अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है:> (cf. एम. i, 320) <'सच्चे विचार का भगवान बुद्ध द्वारा अच्छी तरह से प्रचार किया गया है, जिसे स्वयं देखना है, विलंबित नहीं (कालजयी), निरीक्षण के लिए आमंत्रित, आगे बढ़ने वाला, और बुद्धिमानों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा सकता है> (§297; ए. iii, 285), <अर्थात, व्यर्थता का मोहभंग, . . . समाप्ति '> (§297 ; ए. ii, 34)। <(iii) और उसके लिए गृहस्थ और गृहस्थ जीवन से बाहर निकले हुए, जो उसके साथ सच्चे विचार में हैं, सभी वांछनीय, वांछित , सुखद और प्रिय हैं> ( )। <(iv) और वह उन गुणों से युक्त है जो श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा वांछित हैं - अक्षत , अविभाजित, बेदाग, निर्मल, मुक्तिदायक, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित, गलत न समझे जाने वाले और एकाग्रता के लिए सहायक> (cf. §298)। <जब एक श्रेष्ठ श्रोता में धारा-प्रवेश के ये चार कारक होते हैं, तो वह...

884/1 देखा गया। 46/1।

[पृष्ठ 224]

पथप्रदर्शक

यदि वह चाहे , तो स्वयं से इस प्रकार कह सकता है: ' मैं ... [ऊपर जैसा] हूँ...'

मैं पीड़ा का अंत करूँगा > [जैसा ऊपर बताया गया है]।

[170]यह देखना है.

[iv (b)]

887. इसमें, क्या चीज़ अस्तित्व में बनी हुई है?

जिनकी क्षमताएं अच्छी तरह से संरक्षित हैं

स्वयं के लिए, बाहरी दुनिया के लिए और पूरी दुनिया के लिए,

जो इस और अगले संसार को जानते हुए अपने समय की प्रतीक्षा करता है

अपने भीतर अस्तित्व बनाए रखते हुए [मार्ग] को धारण करना,

ऐसे ही व्यक्ति को 'अच्छी तरह से वश में किया हुआ' कहा जा सकता है ।

(एसएन. 576;पीई52).

यह सिलसिला जारी है।

888. < भिक्षुओं, सच्चे विचार के ये चार लक्षण हैं। 1 वे चार क्या हैं? लोभ रहित होना सच्चे विचार का एक लक्षण है, द्वेष रहित होना सच्चे विचार का एक लक्षण है, सही जागरूकता सच्चे विचार का एक लक्षण है , और सही एकाग्रता सच्चे विचार का एक लक्षण है । ये सच्चे विचार के चार लक्षण हैं > (अ. 2, 29; पे 52)।

यह सिलसिला जारी है।

[iv (c)]

889. इसमें, देखना और अस्तित्व में बनाए रखना क्या है?

पांच को अलग कर देना चाहिए, पांच को त्याग देना चाहिए।

और पाँच को भी अस्तित्व में बनाए रखना चाहिए;

वह भिक्षु जो पाँच आसक्तियों से परे हो जाता है 1

इसे 'वह व्यक्ति जिसने बाढ़ पार कर ली है' कहा जाता है (ध. 370)।

'पांचों का त्याग करना चाहिए, पांचों को छोड़ देना चाहिए' यह देखना है। 'और पांचों को भी धारण करना चाहिए, जो भिक्षु पांचों आसक्तियों से परे जाकर 'जलप्रपात पार करने वाला' कहलाता है' यह धारण करना है।

यह देखना और अस्तित्व में बनाए रखना है। 2

887/1 आस्था, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता और समझ की 5 शक्तियाँ।
888/1 नेट्टिया ने धम्म-कोत्थसा द्वारा धम्मपद ('सच्चे विचार के निशान') की व्याख्या की , जिसका अर्थ है 'सच्चे विचार के भाग'; लेकिन यहां पद को 'निशान' या 'पदचिह्न' के रूप में लेना स्वीकार्य लगता है (जैसा कि एम. सुत्तस 27 और 28 में है)।
889/1 'पहले "पांच" 5 निकटवर्ती बंधन हैं, दूसरे "पांच" 5 दूरवर्ती बंधन हैं (डी. iii, 234), तीसरे "पांच" विश्वास से शुरू होने वाली क्षमताएं हैं, "पांच आसक्ति" कामवासना, घृणा, भ्रम, अभिमान और विचारों की हैं' (नेटिए, 216)।
889/2 यह व्याख्यात्मक पैराग्राफ Ba और Bb दोनों में अनुपस्थित है।

[पृष्ठ 225]
व्यवस्था का प्रतिरूप
890. < भिक्षुओं, ये तीन शक्तियाँ हैं। कौन सी तीन? वह शक्ति जो मैं अंततः उस सत्य को जान लूँगा जो अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है, वह है 'अंततः ज्ञात होने वाली शक्ति' , वह शक्ति जो अंतिम ज्ञान की क्रिया है , और वह शक्ति जो अंतिम ज्ञाता है > (एस. वी, 204 ; पे 51, 66)। <वह शक्ति जो मैं अंततः उस सत्य को जान लूँगा जो अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है, वह क्या है? यहाँ , भिक्षुओं, एक भिक्षु दुख के अभी तक अप्राप्त महान सत्य को साकार करने की इच्छा को जागृत करता है, वह प्रयास करता है, ऊर्जा को प्रेरित करता है , अपनी चेतना को उलट देता है , और प्रयास करता है। वह दुख की उत्पत्ति के अभी तक अवास्तविक [171] महान सत्य को साकार करने की इच्छा को जागृत करता है... दुख के निवारण के मार्ग के अभी तक अवास्तविक महान सत्य को साकार करने की इच्छा को जागृत करता है, वह प्रयास करता है, ऊर्जा को प्रेरित करता है , अपनी चेतना का प्रयोग करता है और प्रयास करता है। यही वह क्षमता है जिसके द्वारा मैं अंततः उस अवास्तविक सत्य को जान लूँगा जो अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है (; पे 66)।
यह देखना है।
अंतिम ज्ञान की क्रिया क्या है? हे भिक्षुओं, यहाँ एक भिक्षु समझता है कि यह कैसा है, इस प्रकार वह समझता है कि यह कैसा है, इस प्रकार 'यह दुख का मूल है, इस प्रकार वह समझता है कि यह कैसा है, इस प्रकार 'यह दुख का निवारण है, वह समझता है कि यह कैसा है, इस प्रकार 'यह दुख के निवारण का मार्ग है। ' यही अंतिम ज्ञान की क्रिया है। अंतिम ज्ञाता की क्रिया क्या है? हे भिक्षुओं, यहाँ एक भिक्षु , अपने प्रत्यक्ष अनुभव से सत्यापित करते हुए, यहीं और अभी हृदय-मुक्ति और बोध-मुक्ति में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो दोषों के अंतिम अंत के साथ दोषरहित हैं। वह समझता है कि जन्म समाप्त हो गया है, दिव्य जीवन जी लिया गया है, जो किया जा सकता था वह किया जा चुका है, इसके आगे और कुछ नहीं है । यही अंतिम ज्ञाता की क्रिया है (पे 67) ।
यह सिलसिला जारी है।
यह देखना और उसे अस्तित्व में बनाए रखना है।
[v (a)]
891. इसमें हमारा अपना कथन क्या है ?
किसी भी प्रकार का बुरा काम न करें।
लाभदायक कौशल को परिपूर्ण करना,

890/1 तीनों शक्तियों का वर्णन करने वाले उद्धरण सूत्रों में सीधे तौर पर नहीं हैं। विषयवस्तु लगभग इस प्रकार है: पहला सूत्र द्वितीय, 11 (चार सही प्रयास), दूसरा सूत्र प्रथम, 183 (चार सत्यों की प्राप्ति का ज्ञान), और तीसरा सूत्र प्रथम , 35-6 और 184 (क्षय और अनात्म का ज्ञान)। 891/1 'स्वयं का कथन' (सकवचन) का अर्थ है बुद्ध या उनके किसी शिष्य द्वारा दिया गया और उनके द्वारा स्वीकृत कथन।

[पृष्ठ 226]
पथप्रदर्शक
और अपने हृदय को शुद्ध करना:
यह बुद्धों का विधान है > (§238)।

यह हमारा स्वयं का बयान है।

892. भिक्षुओं , मूर्ख के ये तीन लक्षण होते हैं जिनसे दूसरों को पता चलता है कि वह मूर्ख है। वे तीन लक्षण क्या हैं? मूर्ख बुरे विचार रखता है, बुरे वचन बोलता है और उसके कर्म भी बुरे होते हैं। ये मूर्ख के वे लक्षण हैं जिनसे दूसरों को पता चलता है कि वह मूर्ख है। [172] भिक्षुओं, बुद्धिमान व्यक्ति के ये तीन लक्षण होते हैं जिनसे दूसरों को पता चलता है कि वह बुद्धिमान है । वे तीन लक्षण क्या हैं? बुद्धिमान व्यक्ति अच्छे विचार रखता है, अच्छे वचन बोलता है और उसके कर्म भी अच्छे होते हैं। ये बुद्धिमान व्यक्ति के वे तीन लक्षण हैं जिनसे दूसरों को पता चलता है कि वह बुद्धिमान है । (तुलना करें ए. 1 102)

यह हमारा स्वयं का बयान है।

[v (b)]

893. इसमें किसी और का कथन क्या है?

पृथ्वी के समान विशाल कुछ भी नहीं है ।
ऐसी कोई खाई नहीं है जो गड्ढे के बराबर हो, 1
मेरु पर्वत के बराबर ऊँचा कुछ भी नहीं है।
और कोई भी व्यक्ति पहिया घुमाने वाले सम्राट की बराबरी नहीं कर सकता ।

यह किसी और का बयान है।

894. <' देवताओं के स्वामी, अच्छी वाणी से विजय प्राप्त हो।' —'वेपचित्ति , अच्छी वाणी से विजय प्राप्त हो ।' — ... —'वेपचित्ति , एक श्लोक कहिए।' तब असुर दैत्यों के स्वामी वेपचित्ति ने यह श्लोक कहा:

'मूर्ख लोग अपना क्रोध अधिक प्रदर्शित करेंगे'
यदि कोई उनका सामना करने वाला न हो, तो
दृढ़ निश्चयी लोग मूर्खों को नियंत्रण में रखें।
कड़ी सजा के साथ।'

सच्चा विचार (उदाहरण के लिए, एम. सुत्तस 18 और 44 देखें)। 'किसी और का कथन' (परवचन: §893) वह है जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दिया गया हो, जो स्वीकार्य हो भी सकता है और नहीं भी।

893/1 नेत्तिया इस श्लोक को अनदेखा करता है। पाताल ('गड्ढा') एस. iv, 206 (और अन्यत्र) पर प्रकट होता है और एस'ए. iii, 75 पर इसकी टिप्पणी की गई है; ' patassa alam pariyanto n'atthi ettha patittha ti patalo ' (पीटीएस एस.ए. संस्करण में n' atthi के बाद गलत तरीके से पूर्ण विराम लगाया गया है)।

[पृष्ठ 227]

व्यवस्था का प्रतिरूप

भिक्षुओं, जब असुर वृहदों के स्वामी वेपचित्ति ने यह श्लोक बोला, तो असुर वृहदों ने तालियाँ बजाईं, परन्तु देवता मौन रहे। तब असुर वृहदों के स्वामी वेपचित्ति ने देवताओं के स्वामी सक्का से कहा, 'हे देवताओं के स्वामी, एक श्लोक बोलिए।' तब देवताओं के स्वामी सक्का ने यह श्लोक बोला:

'मेरी राय में, [महोदय,] ऐसा है
लेकिन मूर्ख का सामना करने का एक तरीका यह है:
जब एक दूसरे का गुस्सा जान लेते हैं,
वह सचेत होकर अपनी शांति बनाए रखता है।

भिक्षुओं , जब देवताओं के स्वामी सक्का ने यह श्लोक बोला , तो देवताओं ने तालियाँ बजाईं, परन्तु असुर राक्षस मौन रहे। तब देवताओं के स्वामी सक्का ने असुर राक्षसों के स्वामी वेपचित्ति से कहा: 'वेपचित्ति , एक श्लोक बोलो।' तब असुर राक्षसों के स्वामी वेपचित्ति ने यह श्लोक बोला:

[173] ' सहनशीलता के संबंध में, वासावा ,
मुझे इसमें यह दोष मिला:

एक बार मूर्ख ने कल्पना करने का विकल्प चुना
मेरी सहनशीलता भय से उत्पन्न होती है ।
तब तो वह निश्चित रूप से मेरा और भी पीछा करेगा।
जैसे एक बैल भगोड़े को भगाता है।
भिक्षुओं , जब असुर वृहदों के स्वामी वेपचित्ति ने यह श्लोक बोला, तो असुर वृहदों ने तालियाँ बजाईं, परन्तु देवता मौन रहे। तब असुर वृहदों के स्वामी वेपचित्ति ने देवताओं के स्वामी सक्का से कहा, 'हे देवताओं के स्वामी, एक श्लोक बोलिए।' तब देवताओं के स्वामी सक्का ने ये श्लोक बोले:
'उसे कल्पना करने दो, या न करने दो,'
मेरी सहनशीलता भय से उत्पन्न होती है:
अपना भला ही सर्वोपरि है।
और धैर्य से बढ़कर कुछ नहीं है।
यह तब होता है जब किसी व्यक्ति को शक्ति प्राप्त होती है।
कमजोरों के प्रति सहनशीलता दिखाएंगे
वे कहते हैं कि धैर्य ही सर्वोच्च गुण है:
यदि कमजोर हो तो मनुष्य हमेशा धैर्यवान होता है ।
जिसकी शक्ति तो मूर्खों की शक्ति मात्र है।
कहते हैं ना , उसकी ताकत ही उसकी कमजोरी है ;
लेकिन कोई भी इसका प्रतिकार नहीं कर सकता।
सच्चे आदर्शों से पुष्ट शक्ति।
क्रोधित लोगों को उसी प्रकार से जवाब देना

894/1 ख्पीए अनुवाद देखें। अध्याय v, नोट 94.

[पृष्ठ 228]
पथप्रदर्शक
पहले गुस्सा करने से भी बदतर है यह;
क्रोधित पुरुषों को उसी प्रकार का उत्तर न दें।
और एक कठिन लड़ाई जीतना।
वह दोनों के भले को बढ़ावा देता है।
पहले उसका अपना और फिर दूसरे का भी,
दूसरे के क्रोध को कौन जानेगा?
और सचेतनतापूर्वक उसकी शांति बनाए रखें।
सच्चे आदर्श के ज्ञान में अकुशल मनुष्य ही इसके लिए जिम्मेदार हैं।
जो व्यक्ति दोनों के लिए संयम बरतता है
उसका अपना भला और दूसरे का भी भला।
मुझे लगता है कि वह मूर्ख है।
अब, भिक्षुओं, जब देवताओं के शासक सक्का ने यह श्लोक बोला, तो देवताओं ने ताली बजाई और असुर राक्षस चुप रहे > (एस. i, 222f.; cf. पे 54)।
यह किसी और का बयान है।
[v (c)]
895. इसमें हमारा अपना कथन और किसी दूसरे का कथन क्या है?

जो कुछ प्राप्त हो चुका है और जो कुछ अभी प्राप्त होना बाकी है, दोनों ही उस व्यक्ति में मैल से सने होते हैं जो बीमार की तरह अभ्यास करता है। और वे लोग जिनके लिए मूल तत्व केवल प्रशिक्षण (उपदेशों का पालन) करना है, जिनके लिए मूल तत्व केवल सद्‌गुण, कर्तव्य, जीविका और पवित्रता में निहित दिव्य जीवन को बनाए रखना है ; ये एक चरम सीमा हैं। और वे लोग जिनके सिद्धांत और विचार हैं कि 'इंद्रिय सुख में कुछ भी गलत नहीं है': ये दूसरी चरम सीमा हैं । इस प्रकार ये दोनों चरम सीमाएं कब्रिस्तानों को भरती जाती हैं, और कब्रिस्तान गलत विचारों से भरते जाते हैं। इन दोनों चरम सीमाओं से अपरिचित होने के कारण ही कुछ लोग पीछे हट जाते हैं और कुछ अति कर बैठते हैं । (उद, 71-2; पे 54)

यह किसी और का बयान है।

लेकिन जो लोग इन दोनों चरम सीमाओं से परिचित होने के कारण उनमें अस्तित्व नहीं पाते , जो इसके द्वारा ' मैं हूँ' की धारणा को नहीं अपनाते , उनके लिए किसी भी पुनर्जीवन चक्र का वर्णन करना असंभव है। (वही) ।

यह हमारा स्वयं का बयान है।

यह विस्मयादिबोधक चिह्न हमारा अपना कथन है और

किसी और का बयान।

895/1 इस उद्धरण के स्रोत के लिए, देखें सुत्त एट इति. 43-4 (पृष्ठ 689 पर उद्धृत) ।

[पृष्ठ 229]

व्यवस्था का प्रतिरूप

896. कोसल के राजा पसेनादि ने भगवान बुद्ध से कहा: ' आदरणीय महोदय, यहाँ जब मैं एकांतवास में था, तब मेरे मन में यह विचार आया: “किसे आत्मप्रिय है? किसे आत्मप्रिय नहीं है?” आदरणीय महोदय, मेरे मन में यह विचार आया: “जो लोग शरीर, वाणी या मन से दुराचार करते हैं, उन्हें आत्मप्रिय नहीं होता; और चाहे वे कहें कि उन्हें आत्म प्रिय है, फिर भी ऐसा नहीं है। ऐसा क्यों है? क्योंकि वे स्वयं के कारण वही करते हैं जो कोई प्रिय व्यक्ति किसी प्रिय व्यक्ति के साथ करता है। इसीलिए उन्हें आत्म प्रिय नहीं होता। परन्तु जो लोग शरीर, वाणी और मन से अच्छे आचरण का पालन करते हैं, उन्हें आत्म प्रिय होता है; और चाहे वे कहें कि उन्हें आत्म प्रिय नहीं है, फिर भी उन्हें आत्म प्रिय होता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि वे स्वयं के कारण वही करते हैं जो कोई प्रिय व्यक्ति किसी प्रिय व्यक्ति के साथ करता है। इसीलिए उन्हें आत्म प्रिय होता है।” 5 — ' ऐसा ही है, महाराज, ऐसा ही है।' जो लोग शरीर, वाणी या मन से दुराचार करते हैं, उन्हें आत्मा प्रिय नहीं होती; चाहे वे कहें कि आत्मा उन्हें प्रिय है, फिर भी ऐसा नहीं है। ऐसा क्यों है? क्योंकि वे स्वयं के कारण वही करते हैं जो एक प्रिय व्यक्ति किसी प्रिय व्यक्ति के साथ करता है। इसीलिए आत्मा उन्हें प्रिय नहीं होती। परन्तु जो लोग शरीर, वाणी और मन से अच्छे आचरण का पालन करते हैं, उन्हें आत्मा प्रिय होती है; चाहे वे कहें कि आत्मा उन्हें प्रिय नहीं है, फिर भी आत्मा उन्हें प्रिय होती है। [175] ऐसा क्यों है? क्योंकि वे स्वयं के कारण वही करते हैं जो एक प्रिय व्यक्ति किसी प्रिय व्यक्ति के साथ करता है। इसीलिए आत्मा उन्हें प्रिय होती है।'> भगवान बुद्ध ने यही कहा। यह कहकर, गुरु ने आगे कहा:

यदि कोई व्यक्ति स्वयं को प्रिय समझना चाहे,
तो फिर कोई बुराई उसे जकड़ न ले;
क्योंकि सुख आसानी से नहीं मिलता।
जो व्यक्ति अन्याय करता है, उसे ही दंड मिलता है।
एक बार संहारक द्वारा कब्जा कर लिए जाने के बाद,
एक बार मानवीय अवस्था को त्याग देने पर ,
फिर ऐसी कौन सी चीज है जो उसकी अपनी है?
जब वह जाता है तो अपने साथ क्या ले जाता है ?
और उसके पीछे क्या आएगा?
क्या उसकी परछाई उसका साथ देती है?
गुण और दोष, दोनों ही।
कि यहाँ किसी नश्वर व्यक्ति ने यह कार्य किया है,

तो फिर वह चीज वहां मौजूद है और उसकी अपनी है।
वह इसे अपने साथ ले जाता है जब वह जाता है।
और वह उसके पीछे-पीछे आएगा, जैसा कि
उसकी परछाई उसका साथ देती है।

[पृष्ठ 230]
पथप्रदर्शक
इसलिए उसे अच्छी चीजों का भंडार बनाने दो
ताकि आने वाले जन्मों में उसे इसका फल मिले:
इस दुनिया से परे योग्यता के लिए
किसी जीवित प्राणी की नींव प्रदान करता है > (एस.आई , 71एफ.).
यहां थ्रेड किसी और का कथन है और पैराफ्रेजिंग-वर्स हमारा अपना कथन है।
यह हमारा अपना बयान है और किसी और का भी बयान है।
[के जरिए)]
897. इसमें उत्तर देने योग्य क्या है?
जब यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या इससे परिचित होना चाहिए, क्या इसका निदान किया जाना चाहिए, क्या इसे त्याग दिया जाना चाहिए, क्या इसे अस्तित्व में रखा जाना चाहिए, क्या इसका सत्यापन किया जाना चाहिए, क्या इन विचारों को इस प्रकार लेने से यह फल प्राप्त होता है, क्या इस प्रकार लिए गए उन विचारों का यही अर्थ है, तो इसका उत्तर दिया जा सकता है।
898. [जब यह पूछा जाता है कि] क्या किसी को निःसंकोच प्रबुद्ध व्यक्ति की महानता को इस प्रकार प्रदर्शित करना चाहिए, 'प्रबुद्ध व्यक्ति, भगवान बुद्ध महान हैं', और सच्चे विचार की सुप्रसिद्धि, और समुदाय के उत्तम अभ्यास को [तदनुसार], या जब यह पूछा जाता है कि] क्या किसी को निःसंकोच प्रदर्शित करना चाहिए कि < सभी निर्धारण अनित्य हैं > (§38), <[और] सभी निर्धारण कष्टदायी भी हैं > (§38) [या] <[और फिर इसके अलावा] सभी विचार अनात्म हैं > (§38), या इसी तरह का कुछ और, तो यह उत्तर देने योग्य है।
[vi (b)]
899. [176] इसमें, अनुत्तरित क्या है? [जब इसे इस प्रकार पूछा जाता है:]
हे वश में किए जाने वाले मनुष्यों के नेता ,
जब आप डिजाइन करते हैं ,
न तो देवता, न मनुष्य, न ही सब कुछ
संपूर्ण [सरणी]
जीवित प्राणी जान सकते हैं कि क्या है
आपके मन में विचार आया
शांत एकाग्रता का उपयोग करना
बिना संघर्ष के (; पीई 71):

[पृष्ठ 231]
व्यवस्था का प्रतिरूप
भगवान बुद्ध का संदेश क्या है ?
क्या इरादा है?' > ( ).
इसका कोई जवाब नहीं है।

900. [जब यह पूछा जाता है कि] भगवान बुद्ध सद्गुण श्रेणी, एकाग्रता श्रेणी, समझ श्रेणी, मुक्ति श्रेणी, या मुक्ति के ज्ञान और दर्शन श्रेणी के संबंध में, व्यवहार के संबंध में, गरिमा के संबंध में, कल्याण की खोज के संबंध में, करुणा के संबंध में, असाधारण सफलता के संबंध में इतने अधिक हैं, तो इसका उत्तर देना असंभव है।

901. [जब यह कहा जाता है] < भिक्षुओं, संसार में पूर्णतः सिद्ध और प्रबुद्ध व्यक्ति के उदय के साथ ही तीन रत्नों का उदय होता है, प्रबुद्ध रत्न, सत्य विचार रत्न और समुदाय रत्न ( ) [और यह पूछा जाता है] ' तीनों रत्नों का माप क्या है ?', यह उत्तरहीन है ।

902. [जब इसी प्रकार प्रबुद्ध व्यक्ति के क्षेत्र के बारे में पूछा जाता है] (देखें ए. ii, 80), तो यह अनुत्तरित है।

903. [जब इसी प्रकार अन्य व्यक्तियों की क्षमताओं में विविधता के ज्ञान के बारे में पूछा जाता है] (देखें §585), तो यह अनुत्तरित है।

904. [जब यह कहा जाता है] < भिक्षुओं, उन प्राणियों का भूतकाल स्पष्ट नहीं है जो अज्ञान को बाधा और भोग को बंधन मानकर निरंतर नरक, पशु गर्भ, प्रेतलोक, असुर-राक्षस गर्भ, देवताओं और मनुष्यों के बीच चक्कर लगाते रहते हैं> (देखें श्लोक 2, 178 श्लोक, 326; देखें §644), [और यह पूछा जाता है] 'भूतकाल क्या है?' , जिसका उत्तर देना असंभव है। श्रोता के ज्ञान की कमी के कारण यह 'स्पष्ट नहीं' है ।

905. [अब] प्रबुद्धों, भगवान बुद्धों की शिक्षा दो प्रकार की है, अर्थात् स्वयं को मार्गदर्शक उदाहरण मानकर और दूसरों को मार्गदर्शक उदाहरण मानकर। [शिक्षा] <स्पष्ट नहीं है> (§905) दूसरों को मार्गदर्शक उदाहरण मानकर दी जाती है, जबकि [

901/1 रतननं उप्पादो पढ़ना।

901/2 संभवतः पढ़ें . . . संघरतनस्सा ;' (उद्धरण का अंत). किम-पमनानी तिनि रतनानी? ति इदं अविसज्जानीयम् (नया पैरा.)।

904/1 यह, हालांकि अजीब तरह से व्यक्त किया गया है, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई 'प्रथम पद (शुरुआत)' है जिसे वे देख नहीं सकते, बल्कि यह उनके ज्ञान में 'कमी' है जो उन्हें भ्रामक 'प्रथम पद' की तलाश करने के लिए प्रेरित करती है, अर्थात् निम्नलिखित के उनके ज्ञान में कमी, अर्थात्, 'अथ पना पन्नयति "इदप्पच्चया अविज्जा " ति ' (ए.वी. , 113) और ' "इदप्पच्चया भवतन्हा " ति ' (ए.वी. , 116)।

[पृष्ठ 232]

पथप्रदर्शक

शिक्षा] < प्रबुद्ध जन, भगवान बुद्ध, अज्ञान नहीं रखते > ( ) स्वयं को मार्गदर्शक उदाहरण के रूप में रखते हैं।

जैसा कि भगवान बुद्ध ने एक भिक्षु कोकालिका के बारे में बताया: [177] < भिक्षु, मान लीजिए कि बीस खरीका माप की क्षमता वाली एक कोसलन तिल-बीज की गाड़ी है , [और हर सौ साल या हर हज़ार साल के अंत में एक आदमी एक तिल का बीज ले जाता है, तो बीस खरीका माप की क्षमता वाली वह कोसलन तिल-बीज की गाड़ी इस तरह से जल्दी समाप्त हो जाएगी और उसका अंत हो जाएगा] इससे पहले कि अब्बुद 1 नरक समाप्त हो; और बीस अब्बुद नरकों के समान एक निरब्बुद नरक है; और बीस निरब्बुद नरकों के समान एक अतत नरक है; और बीस अतत नरकों के समान एक अहहा नरक है; और बीस अहहा नरकों के समान एक कुमुद नरक है; और बीस कुमुद नरकों के समान एक सोगंधिका नरक है; और बीस सोगंधिका नरकों के समान एक उप्पला नरक है; और बीस उपपाल नरकों के समान एक पुंडरीका नरक है; और बीस पुंडरीका नरकों के समान एक पद्मा नरक है। अब कोकालिका ने सारिपुत्त और मोग्गलाना के विरुद्ध हृदय कठोर करके इसी पद्मा नरक में पुनः प्रवेश किया है।

(एस. आई, 152).

906. या वास्तव में, किसी भी ऐसी चीज़ के माप के बारे में कोई भी प्रश्न जिसका भगवान बुद्ध ने कहा है 'यह असीम है, अगणनीय है' हमेशा अनुत्तरित रहता है।

इसका कोई जवाब नहीं है।

[vi (c)]

907. इसमें उत्तर देने योग्य और उत्तर न देने योग्य क्या है?

जब तपस्वी उपक ने भगवान बुद्ध से पूछा, 'हे मित्र गौतम पंचम, आप कहाँ जा रहे हैं ?' तो भगवान बुद्ध ने कहा, 'मैं बनारस जा रहा हूँ। मैं वहाँ सत्य विचार के चक्र, अमर ढोल को गतिमान करने जा रहा हूँ, जिसे संसार में रोका नहीं जा सकता।' तब तपस्वी उपक ने पूछा, 'क्या आप स्वयं को विजेता मानते हैं?' तो भगवान बुद्ध ने कहा:

< ' मेरे जैसे विजेता, उपका ,
क्या वे लोग हैं जिनके दाग पूरी तरह से मिट चुके हैं?
मैंने बुराई के सभी विचारों को पराजित कर दिया।
और इसीलिए मैं विजेता हूँ > (एम.आई. , 171) . 1

905/1 यह और इसके बाद के सभी नाम उत्तरोत्तर विशाल संख्याओं के नाम हैं, जिनमें से अंतिम नाम विभिन्न प्रकार के (बहु-पंखुड़ी वाले) कमल के फूलों से लिए गए हैं।
907/1 इस पैराग्राफ का पहला भाग, श्लोक तक, उद्धरण नहीं बल्कि सारांश है।

[पृष्ठ 233]
व्यवस्था का प्रतिरूप
[अब सवाल] 'विजेता V कैसे होता है ?' या 'विजेता V किस कारण से होता है?' के जवाब दिए जा सकते हैं; [लेकिन सवाल] 'विजेता क्या है? ' का जवाब नहीं दिया जा सकता। [फिर से, सवाल] 'कलंकों की कौन सी समाप्ति? क्या यह कामवासना की समाप्ति है, घृणा की समाप्ति है, भ्रम की समाप्ति है?' का जवाब दिया जा सकता है; [लेकिन सवाल] 'कलंकों की कितनी समाप्ति?' का जवाब नहीं दिया जा सकता।
[178] यह उत्तर देने योग्य और उत्तर न देने योग्य है।
908. [प्रश्न] 'क्या कोई पूर्ण (तथागत) है?' का उत्तर दिया जा सकता है ।
[प्रश्न] 'क्या रूप V मौजूद है?' उत्तर देने योग्य है। [प्रश्न] <'क्या एक पूर्ण सत्ता रूप में है? ' (श्लोक 4, 383) उत्तर देने योग्य नहीं है; [प्रश्न] 'क्या एक पूर्ण सत्ता रूप में है?' उत्तर देने योग्य नहीं है; [प्रश्न] <'क्या एक पूर्ण सत्ता रूप में है ?' (श्लोक 4, 383) उत्तर देने योग्य नहीं है; [प्रश्न] 'क्या एक पूर्ण सत्ता में रूप है ?' उत्तर देने योग्य नहीं है।
इसी प्रकार 'क्या कोई भावना है?' . . .
इसी प्रकार 'क्या कोई बोध है?' . . .
इसी प्रकार 'क्या कोई निर्णय लिए गए हैं?' . . .
[इसी प्रकार] 'क्या चेतना है?' उत्तर देने योग्य है। <'क्या एक पूर्ण सत्ता चेतना है ?'> (श्लोक 4, 383) उत्तर देने योग्य नहीं है; 'क्या एक पूर्ण सत्ता चेतना धारण करती है?' उत्तर देने योग्य नहीं है; <'क्या एक पूर्ण सत्ता चेतना में है ?'> (श्लोक 4, 383) उत्तर देने योग्य नहीं है।
क्या रूप से अलग कोई परिपूर्ण सत्ता है? यह प्रश्न अनुत्तरित है ; क्या कोई
पूर्ण एक, भावना से अलग... बोध से... संकल्पों से... चेतना से ... हम अनुत्तरित हैं।
क्या यह पूर्ण स्वरूपहीन है? ... क्या इसमें कोई भावना नहीं है?
बिना बोध के... बिना दृढ़ निश्चय के... बिना चेतना के हम अनुत्तरित हैं।
यह उत्तर देने योग्य और उत्तर न देने योग्य दोनों है।

907/2 ' कटामो जिनो —विजेता क्या है?': नेटिआ : 'क्या विजेता रूप है या भावना है या धारणा है या निर्धारण है या चेतना है? या वह उनसे अलग है?' (पृष्ठ 220); देखें §379.
908/1 प्रश्न 'अत्थि तथागतो? =

अत्थी सत्टो ?' (नेत्तिआ , पृ. 220); साथ ही 'इस व्यक्ति (अयस्मा) का वर्णन पाँच श्रेणियों के आधार पर इस प्रकार किया जा सकता है, जैसे कि अमुक परिवार का, और यह, क्योंकि यह उस वर्णित व्यक्ति को संदर्भित करता है, उत्तरदायित्वपूर्ण है' (पृ. 220)। 'व्यक्ति' को अन्यथा ' अविज्जमान-पन्नत्ति' (पुगआ, अर्थात् 'गैर-तथ्यात्मक के संदर्भ में वर्णन') कहा जाता है, श्रेणियाँ आदि ' विज्जमान-पन्नत्ति ' (तथ्यात्मक के संदर्भ में वर्णन) हैं। तुलना करें श्लोक 4, 52।

[पृष्ठ 234]

पथप्रदर्शक

909. 'क्या भगवान बुद्ध, शुद्ध और मनुष्य से परे दिव्य दृष्टि से, प्राणियों को मरते और फिर से प्रकट होते हुए देखते हैं... और इसी प्रकार बाकी सब (देखें §591)... क्या वे समझते हैं कि प्राणी अपने कर्मों के अनुसार कैसे मरते हैं? V उत्तरदायी है।

'प्राणी V क्या हैं' और 'परिपूर्ण V क्या है' जैसे प्रश्न अनुत्तरित हैं।

यह उत्तर देने योग्य और उत्तर न देने योग्य दोनों है।

910. 'क्या कोई पूर्ण सत्ता है ?' का उत्तर दिया जा सकता है। 'क्या मृत्यु के बाद कोई पूर्ण सत्ता है ?' का उत्तर नहीं दिया जा सकता ।

यह उत्तर देने योग्य और उत्तर न देने योग्य दोनों है।

[vii (a)]

911. इसमें क्रिया क्या है?

जब कोई मृत्यु से पराजित हो जाता है 1

और मानवीय अवस्था को त्याग देना,

फिर उसमें ऐसा क्या है जो उसका अपना है?

जब वह जाता है तो अपने साथ क्या ले जाता है?

और उसके पीछे क्या आएगा?

क्या उसकी परछाई उसका साथ देती है?

गुण और दोष, दोनों ही।

कि यहाँ किसी नश्वर व्यक्ति ने यह कार्य किया है,

तो फिर वह चीज वहां मौजूद है और उसकी अपनी है ।

वह इसे अपने साथ ले जाता है जब वह जाता है ।

और वह उसके पीछे-पीछे आएगा, जैसा कि

उसकी परछाई उसका साथ देती है > (§896).

यह कार्रवाई है।

912. < हे भिक्षुओं, जब कोई मूर्ख अपनी कुर्सी [179] या अपने पलंग पर बैठा हो या जमीन पर आराम कर रहा हो , तो उसके द्वारा अतीत में किए गए बुरे कर्म, चाहे वह देह, वाणी या मन से किए गए दुराचार के कारण हों, उसे ढक लेते हैं और घेर लेते हैं। जैसे शाम के सूरज में किसी विशाल चट्टानी चोटी की छाया जमीन को ढक लेती है और घेर लेती है, वैसे ही जब कोई मूर्ख अपनी कुर्सी या अपने पलंग पर बैठा हो या जमीन पर आराम कर रहा हो, तो उसके द्वारा अतीत में किए गए बुरे कर्म, चाहे वह देह, वाणी या मन से किए गए दुराचार के कारण हों, उसे ढक लेते हैं और घेर लेते हैं। तब

910/1 सभी त्रिपिटक संदर्भों में, इन संदर्भों में होटी है, अत्थी नहीं ।

911/1 अंतकेनाधिपन्नस्स §896 पर और मारा नेनाधिभूतस्स यहाँ, हालाँकि श्लोक का शेष भाग समान है।

[पृष्ठ 235]

व्यवस्था का प्रतिरूप

मूर्ख के मन में यह विचार आता है , 'मैंने अच्छे कर्म नहीं किए, मैंने लाभप्रद कर्म नहीं किए, मैंने अपने लिए पीड़ा से कोई आश्रय नहीं बनाया, मैंने बुराई की है , मैंने क्रूरता की है, मैंने दुष्टता की है। जो भी ऐसे कर्म करने वालों का गंतव्य हो, मैं भी वहीं जाऊंगा।' (एम. iii, 164-5) वह शोक करता है और विलाप करता है, अपनी छाती पीटता है , रोता है और व्याकुल हो जाता है। जैसे शाम के सूरज में किसी विशाल चट्टानी चोटी की छाया ज़मीन को ढक लेती है, उस पर फैल जाती है और उसे अपने आलिंगन में ले लेती है, ठीक वैसे ही जब कोई बुद्धिमान व्यक्ति अपनी कुर्सी पर, अपने बिस्तर पर या ज़मीन पर आराम कर रहा होता है, तो उसके द्वारा अतीत में किए गए अच्छे कर्म, शरीर , वाणी और मन के अच्छे आचरण से उसे ढक लेते हैं, उस पर फैल जाते हैं और उसे अपने आलिंगन में ले लेते हैं। तब

बुद्धिमान व्यक्ति के मन में यह विचार आता है , 'मैंने बुराई नहीं की है, मैंने क्रूरता नहीं की है , मैंने दुष्टता नहीं की है, मैंने अच्छाई की है , मैंने लाभप्रद किया है , मैंने अपने लिए पीड़ा का आश्रय बनाया है। जो भी [180] उन लोगों का गंतव्य है जिन्होंने ऐसा कर्म किया है, मैं अपने जाने पर वहीं जाऊँगा ', और वह न तो शोक करता है, न विलाप करता है , न ही छाती पीटकर रोता है और व्याकुल होता है (एम. iii, 171)। [वह जानता है] 'मैंने पुण्य किया है और कोई बुराई नहीं की है। जो लोग बुराई, क्रूरता और दुष्टता से दूर रहकर अच्छे और लाभकारी कार्य करते हैं और कष्टों से मुक्ति पाते हैं, उनका गंतव्य चाहे जो भी हो, मैं मृत्यु के बाद आने वाले जीवन में उनके साथ सहअस्तित्व में रहूंगा। इसलिए उन्हें कोई पश्चाताप नहीं है। भिक्षुओं, मैं कहता हूं कि मृत्यु शुभ है, समय की समाप्ति शुभ है, चाहे स्त्री हो या पुरुष, गृहस्थ हो या गृहस्थ जीवन से विमुख, जिसे कोई पश्चाताप नहीं है ।
यह कार्रवाई है।
913. < भिक्षुओं, ये तीन प्रकार के दुराचार हैं। वे तीन क्या हैं? देह संबंधी दुराचार, वाणी संबंधी दुराचार और मन संबंधी दुराचार। ये तीन प्रकार के दुराचार > (इति. 54; पे 49)। < भिक्षुओं , अच्छे आचरण के तीन प्रकार हैं। वे तीन क्या हैं? देह संबंधी अच्छा आचरण, वाणी संबंधी अच्छा आचरण और मन संबंधी अच्छा आचरण । ये तीन प्रकार के अच्छे आचरण > (इति. 55; पे 53)।
यह कार्रवाई है।

[पृष्ठ 236]
पथप्रदर्शक
[vii (b)]
914. इसमें क्या पक रहा है?
भिक्षुओं , आपके लिए यह लाभ है, यह आपके लिए बहुत बड़ा लाभ है कि आपने दिव्य जीवन जीने का अवसर पा लिया है। भिक्षुओं, मैंने ऐसे नरक देखे हैं जो संपर्क के छह आधार प्रदान करते हैं । वहाँ आँख से जो भी रूप देखा जाए, केवल अवांछित ही देखा जाता है, वांछित कभी नहीं, केवल अनचाहा ही देखा जाता है, वांछित कभी नहीं, केवल अप्रिय ही देखा जाता है, सुखद कभी नहीं। कान से जो भी ध्वनि सुनी जाए... नाक से जो भी गंध सूँघी जाए ... जीभ से जो भी स्वाद चखा जाए ... शरीर से जो भी स्पर्श किया जाए... मन से जो भी विचार उत्पन्न किया जाए, केवल अवांछित ही देखा जाता है, वांछित कभी नहीं, केवल अनचाहा ही देखा जाता है, वांछित कभी नहीं, केवल अप्रिय ही देखा जाता है, सुखद कभी नहीं। भिक्षुओं, आपके लिए यह लाभ है, आपके लिए यह बहुत बड़ा लाभ है कि आपने दिव्य जीवन जीने का क्षण पा लिया है । भिक्षुओं, मैंने ऐसे स्वर्ग देखे हैं जो संपर्क के छह आधार प्रदान करते हैं। वहाँ आँख से जो भी रूप देखा जाए, केवल इच्छित रूप ही देखा जाए, कभी अनचाहा नहीं; केवल वांछित देखा जाए, कभी अवांछित नहीं; केवल सुखद देखा जाए, कभी अप्रिय नहीं। कान से जो भी ध्वनि सुनी जाए... नाक से जो भी गंध सूँघी जाए... जीभ से जो भी स्वाद चखा जाए... शरीर से जो भी स्पर्श किया जाए... मन से जो भी विचार उत्पन्न हो, केवल इच्छित ही देखा जाए, कभी अनचाहा नहीं; केवल वांछनीय देखा जाए, कभी अवांछनीय नहीं; केवल सुखद देखा जाए, कभी अप्रिय नहीं। 1 भिक्षुओं, आपके लिए यह लाभ है, आपके लिए यह बहुत बड़ा लाभ है कि आपने दिव्य जीवन जीने का अवसर पा लिया है (श्लोक 4, 126)। 2
यह पक रहा है।
915. पूरे साठ हजार साल बीत गए
नरक में परिपक्व हुआ। इसका अंत कब होगा?
इसका कोई अंत नहीं है! अंत कहाँ है?
अंत का कोई संकेत नहीं
यह आपके और मेरे लिए प्रतीत होता है, महोदय;
क्योंकि हमने तब बुराई की थी > (यहूदी iii, 47; पतरस 49)।
यह पक रहा है।

914/1 'नरक* के लिए n. 786/2 देखें.
914/2 इस पैराग्राफ के लिए देखें. पी.ई. 49, पंक्तियाँ 13-14 और 58, पंक्ति 17.

[पृष्ठ 237]

व्यवस्था का प्रतिरूप

[vii (c)]

916. इसमें क्रिया और परिपक्वता क्या है?
जब भी किसी लापरवाह व्यक्ति ने कोई गलती की हो ,
फिर वह जहां भी जाता है, बुरी जगहों पर
उसने जो गलत किया है, उसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ेगा।
जैसे काला कोबरा सांप खुद को जकड़ लेता है > ( )}
सही विचार और गलत विचार
पकने की प्रक्रिया कभी एक जैसी नहीं रही:
गलत धारणा मनुष्य को नरक की ओर ले जाती है।
सही विचार उन्हें स्वर्ग तक ले जाता है > (थाग. 304).
यह क्रिया और परिपक्वता की प्रक्रिया है।

917. भिक्षुओं , किसी भी प्रकार के पुण्य से भयभीत न हों। यह उस सुख का नाम है जिसकी कामना की जाती है , जो प्रिय है और जो सुखद है, [182] अर्थात् 'पुण्य के प्रकार 9 '। लंबे समय तक मुझे ऐसे पुण्य का ज्ञान रहा , जिसका परिपक्व होना वांछित , वांछनीय , प्रिय और सुखद के साथ अनिवार्य था। सात वर्षों तक मैंने अपने हृदय में प्रेममयी भाव बनाए रखा। उसके बाद सात युगों के संसार-संकुचन और संसार-विस्तार के दौरान मैं इस संसार में कभी वापस नहीं आया; क्योंकि युग के संकुचन के साथ, मैं आभासर (प्रवाहित-दीप्ति) [उच्च देवत्व] के लोक में चला गया; और युग के विस्तार के साथ , मैं [अगले निम्न लोक में] एक उच्च देवत्व के खाली महल में पुनः प्रकट हुआ। वहाँ मैं देवत्व, उच्च देवत्व, पारलौकिक, अचूक दृष्टि वाला, प्रभुत्व का स्वामी था। 1. फिर छत्तीस बार मैं देवताओं का शासक सक्का बना [इंद्रिय सुख के दूसरे स्वर्ग में]। और सैकड़ों बार मैं एक चक्र-घुमाने वाला सम्राट बना? धर्म के आदर्शों वाला एक न्यायसंगत सम्राट, पृथ्वी के चारों कोनों का विजेता, स्थिर प्रांतों वाला और सात रत्नों का स्वामी। स्थानीय राजत्व की बात करने की क्या आवश्यकता है? मेरे मन में यह विचार आया [कि] 'यह मेरे किस कर्म का फल है, किस कर्म के फलस्वरूप से मुझे इतनी विशाल सफलता और शक्ति प्राप्त हुई है?' [और उत्तर] मेरे मन में आया 'यह मेरे तीन प्रकार के कर्मों का फल है, तीन प्रकार के कर्मों के फलस्वरूप से मुझे इतनी विशाल सफलता और शक्ति प्राप्त हुई है।'

916/1 पाठ 'सयम' है। इस उपमा का तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि बुरे कर्म स्वयं को पीड़ा पहुँचाते हैं, जैसे कि एक कोबरा स्वयं को काटता है।

917/1 ब्रह्मा ('उच्च देवत्व') के इस विवरण के लिए एम. सुत्त 49 और डी. i, 221 देखें।

917/2 'पहिया घुमाने वाले सम्राट' (चक्कवत्ती) के लिए एम. सुत्त 129 देखें ।

[पृष्ठ 238]

पथप्रदर्शक

शक्ति: यह देने के कारण है , यह [स्वयं] को वश में करने के कारण है, और यह संयम के कारण है'> (इति. 14f.).

यहां, 'देना', 'वश में करना' और 'संयम रखना' क्रिया हैं, जबकि परिपक्वता, जिसकी स्थिति वह है जो अनुभव के साथ सह-अनिवार्य थी, परिपक्वता है।

918. इसी तरह कुला-कम्माविभंगा-सुत्त (एम. सुत्त 135) को छात्र सुभा टोडेयपुत्त को पढ़ाए गए उद्धरण के रूप में उद्धृत किया जाना चाहिए।

इसमें, वे विचार जो अल्प जीवन और दीर्घ जीवन, अधिक कष्ट और अल्प कष्ट, अल्प प्रभाव और अधिक प्रभाव, कुरूप रूप और सुंदर रूप, निम्न जन्म और उच्च जन्म, अल्प संपत्ति और अधिक संपत्ति, बुद्धि की कमी और बुद्धि की उपलब्धता की ओर ले जाते हैं, [183] क्रिया हैं, जबकि अल्प जीवन और दीर्घ जीवन, . . . बुद्धि की कमी और बुद्धि की उपलब्धता, इसमें परिपक्वता हैं। 1

यह क्रिया और परिपक्वता की प्रक्रिया है।

[viii (a)]

919. इसमें लाभदायक क्या है?

जो अपनी वाणी पर नियंत्रण रखता है , वह मन से संयमित रहता है ।

संस्था के साधनों से कोई अलाभकारी कार्य नहीं करता:

इस त्रिविध कार्यप्रणाली को कौन शुद्ध करता है ?

ऋषियों द्वारा प्रकट किए गए मार्ग पर विजय प्राप्त करेंगे > (ध. 281; पे 70)।

यह लाभदायक है।

920. < जिसने अब कोई और कुकर्म नहीं किया है

शरीर से, वाणी से या मन से ,

जो तिहरे मोड में प्रतिबंधित है ,

' मैं उसे ही दिव्य कहता हूँ > (ध. 391).

यह लाभदायक है।

921. < भिक्षुओं, लाभ के ये तीन मूल हैं। वे तीन क्या हैं? लाभ के मूल के रूप में लोभ रहित होना , लाभ के मूल के रूप में घृणा रहित होना और लाभ के मूल के रूप में भ्रम रहित होना। ये लाभ के तीन मूल हैं > (ए. आई, 203)।

यह लाभदायक है।

918/1 क्रिया का परिपक्व होना भावना के कारणों में से केवल एक है- देखें एस. iv, 230-1.

[पृष्ठ 239]

व्यवस्था का प्रतिरूप

922. < भिक्षुओं , विज्ञान लाभदायक विचारों की पूर्णता का अग्रदूत है, जिसके बाद विवेक और लज्जा आती है > (इति. 34)।

यह लाभदायक है।

[viii (b)]

923. इसमें, अलाभकारी क्या है?

जो व्यक्ति दुराचार में अतिप्रवण हो,

जैसे मालुवा की लताएँ साला के वृक्षों का गला घोंट देती हैं,

वह इस तरह से व्यवहार करता है जिससे वह खुद को

ठीक वैसे ही जैसे उसका शत्रु चाहेगा > (ध. 162).

यह लाभहीन है।

924. < स्वयं द्वारा किया गया, स्वयं उत्पन्न हुआ पाप,

स्वयं के कारण ही इसका वास्तविक अस्तित्व है,

उन्हें इतनी मूर्खता से पीसता है [कि ऐसा करता है]।

जैसे अडिग पत्थरीले रत्न को करता है > (Dh. 161).

यह लाभहीन है।

925. [184] <लाभहीन , जो लाभ से वंचित हैं

कर्म के दस गुना मार्ग को पूरा करते हुए,

निंदनीय हैं, देवता,

जैसे मूर्ख जो नरक में परिपक्व होते हैं > ( ).

यह लाभहीन है।

926. < भिक्षुओं, ये तीन प्रकार के अपितु हैं। वे तीन कौन से हैं? वे हैं लोभ, घृणा और मोह। ये तीन अपितु हैं > (ए. आई, 201)।

यह लाभहीन है।

[viii (c)]

927. इसमें लाभदायक और अलाभदायक क्या है?

जैसा बोया गया है

अतः [बाद में] फसल काटी जाती है:

और भलाई करने वाले को भी भलाई ही मिलती है।

और बुराई करने वाले के लिए बुराई > (एस. i, 227; cf. पे 46).

यहां, 'अच्छा करने वाले को अच्छा ही मिलता है' ये शब्द लाभदायक हैं, जबकि 'बुरा करने वाले को बुरा ही मिलता है' ये शब्द अलाभदायक हैं।

यह लाभदायक और अलाभदायक दोनों है।

[पृष्ठ 240]

पथप्रदर्शक

928. < कर्मों से ही सुंदरता आती है

कि मनुष्य स्वर्ग की ओर अग्रसर होते हैं,

और उनके घृणित कृत्यों के कारण ,

उन राज्यों में जहां कोई राहत नहीं है।

लेकिन सभी कार्यों के समाप्त होने के साथ

हृदय मुक्त हो गया है;

जैसे दीपक का सारा ईंधन खत्म हो गया हो

वे विलुप्ति तक पहुँचते हैं > ( ).

यहां, 'सुंदर कर्मों से ही मनुष्य स्वर्ग की ओर अग्रसर होता है' ये शब्द लाभदायक हैं, जबकि 'और उनके कुरूप कर्मों के कारण, ऐसी अवस्थाओं में पहुँच जाते हैं जहाँ कोई शांति नहीं होती' ये शब्द अनुपयोगी हैं।

यह लाभदायक और अलाभदायक दोनों है।

[ix (a)]

929. इसमें, क्या सहमति हुई है?

और जैसे ही मधुमक्खी फूल के पास आती है

और जल्द ही भोजन लेकर उड़ जाता है ।

रंग और सुगंध को बरकरार रखते हुए,

तो शांत व्यक्ति शहर की ओर जाता है > (ध. 49)।

यही सहमति बनी है।

930. [185] < भिक्षुओं, भिक्षुओं द्वारा किए जाने वाले ये तीन [कार्य] हैं। वे तीन क्या हैं? यहाँ (i) एक भिक्षु पतिमोक्ख नियम के संयम से बंधा रहता है, आचरण और साधना में परिपूर्ण होता है, और थोड़ी सी भी गलती में भय देखकर, वह प्रशिक्षण नियमों का पालन करता है और उनमें अभ्यास करता है; फिर, चूंकि उसका शारीरिक, मौखिक और मानसिक कर्म लाभप्रद है, उसने अपनी आजीविका को शुद्ध कर लिया है, (ii) फिर उसने ऊर्जा को प्रेरित किया है, दृढ़ता और लगन से दृढ़ है, लाभहीन विचारों को त्यागने और लाभप्रद विचारों को बनाए रखने और सत्यापित करने के कार्य से कभी पीछे नहीं हटता, (iii) और फिर उसे समझ प्राप्त होती है , उसके पास ऐसी समझ होती है जो उदय और अपाप तक फैली होती है; वह महान और मर्मस्पर्शी होती है, और दुख के पूर्ण अंत तक फैली होती है। ये, भिक्षुओं, भिक्षुओं द्वारा किए जाने वाले तीन [कार्य] हैं > (; cf.Pe 57)।

यही सहमति बनी है।

931. भिक्षुओं , गृहस्थ जीवन से विमुख हुए व्यक्ति को इन दस विचारों की निरंतर समीक्षा करनी चाहिए। वे दस विचार कौन से हैं? ' मैं जातिविहीन अवस्था में आ गया हूँ ' यह विचार गृहस्थ जीवन से विमुख हुए व्यक्ति को निरंतर समीक्षा के लिए आवश्यक है। ['मेरी आजीविका दूसरों से जुड़ी हुई है' ... मेरा एक अलग (विशेष) है]

[पृष्ठ 241]

व्यवस्था का प्रतिरूप

व्यवहार का तरीका' ... 'क्या मेरा मन मेरे सद्‌गुणों के कारण मुझे धिक्कारता है?' ... 'क्या दिव्य जीवन में मेरे बुद्धिमान साथी, मेरा विचार करके, मेरे सद्‌गुणों के कारण मुझे धिक्कारते हैं? '... 'मुझे उन सभी से अलगाव और जुदाई होगी जो मुझे प्रिय और प्यारे हैं' ... ' मैं कर्म का स्वामी हूँ, कर्म का उत्तराधिकारी हूँ, कर्म की कोख हूँ, कर्म का (वंशज) हूँ, कर्म का घर हूँ, मैं जो भी कर्म करता हूँ, चाहे अच्छा हो या बुरा, मुझे उसका उत्तराधिकार मिलेगा '... 'क्या रातों और दिनों का बीत जाना कैसा रहा है?'... 'क्या मुझे खाली घर में आनंद आता है ?'... क्या मैंने कोई ऐसा अलौकिक विचार प्रस्तुत किया है जो श्रेष्ठजनों के जानने और देखने योग्य हो, ताकि यदि मेरे अंतिम क्षणों में मेरे दिव्य जीवन के साथियों द्वारा मुझसे प्रश्न पूछे जाएं, तो मेरा प्रयास व्यर्थ न हो। (यह एक ऐसा विचार है जिसकी गृहस्थ जीवन से बाहर निकल चुके व्यक्ति द्वारा निरंतर समीक्षा की जानी चाहिए।) गृहस्थ जीवन से बाहर निकल चुके व्यक्ति द्वारा इन दस विचारों की निरंतर समीक्षा की जानी चाहिए (ए.वी. , 87-8)।

यही सहमति बनी है।

932. < भिक्षुओं, ये तीन कार्य करने हैं। वे तीन क्या हैं? वे हैं शरीर द्वारा अच्छा आचरण, वाणी द्वारा अच्छा आचरण और मन द्वारा अच्छा आचरण। ये तीन कार्य करने हैं > ( ).

यही सहमति बनी है।

[ix (b)]

933. इसमें, अस्वीकृत क्या है?

[जब यह कहा गया]

किसी के लिए अपने बच्चे के समान कोई प्रियजन नहीं होता ।

किसी की गाय के बराबर कोई धन नहीं होता।

सूर्य के समान कोई प्रकाश नहीं है।

समुद्र निःसंदेह सभी जल निकायों में सबसे महान है ।

भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया

अपने समान कोई प्रियजन नहीं होता ।

अनाज के बराबर कोई धन नहीं होता।

कोई भी प्रकाश समझ के बराबर नहीं हो सकता।

बारिश निश्चित रूप से पानी में सबसे बड़ी है > (एस. i, 6; पे 54, 57)।

यहां पहले श्लोक को दूसरे श्लोक द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है।

934. [186] < भिक्षुओं, ये तीन [कार्य] नहीं किए जाने चाहिए। वे तीन क्या हैं? वे हैं शरीर द्वारा दुराचार, वाणी द्वारा दुराचार और मन द्वारा दुराचार। ये तीन कार्य नहीं किए जाने चाहिए > (; पे 57)।

यह अस्वीकृत है।

[पृष्ठ 242]

पथप्रदर्शक

[ix (c)]

935. इसमें सहमत और अस्वीकृत क्या है?

यहां भीड़ किस बात से डर रही है ?

एक ऐसा रास्ता जिसके कई आधार उजागर हुए हैं—मैं पूछता हूँ,
हे गौतम, व्यापक समझ वाले !
वह कहाँ खड़ा है जो परलोक से नहीं डरता?
जब वाणी और मन सही ढंग से व्यवस्थित हो जाएं,
जब शारीरिक रूप से कोई बुराई न की जाए,
फिर [यहाँ तक कि] एक समृद्ध घर में रहते हुए भी,
एक ऐसा व्यक्ति जो चार विचारों पर अपना रुख अपनाता है —
जो निष्ठावान, सौम्य, उदार और बुद्धिमान हो —
यहाँ वह खड़ा है जो दूसरे लोक से नहीं डरता > (एस. आई, 42एफ.).

यहाँ, जब कहा जाता है 'जब वाणी और मन सही ढंग से व्यवस्थित हो जाएँ', तो यह सहमति है। जब कहा जाता है 'जब शारीरिक रूप से कोई बुराई न की जाए', तो यह अस्वीकृति है। जब कहा जाता है 'तब [यहाँ तक कि] एक समृद्ध घर में रहने वाला व्यक्ति जो चार विचारों पर दृढ़ रहता है—जो वफादार, विनम्र, उदार और बुद्धिमान है—यहाँ वह खड़ा है जो परलोक से नहीं डरता', तो यह सहमति है।

यह सहमति और अस्वीकृति का मामला है।

936. किसी भी प्रकार की बुराई न करना ,
लाभदायक कौशल को परिपूर्ण करना,
और अपने हृदय को शुद्ध करना:
यह बुद्धों का विधान है (§238)।

यहां, जब कहा जाता है 'किसी भी प्रकार का बुरा कार्य न करना', तो इसका अर्थ है अस्वीकृति। जब कहा जाता है 'लाभदायक कौशल को परिपूर्ण करना', तो इसका अर्थ है सहमति।

यह सहमति और अस्वीकृति का मामला है।

937. हे देवताओं के स्वामी, शारीरिक व्यवहार दो प्रकार का होता है, मैं कहता हूँ , एक जिसे संवारा जा सकता है और दूसरा जिसे संवारा नहीं जा सकता। और मौखिक व्यवहार [187] भी दो प्रकार का होता है , मैं कहता हूँ, एक जिसे संवारा जा सकता है और दूसरा जिसे संवारा नहीं जा सकता। और मानसिक व्यवहार भी दो प्रकार का होता है , मैं कहता हूँ, एक जिसे संवारा जा सकता है और दूसरा जिसे संवारा नहीं जा सकता। और खोज भी दो प्रकार की होती है, मैं कहता हूँ, एक जिसे संवारा जा सकता है और दूसरा जिसे संवारा नहीं जा सकता। 'शारीरिक व्यवहार दो प्रकार का होता है, मैं कहता हूँ, एक जिसे संवारा जा सकता है और दूसरा जिसे संवारा नहीं जा सकता ': ऐसा कहा गया था; और यह किसके संदर्भ में कहा गया था? एक प्रकार का शारीरिक व्यवहार ऐसा होता है कि जब मनुष्य उसे संवारा जाता है तो उसमें अनुत्पादक विचार बढ़ते हैं और लाभकारी विचार घटते हैं । ऐसे शारीरिक व्यवहार को संवारा नहीं जाना चाहिए। इसमें, जब वह किसी भी

[पृष्ठ 243]

व्यवस्था का प्रतिरूप

शारीरिक व्यवहार के संदर्भ में यह कहा गया है कि ' यह शारीरिक व्यवहार ऐसा है कि जब मैं इसका अभ्यास करता हूँ तो अनुत्पादक विचार कम हो जाते हैं और लाभकारी विचार बढ़ जाते हैं '। इस प्रकार के शारीरिक व्यवहार का अभ्यास करना चाहिए। इसी संदर्भ में यह कहा गया है कि ' शारीरिक व्यवहार दो प्रकार का होता है, एक जिसका अभ्यास करना चाहिए और दूसरा जिसका अभ्यास नहीं करना चाहिए'। ' मौखिक व्यवहार' .... ' मानसिक व्यवहार' ... ' खोज दो प्रकार की होती है, एक जिसका अभ्यास करना चाहिए और दूसरा जिसका अभ्यास नहीं करना चाहिए'; और यह किसके संदर्भ में कहा गया था? एक प्रकार की खोज ऐसी होती है कि जब कोई व्यक्ति इसका अभ्यास करता है तो अनुत्पादक विचार बढ़ जाते हैं और लाभकारी विचार कम हो जाते हैं। ऐसी खोज का अभ्यास नहीं करना चाहिए। यहाँ, जब व्यक्ति किसी ऐसी खोज के बारे में जानता है कि ' यह खोज ऐसी है कि जब मैं इसका अभ्यास करता हूँ तो अनुत्पादक विचार कम हो जाते हैं और लाभकारी विचार बढ़ जाते हैं', तो ऐसी खोज का अभ्यास करना चाहिए। इसलिए इसी संदर्भ में कहा गया था कि ' खोज दो प्रकार की होती है, मैं कहता हूँ, खेती की जानी चाहिए और खेती नहीं की जानी चाहिए' > ( ) (cf. एम. iii, 45ff.).

यहां, जब यह कहा जाता है कि 4 की खेती की जानी है 5, तो इसका अर्थ है कि सहमति हो गई है। और जब यह कहा जाता है कि 4 की खेती नहीं की जानी है 5, तो इसका अर्थ है कि इनकार हो गया है।

यह सहमति और अस्वीकृति का मामला है।

[एक्स]

938. [188] इसमें, स्तुतिगान क्या है?

अष्टांगिक मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

ये चारों अवस्थाएँ सर्वश्रेष्ठ सत्य हैं।

वासना का लुप्त होना सबसे अच्छा विचार है।

और एक जिसकी दृष्टि द्विपदों में सर्वश्रेष्ठ है > (Dh. 273; Pe 56).

यह शोक संदेश है।

939. भिक्षुओं, ये तीन प्रमुख बातें हैं। वे तीन क्या हैं? जहाँ तक प्राणियों का संबंध है, चाहे वे निराकार हों, दो पैरों वाले हों, चार पैरों वाले हों या अनेक पैरों वाले हों, सजीव हों या निराकार हों, बोधशील हों या अबोधशील हों या न बोधशील हों, उनमें पूर्ण पुरुष को सर्वोपरि, श्रेष्ठ और सर्वोच्च माना जाता है, अर्थात् सिद्ध और पूर्णतः प्रबुद्ध। जहाँ तक सत्य विचारों का वर्णन है, चाहे वे निर्धारित हों या अनिर्धारित, उनमें से कामवासना का नाश होना सर्वोपरि, श्रेष्ठ और सर्वोच्च माना जाता है, अर्थात् अहंकार का नाश होना, प्यास का नाश होना, निर्भरता से मुक्ति, चक्र का अंत, लालसा का क्षीण होना, नाश होना, समाप्ति, विलुप्त होना। जहाँ तक समुदायों का, समाजों का, एकत्रित जनसमूहों का वर्णन है, उनमें से पूर्ण पुरुष के श्रोताओं का समुदाय सर्वोपरि है।

[पृष्ठ 244]

पथप्रदर्शक

सर्वोत्कृष्ट माना जाता है, सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, सर्वोच्च माना जाता है , अर्थात् परिपक्व पुरुषों के चार जोड़े , परिपक्व व्यक्तियों के आठ प्रकार... (देखें §298) ... दुनिया के लिए योग्यता > (तुलना करें इति. 87-8; तुलना करें पे 56)।

940. < एक गुरु जिसने सभी लोकों को पार किया,
लाभ के पक्ष में एक सच्चा विचार,
एक शेर-मानव का समाज:
' ये तीन सबसे विशिष्ट हैं> ( )।
यह समुदाय संतों का एक समूह है।
उस गौरवशाली आदर्श ने अपने ज्ञाता का सम्मान किया।
मनुष्य को वश में करने वाला गौरवशाली, पूर्ण दृष्टि से परिपूर्ण:
यह दुनिया से परे त्रिमूर्ति है> ( )।
< कहीं भी अद्वितीय स्वामी,
एक ऐसा आदर्श जिसमें अस्तित्व की कोई मूलभूत तत्व नहीं है।
एक गौरवशाली समुदाय को गौरव प्राप्त हुआ
यह त्रिमूर्ति सबसे विशिष्ट है> ( )।
विजेता का नाम सचमुच सुरक्षित है
सत्य को अपना आदर्श मानने वाला सर्वव्यापी,
उनके सिवा कोई और नहीं । उनकी सहभागिता
बुद्धिमान लोग सदा श्रेष्ठ व्यक्तियों का आदर करते हैं।
[189] यह दुनिया से परे त्रिमूर्ति है > ( )।
जन्म-जन्म की सारी पीड़ा को समझने वाले द्रष्टा ने
एकल लक्ष्य का मार्ग, कल्याण के लिए करुणावान ,
और इसी मार्ग से होकर वे लोग बाढ़ पार करते हैं।

अतीत में पार कर गया और भविष्य में भी पार करेगा> (एस.वी, 108)।
और वह ऐसा ही था, देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ।
जिन प्राणियों की पूजा की जाती है, पवित्रता की आशा में > ( )।
यह शोक संदेश है।

*

[बहस]

941. इसमें, (i (a)) संसारों से संबंधित धागे के प्रकार [दूसरे समूह में] को दो प्रकार के धागे [पहले समूह में] द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् (1) भ्रष्टाचार से निपटने वाले और (2) नैतिकता से निपटने वाले।

940/1 ' निरुपदहा - अस्तित्व की कोई अनिवार्यता के साथ': किसी भी रूप में पीईडी में नहीं। नेत्तिया : 4 रागपरिलहदिहि निरूपदाहो ' (पृ. 226)। यदि एफ.एम. धा , यह शब्द निरुपाधि का ही एक रूप है, लेकिन शायद परिलाहा से जुड़ा है।

940/2 'एकायना - एक ही उद्देश्य का' (शाब्दिक रूप से 'एक ही दिशा में जाना') = एकम मगगम (नेत्तिया , 226)। अक्सर इसे 'एकमात्र मार्ग' के रूप में अनुवादित किया जाता है, लेकिन एम. i, 55 के संदर्भ के अलावा, एम. i, 74 के संदर्भ पर भी विचार किया जाना चाहिए, क्योंकि यह अर्थ को अधिक स्पष्ट रूप से सामने लाता है।

[पृष्ठ 245]

व्यवस्था का प्रतिरूप

(i (b)) संसारों से विच्छेदित धागे के प्रकार को तीन प्रकार के धागे द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् [(3) प्रवेश से संबंधित उपविभाजित] (3a) देखने से संबंधित (पे 39) और (3b) अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित (पे 39), और (4) सिद्ध पुरुष से संबंधित।

(i (c)) संसारों से संबंधित और संसारों से पृथक धागों के प्रकार को , संसारों से संबंधित धागों के संबंध में, उस शब्द के उपयुक्त किसी भी प्रकार के धागे द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् (1) भ्रष्टाचार से संबंधित या (2) नैतिकता से संबंधित , और संसारों से पृथक धागों के संबंध में, इसे उस शब्द के उपयुक्त किसी भी प्रकार के धागे द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् (3a) दृष्टि से संबंधित , (3b) अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित, या (4) सिद्ध पुरुष से संबंधित। 1

942. (2) नैतिकता से संबंधित सूत्र का प्रकार भ्रष्टाचार से संबंधित सूत्र के प्रकार का प्रतिकार करने के लिए है । (3a) दृष्टि से संबंधित सूत्र का प्रकार नैतिकता से संबंधित सूत्र के प्रकार का प्रतिकार करने के लिए है । (3b) अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित सूत्र का प्रकार दृष्टि से संबंधित सूत्र के प्रकार का त्याग करने के लिए है । (4) सिद्ध पुरुष से संबंधित सूत्र का प्रकार अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित सूत्र के प्रकार का त्याग करने के लिए है । (4) सिद्ध पुरुष से संबंधित सूत्र का उद्देश्य यहाँ और अभी सुखद निवास भी है।

943. (i (b)) संसारों से वियोगित धागे का प्रकार जो (ii (a)) प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है, उसे [निम्नलिखित] छत्तीस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, और उन्हें तीन प्रकार के धागों में खोजा जाना है, अर्थात् (3a) जो देखने से संबंधित है, (3b) जो अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित है , और (4) जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है ।

944. इसमें, (3क) देखने से संबंधित धागे के प्रकार को पाँच प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् एकल-बीज, कुल-से-कुल, अधिकतम सात, आस्था द्वारा अनुयायी और विचारों द्वारा अनुयायी। 1 देखने से संबंधित धागे के प्रकार को इन पाँच प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है (देखें पतरस 42)।

945. (3b) अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित धागे का प्रकार यह हो सकता है

941/1 'और इसी तरह शेष त्रय को पहले समूहीकरण में चार बुनियादी प्रकारों के साथ जोड़ा जा सकता है' (नेटी ए, 227)।

944/1 धारा प्रवेशकर्ता के तीन प्रकार ए. i, 233 पर दिए गए हैं, अन्य दो एस. iii, 225 और एम. i, 479 पर दिए गए हैं; लेकिन पुग. 15-16 भी देखें , जहाँ आस्था द्वारा अनुयायी और विचारों द्वारा अनुयायी को केवल धारा-प्रवेश मार्ग पर लागू किया गया है, न कि उसके फल पर। तुलना करें पे 42। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ नेट्टी द्वारा दस्साना ('देखना') को धारा प्रवेश के मार्ग और फल दोनों पर लागू करने से एक अंतर है ।

[पृष्ठ 246]

गाइड

बारह प्रकार के व्यक्तियों द्वारा इसे प्रदर्शित किया गया है, अर्थात् एक बार लौटकर आने वाले व्यक्ति द्वारा, एक बार लौटकर आने वाले व्यक्ति द्वारा, न लौटकर आने वाले व्यक्ति द्वारा, न लौटकर आने वाले व्यक्ति द्वारा, [190] अपने अगले जन्म में शीघ्र ही निर्वाण प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा, अपने अगले जन्म में विलंबित होने वाले व्यक्ति द्वारा, बिना किसी प्रेरणा के निर्वाण प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा, प्रेरणा सहित निर्वाण प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा, वरिष्ठ देवताओं की ओर अग्रसर होने वाले व्यक्ति द्वारा, आस्था द्वारा मुक्त व्यक्ति द्वारा, सही दृष्टि प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा, और शारीरिक साक्षी द्वारा। अस्तित्व में बने रहने से संबंधित सूत्र के प्रकार को इन बारह प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है (देखें पे 42)।

946. (4) सिद्ध पुरुष से संबंधित सूत्र के प्रकार को नौ प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् विश्वास द्वारा मुक्त व्यक्ति, समझ द्वारा मुक्त व्यक्ति, शून्यता द्वारा मुक्त व्यक्ति , चिह्नहीनता द्वारा मुक्त व्यक्ति, स्वभावहीनता द्वारा मुक्त व्यक्ति, दोनों दिशाओं से मुक्त व्यक्ति, शांत मन वाला व्यक्ति, प्रबुद्ध संन्यासी व्यक्ति और पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति। सिद्ध पुरुष से संबंधित सूत्र के प्रकार को इन नौ प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है (देखें पतरस 30-32, 42)।

इस प्रकार प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त किए गए अलौकिक प्रकार के सूत्र को इन छत्तीस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

947. (i (a)) संसारों (ii (a)) से संबंधित धागे का प्रकार व्यक्त किया गया

945/1 इनमें से पहले 4 के लिए, पुग. 17 देखें; इनमें क्रमशः प्रत्येक जोड़ी मामलों में पथ और फल हैं।

945/2 5 प्रकार के गैर-वापसीकर्ता के लिए देखें ए. i, 233; पुग. 16-17.

945/3 इन 3 के लिए एम. आई, 478 देखें। यहाँ उनका समावेश पे में उनकी पूर्ण चूक को दूर करता है ।

946 /I Cf. पुग. 14-15, भी एम. i, 478; 'विश्वास द्वारा मुक्त' पिटकों में अरहंतत्व के फल तक विस्तारित नहीं है, लेकिन वि. 659 में वह और 'शरीर-साक्ष्य' दोनों हैं।

946/2 'पन्नविमुत्त- समझ से मुक्ति': उदाहरण देखें, ए. iv, 452-3,

[1] i, 191; ii, 121-7;एम.i, 477-8;डी. ii, 70;पग14.

946/3 §528ff देखें मुक्ति के 3 द्वारों के लिए।

946/4 देखें एम.आई. , 477.

946/5 भजन संहिता 1, 101 देखें । यह वह है जो अरहंतत्व और अपने मृत्यु-क्षण को एक साथ प्राप्त करता है।

946/6 संन्यासी प्रबुद्ध (पच्चेक-बुद्ध) वह है जो पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति और उसके घोषित उपदेश की अनुपस्थिति में स्वयं चार सत्यों का ज्ञान प्राप्त करता है और इस प्रकार दुख का अंत करता है; परन्तु वह अपनी खोज को मौखिक रूप से किसी और को संप्रेषित करने में असमर्थ है।

[पृष्ठ 247]

व्यवस्था का प्रतिरूप

प्राणियों के संदर्भ में, इसे निम्नलिखित उन्नीस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है, और इन्हें स्वभाव के प्रकारों में खोजा जाना चाहिए। कुछ कामुक स्वभाव के होते हैं, कुछ घृणा स्वभाव के होते हैं, कुछ भ्रमित स्वभाव के होते हैं; कुछ कामुक स्वभाव और घृणा स्वभाव के होते हैं, कुछ कामुक स्वभाव और भ्रमित स्वभाव के होते हैं, कुछ घृणा स्वभाव और भ्रमित स्वभाव के होते हैं, कुछ कामुक स्वभाव, घृणा स्वभाव और भ्रमित स्वभाव के होते हैं (तुलना करें पतरस 141 और 144-5)।

[फिर हैं:] एक वासना से ग्रस्त स्वभाव का, एक वासना से ग्रस्त घृणा से ग्रस्त स्वभाव का, एक वासना से ग्रस्त भ्रमित स्वभाव का, और एक वासना, घृणा और भ्रमित स्वभाव का, तीनों ही वासना से ग्रस्त। [और हैं:] एक घृणा से ग्रस्त स्वभाव का, एक घृणा से ग्रस्त भ्रमित स्वभाव का, एक वासना से ग्रस्त घृणा से ग्रस्त, और एक वासना, घृणा और भ्रमित स्वभाव का, तीनों ही वासना से ग्रस्त। [और हैं:] एक

भ्रम से ग्रस्त स्वभाव का, एक भ्रम से ग्रस्त वासना से ग्रस्त, एक भ्रम से ग्रस्त घृणा से ग्रस्त, और एक वासना, घृणा और भ्रमित स्वभाव का, तीनों ही वासना से ग्रस्त। प्राणियों के संदर्भ में व्यक्त की गई दुनियाओं से संबंधित धागे के प्रकार को इन उन्नीस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

948. (2) नैतिकता से संबंधित सूत्र के प्रकार को गुणी व्यक्तियों के प्रकारों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। ये [191] गुणी व्यक्तियों के पाँच प्रकार हैं, अर्थात् [वे व्यक्ति जिनमें निम्नलिखित विचार होते हैं:] 1. स्वाभाविक सद्गुण, कर्म के रूप में सद्गुण, विवेक (हृदय) का विश्वास, शांति, अंतर्दृष्टि। नैतिकता से संबंधित सूत्र के प्रकार को इन पाँच प्रकार के व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

949. इन पाँच विचारों के माध्यम से, (1 (बी)) संसारों से अलग हुए धागे के प्रकार को तीन प्रकार के धागे द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् (3ए) जो देखने से संबंधित है , (3बी) जो अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित है , और (4) जो सिद्ध पुरुष से संबंधित है ।

950. (i (c)) जो संसारों से संबंधित है और संसारों से पृथक है

948/1 इस वाक्य का व्याकरण कुछ अजीब है: (नपुंसक) पकातिसिलम , आदि, (पुल्लिंग) पुग्गला नहीं हैं ।

[पृष्ठ 248]

पथप्रदर्शक

(ii (ग)) प्राणियों के संदर्भ में और विचारों के संदर्भ में व्यक्त किया जा सकता है, दोनों तरीकों से प्रदर्शित किया जा सकता है।

951. (iii (a)) ज्ञान को समझ द्वारा, और समझ की क्षमता, समझ की शक्ति, उच्च समझ में प्रशिक्षण, विचारों की जांच, ज्ञानोदय कारक, सही दृष्टिकोण, निर्णय, निर्णय, किसी विचार के बारे में ज्ञान, किसी निष्कर्ष के बारे में ज्ञान, समाप्ति के बारे में ज्ञान, गैर-उत्पत्ति के बारे में ज्ञान, मैं-अंततः-जानूँगा-अभी-तक-अंततः-ज्ञात-को-जानूँगा क्षमता, अंतिम-ज्ञान-की-क्रिया क्षमता, अंतिम-ज्ञाता क्षमता, दृष्टि, (आँख), विज्ञान, खोज, व्यापकता, बुद्धि (cf. §294) द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है; या इसे समझ के लिए उपयुक्त किसी भी पदनाम द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

952. (iii (b)) जानने योग्य को भूतकाल, भविष्य और वर्तमान में उत्पन्न, स्वयं में और बाह्य, निम्न और उच्च, दूर और निकट, निर्धारित और अनिर्धारित, लाभदायक, अलाभदायक और अघोषित द्वारा सिद्ध किया जा सकता है; या संक्षेप में [स्वयं में छह आधारों के] छह वस्तुओं द्वारा।

953. (iii (c)) ज्ञान और जानने योग्य दोनों को सिद्ध किया जा सकता है। और वह समझ जिसे [अगले ज्ञान का] विषय बनाया जाता है, वह जानने योग्य है; और वह सब कुछ, चाहे वह स्वयं में हो या बाह्य, जिसे [ज्ञान का] विषय बनाया जाता है , वह जानने योग्य है , और वह सब कुछ जिसे निर्धारित और अनिर्धारित के रूप में सिद्ध किया जा सकता है।

954. (iv (a)) देखना और (iv (b)) अस्तित्व में रखना , (v (a)) हमारा अपना कथन और (v (b)) किसी और का कथन , (vi (a)) उत्तर देने योग्य और (vi (b)) उत्तर न देने योग्य, (vii (a)) क्रिया और (vii (b)) परिपक्वता, और (c) प्रत्येक उदाहरण में दोहरा रूप, धागे में इसके प्रदर्शन को देखकर उचित रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है; या भगवान बुद्ध द्वारा कहे गए किसी भी अन्य कथन को धागे में इसके प्रदर्शन को देखकर प्रदर्शित किया जा सकता है (cf. Pe 42)।

955. कारण दो प्रकार का होता है: क्रिया और दोष। दोष मूल कारण हैं।

956. [192] इसमें, अशुद्धियों को [केवल] (1) भ्रष्टाचार से संबंधित धागे के प्रकार द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है । उत्पत्ति को (1) भ्रष्टाचार से संबंधित धागे के प्रकार और (2) नैतिकता से संबंधित धागे के प्रकार द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है ।

957. इसमें (viii (a)) लाभप्रद को चार प्रकार के धागों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है, अर्थात् (2) नैतिकता से संबंधित, (3a) देखने से संबंधित , (3b) अस्तित्व में बनाए रखने से संबंधित, और (4) सिद्ध पुरुष से संबंधित।

[पृष्ठ 249]

व्यवस्था का प्रतिरूप

958. (viii (b)) अलाभकारी को (1) भ्रष्टाचार से निपटने वाले थ्रेड के प्रकार द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है ।

959. (viii (c)) लाभदायक और अलाभदायक दोनों को [जैसा उपयुक्त हो] प्रदर्शित किया जा सकता है।

960. (9 (क)) सहमत को भगवान बुद्ध द्वारा सहमत बातों से सिद्ध किया जा सकता है, जो पाँच प्रकार की हैं, अर्थात् संयम, त्याग, धारण, सत्यापन, और जो [ग्रंथों में स्पष्ट रूप से] अनुमेय है और जो उसके अनुरूप है। विभिन्न लोकों में [साधारण मनुष्य के लोक से शुरू होकर] जो कुछ भी पाया जाता है, उसे अनुमेय और उसके अनुरूप बातों से सिद्ध किया जा सकता है। 1
961. (ix (b)) भगवान बुद्ध द्वारा अस्वीकार की गई बात को अस्वीकृति के कारण से सिद्ध किया जा सकता है।
962. (ix (c)) सहमत और अस्वीकृत को दोनों द्वारा [जैसा उपयुक्त हो] प्रदर्शित किया जा सकता है।
963. (x) प्रशंसा को स्तुति द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। इसे पाँच प्रकार से समझा जाना चाहिए, अर्थात् भगवान बुद्ध की प्रशंसा, सच्चे विचार की प्रशंसा, श्रेष्ठ समुदाय की प्रशंसा, श्रेष्ठ विचारों के प्रशिक्षण की प्रशंसा और सांसारिक गुणों में सफलता की प्रशंसा। इस प्रकार प्रशंसा को सिद्ध किया जा सकता है।

964. गुणों के तल को नौ पदों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है और दोषों के तल को नौ पदों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। अतः ये पद अठारह हैं: नौ लाभकारी पद और नौ लाभकारी पद, जैसा कि [पहले] कहा गया था, 'अठारह मूल-पद: वे कहाँ देखे जा सकते हैं? व्यवस्था के प्रतिरूप में' (§759)।
965. इसीलिए पूज्य महाकच्चना ने कहा:
'लाभ पक्ष में नौ शर्तों के साथ'
और गैर-लाभकारी संस्थाओं की तरफ से नौ पद।
व्याख्या करने पर, ये मूल-पद [इस प्रकार] आते हैं
[कुल मिलाकर] अठारह पदों की संख्या तक' (§4 अंत)।
इस व्यवस्था का स्वरूप समाप्त हो गया है।

960/1 नेटीए के अनुसार , 'अनुमत' (कप्पिया) वह है जो ग्रंथों में स्पष्ट रूप से कहा गया है, जबकि 'उसके अनुरूप' (अनुलोमा) वह है जो प्राधिकरण के प्रधान अपीलों (§120ff.) के तहत वर्णित तरीके से उसके साथ संगत है।
पथप्रदर्शक
[193] इस बिंदु पर गाइड पूरा हो गया है, जिसे महा- कच्चना ने बोला था, भगवान बुद्ध द्वारा अनुमोदित किया गया था, और मूल परिषद में जपा गया था।
गाइड का अंत